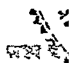
॥ श्रीः ॥

❈ श्रीराम दैवज्ञ विरचितः ❈

मुहूर्तचिन्तामणिः ।

सान्वय भाषाटीका सहितः ।

पं० [illegible] संशोधितः ।



❈ केवलमावरण पृष्ठं

श्री काशीप्रसाद भार्गव द्वारा

स्वकीये भार्गवभूषण नाम यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।



मूल्य १८)

सूचीपत्र

[illegible]	)॥	[illegible]
[illegible]	-)	[illegible]
[illegible]	)॥	[illegible]
[illegible] भा० टी०	=)	[illegible]
शीघ्रबोध ,, ,,	।=)	संस्कृत [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	-)	[illegible]
[illegible]	।=)	हितोपदेश [illegible]
,, ,, भा० टी०	=)	[illegible] भाषा टीका
[illegible]	=)	[illegible]
लघुपाराशर भा० टी०	-)	गणपति पूजा
[illegible]	।)	अनेक [illegible]
[illegible] भा० टी०	-)॥	मूल शान्ति
[illegible]	।)	[illegible]
[illegible] भा० टी०	)॥	[illegible] ग्रह शांति प्रयोग
सामुद्रिक [illegible]	।)	वैदिक [illegible]

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर-भार्गव पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस सिटी ।



मुहूर्तचिंतामण्यनुक्रमणिकाप्रारंभः ।



विवाहप्रकरणम् ॥ ६ ॥

पृष्ठांक।	विषय।
१०३	दूसरे चौल आदि कृत्यों में विचार
१०३	वधूवरोंके श्वशुर आदिकों का बांधक अनिष्ट नक्षत्र।
१०४	इस दोषका अपवाद।
१०४	आठ वर्ण आदिके नाम।
१०५	वर्णकूट विचार।
१०५	वश्यकूटका विचार।
१०५	ताराकूटका विचार।
१०६	योनिकूटका विचार।
१०७	ग्रहकूट ग्रहोंकी परस्पर मैत्री।
१०७	गणकूटका विचार और फल।
१०८	राशिकूटका विचार।
१०९	दुष्टभकूटका परिहार।
१०९	दुष्ट गणकूट भकूट गृहकूट का परिहार।
११०	नाडीकूटका विचार।
११०	पूर्व मध्य अपर भाग योगी नक्षत्र।
१११	प्राचीन विद्वानों के मतसे वर्णकूट।
१११	नक्षत्रैक्य और राश्यैक्यमें विचार।
१११	नौकर आदिकोंका नक्षत्र स्वामिनक्षत्र से पूर्व होने से फल।
११२	राशिस्वामियोंका और नवांशविधि
११२	होराका विचार।
११३	त्रिंशांश और द्रेष्काण।
११३	द्वादशांश और अष्टवर्गोंका उपसंहार
११४	गडांत दोषका विचार
११४	कर्तरीदोषका विचार
११४	ग्रहयोग विचार.
११५	अष्टमलग्न दोष अपवाद सहित
११५	पहिले श्लोकके उत्तरार्धका विवरण
११५	अष्टम स्थानाधिपति लग्नमें हो तो उसका फल।
११६	विषघटीका दोष विचार
११७	दुर्मुहूर्त दोष और दिवामुहूर्त
११७	अब रात्रिमुहूर्त के विषय विचार
११८	रवि आदि वारोंमें मुहूर्त
११८	विवाहमें विहित नक्षत्र आदि और अभिजित् का भ न
११९	पंचशला का चक्र
११९	सप्तशला का वेध चक्र
१२०	क्रूरग्रहों से आक्रांत आदि दोष.
१२०	लत्तादोषका प्रमाण
१२१	पातदोष विचार
१२१	महापात दोष विचार
१२१	खार्जूर दोष विचार
१२२	उपग्रह दोष विचार
१२२	पात उपग्रह लत्ता इनका अपवाद और अर्धयाम
१२२	कुलि दोष विचार
१२३	दग्ध तिथ्याख्य विचार
१२३	जामित्र दोष
१२३	एकार्गल-दोष
१२४	देशविशेषसे दोषों का अपवाद
१२४	दशयोगफल और परिहार
१२४	बाण दोष कथन
१२५	बाण दोष अपवाद
१२६	समय भेद वार भेद और कर्म भेदसे तीन प्रकार के बाणोंका परिहार
१२६	ग्रहों की दृष्टि
१२७	उदयास्तादि शुद्धि
१२७	उदयास्त शुद्धि के अभाव से तीसरा परिहार
१२८	अर्क संक्रांति दोष
१२८	संक्रान्ति से घड़ियों का विचार
१२९	पंगु अंध बधिराख्य लग्न
१२९	तथा अन्य आचार्यों का मत.
१२९	तथा फल
१३०	विवाह में विहित नवांश
१३०	विहित नवांश में क्वाचित्प्रतिषेध
१३०	लग्नभंग योग

वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ ७ ॥

द्विरागमनप्रकरणम् ॥ ८ ॥

अग्न्याधानप्रकरणम् ॥ ९ ॥

राजाभिषेकप्रकरणम् ॥१०॥

यात्राप्रकरणम् ।



॥ श्रीः ॥

मुहूर्तचिन्तामणि

सान्वयभाषानुवादसंवलित



शुभाशुभप्रकरणम् १

मंगलाचरणम् ।

श्रीमद्देवीपदद्वंद्वं प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ।

तन्नमामि नतिर्यस्य वितरत्युत्तमां मतिम् ॥ १ ॥

अर्थ-शोभा से संयुक्त बहुत से विघ्नों के समूहों को नाश करने वाली देवीजी के उन चरणोंको मैं प्रणाम करता हूँ। जिनको किया हुआ प्रणाम उत्तम मतिको विस्तृत करता है ॥ १ ॥

ग्रन्थकी निर्विघ्नता के अर्थ ग्रन्थकार अभीष्ट देवता का मंगलाचरण करते हैं

गौरीश्रवःकेतकपत्रभंगमाकृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।

विघ्नं मुहूर्ताकलितद्वितीयदंतप्ररोहो हरतु द्विपास्यः॥१॥

(अन्वयः) गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गं हस्तेन आकृष्य मुखाग्रे ददत् (अत एव) मुहूर्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहः द्विपास्यः विघ्नं हरतु ॥ १ ॥

अर्थः-पार्वतीजीके कानमें लटकता हुआ जो केतकी पुष्प के पत्तेका टुकड़ा उसको सूड से खींच अपने मुखमें देते हुए और उसी पत्ते से दो घड़ी तक प्रकट हुआ है दूसरे दांतका अंकुर जिनका ऐसे गणेशजी विघ्नों को दूर करें ॥ १ ॥

ग्रन्थ के विषय, प्रयोजन, सम्बन्ध व अधिकारी—

क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ।

अनंतदैवज्ञसुतः स रामो मुहूर्तचिंतामणिमातनोति॥२॥

(अन्वयः) अनन्तदैवज्ञसुतः स रामः क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविलासगर्भं मुहूर्तचिन्तामणिमातनोति ॥ २ ॥

अर्थ.-पुँसवन जातकर्म आदि क्रियाओं को मुहूर्तद्वारा निर्विघ्नताशे सिद्धि होनेके लिये, कारणीभूत और संक्षेप से सार अर्थका आनंद है गर्भ में जिसके ऐसे मुहूर्तचिंतामणि ग्रन्थको अनंत नामवाले ज्योतिषीके पुत्र रामाश्रम विस्तार करके रचते हैं ॥ २ ॥

तिथीयों के स्वामी-

तिथीशा वह्निको गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गांतको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ ३ ॥

(अन्वयः) वन्हिकौ गौरी गणेशः अहिः गुहो रविः शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः काम. शिवः शशी (क्रमेणैते) तिथीशाः (स्युः) ॥ ३ ॥

अर्थः-प्रतिपदाके स्वामी अग्नि हैं, द्वितीया के स्वामी ब्रह्मा हैं, तृतीया की स्वामिनी गौरी हैं, चतुर्थीके स्वामी सूर्य हैं, अष्टमीके स्वामी शंकर हैं, नवमी के स्वामिनी दुर्गा है, दशमीके स्वामी धर्मराज हैं, एकादशीके स्वामी विश्वेदेव हैं, द्वादशीके स्वामी विष्णु हैं, त्रयोदशीके स्वामी कामदेव हैं, चतुर्दशीके स्वामी महादेव हैं, पौर्णमासीके स्वामी चंद्रमा हैं और अमावस्या के स्वामी पितर हैं इस प्रकार ये सब तिथियों के स्वामी जानने ॥ ३ ॥

तिथियों की सफल संज्ञा क्रमसे कहते हैं-

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ।४।

(अन्वयः)सिते नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता च पूर्णा इति तिथ्यः (क्रमेण) अशुभ मध्य शस्ताः, असिते (क्रमेण) शस्त समाधमाः सितज्ञभौमार्किगुरौ सिद्धाश्च स्युः ॥ ४ ॥

अर्थः-नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा यह तिथियोंकी संज्ञा हैं । जैसे १, ६, ११ ये तिथियां नंदा हैं, २, ७, १२ ये तिथियां भद्रा हैं, ३, ८, १३ ये तिथियां जया हैं ४, ९, १४ ये तिथियां रिक्ता हैं व ५, १०, १५, पूर्णा हैं । जो शुक्लपक्षमें अशुभ, मध्य, श्रेष्ठ ऐसे जानना । जैसे १, २, ३, ४, ५, ये तिथियां अशुभ हैं ६, ७, ८, ९, १०, ये तिथियां मध्य हैं ११, १२, १३, १४, १५, ये तिथियां उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ हैं । कृष्णपक्ष में १, २, ३, ४, ५, ये तिथियां उत्तम हैं । ६, ७, ८, ९, १०, ये मध्यम हैं ११, १२, १३, १४, १५ ये तिथियां अशुभ है और शुक्रवारको १, ६, ११,

तिथियां सिद्ध हैं, बुधवारको २, ७, १२, तिथियां सिद्ध है, मंगलवार को ३, ८, १३, तिथियां सिद्ध हैं, शनिवार को ४, ९, १४, तिथियां सिद्ध हैं। यह सिद्ध योग कहा है ॥ ४ ॥

यथाक्रम सूर्यादि वारसे निषिद्ध तिथि और दग्ध नक्षत्र कहते हैं।

नंदा भद्रा नंदिकाख्या जया च रिक्ता भद्रा पूर्णसंज्ञाऽधमाऽर्कात् ।
याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठांत्यं रवेर्दग्धभं स्यात् ॥५॥

(अन्वयः) नन्दा भद्रा नन्दिकाख्या जया रिक्ता च (पुनः) भद्रा पूर्णसंज्ञा च अर्कात् अधमा एव । रवेः याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं दग्धभं स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थः-१, ६, ११, इन तिथियों में रविवार हो, २, ७, १२, इन तिथियों में सोमवार हो १,६,११, इन तिथियोंमें मंगलवार हो,३,८,१३,इन तिथियोंमें बुधवार हो, ४, ९, १४, इन तिथियों में बृहस्पतिवार हो, २, ७, १२, इन तिथियों में शुक्रवार हो, व ५, १० १५ इन तिथियोंमें शनिवार हो तो किसी मुनिके मतसे यह मृत्युयोग है और सिद्धांत मतमें अमृतसिद्धयोग जानना। रविवारके भरणी हो, सोमवारको चित्रा हो, मंगलवारको उत्तराषाढ हो, बुधवार को धनिष्ठा हो, बृहस्पतिवारको उत्तराफाल्गुनी हो, शुक्रवारको ज्येष्ठा हो तथा शनिवारको रेवती हो, तो ये नक्षत्र दग्धसंज्ञक कहाते हैं ॥ ५ ॥

क्रकच आदि निंद्य योग कहते हैं—

षष्ठ्यादितिथयो मंदाद्विलोमं प्रतिपद् बुधे ।
सप्तम्यर्केऽधमाः षष्ठ्याद्यामाश्च रदधावने ॥ ६ ॥

(अन्वयः) षष्ठ्यादितिथयः मन्दाद्विलोमं, बुधे प्रतिपद्, अर्के सप्तमी, रदधावने षष्ठ्याद्यामाश्च अधमाः (स्युः) ॥ ६ ॥

अर्थः-शनिवारको षष्ठी, शुक्रवारको सप्तमी, बृहस्पतिवारको अष्टमी, बुधवारको नवमी,मंगलवारको दशमी,सोमवारको एकादशी और रविवारको द्वादशी, ये तिथियां अशुभ हैं । एवं बुधवारको प्रतिपदा व रविवारको सप्तमी अशुभ जानना और षष्ठी प्रतिपदा अमावस्या ये तिथियां दंतधावनमें अशुभ हैं ॥ ६ ॥

कृत्यविशेषमें निषिद्ध तिथियां—

षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु नो सेवेत ना तैलपले क्षुरं रतम् ।

नाभ्यंजनं विश्वदशद्विके तिथौ धात्रीफलैःस्नानममाद्रिगोष्वसत्

(अन्वयः) ना, षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषु तैलपले क्षुरं रतं नो सेवेत, विश्वदशद्विके तिथौ अभ्यञ्जनं न (सेवेत, अमाद्रिगोषु धात्री फलैः स्नानमसत् ॥७॥

अर्थः-षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या इन तिथियों में क्रमसे तेल, मांस, क्षौर मैथुन इनका सेवन न करै और त्रयोदशी, दशमी द्वितीया इन तिथियों में अभ्यंग न मले और अमावस्या, सप्तमी, नवमी इन तिथियों में आंवला लगाकर स्नान न करै ॥ ७ ॥

रविवारसे दग्ध आदि चार योग-

सूर्येशपंचाग्निरसाष्टनंदा वेदांगसप्ताश्विगजांकशैलाः ।
सूर्यांगसप्तोरगगोदिगीशा दग्धा विषाख्याश्च हुताशनाश्च॥८॥
सूर्यादिवारे तिथयो भवंति मघा विशाखा शिवमूलवन्हिः ।
ब्राह्मं करोऽर्काद्यमघंटकाश्च शुभे विवर्ज्या गमने त्ववश्यम्॥९॥

(अन्वयः) सूर्यादिवारे सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दा वेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः सूर्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशा तिथयः (क्रमात्) दग्धा विषाख्याः हुताशनाश्च,तथा अर्कात् मघा विशाखा शिवमूलवन्ही ब्राह्मं करः यमघण्टकाश्च भवन्ति, (इमे) शुभे विवर्ज्याः गमनेत्ववश्यं (वर्ज्याः) ॥ ८-९ ॥

अर्थः-रविवारको १२, सोमवारको ११, मंगलवारको ५ बुधवारको ३, बृहस्पतिवारको ६, शुक्रवारको ८, शनिवारको ९, ये तिथियां होवें तो दग्धा तिथि जानना । रविवारको ४, सोमवारको ६, मंगलवारको ७, बुधवारको २ बृहस्पतिवारको ८, शुक्रवारको ९, शनिवारको ७, ये तिथि होवैं तो विषाख्य योग जानना रविवारको १२ सोमवारको ६, मंगलवारको ७, बुधवारको ८, बृहस्पतिवारको ९, शुक्रवारको १० शनिवारको ११, होवै तो हुताशनयोग जानना । रविवारको मघा हो; सोमवारको विशाखा हो, मंगलवारको आर्द्रा हो, बुधवारको मूल हो, बृहस्पतिवारको कृत्तिकाहो, शुक्रवार को रोहिणी हो, शनिवारको हस्त हो, इस क्रमसे नक्षत्रोंके होनेसे यमघंट योग जानना । ये याग शुभकार्य में वर्जित हैं और गमन करने में अवश्य वर्जित हैं ॥ ८-९ ॥

भाद्रे चंद्रदृशौ नभस्यनलनेत्रे माधवे द्वादशी

पौषे वेदशरा इषे दश शिवा मार्गेऽद्रिनागा मधौ ।
गोऽष्टौ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शून्या बुधैः कीर्तिता
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शरांगाब्धयः ॥ १० ॥

(अन्वयः) भाद्रे चन्द्रदृशौ नभसि अनलनेत्रे माधवे द्वादशी पौषे वेदशरा इषे दशशिवा मार्गेऽद्रिनागा मधौ गोऽष्टौ च उभयपक्षगा स्तिथयः । (तथा) उर्जाषाढ तपस्यशुक्रतपसां कृष्णे शरांगाब्धयः सिते शक्रा अग्निविश्वरसाः क्रमात् बुधैः शून्याः कीर्तिताः ॥ १० ॥

अर्थः–भाद्रपदके शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षकी १ व २ तिथियां शून्य हैं श्रावण के दोनों पक्षोंकी ३ व २ शून्य हैं; वैशाखके दोनों पक्षोंकी १२ शून्य है, पौषके दोनों पक्ष की ४ व ५ शून्य हैं, आश्विनके दोनों पक्षोंकी १० व ११ शून्य हैं, अगहनके दोनों पक्षों की ७ व ८ शून्य हैं, चैत्रके दोनों पक्षोंकी ९ व ८ शून्य हैं, कार्तिकके कृष्ण पक्षकी ५ शून्य है । आषाढके कृष्ण पक्षकी ६ शून्य हैं उसी प्रकार फाल्गुनके कृष्णपक्षकी ४ शून्य है ॥ १० ॥

नक्षत्रसंबंधि दोष—

शक्राः पंच सिते शक्राद्ग्याग्निविश्वरसाः क्रमात् ।
तथा निंद्यं शुभे सार्पं द्वादश्यां वैश्वमादिमे ॥ ११ ॥
अनुराधा द्वितीयायां पंचम्यां पित्र्यभं तथा ।
त्र्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्यां च रोहिणी ॥ १२ ॥
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे ।
नवम्यां कृत्तिकाष्टम्यां पूभा षष्ठ्यां च रोहिणी ॥ १३ ॥

(अन्वयः) तथा द्वादश्यां सार्पं आदिमें वैश्वं द्वितीयायामनुराधा पञ्चम्यां पित्र्यभं तथा तृतीयायां त्र्युत्तरा एकादश्यां रोहिणी त्रयोदश्यां स्वातीचित्रे सप्तम्यां हस्तराक्षसे नवम्यां कृत्तिका अष्टम्यां पूभा षष्ठ्यां रोहिणी एतत्सर्वं शुभं निंद्यम् ॥ ११-१२-१३ ॥

अर्थः–ज्येष्ठके कृष्णपक्षकी १४, माघके कृष्णपक्षकी ५, कार्तिक के शुक्लपक्ष की १४, आषाढ़के शुक्लपक्षकी ७, फाल्गुनके शुक्लपक्षकी ३. ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी

१३, माघके शुक्लपक्षकी ६, ये तिथियां शून्य है । शुभकार्यों में द्वादशी के दिन अश्लेषा और प्रतिपदा के दिन उत्तराषाढ़ निंद्य है ॥ ११ ॥ द्वितीयाको अनुराधा हो, पञ्चमी को मघा हो, तृतीयाको तीनों उत्तराहों, एकादशीको रोहिणी हो ॥ १२ ॥ त्रयोदशीको स्वाती और चित्रा हो, सप्तमीको हस्त मूल हो, नवमी को कृत्तिका हो और अष्टमीको पूर्वाभाद्रपद हो और षष्ठीको रोहिणी हो तो इन दिनोंमें शुभ कार्य नही करना। ये दिन निंदित है ॥ ११-१२-१३ ॥

चैत्रआदि मासों में शून्य नक्षत्र—

कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ ।
वैश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपादग्निपित्र्यभे ॥ १४ ॥
चित्राद्वीशे शिवाश्व्यर्काः श्रुतिमूले यमेंद्रभे ।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः ॥ १५ ॥

(अन्वयः) चैत्रादिमासे कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ वैश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपाद् अग्निपित्र्यभे चित्राद्वशौ शिवाश्व्यर्का- श्रुतिमूले यमेन्द्रभे शून्याख्यास्तारा वित्तविनाशदाः (स्युः) ॥ १४-१५ ॥

अर्थः-चैत्रमें अश्विनी और रोहिणी, वैशाख में चित्रा और स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ और पुष्य, आषाढमें पूर्वाफाल्गुनी और धनिष्ठा, श्रावणमें उत्तराषाढ और श्रवण भाद्रपदमें शतभिषा और रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपद, कार्तिकमें कृत्तिका और मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा और विशाखा पौषमें आर्द्रा, अश्विनी व हस्त, माघमें श्रवण और मूल, फाल्गुनमें भरणी और ज्येष्ठा शून्य हैं। इस प्रकार चैत्रादि महीनों में ये नक्षत्र शून्य कहे हैं इनमें कार्य करनेसे धनका नाश होता है ॥१४॥१५॥

चैत्रादि महीनोंमें शून्य राशियां—

घटो झषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिनः ।
धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराशयः ॥ १६ ॥

(अन्वयः) चैत्रादौ घटो झषो गौर्मिथुनं मेषकन्यालितौलिना धनुःकर्को सिंह शून्यराशयः (भवन्ति) ॥ १६ ॥

अर्थः-चैत्रमें कुंभराशि, वैशाखमें मीनराशि, ज्येष्ठमें वृषराशि, आषाढ़में मिथुनराशि. श्रावणमें मेषराशि, भाद्रपदमें कन्याराशि, आश्विनमें वृश्चिकराशि, कार्तिक

में तुलाराशि, मार्गशीर्षमें धनराशि पौषमें कर्कराशि, माघमें मकरराशि, और फागुनमें सिंहराशि ये चैत्रआदि महीनोंमें शून्यराशि हैं १६ ॥

विषम तिथियोंमें दग्धलग्न—

पक्षादितस्त्वोजतिथौ घटेणौ मृगेंद्रनक्रौ मिथुनांगने च ।
चापेंदुभे कर्कहरी हयांत्यौ गोंऽत्यौ च नेष्टे तिथिशून्यलग्ने॥१७॥

(अन्वयः) पक्षादितः तु ओजतिथौ घटेणौ मृगेन्द्रनक्रमिथुनाङ्गने च चापेन्द्रभे कर्कहरी हयान्त्यौ च तिथिशून्यलग्ने नेष्टे ॥१७॥

अर्थः-प्रतिपदाके दिन तुला और मकरलग्न,तृतीयाके दिन मकर और सिंहलग्न, पंचमीके दिन मिथुन और कन्यालग्न, सप्तमीके दिन धन और कर्कलग्न, नवमीके दिन कर्क और सिंहलग्न, एकादशीके दिन धन और मीनलग्न त्रयोदशी के दिन वृष और मीनलग्न शून्य हैं । इन्होंमें शुभ कर्म करना वर्ज्य है ॥ १७ ॥

दुष्टयोगोंका परिहार—

तिथयो मासशून्याश्च शून्यलग्नानि यान्यपि ।
मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणीतरेषु तु ॥ १८ ॥
पंग्वंधकाणलग्नानि मासशून्याश्च राशयः ।
गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १९ ॥

(अन्वयः) मासशून्यास्तिथयः च यानि अपि शून्यलग्नानि मध्यदेशे विवर्ज्यानि इतरेषु न दूष्याणि ॥ १८ ॥

(अन्वयः) पंग्वन्धकाणलग्नानि मासशून्याः तिथयश्च गौडमालवयोः त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १९ ॥

अर्थः-महीनोंमें शून्य तिथि और शून्य लग्न जो कहे हैं वे मध्यदेशमें वर्जित हैं और अन्यदेशोंमें वर्जित नहीं हैं ॥ १८ ॥ पंगु, अन्ध काण यह लग्न और महीनों में कही शून्य राशि गौडदेशमें और मालवदेश में वर्जित हैं अन्यदेशों में निंदित नहीं है ॥ १९ ॥

हस्तार्कादि सिद्धियोगों का तिथिविशेषसे निषत्व—

वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पंचमीतिथौ ।
भौमाश्विनीं च सप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैंदवं तथा ॥ २० ॥

बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम् ।
नवम्यां गुरुपुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

(अन्वयः) पञ्चमीतिथौ हस्तार्कं च सप्तम्यां भौमाश्विनी तथा षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं अष्टम्यां बुधानुराधां दशम्यां भृगुरेवती नवम्यां गुरुपुष्यं च एकादश्यां शनिरोहिणी सर्वकार्येषु वर्जयेत् ॥ २०-२१ ॥

अर्थ.-पंचमीको हस्तनक्षत्र और सोमवार हो, सप्तमीको अश्विनी और मगलवार हो, षष्ठीको मृगशिरा और सोमवार हो ॥ २० ॥ अष्टमीको अनुराधा और बुधवार हो दशमीको रेवती और शुक्रवार हो, नवमी को पुष्य और बृहस्पतिवार हो, एकादशीको रोहिणी और शनिवार हो तो इन योगोंमें किसी प्रकारका शुभकार्य नहीं करना ॥ २०-२१ ॥

अन्य गृहप्रवेशादि कार्योंमें वर्ज्य तिथि नक्षत्र—

गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च यथाक्रमम् ।
भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

(अन्वयः) यथाक्रमं गृहप्रवेशे यात्रायां विवाहे च भौमाश्विनीं शनौ ब्राह्मं गुरौ पुष्यं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥

अर्थः-गृहप्रवेशमें मङ्गलवार के दिन अश्विनी नक्षत्र हो, यात्रामें शनिवार के दिन रोहिणी हो, और विवाह में बृहस्पतिवारके दिन पुष्यनक्षत्र हो तो अशुभ है, अर्थात् इन योगों में ये न कर्म करने ॥ २२ ॥

आनंदादियोग—

आनंदाख्यः कालदंडश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुंबौ ॥२३॥
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातंगरक्षश्चरसुस्थिराख्याः प्रवर्द्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना॥२४

(अन्वयः) क्रमेण आनन्दाख्यः कालदण्डः च धूम्रो धाता सौम्यः ध्वांक्षकेतू श्रीवत्साख्यः वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ उत्पातमृत्यू काण सिद्धी शुभाः अमृताख्यः मुसलः गदः च मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यः प्रवर्धमानाः स्वनाम्ना फलदाः भवन्ति ॥ २३-२४ ॥

अर्थः—आनन्द १, कालदण्ड २, धूम्र ३, धाता ४, सौम्य ५, ध्वांक्ष ६, केतु ७, श्रीवत्स ८, वज्र ९, मुद्गर १०, छत्र ११, मित्र १२, मानस १३, पद्म १४, लुम्ब १५; ॥ २३ ॥ उत्पात १६, मृत्यु १७, काण १८, सिद्धि १९, शुभ २०, अमृत २१, मुसल २२, गद २३, मातंग २४, रक्ष २५, चर २६, सुस्थिर २७, प्रवर्धमान ऐसे ये २८ योग कहे हैं ये अपने नाम के अनुसार फल देनेवाले होते हैं ॥ २४ ॥

इन योगों का गणनाक्रम—

दास्त्रादर्के मृगादिंदौ सार्पाद्भौमे कराद् बुधे ।
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मंदे च वारुणात् ॥ २५ ॥

(अन्वयः) अर्के रविदिवसे दास्त्रादश्विनीनक्षत्रात् इन्दौ सोमवारे सार्पात् श्लेषानक्षत्रात् मृगात् मृगशिरानक्षत्रात् भौमे कुजवारे सार्पादश्लेषानक्षत्रात् बुधे चन्द्रसुतवारे करात् हस्तनक्षत्रात् गुरौ बृहस्पतिदिवसे मैत्रात् भृगौ शुक्रवारे वैश्वात् मन्दे (च) शनिदिवसे वारुणात् ते आनन्दाद्या योगा (गण्याः) ॥ २५ ॥

अर्थः—रविवार के दिन अश्विनीनक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै. सोमवार के दिन मृगशिरानक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै, मंगलवार के दिन अश्लेषानक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै, बुधवार के दिन हस्तनक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै, बृहस्पति वार के दिन अनुराधा नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै, शुक्रवार के दिन उत्तराषाढ़ से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै तथा शनिवार के दिन शतभिषा नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै इस प्रकार गिनती करने से पूर्वोक्त योगों में से कौनसा योग है इसका निश्चय होता है ॥ २५ ॥

इनमें से कुछ योगों का परिहार—

ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः ।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयंद्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

(अन्वयः) ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे योगे (च) आद्या इषुनाड्य पञ्चनाड्यो वर्ज्याः, पद्मलुम्बे वेदाश्चतस्रो नाड्यो वर्ज्याः गदे योगे अश्वाः सप्तनाड्यो वर्ज्याः । धूम्रे भूरेका नाड़ी काणे द्वयं मौसले द्वे नाड्यौ, रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे वर्ज्याः अर्थात् एषां योगानां सर्वा नाड्यो वर्ज्याः ॥ २६ ॥

अर्थः—ध्वांक्ष-वज्र-मुद्गर-इन योगों के आदि की ५ घड़ी, पद्म और लुम्ब योग के आदि की ४ घड़ी, गद योग के आदि की ७ घड़ी, धूम्र योग के आदि की

१ घड़ी, काण और मुसल योग के आदि की २ घड़ी वर्जित हैं और रक्ष-मृत्यु-उत्पात कालदण्ड इन योगों की सब घड़ी वर्जित है ॥ २६ ॥

दोषों के अपवादभूत ६ योग—

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ।
चंद्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ॥ २७ ॥

(अन्वयः) सूर्यभात् वेद गोतर्क दिग्विश्वनख सम्मिते सति चन्द्रर्क्षे सति दोषसङ्घविनाशका रवियोगाः स्युरिति ॥ २७ ॥

अर्थः—सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनै, जो ४-६-६-१०-१३-२० ऐसी गिनती का नक्षत्र होवे तो रवियोग जानना। वह दोषों के समूह का नाश करता है ॥ २७ ॥

सूर्यादि वारों में नक्षत्र विशेष से सिद्धियोग—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चंद्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचांद्रम्॥२८॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम्।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः॥२९॥

(अन्वय) सूर्ये रविवारे अर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे सोमदिने श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् भौमे कुजवारे ऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं नक्षत्रं ज्ञे बुधे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रं नक्षत्रं ॥ २८ ॥ जीवे अन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रे वारे अन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि नक्षत्राणि पूर्वैः पूर्वाचार्यैः सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि ॥ २९ ॥

अर्थ —रविवार के दिन हस्त, मूल, तीनों उत्तर, पुष्य, अश्विनी ये नक्षत्र होवे, सोमवारके दिन श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा होवें, मंगलवारके दिन अश्विनी अश्लेषा, उत्तराभाद्र, कृत्तिका होवें बुधवारके दिन रोहिणी; अनुराधा हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा ये नक्षत्र होवें ॥ २८ ॥ बृहस्पतिवारके दिन रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य होवें, शुक्रवारके दिन रेवती; अश्विनी, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण ये नक्षत्र होवें शनिवारके दिन श्रवण, रोहिणी, स्वाती ये

नक्षत्र होवें तो ये पूर्व ज्योतिषियोंने सिद्धियोग कहे हैं; इनमें कार्य करने से सब प्रकारकी सिद्धि होती है ॥ २९ ॥

शीघ्र ज्ञानार्थ उत्पात मृत्यु काण व सिद्धियोग—

द्वीशात्तोयाद्वासवात् पौष्णभाच्च ब्राह्मात् पुष्यादर्यमर्क्षाच्चतुर्भैः
स्यादुत्पातो मृत्युकाणौ च सिद्धिर्वारेऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम् ३०

(अन्वयः) द्वीशात् तोयात् वासवात् पौष्णभात् (च) ब्राह्मात् पुष्याद् अर्यमर्क्षात् चतुर्भैश्चतुर्भैः नक्षत्रैः क्रमादुत्पातः स्यात् मृत्युकाणौ स्तः (च) सिद्धिः स्यात् अर्काद्ये वारे नामतुल्यं तत्फलं वाच्यमिति ॥ ३० ॥

अर्थः–रविवार को विशाखानक्षत्र हो तो उत्पातयोग जानना, अनुराधानक्षत्र हो तो मृत्युयोग जानना, ज्येष्ठानक्षत्र हो तो काणयोग जानना और मूलनक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना। सोमवारको पूर्वाषाढनक्षत्र हो तो उत्पातयोग जानना, अभिजित् हो तो काणयोग जानना और श्रवणनक्षत्र होतो सिद्धियोग जानना। मंगवारको धनिष्ठानक्षत्र हो तो उत्पातयोग जानना, शतभिषा हो तो मृत्युयोग जानना, पूर्वभाद्रपद हो तो काणयोग जानना और उत्तराभाद्रपद हो तो सिद्धियोग जानना बुधवारके दिन रेवती हो तो उत्पातयोग जानना अश्विनी हो तो मृत्युयोग जानना। भरणी हो तो काणयोग जानना और कृत्तिका हो तो सिद्धियोग जानना। बृहस्पतिवारके दिन रोहणी होतो उत्पतयोग जानना, मृगशिर हो तो मृत्युयोग जानना। और आर्द्रा हो तो काणयोग जानना और पुनर्वसु हो तो सिद्धियोग जानना। शुक्रवारके दिन पुष्य हो तो उत्पातयोग जानना, अश्लेषा हो तो मृत्यु योग जानना मघा हो तो कालयोग जानना और पूर्वाफाल्गुनी हो तो सिद्धियोग जानना शनिवार के दिन उत्तराफाल्गुनी हो तो उत्पातयोग जानना, हस्त हो तो मृत्युयोग जानना, चित्रा हो तो काणयोग जानना और स्वाती हो तो सिद्धियोग जानना। ये योग अपने अपने नामोंके अनुसार फल देते हैं ॥ ३० ॥

देशविशेषसे कुयोगोंका परिहार–

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः।
हूणवंगखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

(अन्वय.) तिथिवारोत्थाः कुयोगाः तिथिभोत्थाः कुयोगाः भवारजाः कुयोगाः तथा त्रितयजाः कुयोगाः एते हूणवङ्गखशेषु एव देशेषु वर्ज्या इति ॥ ३१ ॥

अर्थः-तिथी और वारके संयोगसे उपजे हुए कुयोग, तिथी और नक्षत्र के संयोगसे उपजे कुयोग, और वार वो तिथी से उपजे कुयोग, हूंण, वङ्ग और खश इन देशोंमें क्रमसे वर्जित है। और तिथी, वार, नक्षत्र तीनों से उपजे हुए कुयोग तीनों में वर्जित हैं ॥३१॥

सब शुभकृत्योंमें वर्ज्य दोष—

सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्धे निशाह्नोर्घटी
त्र्यंशं वै कुनवांशकं ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयम्।
उत्पातग्रहतोऽद्रयहांश्च शुभदोत्पातैश्च दुष्टं दिनं
षण्मासं ग्रहभिन्नभं त्यज शुभे यौद्धं तथोत्पातभम् ॥३२॥

(अन्वयः) विधुपापयुक्तनुलवौ सर्वस्मिन् शुभे कार्य्ये हेविद्वन् त्यज निशाहोर्घे किन्तु द्वितीयप्रहरकाले घटीत्र्यंशं वै निश्चयेन सर्वस्मिन् शुभे कार्ये त्यज कुनवांशकं किन्तु कुत्सितपापग्रहस्य नवांशकं त्यज ग्रहणतः पूर्वं दिनानां त्रयं त्यज उत्पातग्रहतोऽद्रयहाँश्च सप्तदिनानि त्यज, (च) शुभदोत्पातैः यद्दिनं तद्दिनं दुष्टं स्यात् ग्रहभिन्नभं यन्नक्षत्रं ग्रहयौद्धं यन्नक्षत्रं तथोत्पातभं यन्नक्षत्रं तन्नक्षत्रं षण्मासं षड्मासपर्य्यन्तम् सर्वस्मिनेव शुभे कार्ये त्यज ॥ ३२ ॥

अर्थः-सब प्रकारके शुभकार्यमें चन्द्रमासे और पापग्रहोंसे युक्त हुए लग्न और लग्नके नवांशको त्यागे और आधीरात तथा दोपहरके पहले १० पल और पीछे १० पल त्यागने और पापग्रहका नवांशक और ग्रहणके दिनसे पहले तीन दिन त्यागने और जिस दिन उत्पात हो तथा ग्रहण हो तिससे ७ दिन त्यागने और भूमिकंप आदि उत्पातों से दुष्ट हुआ १ दिन त्यागना और ग्रहों से भिन्न (वेधा) हुआ नक्षत्र और ग्रहों के युद्धसे युक्त हुआ नक्षत्र और भौम दिव्य आदि उत्पातोंसे युक्त हुआ नक्षत्र ६ महीनों तक त्यागे। अर्थात् ये सब तरह के शुभकार्योंमें वर्जित हैं ॥ ३२ ॥

ग्रहणनक्षत्रमें ग्रासभेदसे त्याज्य महीने औ दिवस—

नेष्टं ग्रहर्क्षं सकलार्धपादग्रासे क्रमात्तर्कगुणेंदुमासान्।
पूर्वं परस्तादुभयोस्त्रिघस्रा ग्रस्तेऽस्तगे वाभ्युदितेऽर्धखंडे ॥३३॥

(अन्वय.) सकलार्धपादग्रासे ग्रहणे सति क्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ग्रहर्क्ष

ग्रहणनक्षत्राम् नेष्टं अर्धात्र इष्टम् ग्रस्ते अस्तगे पूर्वं त्रिग्रस्ता त्रिदिनं नेष्टं वा ग्रस्ते त्युदिते अस्तोदये परस्तात् पश्चात् त्रिदिवं नेष्टं तथा अर्धखण्डे ग्रस्तोदय-ग्रस्तास्तयोरभावेऽपि प्राक् पश्चात् त्रिदिनं नेष्टम् ॥ ३३ ॥

अर्थ.-ग्रहणमें जिस नक्षत्र पर सूर्यचन्द्रमाका सर्वग्रास हुआ हो उसको छः महीने तक त्यागे और जिस नक्षत्रपर आधा ग्रास हुआ हो उसको ३ महीनेतक त्यागे और जिस नक्षत्रपर चौथाई ग्रास हुआहो ,तिसको १ महीनेतक त्यागे और ग्रहण होता हुआ अस्त हो जावै तो पहले ३ दिन त्यागने और होता हुआही ग्रहण उदय होवे तो पिछले ३ दिन त्यागने और अर्धग्रासमें पहले पिछले ३ दिन त्यागने ॥ ३३ ॥

सामान्यत वर्ज्यं पंचांगदूषण—

जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रा-
वैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्धी ।
न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपात-
विष्कंभवज्रघटिकात्रयमेव वर्ज्यम् ॥ ३४ ॥
परिघार्धं पंच शूले षट् च गंडातिगंडयोः ।
व्याघाते नव नाड्यश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु ॥ ३५ ॥

(अन्वयः) जन्मर्क्षमासतिथयो व्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिनानि तिथिक्षयर्धी एते वर्ज्याः न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपातविष्कम्भवज्रघटिका त्रयं एव वर्ज्यम् ॥ ३४ ॥ परिघार्धं शूले पञ्च (च) गण्डातिगण्डयोः षट् व्याघाते नव नाड्यः (च) सर्वेषु कर्मसु वर्ज्या इति ॥ ३५ ॥

अर्थ.-जन्मका नक्षत्र, जन्मका महीना, जन्मकी तिथि, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, पिता आदिकी क्षयतिथि, तिथिक्षय, तिथिकी वृद्धि, क्षय मास अधिकमास, कुलिक अर्धयाम और महापात ये सब शुभ कार्यमें वर्ज्य हैं । विष्कम्भ और वज्रयोगकी आदिकी ३ घड़ी भी वर्जित हैं ॥ ३४ ॥ परिघ योगकी ३० घड़ी, शूलयोगकी ५ घड़ी, गंड और अतिगंड योग की ६ घड़ी, तथा व्याघात योगकी ९ घड़ी वर्जित है । इस प्रकार उक्त विष्कम्भ आदिकी घड़ी शुभकार्योंमें वर्ज्य है ॥ ३५ ॥

पक्षरन्ध्रतिथि और उनकी वर्ज्य घटिका—

वेदांगाष्टनवार्केन्द्रपक्षरंध्रतिथौ त्यजेत् ।

वस्वंकमनुतत्त्वाशाशरा नाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

(अन्वय) वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौ क्रमात् वस्वङ्कमनुतत्त्वाशाशरा नाडीस्त्यजेत् पराः नाड्य शुभा ज्ञेयाः ॥ ३६॥

अर्थः-चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी व चतुर्दशी इन तिथियों में आदि की ८, ९, १४, २५, १०, ५ ये घड़ी त्याज्य और अन्य घड़ी शुभ कही हैं ॥ ३६ ॥

कुलिक कालवेला यमघंट दोष—

कुलिः कालवेला च यमघंटश्च कंटकः

वाराद्‌द्विघ्ने क्रमान्मंदे बुधे जीवे कुजे क्षणः ॥ ३७ ॥

(अन्वयः) वारात् वर्तमानवारात् मन्दे बुधे जीवे कुजे द्विघ्ने क्रमात् कुलिक क्षणः कालवेलाक्षणः (च) यमघण्टक्षण कण्टकः क्षण. स्यादिति ॥ ३७ ॥

अर्थः-रविवार इत्यादि वारों के मध्यमें वर्तमान वारसे शनितक गिन दूना करे तो कुलिक योग होता है और बुधतक गिन दूना करे तो कालवेलायोग होता है बृहस्पति वारतक गिन दूना करे तो यमघंटयोग होता है और मंगलतक गिन दूना करे तो कंटक योग होता है। जैसे रविवारको योग देखना हो तो उससे शनिवार ७ वाँ है उसे दूना करनेसे १४ हुए तो रविवारको १४वाँ मुहूर्त कुलिक होता है और रविवारसे बुधवार ४ है उसे दूना करनेसे ८ हुए सो ८ वाँ मुहूर्त कालवेला होता है और रविवारसे बृहस्पति ५ है उसको दूना करनेसे १० हुए तो १० वाँ मुहूर्त यमघंट होता है और रविवारसे मंगलवार ३ है उसे दूना करने से ६ हुए सो ६ ठवाँ मुहूर्त कंटक होता है। इसी प्रकार जिस वारको देखना हो वहाँ ही देखे। ये चारों योग शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ ३७ ॥

सूर्य आदि वारों में क्रमसे दुर्मुहूर्त—

सूर्ये षट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रे त्रिषट् कुंजगं—

कार्या विश्वपुरंदगः क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्निनक्षां दिशः ।

सौम्ये द्व्यब्धिगजांकदिङ्मनुमिता जीवे द्विपड्भास्करा:
शक्राख्यास्तिथय: कलाश्च भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहा: ॥३८॥
दिग्भास्करा मनुमिताश्च शनौ शशिद्वि-
नागा दिशो भवदिवाकरसंमिताश्च ।
दुष्टक्षण: कुलिककंटककालवेला:
स्युश्चार्धयामयमघंटगता: कलांशा: ॥ ३९ ॥

(अन्वय:) सूर्ये रविवारे षट्स्वरनगदिङ्मनुमिता मुहूर्ता निन्द्या: चन्द्रेऽब्धिषट् कुञ्जरांकार्कविश्वपुरंदरा, मुहूर्ता निन्द्या:, क्षितिसुते द्व्यब्ध्यग्नितर्कादिशो मुहूर्ता निन्द्या: ॥ सौम्येद्व्यब्धि गजाङ्कदिङमनुमिता मुहूर्ता निन्द्या, जीवे द्विपड्भास्करा: शक्राख्यास्तिथय: कलाश्च मुहूर्ता निन्द्या:, भृगुजे वेदेषुतर्कग्रहा: दिग्भास्करा मनुमिताश्च मुहूर्ता निन्द्या:, शनौ शशिद्विनागा दिशो भवदिवाकरसम्मिताश्च मुहूर्ता निन्द्या: एषु मुहूर्तेषु केषुचित् दुष्टक्षणो मुहूर्तो ज्ञेय: केषुचित्कुलिककण्टककालवेला: स्यु: (च) केषुचिदर्धयामयमघण्टगता: कलांशा: ॥ ३८ ३९ ॥

अर्थ:-रविवारके दिन ६, ७, ८, १०, १४, ये मुहूर्त, सोमवार को ४,६,८,६,१२, १३, १४, ये मुहूर्त, मंगलवारको २, ४, ३. ६, १० ये मुहूर्त, बुधवारको २, ४, ८ ६, १२, १४, ये मुहूर्त बृहस्पतिवारको २, ६, १२, १४, १५, १६ ये मुहूर्त, शुक्रवार को ४, ५, ६, ६, १०, १२, १४, ये मुहूर्त, शनिवारको १, २, ८, १०, ११, १२ ये मुहूर्त निंदित हैं। इन मुहूर्तों में कोई दुष्टक्षण है कोई कुलिक, कोई कंटक, कोई कालवेला, कोई अर्धयाम, कोई यमघंट ऐसे हैं। और यहाँ मुहूर्त कहनेसे दिन मानका १६ वाँ हिस्सा ग्रहण किया जाता है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

होलिकाष्टकका निषेध —

विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे ।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्रागि्दनाष्टकम् ॥४०॥

(अन्वय) विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्या. (च) त्रिपुष्करे देशे होलिकाप्राक् दिनाष्टकं विवाहादिशुभे कार्ये नेष्टम् ॥ ४० ॥

अर्थः-विपाशा, इरावती, सतलज इननदियोंके दोनों तीरोंपर और त्रिपुष्कर देश में होलाष्टक अर्थात् होली से पहले ८ दिन अच्छे नहीं है ॥ ४० ॥

मृत्युयोगादि दुष्टयोगोंका परिहार—

मृत्युक्रकचदग्धादीनिंदौ शस्ते शुभान् जगुः
केचिद्यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निंदितान् ॥४१॥

(अन्वयः) इन्दौ चन्द्रे शस्ते सति मृत्युक्रकचदग्धादीन्शुभान्जगुः, अथ केचिदाचार्या यामोत्तरं मृत्युक्रकचदग्धादीन् शुभान्जगुः अथान्ये आचार्या मृत्युक्रकचदग्धादीन् यात्रायामेव निन्दितान् जगु. ॥ ४१ ॥,

अर्थः-मृत्युयोग, क्रकचयोग व दग्ध आदियोग ये यजमानका शुभचन्द्रमा होवे तो शुभ जानने। और कोई मुनि कहते हैं कि, एक पहर दिन चढ़नेके अनन्तर ये योग शुभदायक हो जाते है, और कोई कहते है कि, ये योग यात्रा अर्थात् परदेशगमन करनेमें ही निंदित हैं ॥ ४१ ॥

उसका दूसरा अपवाद-

अयोगे सुयोगोऽपि चेत्स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।
परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं दिनार्धोत्तरं विष्टिपूर्वंचशस्तम्४२

(अन्वयः) अयोगे सति सुयोग सिद्धयोगोपि चेत्स्यात्तदानी एष सिद्धियोगः अयोगं निहत्य सिद्धिं कार्यसिद्धिं तनोति ॥ अथ परे आचार्या लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशं मृत्युक्रकचादीनां नाश वदन्ति विष्टिपूर्वं च दिनार्धोत्तरं मध्यान्हादनन्तरं शस्तं प्राहुरिति ॥ ४२ ॥

अर्थ.-दुष्टयोगके दिन सुयोग होवे तब भी वह सुयोग दुष्टयोगको दूर कर शुभ फल को देता है। कितनों का मत है कि लग्नकी शुद्धिसे कुयोग आदिका नाश होता है और भद्रा, मंगलवार, वैधृत व्यतिपात प्रत्यरि तारा व जन्म नक्षत्र ये मध्यान्हके उपरांत शुभदायक होते हैं ॥ ४२ ॥

भद्राप्रवेशके कालनियमका विवरण-

शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमीपंचदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे ।
कृष्णेऽन्त्यार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वेभागे सप्तमीशंभुतिथ्योः ॥४३

(अन्वयः) शुक्ले शुक्लपक्षेऽष्टमीपञ्चदश्योः पूर्वार्धे भद्रा भवति एकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे चोत्तरार्धे भद्रा भवति अथ कृष्णे कृष्णपक्षे तृतीयादशम्योरन्त्यार्धे भद्रा स्यात् सप्तमीशम्भुतिथ्योः पूर्वे भागे पूर्वार्धे भद्रा स्यादिति ॥ ४३ ॥

अर्थः—शुक्लपक्षकी अष्टमी और पूर्णिमाको पूर्वभाग अर्थात् पहिली ३० घड़ी तक भद्रा रहती है और शुक्लपक्षकी एकादशी और चतुर्थीको परभाग अर्थात् अन्तकी ३० घड़ी तक भद्रा रहती है। कृष्णपक्षकी तृतीया और दशमी को पिछली ३० घड़ी तक भद्रा रहती है और कृष्णपक्षकी सप्तमी और चतुर्दशी को पहली ३० घड़ी तक भद्रा रहती है ॥ ४३ ॥

भद्राका मुख पुच्छादि विभाग-

पंचद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शरा
विष्टेरास्यमसद्गजेंदुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु ।
यामेष्वंत्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे ।
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ च पूर्वार्धजा ॥४४॥

(अन्वयः) पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभू यामादि किन्तु प्रहरादि शराः घट्यः विष्टेः आस्यं प्रोक्तं तदसत् गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु यामेषु अन्त्यघटीत्रयं विष्टेः पुच्छं प्रोक्तं तच्छुभकरं तथा तिथ्यपरार्धजा विष्टिः सा वासरे शुभकरी भवति (तु) पूर्वार्धजा विष्टिः सा रात्रौ शुभकरी भवतीति ॥ ४४ ॥

अर्थः—शुक्लपक्ष की चतुर्थीके पाँचवें प्रहरके आदि की पाँच घड़ी, अष्टमीके दूसरे प्रहरके आदिकी पांच घड़ी, एकादशीके सातवें प्रहरकी आदिकी पांचघड़ी, पौर्णिमाके चौथे प्रहरकी आदिकीपांच घड़ी; कृष्णपक्षमें तृतीयाकेआठवेंप्रहरकी आदिकीपांच घड़ी, सप्तमीके तीसरे प्रहरकी आदिकी पांच घड़ी, दशमीके छठे प्रहरके आदिकी पांच घड़ी; और चतुर्दशीके पहले प्रहरके आदिकी पांचघड़ी, भद्राका मुख कहाता हैं। इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है। तथा शुक्लपक्षमें चतुर्थी के आठवेंप्रहरके अन्त की तीन घड़ी, अष्टमीके पहले प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी, एकादशीके

द्वितीय प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी, पौर्णिमाके तीसरे प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी, कृष्णपक्षमें तृतीयाके सातवें प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी सप्तमीके दूसरे प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी, दशमीके पांचवें प्रहर के अन्तकी तीन घड़ी, चतुर्दशीके चौथे प्रहरके अन्तकी तीन घड़ी ये भद्राकी पुच्छ कहाती है। इनमें किया कार्य शुभ होता है। और यदि परभागकी भद्रा दिनमें होवै और पूर्वभागकी भद्रा रात्रिमें होवै तब भी वह भद्रा शुभ जाननी ॥ ४४॥

भद्रा का विचार—

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥४५॥

(अन्वयः) अब्जे चन्द्रमसि कुम्भकर्कद्वये स्थिते सति भद्रा मर्त्ये मनुष्यलोके तिष्ठति अथ अजात्त्रयेऽलिगे। स्थिते चन्द्रे भद्रा स्वर्गे तिष्ठति। स्त्रीधनुर्जूकनक्रे स्थिते चन्द्रेऽधो भद्रा तिष्ठति, भद्रा यत्र तिष्ठति तत्रैव तत्फलं ददाति ॥४५॥

अर्थः—कुम्भ मीन कर्क व सिंह इन राशियोंपर चन्द्रमा होवै तो भद्राका वास मनुष्यलोकमें होता है। मेष वृष मिथुन व वृश्चिक इन राशियोंपर चन्द्रमा होवै तो स्वर्ग लोकमें। कन्या- धनु तुला व मकर इन राशियोंपर चन्द्रमा होवै तब पाताललोकमें भद्रा का वास जानना। जिस लोकमे भद्रा हो उसी लोकमें भद्राका फल होता है ॥ ४५ ॥

कालशुद्धमें वर्जित कार्य—

वाप्यारामतडागकूपभवनारंभप्रतिष्ठेव्रता-
रंभोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानि सोमाष्टके।
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतं
नीलोद्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम् ॥४६॥
दीक्षामौंजविवाहमुण्डनमपूर्वं देवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसन्दर्शाभिषेकौ गमम्।
चातुर्मास्यसमावृती श्रवणयोर्वेधं परीक्षां त्यजेद्
वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासे तथा ॥४७॥

(अन्वयः) वाप्यारामतड़ागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठे व्रतारंभोत्सर्गवधूप्रवेशन महादानानि सोमाष्टके गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्म वेदव्रतं नीलोद्वाहं अथातिपन्नशिशुसंस्कारान् सुरस्थापनम् दीक्षामौञ्जि विवाहमुण्डनं अपूर्वं देवतीर्थेक्षणं सन्यासाग्निपरिग्रहौ नृपतिसंदर्शाभिषेकौ गमम् । चातुर्मास्य समावृती श्रवणयो र्वेधं परीक्षां एतानि कर्म्माणि त्यजेत् इज्यसितयोः वृद्धत्वास्त शिशुत्व अर्थात् वृद्धत्वे शिशुत्वे बाल्ये च तथा न्यूनाधिमासे क्षयमासे अधिमासे च त्यजेन्न कुर्यादिति भावः ॥ ४६-४७ ॥

अर्थः-बावली, बाग, तालाव, कूआँ, गृह इनका आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतका आरम्भ और उद्यापन वधूप्रवेश तुलाआदि महादान, सोमयोग, अष्टकश्राद्ध गोदान (केशांतकर्म) नये अन्नकी इष्टि, जलकी शाला, प्रथम श्रावणीकर्म; प्रथम वेदकाव्रत वृषोत्सर्ग, बालकोंका कालातीत संस्कार देवताओंकी स्थापना ॥४६॥

और भी—

अर्थः-मंत्रग्रहण, यज्ञोपवीत, विवाह, मुंडन, देवता तथा तीर्थका प्रथम दर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, राजाका दर्शन, राजाका अभिषेक, प्रथम गमन, चतुर्मास व्रत, चतुर्मासके नियम, कानोंका छेदना, परीक्षा (दिव्य शपथ आदि लेना) इनको जब वृद्ध, बालक, अस्त, ऐसे बृहस्पति और शुक्र होवें अथवा क्षयमास और अधिकमास होवै तो त्याग देवै ॥ ४७ ॥

सिंह मकरादिस्थित गुरुका अतिदेश—

अस्ते वर्ज्यं सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यं केचिद्वक्रगे चातिचारे ।
गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे प्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम्॥४८॥

(अन्वयः) यदस्ते कर्म वर्ज्यं तत् कर्म्म सिंहनक्रस्थजीवे वर्ज्यम् केचिदाचार्या वक्रगे (च) अतिचारे गुर्वादित्ये विश्वघस्रेऽपि पक्षे दन्तइत्यादि भूषां प्रोचुः ॥ ४८ ॥

अर्थः-जो बृहस्पतिके अस्तमें वर्जित है वह सिंह और मकरके बृहस्पतिमें भी वर्जित है और कुछ मुनियोंके मतसे जब बृहस्पति वक्री हो अथवा अतिचारी हो तब भी शुभकर्म वर्जित है । और जब सूर्य्य और बृहस्पति एक राशिपर होवें और तेरह १२ दिनका पक्ष होवे तब भी शुभकार्य नहीं करना । हाथीदांत तथा रत्नआदिसे युक्त आभूषण भी न धारण करै ॥ ४८ ॥

सिंहस्थ गुरुका तीन प्रकारसे परिहार—

सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्टोऽथ गोदोत्तरतश्च यावत् ।
भागीरथीयाम्यतटं हि दोषो नान्यत्र देशे तपनेऽपि मेषे ॥४९॥

(अन्वयः) गुरौ सिंहे सिंहस्थिते सिंहलवेपि स्थिते सति विवाहः नेष्टः अथच गोदोत्तरतः भागीरथीयाम्यतटं (हि) यावत् स्थितः गुरुः तावन्नेष्टः, अन्यत्र देशे दोषो नैव तपनेपि सूर्ये मेषे सति तदा कुत्रापि देशे दोषो न भवति॥४९

अर्थः-सिंहके बृहस्पतिमें सिंहका नवमांश हो तो विवाह करना इष्ट नहीं है, इसका विचार गोदवारी नदीके उत्तर तटसे लेकर गंगाजीके दक्षिण तटतक जो देश हैं उनके लिये है । अन्य देशोंमें नहीं । और जब मेषराशिपर सूर्य आवै तब भी सिंहके बृहस्पतिमें विवाह करना अच्छा है ॥ ४९ ॥

सिंहस्थ निषेधका पुनर्विधान –

मघादिपंचपादेषु गुरुः सर्वत्र निंदितः ।
गंगागोदांतरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत ॥ ५० ॥
मेषेऽर्के सन् व्रतोद्वाहो गंगागोदांतरेऽपि च ।
सर्वःसिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिंगे गौडगुर्जरे ॥ ५१ ॥

(अन्वयः) गुरुः मघादिपञ्चपादेषु सर्वत्र विवाहो निन्दितः । गङ्गागोदान्तर देशं हित्वा विहाय शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ ५० ॥

(अन्वयः) अर्के सूर्ये मेषे सति गङ्गागोदान्तरे अपि व्रतोद्वाहौ सत् (च) कलिंगे गौड़ गुर्जरे सिंहगुरुः, अर्थात् सिंहराशिस्थो गुरुः सर्वो वर्ज्य इति ॥५१॥

अर्थः-मघानक्षत्रके ४ चरण और पूर्वाफाल्गुनी के १ चरण तक बृहस्पति गंगा गोदावरी नदीके मध्यके देशोंको त्याग संपूर्ण कामोंमें निन्दित है । और फाल्गुनीके २ चरणसे लेकर उत्तराफाल्गुनीके १ चरणतक स्थित हुआ बृहस्पति दोषको नहीं करता ॥ ५० ॥ मेषराशिपर सूर्य होवे तो सिंहके बृस्पतिमें भी गंगा [illegible]वरीके मध्यस्थ देशोंमें विवाह और जनेऊ का करना शुभ है । कलिंग, गौड, गुर्जर इन देशोंमें संपूर्ण सिंहका बृहस्पति वर्जित है ॥ ५१ ॥

मकरस्थ गुरुका दो प्रकारसे परिहार-

रेवापूर्वे गंडकीपश्चिमे च शोणस्योदग्दक्षिणे नीच ईज्यः ।

वर्ज्यो नायं कौंकणे मागधे च गौडे सिंधौ वर्जनीयः शुभेषु ५२

(अन्वयः) रेवापूर्वे, गण्डकीपश्चिमे शोणस्योदक्दक्षिणे (च) नीचईज्यः मकरस्थगुरुर्न वर्ज्यः। कौङ्कणे मागधे (च) गौडे सिन्धौ अयं नीचस्थोगुरुः शुभेषु शुभकृत्येषु वर्जनीय इति ॥ ५२ ॥

अर्थः—नर्मदानदीसे पूर्वके देशोंमें, गंडकीनदीसे पश्चिमके देशोंमें शोणभद्रसे उत्तर और दक्षिणके देशोंमें मकरराशिका बृहस्पति वर्जित नहीं है। कौंकण, मागध, गौड़, सिंधु इन देशोंके विषयमें मकरका बृहस्पति शुभकार्योंमें वर्जित है ॥ ५२ ॥

लुप्तसंवत्सरदोष—

गोऽजांत्यकुम्भेतरभेऽतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेति वक्रितः।
तदा विलुप्ताब्द इहातिनिन्दितः शुभेषु रेवासुरनिम्नगांतरे॥५३॥

(अन्वयः) गोऽजान्त्यकुम्भेतरभे राशौ अतिचारगो गुरुः वक्रितः सन् पूर्वराशिं नो एति तदा विलुप्ताब्दः स्यात् इह विलुप्ताब्दः रेवासुरनिम्नगान्तरे देशे शुभेषु शुभकृत्येषु अतिनिन्दितो भवतीति ॥ ५३ ॥

अर्थः—वृषभ, मेष, मीन, कुँभ, इनसे अन्य अर्थात् मिथुन, कर्क सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, इन राशियोंपर अतिचारको प्राप्त हुआ बृहस्पति मार्गी हो जाय और वक्री होकर पूर्वराशिपर न आवै तो विलुप्ताब्द जानना। यह नर्मदा और गंगाजीके बीचमें शुभकार्यों में निन्दित है ॥ ५३ ॥

वारों की प्रवृत्ति—

पादोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्धतः।
ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्वं तथाधो दिनपप्रवेशनम्॥५४॥

(अन्वयः) पादोनरेखा परपूर्वयोजनैः पलैस्तिथयः युतोनाः कार्यास्ता दिनार्द्धत ऊनाधिकाश्चेत् तद्विवरोद्भवैः पलै रूर्ध्वं तथाधः दिनपप्रवेशनम् स्यात् किन्तु वारप्रवृत्तिरिति ॥ ५४ ॥

अर्थः—लंकासे सुमेरुपर्वत–"पुरी राक्षसी देवकस्याथ कांची" इस श्लोकके अनुसार जिस जिस देशमें रेखा गई है उसे मध्यरेखा कहते हैं। सो जिस देशकी वारप्रवृत्ति देखनी हो वह देश मध्यरेखासे पूर्व वा पश्चिमको जितने योजन

पर होवै उसका चौथा हिस्सा उन्हीं योजनोंमें घटा दे इसकी पादोनरेखा कहते हैं और यही पल समझने चाहिये सो जितने पल होवें उनको पन्द्रह घटिकाओं में जोड़े या घटा दे, जो मध्यरेखासे अपना देश पश्चिमको हो तो रेखा पलोंको पन्द्रह घड़ीमें घटा दे। और जो मध्यरेखासे अपना देश पश्चिमको हो तो रेखा पलोंको पन्द्रह घडीमें जोड़दे। इस प्रकार रेखापलोंसे न्यून और अधिक की हुई घड़ी और पल हैं। उनको दिनके अर्ध भागकी घटी पलसे अन्तर करदे इसे विवर कहते हैं। इस विवरकी घटी पलों समान सूर्यउदयके पूर्व वा अनन्तर दिनके स्वामीका प्रवेश होता है और जो दिनार्धसे युतोन घड़ी कमती हो तो सूर्यके उदयसे अनन्तर दिनके स्वामीका प्रवेश होता है और दिनार्धसे ज्यादा होवे तो सूर्यके उदयसे विवर घटी तक पूर्व दिनके स्वामीका प्रवेश जानना और जो सम होवे तो सूर्योदयके समान दिनके स्वामीका प्रवेश जानना। जैसे कुरु क्षेत्रसे पूर्वको काशी ६३ योजन है। इसका चतुर्थांश १५, ४५ हुआ। यह योजन पलोंमें घटाया, तब ४७; १५ रहे और इस अंकको पन्द्रह घड़ीमें घटानेसे जब १४, १३ रहे और इससे दिनार्ध १६, ३० जो ये हैं इससे अन्तर किये तो २, १७ इसको विवर कहते हैं। दिनार्धके अधिक होनेसे विवरकी जो घटी २ पल १७ इस कालके अनन्तर सूर्योदयसे वारकी प्रवृत्ति जाननी और जो दिनार्ध १३, १५ऋ होवे तो इसकी विवर घटी० पल ५८ हुआ सो दिनार्धके न्यून होनेसे विवरकी जो घटी० पल ५८ है इतनी ही घड़ी पर सूर्य उदय से पहले वारकी प्रवृत्ति होती है॥ ५४॥

वारप्रवृत्तिका प्रयोजन आदि और कालहोरादि-

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षह्रच्छेषवर्जिताः।
सैकास्ताष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात्क्रमात्॥ ५५॥

(अन्वयः) वारादे. या घटिकास्ता द्विघ्नाः स्वाक्षहृत् शेषवर्जिताः कार्याः नगै सप्तभि स्तष्टास्तदा दिनपात् क्रमात् कालहोरेशाः स्युरिति॥ ५५॥

अर्थः-अब कालहोराको कहते हैं जिस वारमें जितनी घटिकाओं पर ग्रहकी होरा देखना हो उन घटिकाओंको दुगुनी करना और दुगुनी की हुई घटिकाओं को दो दोजगह स्थापित करना। अनंतर एक जगहकी दुगुनी की हुई घटिकाओं में ५ का भाग देना जो अंक लब्ध होवै उसको त्यागके शेष बचे हुये अंकको दूसरी जगह स्थापित और दुगुनी की गई ऐसी घटिकाओंमें घटा देना और

एक १ अंक जोड़ देना ऐसे भी एक युक्त घटिओंका समूह है उसमें ७ सातका भाग देना ऐसा करनेसे जो बचा हुआ शेष अंक है उससे जिस दिन होरा देखनी हो उस दिन जो वार हो उससे क्रमपूर्वक दिनकर होरा का स्वामी जानना। अब उदाहरण कहते हैं, जैसे-रविवारको ६ घड़ीदिन चढ़े होरा देखना हो तो ६ घटिकाओं को दुगुनी करने से १२ हुए। इन बारहोंको दो जगह स्थापित करके एक जगहके १२ में पाँचका भाग दिया तब शेष बचे २ इस अंकको पहले दूसरी जगह स्थापितकी हुई जो बारह घटिका हैं उनमें घटानेसे १० हुए इनमें एक अंकयुक्त करनेसे ११ घटिकाओंका समूह हुआ इनमें सातका भाग देने से शेष ४ बचे, इसको रविवारसे गिननेसे चौथी बुधकी होरा हुई। इसी प्रकार अन्य भी होरा जान लेना और सुगम रीतिसे होरा देखनी हो तो जिस दिन होरा देखनी हो, उस दिन जो वारहो उसकी अढ़ाई घड़ी आदि में होती है उसके पीछे अढ़ाई घड़ी छठे ग्रहकी होरा होती है। ऐसे जान लेना ॥५५॥

कालहोराका प्रयोजन-

वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य।
कुर्याद्दिक्शूलादि चिंत्यं क्षणेषु नैवोल्लंघ्यःपारिघश्चापि दंडः५६

(अन्वयः) यत्कर्म यस्मिन् वारे प्रोक्तं तत्कर्म तस्य दिनस्य कालहोरासु प्रोक्तम् यत्कर्म धिष्ण्ये प्रोक्तं तदस्य स्वामितिथ्यंशके कुर्यात् क्षणेषु दिक्शूलादि चिन्त्यं पारिघः दण्डश्चापि नैव उलङ्घ्यः ॥ ५६ ॥

अर्थः—जो दानादि जिस वारमें करने को कहा है वह उसकी कालहोरामें करना और जो कर्म जिस नक्षत्र में कहा है वह उस नक्षत्र के स्वामी के मुहूर्तमें करना परन्तु इन मुहूर्तों में दिक्शूलादि का विचार करना और मुहूर्त में परिघ दण्ड को उल्लंघित नहीं करना ॥ ५६ ॥

मन्वादि और युगादि तिथि-

मन्वाद्यास्त्रितिथौ मधौ तिथिरवी ऊर्जे शुचौ दिक्तिथी
ज्येष्ठेऽन्त्ये च तिथिस्त्विषे नव तपस्यश्वाः सहस्ये शिवा ।
भाद्रेऽग्निश्च सिते त्वमाष्ट नभसः कृष्णे युगाद्याः सिते
गोऽग्नी बाहुलराधयोर्मदनदर्शौ भाद्रमाघासिते ॥ ५७ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ शुभाशुभप्रकरणम् ॥ १ ॥

(अन्वयः) मधौ सिते पक्षे त्रितिथी ऊर्जे तिथिरवी शुचौ दिक्तिथी ज्येष्ठे अन्त्ये च तिथिः तु इषे नव तपसि अश्वाः सहस्ये शिवा च भाद्रे अग्नि एते मन्वाद्या भवन्ति तु नभसः कृष्णे अमाष्ट (आमावास्याष्टमी च) बाहुलराधयोः सिते गोग्नी भाद्रमाघासिते मदनदर्शौ एते युगाद्या भवन्ति ॥ ५७ ॥

अर्थ -चैत्रके महीनेमें शुक्लपक्षकी तृतीया और पौर्णिमा कार्तिकके महीनेमें शुक्ल पक्षकी पौर्णिमा और एकादशी, आषाढ़में शुक्लपक्षकी १० और पौर्णिमा, ज्येष्ठ और फाल्गुनमें पौर्णमासी आश्विनमें शुक्लपक्षकी नौमी, माघमें शुक्ल-पक्षकी सप्तमी, पौषमें शुक्लपक्षकी एकादशी, भाद्रपदमें शुक्लपक्षकी तृतीया और श्रावणमें कृष्णपक्षकी अमावस्या और अष्टमी, ये तिथियां मन्वादि हैं। कार्तिकके शुक्लपक्षकी नवमी सतयुगकी आदि और वैशाखके शुक्लपक्षकी तृतीया त्रेतायुगकी आदि और माघके कृष्णपक्षकी अमावास्या द्वापरयुगकी आदि और भाद्रपदके कृष्णपक्षके त्रयोदशी कलियुग आदि ऐसे ये युगोंकी आदि की तिथि हैं ये सब तिथियां शुभकार्योंमें निंदित हैं ॥ ५० ॥

इति शुभाशुभप्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम् २ ।

नक्षत्रों के स्वामी और संज्ञा-

नासत्यांतकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितोज्योरगा
ऋक्षेशाः पितरो भगोऽर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ।
शक्राग्नी खलु मित्र इन्द्रनिर्ऋतिक्षीराणि विश्वे विधि
र्गोविंदो वसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ १ ॥

(अन्वयः) नासत्यान्तकवह्नि धातृशशभृद्रुद्रादि तोयोरगा पितरः भगोर्य-मरवित्वष्टासमीरः एते ऋक्षेशा भवन्ति (च) शक्राग्नी (खलु) इति निश्चयेन मित्रशक्रनिर्ऋतिक्षीराणि विश्वे विधिः गोविन्दो वसुतोयपाऽजचरणाऽहिर्बुध्न्य पूषाभिधा एते क्रमात् ऋक्षेशा भवन्ति ॥ १ ॥

अर्थः-आगे कहे हुए देवता क्रम से नक्षत्रों के स्वामी हैं। जैसे अश्विनी के स्वामी दोनों अश्विनी कुमार, भरणी का यमराज, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशिरा का चन्द्रमा, आर्द्रा के ११ रुद्र, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का बृहस्पति, आश्लेषा का सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी का भगदेवता, उत्तरा फाल्गुनी का अर्यमा, हस्तका सूर्य, चित्रा का त्वष्टा, स्वाती का वायु, विशाखा का इन्द्र और अग्नि, अनुराधा का मित्र, ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल का राक्षस, पूर्वाषाढ का क्षीर अर्थात् जल, उत्तराषाढ के विश्वेदेव अभिजित् का ब्रह्मा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरुण, पूर्वाभाद्रपद का अजपात, उत्तरा भाद्रपद का अहिर्बुध्न्य और रेवती का स्वामी पूषा ॥ १ ॥

ध्रुव नक्षत्र और उनका कार्य--

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशांत्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥

(अन्वयः) भास्कर उत्तरात्रयरोहिण्यः (च) ध्रुवं स्थिरं स्यात् तत्र ध्रुव-नक्षत्रेषु स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादि सिद्धये भवति ॥२॥

अर्थः-तीनों उत्तरा अर्थात् उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी ये नक्षत्र और रविवार इनकी ध्रुव और स्थिर संज्ञा है। इनमें स्थिर-कर्म और बीज बोना घरमें प्रवेश करना और बाग लगाना आदि शब्द से मृदु-संज्ञक नक्षत्रों में कहे कार्य भी करने उचित हैं ॥ २ ॥

चर नक्षत्र और उनका कार्य--

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन्गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ ३ ॥

(अन्वयः) स्वात्यादित्ये श्रुत स्त्रीणि चन्द्रः (च) अपि इति चरं चलं स्यात् तस्मिश्चरनक्षत्रे गजादिकारोहोवाटिकागमनादिकं शुभं भवति ॥ ३ ॥

अर्थः-स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा ये नक्षत्र और चंद्रवार इनकी चर और चल संज्ञा है। इनमें हाथी, घोड़ा, ऊँट आदि की सवारी और फुलवाड़ी का लगाना और फुलवाड़ी में प्रथम जाना ये कार्य शुभ हैं और आदि शब्द से लघु नक्षत्रों में कहे कार्य भी करने शुभ हैं ॥ ३ ॥

उग्र नक्षत्र और उनका कार्य—

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥४॥

(अन्वयः) पूर्वात्रयं याम्यमघे तथा कुजो भौमः, उग्रं उग्रसंज्ञक. क्रूरं क्रूर-संज्ञकश्च स्यात् तस्मिन्नुग्रनक्षत्रे घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि आदि शब्दा दन्यदपि सिध्यति ॥ ४ ॥

अर्थः-तीनों पूर्वा अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा ये नक्षत्र और मंगलवार इनकी उग्र और क्रूर संज्ञा है । इनमें शत्रु को मारना अग्नि लगाना, शठता करना, विष देना और हथियारों का कर्म ये सब कार्य शुभदायक हैं और आदि शब्द से दारुण नक्षत्रों में कहे कार्य भी करने शुभ हैं ॥ ४ ॥

मिश्र नक्षत्र और उनका कार्य—

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ॥ ५ ॥

(अन्वयः) विशाखाग्नेयभे सौम्योबुधश्च मिश्रसंज्ञं साधारण संज्ञं च स्यात् तत्र मिश्रसंज्ञेषु नक्षत्रेषु अग्निकार्यं (च) मिश्रं वृषोत्सर्गादि सिद्धये भवति ॥ ५ ॥

अर्थः-विशाखा और कृत्तिका ये नक्षत्र और बुधवार इनकी मिश्र और साधारण संज्ञा हैं । इनमें अग्निसम्बन्धी कर्म, चीजों को मिलाना, वृषोत्सर्ग करना और आदि शब्द से उग्र नक्षत्रों में कहे कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ५ ॥

लघुनक्षत्र और उनका कार्य-

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥

(अन्वयः) हस्ताश्विपुष्याभिजितः तथा गुरुः क्षिप्रं लघुः स्यात् तस्मिन् लघुनक्षत्रे पण्यरतिज्ञानं भूषा शिल्पकलादिकं शुभं भवति आदिशब्दात् चरनक्षत्रोक्तमपि कार्य्यम् ॥ ६ ॥

अर्थः-हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् ये नक्षत्र और बृहस्पतिवार

इनकी क्षिप्र और लघु संज्ञा है। इनमें दुकान खोलना, मैथुन कर्म करना, आभूषण बनाना, चित्रादि निकालना, किसी विद्या का सीखना और आदि पद से चर नक्षत्रों में कहे कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ६ ॥

मृदु नक्षत्र और उनका कार्य—

मृगांत्यचित्रा मित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा
तत्र गीतांबरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ ७ ॥

(अन्वयः) मृगान्त्यचित्रा मित्रर्क्षं तथा भृगुः शुक्रः मृदु मैत्रं स्यात् अर्थात् मृदु संज्ञं मैत्रसंज्ञं च स्यात् तत्र तस्मिन् नक्षत्रे गीताम्बरक्रीड़ा मित्र कार्यविभूषणं शुभं भवति ॥ ७ ॥

अर्थः—मृगशिरा, रेवती व अनुराधा, ये नक्षत्र और शुक्रवार इनकी मृदु और मैत्र संज्ञा है। इनमें गानविद्या का अभ्यास, नवीनवस्त्र धारण करना, क्रीडा मित्र का काम करना और आभूषण पहिनना या बनवाना ये सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ७ ॥

तीक्ष्ण नक्षत्र और उनका कार्य—

मूलेंद्राद्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

(अन्वयः) मूलेन्द्राद्राहिभं नक्षत्रं सौरिः शनैश्चरः तीक्ष्णं तीक्ष्णसंज्ञं दारुण संज्ञकम् तत्र तीक्ष्णनक्षत्रे अभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकं शुभं स्यात् ॥ ८ ॥

अर्थः—मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, व अश्लेषा ये नक्षत्र और शनिवार इनकी तीक्ष्ण और दारुण संज्ञा है। इनमें किसी को मन्त्र और शस्त्रों से मारना और क्रूर कार्य करना और पशुओं को वश में करना ये कार्य सिद्ध होते हैं और शब्द से बंधन और स्थिर कार्य भी सिद्ध होते हैं ॥ ८ ॥

अधोमुख, ऊर्ध्वमुख और तिर्यङ्मुख नक्षत्र—

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादिति ज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत ९

(अन्वयः) मूलाहि मिश्रोग्रं नक्षत्रं अधोमुखं भवेत् आर्द्रेज्यहरित्रयं ध्रु-

मूर्ध्वास्यं भवेत् मत्रकरानिलादिति ज्येष्ठाश्विभानि नक्षत्राणि तिर्यङ्मुखं भवेत् एषु नक्षत्रेषु ईदृशकृत्यं सत् स्यात् ॥ ९ ॥

अर्थः—मूल, अश्लेषा, कृत्तिका, विशाखा, तीनों पूर्वा, मघा, भरणी ये ९ नक्षत्र अधोमुख अर्थात् नीचे मुखवाले हैं। आर्द्रा पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा रोहिणी, तीनों उत्तरा ये ९ नव नक्षत्र ऊर्ध्वमुख अर्थात् ऊपरको मुखवाले हैं। और मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा, हस्त, स्वाती पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी ये ९ नक्षत्र तिर्यङ् मुख अर्थात् तिरछे मुखवाले हैं। इनमें ऐसेही कार्य अर्थात् ऊर्ध्वमुखोंमें मकान आदिका बनवाना और अधोमुखोंमें कूवां आदिका खोदना और तिर्यङ्मुखोंमें सहतीर आदि का बैठाना, ये सब श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ९ ॥

पवालआदि धारण मुहूर्त-

पौष्णध्रुवाश्विकरपंचकवासवेज्या-
दित्ये प्रवालरदशंखसुवर्णवस्त्रम् ।
धार्यं विरिक्तशनिचंद्रकुजेऽन्हि रक्तं
भौमेध्रुवादितियुगे सुभगा न दध्यात् ॥ १० ॥

(अन्वयः) पौष्ण ध्रुवाश्विकरपञ्चकवासवेज्यादित्ये नक्षत्रे, विरिक्त शनिचन्द्रकुजेन्हि दिने प्रवालरद शंख सुवर्ण वस्त्रं धार्यम्। भौमे मंगल दिवसे रक्तं वस्त्रं धार्यं ध्रुवादिति युगे नक्षत्रे सुभगा स्त्री प्रवालादिकं न दध्यात् ॥ १० ॥

अर्थः-चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी ये तिथियाँ और शनिश्वर, चन्द्र, भौम ये वार इन तिथि वारोंसे रहित रेवती तीनों उत्तरा अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा धनिष्ठा पुनर्वसु पुष्य इन नक्षत्रों में प्रवालकी माला दांतकी चूड़ी शंखकी चूड़ी सुवर्ण सुफेद वस्त्र इनको स्त्री धारण करे और मङ्गलको लालवस्त्र भी धारण करे। और रोहिणी तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य इन नक्षत्रोंमें सुहागिन स्त्री पीछे कहे मूँगा आदिको न धारण करे ॥ १० ॥

वस्त्र दग्ध और फटा होवे तो—

वस्त्राणां नवभागकेषु च चतुष्कोणेऽमरा राक्षसा
मध्यत्र्यंशगता नरास्तु सदशे पाशे च मध्यांशयोः ।

दग्धे वा स्फुटितेऽम्बरे नवतरे पंकादिलिप्ते न स-
द्रक्षोंऽशे नृसुरांशयोः शुभमसत्सर्वांशके प्रांततः ॥११॥

(अन्वयः) वस्त्राणां नवभागाः कार्याः, एषु नवभागेषु चतुष्कोणे अमरा देवाः स्थाप्याः मध्यत्रय भागता राक्षसा ज्ञेयाः नराः सदशे पाशे च मध्यांशयोः स्थाप्याः। चेद्रक्षोंऽशे नवतरेऽम्बरे दग्धे वा स्फुटिते पंकादिलिप्ते सति सत् नः नृसुरांशयोः नवतरेऽम्बरे दग्धे वा स्फुटिते पङ्कादिलिप्ते शुभं स्यात् सर्वांशके राक्षसमनुष्यदेवांशेषु प्रान्तभागे असदनिष्टं फलं भवति ॥ ११ ॥

अर्थः-नवीन वस्त्रके जलने आदिका शुभविचार कहते हैं—वस्त्रके ९ भाग बनाने; तिनमेंसे चारों कोणोंमें देवता स्थापना करै। और बीचके तीन भागोंमें राक्षस और देवताओंके बीचके दोनों भागोंमें मनुष्यको स्थापन करै, जो राक्षस के भागोंमें नवीन वस्त्र जल जाय अथवा फटजाय अथवा उसमें कीच आदि लग जाय तो अशुभ है। मनुष्य और देवताओंके भागमें शुभ है और राक्षस मनुष्य देवता इनके तीनों भागोंमें नवीन वस्त्र जल जाय अथवा कीच आदिसे लिप्त होवै तौभी अशुभ है ॥ ११ ॥

दुष्ट दिनमें भी वस्त्र पहिनना—

विप्राज्ञया तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितं च यत् ।
निंद्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ वस्त्रं धार्यं जगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

(अन्वयः) धिष्ण्ये नक्षत्रे वारादौ अपि निन्द्ये दुष्टेऽपि यद्वस्त्रं विप्राज्ञया ब्राह्मणाज्ञया तथोद्वाहे राज्ञा प्रीत्यार्पितं दत्तं तद्वस्त्रं धार्यमिति बुधा जगुः ॥ १२ ॥

अर्थः—ब्राह्मण की आज्ञासे; विवाहमें और राजाने प्रीतिपूर्वक दिये ऐसे वस्त्रको अशुभ नक्षत्रोंमें और अशुभ वार आदिमें भी पण्डितोंने धारण करना शुभ कहा है ॥ १२ ॥

वेल और वृक्ष लगाना, राजदर्शन और मद्यविक्रय—

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ।

तीक्ष्णोग्रांबुपभे। मघमुदितं क्षिप्रांत्यवन्हिन्द्रभा-
दित्यैन्द्रांबुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः॥१३॥

(अन्वयः) राधामूल मृदु ध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्नक्षत्रैः लतापादपारोपः सत् स्यात् अथो ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवो वासवैः नृपदर्शनं राजदर्शनं कुर्यात्। तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषुमघमुदितं क्षिप्रान्त्यवन्हिन्द्रभादित्येन्द्राम्बुपवासवेषु (हि) इति निश्चयेन गवां क्रयोविक्रयः शस्तः स्यात्॥१३॥

अर्थः—विशाखा, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढ़ उत्तराभाद्र रोहिणी, शतभिषा, हस्त, अश्विनी पुष्य और अभिजित् इन १५ नक्षत्रोंमें बेल और वृक्षोंका लगाना शुभ है। तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिर रेवती चित्रानुराधा हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् श्रवण व धनिष्ठा इन १४ नक्षत्रोंमें राजाका दर्शन करना शुभ है। और मूल ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, मघा, शतभिषा इन नक्षत्रो में मदिरा निकालना शुभ कहा है और हस्त, आश्विनी, पुष्य, अभिजित्, विशाखा, मृगशिर, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, शतभिषा धनिष्ठा इन नक्षत्रोंमें गायोंका वेचना और खरीदना शुभ कहा है॥१३॥

पशुओंकी रक्षा स्थितिनिवेशनिषेध—

लग्ने शुभे चाष्टमशुद्धिसंयुते रक्षा पशूनां निजयोनिभे चरे।
रिक्ताष्टमीदर्शकुजश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषु यानं स्थितिवेशनं न सत् १४

(अन्वयः) लग्ने शुभे (च) अष्टमशुद्धिसंयुते निजयोनिभे स्वीययोनिनक्षत्रे पशूनां रक्षा शस्ता चरे चरनक्षत्रेऽपि पशूनां रक्षा विधेया" रिक्ताष्टमीदर्श कुजश्रवो ध्रुवत्वाष्ट्रेषु पशूनां यानं स्थितिवेशनं च सत् न सत्फलजनकं न भवतीत्यर्थ॥१४॥

अर्थः-शुक्रस्वामीवाला लग्न हो और अष्टमस्थान शुभ और पापग्रहोंसे रहित हो तब पशुओं की रक्षा और पशुओंको मकानमें बांधना और मकान से बाहर निकलना शुभ कहा है। और तैसेही अपनी योनिके नक्षत्रोंमें जैसे अश्व की रक्षा आदि करना और चतुर्थी नवमी, चतुर्थी अष्टमी, आमावास्या ये तिथि मंगलवार और श्रवण तीनों उत्तरा रोहिणी व चित्रा ये नक्षत्र इन्हींमें पशुको घरसे निकलना और घरमें बांधना श्रेष्ठ नहीं कहा है॥१४॥

औषध और सूची कर्मका मुहूर्त—

भैषज्यं सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यङ्गलग्ने
शुक्रेन्द्वीज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च ।
शुद्धे रिःफद्युनमृतिगृहे सत्तिथौ नो जनेभे
सूचीकर्माऽप्यदितिवसुभेत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

(अन्वयः) लघुमृदुचरे मूलभे च भैषज्यम् औषधं भक्षितं सत् स्यात् द्व्यङ्गलग्ने शुक्रेन्द्विज्ये विदि च दिवसे अपिच तेषां शुक्रेन्द्विज्य बुधानां रवेश्चवारे सत्तिथौ भैषज्यं सत् । रिःफद्युनमृतिगृहे शुद्धे भैषज्यं सत् जनेभे जन्मनक्षत्रे नो भैषज्यं सत् अदिति वसुभे तदा मैत्राश्विधिष्ण्ये नक्षत्रे सूचीकर्म अपि कुर्यात् इति ॥ १५ ॥

अर्थः—हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष मूल ये १३ नक्षत्र हों और द्विस्वभाव अर्थात् मिथुन, कन्या, धन, मीन ये लग्न हों और इन्हीं में शुक्र चन्द्रमा बृहस्पति बुध ये हों और इन्ही के वार हों और रविवार हो और बारहवां सातवां आठवां ये स्थान शुद्ध अर्थात् ग्रह से रहित होवें और २।३।५।१०।१३ ये श्रेष्ठ तिथि हों तो इनमें औषधि का बनाना श्रेष्ठ कहा है और जन्मनक्षत्र में श्रेष्ठ नही कहा और पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा व अश्विनी पुष्य इन नक्षत्रों में सुई का कर्म जानना श्रेष्ठ है ॥ १५ ॥

क्रयविक्रय में विशेष विचार—

क्रयर्क्षे विक्रयो नेष्टो विक्रयर्क्षे क्रयोपि न ।
पौष्णांबुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

(अन्वयः) क्रयर्क्षे विक्रयः नेष्टः विक्रयर्क्षे क्रयः अपि नेष्ट, पौष्णाम्बुपाश्विनी वातश्रवश्चित्राः क्रये शुभाः ॥ १६ ॥

अर्थः—खरीदने के नक्षत्रों में बेचना इष्ट नहीं है और बेचने के नक्षत्रों में खरीदना इष्ट नहीं है। रेवती शतभिषा अश्विनी स्वाती श्रवण चित्रा इन नक्षत्रों में वस्तुओं का खरीदना श्रेष्ठ कहा है ॥ १६ ॥

विक्रय और विपणिका मुहूर्त—

पूर्वाद्राशक्रशानुसार्पयमभे केंद्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं सन्विक्रयः सत्तिथौ ।
रिक्ताभौमघटान्विना च विपणिर्मैत्रध्रुवक्षिप्रभै-
र्लग्ने चंद्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे ॥१७॥

(अन्वयः) पूर्वाद्रीशक्रशानुसार्पयमभे नक्षत्रे अथ केन्द्रत्रिकोणे च शुभैः शुभग्रहस्थितैः षट् आयेषु अशुभैः पापग्रहैः घटतनूं कुम्भलग्नं विहाय सत्तिथौ विक्रयः सन् शुभो ज्ञेय. । रिक्ताभौमघटान्विना मैत्रध्रुवक्षिप्रभैः नक्षत्रैः चन्द्रसिते लग्ने पापै. पापग्रहैः व्ययाष्टरहितैः शुभै द्व्यायखे तदा विपणिः सत स्यादिति ॥ १७ ॥

अर्थः—तीनों पूर्वा विशाखा कृत्तिका आश्लेषा व भरणी ये सात नक्षत्र होवें और केन्द्र अर्थात् लग्न चतुर्थ सप्तम दशम स्थानोंमें और द्वितीय नवम और पँचम स्थानोंमें शुभ ग्रह होवें और षष्ठ तृतीय एकादश इन स्थानों में पापग्रह होवें और कुम्भ लग्नके विना अन्य लग्न होवे और श्रेष्ठ तिथि होवे तो वेंचना श्रेष्ठ कहा है और रिक्ता तिथि अर्थात् ४।९।१४ इन तिथियोंको और मङ्गलवारको और कुम्भलग्नको वेर्जके मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् ये १२ नक्षत्र हो और चन्द्रमा शुक्र लग्न में होवे द्वादश और अष्टम स्थानों में पाप ग्रह न हो और द्वितीया एकादश दशम इन स्थानोंमें शुभ ग्रह होवें ऐसे मुहूर्त्तमें दूकानका खोलना श्रेष्ठ है ॥ १७ ॥

घोडा और गज के क्रय विक्रय का मुहूर्त-

क्षिप्रांत्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तार्कदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् १८

(अन्वयः) क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येषु नक्षत्रेषु रविवारदिने वाजि कृत्यं प्रशस्तं स्यात् । (तु) अथ मृदुक्षिप्रनक्षत्रेषु विद्वान् हस्ति कार्यं कुर्यात् ॥ १८ ॥

अर्थ-हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिर, स्वाती शतभिषा, पुनर्वसु इन नक्षत्रों में और मंगलवार और रिक्ता तिथि से वर्जित दिन में घोड़ों का वेचना, अथवा खरीदना, फेरना, आभूषण पहराना आदि

और भी कृत्य श्रेष्ठ कहे हैं, और मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, इन नक्षत्रों में हस्तिका बेंचना खरीदना आदि कर्म करना शुभ है ॥ १८ ॥

अलंकार बनवाने और पहिरने का मुहूर्त—

स्याद्भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक्
तत्तीक्ष्णोग्रविहीनभे रविकुजे मेषालिसिंहे तनौ
तन्मुक्तासहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ
तीक्ष्णोग्राशिवमृगे द्विदैवदहने शस्त्रं शुभं घट्टितम्॥१९

(अन्वयः) त्रिपुष्कर चरक्षिप्रध्रुवे नक्षत्रे भूषाघटनं शुभं स्यात् अथ तीक्ष्णोग्रविहीनभे नक्षत्रे रविकुजे दिने मेषालिसिंहे तनौ लग्ने तत् रत्नयुक् भूषाघटनं कार्यम् । चरध्रुवमृदुक्षिप्रे नक्षत्रे शुभे सत्तनौ तन्मुक्तासहितं भूषाघटनं शुभं भवति तीक्ष्णोग्राशिवमृगे द्विदैवदहने नक्षत्रे शस्त्रं घट्टितं शुभम् स्यात् ॥ १९ ॥

अर्थः—आगे कहे त्रिपुष्करयोग में और स्वाती, पुनर्वसु श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् तीनों उत्तरा और रोहिणी इनमें आभूषण अर्थात् गहने बनवाना श्रेष्ठ कहा है और हीरा पन्ना से जटित गहने बनवाने हों तो मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा तीनों पूर्वा मघा भरणी इनको छोड़ कर अन्य १८ नक्षत्रों में रवि और मंगलवार को और मेष वृश्चिक सिंह इन लग्नों में श्रेष्ठ कहा है पूर्व कहे चरध्रुव मृदु क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में और शुभ लग्न में मोती से जड़े हुए गहने का बनवाना श्रेष्ठ है और मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, अश्विनी, मृगशिर, विशाखा, कृत्तिका इन १३ नक्षत्रों में हथियारों का बनवाना श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

मुद्रापातन और वस्त्रक्षालन का मुहूर्त—

मुद्राणां पातनं सद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वीन्दुसौरे
घस्ले पूर्णाजयाख्ये नच गुरुभृगुजास्ते विलग्ने शुभैः स्यात् ।
वस्त्राणां क्षालनं सद्वसुहयदिनकृत्पंचकादित्यपुष्य

नो रिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषु कार्यं कदापि ॥ २० ॥

(अन्वयः) ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैः नक्षत्रैः । वीन्दुसौरे पूर्णजयाख्ये मस्रे (च) गुरुभृगुजास्ते न च शुभैः विलग्ने तदा मुद्राणां पातनं सत् स्यात् । वसुहयदिनकृत्पञ्चकादित्यपुष्ये नक्षत्रे वस्त्राणां क्षालनं सत् स्यात् रिक्तापर्वषष्ठी पितृदिनरविजज्ञेषु कदापि वस्त्राणां क्षालनं नो कुर्यात् ॥ २० ॥

अर्थ -तीनों उत्तरारोहिणी मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् ये १७ नक्षत्र और सोम शनैश्चरको वर्जके अन्यवार हों और पूर्णा ५।१०।१५ और जया अर्थात् ३।८।१३ ये तिथि हों और बृहस्पति शुक्रका अस्त न हो और शुभ ग्रह अर्थात् बुध गुरु शुक्र इनसे युक्त लग्न हो तो ऐसे मुहूर्त में अशरफी रुपया पैसा आदि धनवाना अर्थात् टकसाल बैठानी श्रेष्ठ है और धनिष्ठा अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा पुनर्वसु पुष्य इन ९ नक्षत्रोंमें वस्त्रोंका धुलाना उत्तम कहा है और रिक्ता अर्थात् ४।९।१४ इन तिथियोंमें और पर्व अर्थात् सूर्य की संक्रान्तिके दिन ८।१५।३०।१४ इन तिथियोंमें और श्राद्धके दिन और बुध इन वारोंमें वस्त्रों को कदापि न धुलावै ॥ २० ॥

खड्ग आदि धारण तथा शय्यादिकोंका उपदेश—

संधार्याः कुन्तवर्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यो विरिक्ते
शुक्रेज्यार्केऽन्हि मैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ।
स्युर्लग्नेऽपि स्थिराख्ये शशिनि च शुभदृष्टे शुभैः केन्द्रगैःस्या-
द्भोगः शय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्य इष्टः ॥ २१ ॥

(अन्वयः) विरिक्ते तिथौ शुक्रेज्यार्केऽन्हि दिने मैत्रध्रुवलघुसहितादित्य शाक्र द्विदैवे नक्षत्रे। कुन्तवर्मेष्वसनशरकृपाणासिपुत्र्यः धार्याः स्युः। अथ हि निश्चयेन स्थिराख्ये लग्ने शशिनि चन्द्रे च शुभदृष्टे शुभैः शुभग्रहैः केन्द्रगैः सद्भिः कुन्तादयो धार्याः स्युः ध्रुवमृदुहर्यन्तकादित्यनक्षत्रे शय्यासनादेः भोग इष्टः स्यात् ॥ २१ ॥

अर्थः-रिक्ता अर्थात् ४।९।१४ इन तिथियोंको छोड़कर अन्य तिथि हों और शुक्र बृहस्पति रवि ये वार हों और मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा तीनों उत्तरा

रोहिणी हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् पुनर्वसु ज्येष्ठा विशाखा ये १५ नक्षत्र हों ऐसे मुहूर्त्तमें भाला कवच धनुष बाण खड्ग छूरी इनका धारण करना श्रेष्ठ हैं। उसी प्रकार वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ इन लग्नोंमें और शुभ ग्रहसे देखाजाता चन्द्रमा हो और लग्न चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें शुभ ग्रह हों तो पूर्व कहे शस्त्र धारण करने। और तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् श्रवण भरणी पुनर्वसु इन नक्षत्रों में शय्या आसन आदिकों का कार्यमें लाना श्रेष्ठ कहा है ॥ २१ ॥

अन्ध आदि नक्षत्र—

अंधाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमांत्याभिधं
मंदाक्षं रविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यंतकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥२२॥

(अन्वयः) वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं नक्षत्रं अन्धाक्षं भवेत् रविविश्वमैत्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं नक्षत्रं मन्दाक्षं भवेत् शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं मध्याक्षं भवेत् स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् स्वक्षं किन्तु स्वक्षसंज्ञम् भवेत् ॥ २२ ॥

अर्थः—धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढ़, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी वरेवती ये नक्षत्र अंधाक्ष अर्थात् अंध कहे हैं। हस्त, उत्तराषाढ़, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा अश्विनी व मृगशिर ये नक्षत्र मन्ददृष्टिवाले हैं। आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा ज्येष्ठा, अभिजित् व भरणी ये नक्षत्र मध्यमदृष्टिवाले हैं और स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तरा भाद्रपदा, मूल, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र सुदृष्टिवाले हैं ॥ २२ ॥

अंध आदि नक्षत्रोंका फल—

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ॥
स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्तौ न सुलोचने ॥ २३ ॥

(अन्वयः) अन्धे अन्धनक्षत्रेषु विनष्टस्यार्थस्य शीघ्रं लाभो भवति मध्ये

मध्याक्षनक्षत्रेषु विनष्टार्थस्य दूरे स्वनगरादतीव दूरे श्रवणं स्यात् सुलोचने सुला-
चननक्षत्रेषु श्रुत्याप्ती न स्याताम् ॥ २३ ॥

अर्थः—अन्ध नक्षत्रोंमें वस्तु चोरी जाय तो जल्दी प्राप्त हो। मन्द नक्षत्रोंमें
चोरी जाय तो यत्न करनेसे मिले। मध्य नक्षत्रोंमें चोरी जाय तो केवल दूरसे
सुनी जाय पर प्राप्त न होवै और सुन्दर नेत्रवाले नक्षत्रोंमें वस्तु खो जाय तो
न सुनी जाय और न प्राप्त होवे ॥ २३ ॥

धनके देने लेने के प्रयोगमें वर्ज्य नक्षत्र-

तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्ट्यां पाते च नाप्यते ॥ २४ ॥

(अन्वयः) तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैरेतत्संज्ञकैर्नक्षत्रैः यद्द्रव्यं दत्तं निवेशितं प्रयु-
क्तं च विनष्टं च तद् द्रव्यं कदाचिदपि नाप्यते तथा विष्ट्यां भद्रायां पाते व्यतीपाते
महापाते वा हृतं द्रव्यम् न आप्यतं इति ॥ २४ ॥

अर्थः-मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, तीनों उत्तरा,
रोहिणी, तीनों पूर्वा, भरणी और मघा इन नक्षत्रोंमें और भद्रा तथा व्यतीपात
योगमें दिया हुआ अथवा अपने पास रक्खा हुआ धन अथवा व्याजमें दिया
हुआ धन वा चोरोंसे हरण किया हुआ धन प्राप्त नहीं होता ॥ २४ ॥

जलाशय खनन और नृत्यारम्भका मुहूर्त—

मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयांत्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनौ सुरगुरौ ज्ञे वा भृगौ खे विधौ।
आप्ये सर्वजलाशयस्य खननं व्यंभोमघैः सेंद्रभैः
स्तैर्नृत्यं हिबुके शुभस्तनुगृहे ज्ञेऽब्ज ज्ञराशौ शुभम्॥२५।

(अन्वयः) मित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः नक्षत्रैः पापैः
पापग्रहैर्हीनबलैः सुरगुरौ तनौ ज्ञे खे स्थिते वा भृगौ खे स्थिते विधौ चन्द्रे आ-
प्ये जलचरराशिस्थिते सति तदा सर्वजलाशयस्य खननं शुभं निगदितम् तैः प्रागु-
क्तनक्षत्रैः व्यंभोमघैः सेन्द्रभैः, शुभे हिबुके ज्ञे तनुगृहे लग्ने अब्जे चन्द्रमसि ज्ञरा-
शौ तदा नृत्यं शुभं स्यादिति ॥ २५ ॥

अर्थः—अनुराधा हस्त तीनों उत्तरा रोहिणी धनिष्ठा शतभिषा मघा पूर्वाषाढ रेवती पुष्य व मृगशिर ये १३ नक्षत्र हों और पापग्रह बलहीन हों और लग्न में बृहस्पति अथवा बुध हो और दशम स्थान में शुक्र हो और चन्द्रमा जलराशि अर्थात् मकर कुम्भ मीन राशियों पर हो तो कुआँ, बावली, तालाव, आदि का खोदना श्रेष्ठ है और पूर्वाषाढ मघा इन नक्षत्रों से वर्जित और ज्येष्ठा सहित पहले कहे नक्षत्र हों अर्थात् अनुराधा हस्त तीनों उत्तरा रोहिणी शतभिषा रेवती पुष्य मृगशिर ज्येष्ठा ये नक्षत्र हों और चतुर्थ स्थान में शुभग्रह हों और लग्न में बुध हो और चन्द्रमा मिथुन कन्या इन पर स्थित हो तो प्रथम नृत्यका आरम्भ करना श्रेष्ठ है ॥ २५ ॥

क्षिप्रे मैत्रे वित्सिताकेंज्यवारे सौम्ये लग्नेऽर्के कुजे वा खलाभे।
योनेर्मैत्र्यां राशिपश्चापि मैत्र्यां सेवा कार्या स्वामिनःसेवकेन

(अन्वयः) क्षिप्रे मैत्रे वित्सिताकेंज्यवारे सौम्ये लग्ने अर्के खलाभे वा कुजे खलाभे योनेः मैत्र्यां सत्यां राशिपः च अपि मैत्र्यां सत्यां तदा सेवकेन जनेन स्वामिनः सेवा कार्या ॥ २६ ॥

अर्थः—हस्त अभिजित् अश्विनी पुष्य मृगशिर रेवती चित्रा व अनुराधा ये नक्षत्र हों और बुध शुक्र सूर्य बृहस्पति ये वार हों और शुभग्रह लग्न में हों और सूर्य अथवा मङ्गल दशवें अथवा एकादशवें स्थान में हों और योनियों की मित्रता हो और राशि स्वामियों की मित्रता हो तो सेवक अर्थात् नौकर से मालिक नौकरी करावै ॥ २६ ॥

ऋणका प्रयोग और ऋणका ग्रहण—

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः।
नारे ग्राह्यमृणं तु संक्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽन्हि य-
त्तदंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥२७॥

(अन्वयः) स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे लग्ने चरे धर्मसुताष्टशुद्धिसहिते तदा द्रव्यप्रयोग शुभः स्यात् आरे ऋणं न ग्राह्यम् (तु) संक्र-

भदिने करेऽर्केऽन्हि (हस्तनक्षत्रसहिते) यदू वंशेषु ऋणं ग्राह्यम् तदू वंशेषु ऋणं भवेत् (च) बुधे कदाचिदपि धनं (स्वधनं) न देयमिति ॥ २७ ॥

अर्थ—स्वाती पुनर्वसु मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा विशाखा पुष्य श्रवण धनिष्ठा व शतभिषा अश्विनी इन नक्षत्रों में और चर लग्न अर्थात् मेष कर्क तुला व मकर ये लग्न हों और नवम पञ्चम अष्टम स्थान शुद्ध हों अर्थात् नवम पञ्चम पापग्रह रहित हों और अष्टम शुभ और पाप से रहित हो ऐसे मुहूर्त में करजा देना शुभ कहा है और मंगल को ऋण नहीं ग्रहण करना और संक्रांति को वृद्धि योग में हस्त नक्षत्र में रविवार को ऋण नहीं ग्रहण करना, क्योंकि उस दिन लिया हुआ ऋण पुत्र पौत्रादिकों से भी कठिनता से उतरता है और बुधवार को तो ऋण किसी काल में भी देना श्रेष्ठ नहीं ॥ २७ ॥

हलप्रवाह का मुहूर्त—

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्कं शनिं
पापैर्हीनवलैर्विधौ जललवे शुक्रे विधौ मांसले ।
लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं न सिंहे घटे
कर्कजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु षष्ठ्यां तथा ॥२८॥

(अन्वयः)मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैः नक्षत्रैः अर्कं शनिञ्च विना पापैः हीनबलैः (बलरहितैः) विधौ चन्द्रमसि जललवे शुक्रे विधौ मांसले देवगुरौ लग्ने तदा हलप्रवहणं शस्तं स्यात् सिंहे घटे कर्कजैणघटे तनौ तथा रिक्तासु षष्ठ्यां तिथौ हलप्रवहणं शस्तं न क्षयकरं भवतीति ॥ २८ ॥

अर्थः—मूल विशाखा मघा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा हस्त अश्विनी पुष्य और अभिजित् इन नक्षत्रों में और सूर्य शनैश्चर को छोड़ अन्य वारों में और पापग्रह बलहीन हों और चन्द्रमा जलराशि के नवांश पर हो और शुक्र चन्द्रमा बलवान् हों और बृहस्पति लग्न में हो तो प्रथम हल चलाना श्रेष्ठ कहा है और सिंह कुम्भ कर्क मेष मकर व तुला इन लग्न में और रिक्ता तिथियों में और षष्ठी तिथियों में प्रथम हल चलावे तो नाश होता है ॥ २८ ॥

बीज बोने का मुहूर्त और फणिचक्र—

एषु श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि भौमं विना

बीजोप्तिर्गदिता शुभा त्वशुभतोऽष्टाग्नींदुरामेंद्वः ।
रामेंद्व्यग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युप्तौ हलेऽर्कोज्झिता-
द्रामाष्टनवाऽष्टभानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत्संति च॥ २६

(अन्वयः) एतेषु (पूर्वोक्तनक्षत्रेषु) श्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनि नक्षत्राणि भौमं विना बीजोप्तिः शुभा गदिता (तु पुनः) अशुभतः किन्तु राहुभतः अष्टाग्नीन्दुरामेन्द्वः रामेन्द्वग्नियुगानि भानि असत् असमीचीनानि, शुभकराणि च उप्तौ हले हलचक्रे अर्कोज्झितात् भात् रामाष्टनवाष्टभानि मुनिभिः असत् प्रोक्तानि सन्ति ॥ २६ ॥

अर्थः-पहले हल चलाने में कहे हुए नक्षत्र में श्रवण शतभिषा पुनर्वसु विशाखा इन नक्षत्रों को और मंगलवार को छोड़ बीजका बोना श्रेष्ठ कहा है। बीज बोने में फणिचक्र कहते हैं। राहु जिस नक्षत्र पर हो तिससे ८ नक्षत्र अशुभ हैं। फिर ३ शुभ हैं। फिर १ अशुभ हैं। फिर ३ शुभ हैं। फिर १ अशुभ है। फिर ३ शुभ हैं। फिर ४ अशुभ है। फिर ३ शुभ हैं। फिर ४ अशुभ हैं। ऐसे शुभ अशुभ जानना। हलचक्र के विषय में कहते हैं-सूर्य से त्यागे हुए नक्षत्र से क्रम से ३ नक्षत्र अशुभ हैं। फिर ८ शुभ हैं। फिर ६ अशुभ हैं। फिर ८ शुभ हैं ॥ २६ ॥

त्वाष्ट्राग्निमित्रकभाद्द्वयेऽब्युपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्केज्यदिने विरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्कौ विना ।
मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे लग्नवर्गे विदो
जीवस्यापि तनौ गुरौ निगदिता धर्मक्रिया तद्बले ३०

(अन्वयः) त्वाष्ट्राग्निमित्रकभाद्द्वयेऽम्बुपलघुश्रोत्रेशिरामोक्षणं भौमार्केज्यदिने शिरामोक्षणं कुर्यात् बुधार्कौ विना विरेकवमनाद्यं शुभं स्यात मित्रक्षिप्रचरध्रुवे रविशुभाहे विदः लग्नवर्गे जीवस्यापि लग्नवर्गे गुरौ तनौ तद्बले किन्तु गुरुबले धर्मक्रिया शुभा निगदिता ॥ ३० ॥

अर्थः-चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिर, शतभिषा, हस्त, अश्विनी पुष्य अभिजित् व श्रवण इन नक्षत्रोंमें और मंगल सूर्य बृहस्पति, इन वारोंमें और पहले कहे हुए नक्षत्रोंमें जुलाब और वमन कराना श्रेष्ठ है। अनु-

गाथा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शत-भिषा, तीनों उत्तरा रोहिणी ये नक्षत्र और रविवार वा शुभ यानी चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्र ये वार और इनके किसी भी लग्नमें बुध वा बृहस्पतिका षड्वर्ग हो वा गुरु लग्नमें हो अथवा करनेवालेको बृहस्पतिका बल हो तो धर्मकी क्रिया यानी कोटिहवनानुष्ठान आदि धर्म कर्म करनेमें शुभ है ॥ ३० ॥

धान्य काटनेका मुहूर्त नक्षत्र आदि कहते हैं-

> तीक्ष्णाजपादकरवन्हिवसुश्रुतीन्दु-
> स्वातीमघोत्तरजलांतकतक्षपुष्ये ।
> मंदाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
> धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ ३१ ॥

(अन्वयः) तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये । मन्दाररिक्तरहिते दिवसे वारे स्थिरभे विलग्ने तदा धान्यच्छिदा शुभा निगदिता॥३१

अर्थ-मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा पूर्वाभाद्रपदा हस्त कृत्तिका धनिष्ठा श्रवण मृगशिर स्वाती मघा तीनों उत्तरा पूर्वाषाढ़ भरणी चित्रा पुष्य ये नक्षत्र और शनिश्चर मंगल रहित अन्य वार रिक्ता अर्थात् ४।९।१४ रहित अन्य तिथि और स्थिरलग्न धान्य अर्थात् जव आदिकोंके काटने में श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ३१ ॥

धान्यमर्दन और बीज बोनेके लिये मुहूर्त-

> भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूल-
> मैत्रांत्यभेषु कथितं कणमर्दनं सत् ।
> त्वाष्ट्राजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षे
> सस्यस्य रोपणमिहार्किकुजौ विना सत् ॥३२॥

(अन्वयः) भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्रांत्यभेषु कणमर्दनं सत् कथितम् । [illegible] इह आर्किकुजौ विना सस्यस्य रोपणं सत् [illegible] ॥ ३२ ॥

अर्थ-पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी श्रवण मघा ज्येष्ठा रोहिणी, मूल अनुराधा रेवती ये नक्षत्र कणमर्दन के लिये कहे हैं और चित्रा पूर्वाभाद्रपद मूल

रोहिणी शतभिषा उत्तराफाल्गुनी ये नक्षत्र और शनिश्चर मंगलवार वर्जकर अन्यवार अन्नके रोपनेमें श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ३२ ॥

धान्यकी स्थिति और वृद्धिका मुहूर्त—

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेंद्रविभिन्नभेषु
कर्कांजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे ।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्य-
द्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥ ३३ ॥

(अन्वयः) मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु कर्काजतौलिरहिते तनौ (च) शुभाहे धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु (च) धान्यवृद्धिः शुभा गदिता इति ॥ ३३ ॥

अर्थः—विशाखा कृत्तिका तीनों पूर्वा भरणी मघा आर्द्रा अश्लेषा व ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंसे रहित अन्य नक्षत्र और कर्क मेष तुला इन लग्नोंसे रहित अन्यलग्न और चन्द्र बुध बृहस्पति शुक्र ये चार धान्यको इकठ्ठा करके घरमें भरनेमें शुभ कहे हैं। और तीनों उत्तरा रोहिणी पुष्य विशाखा ज्येष्ठा अश्विनी स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा ये नक्षत्र धान्यवृद्धि अर्थात् सवाया डेढ़ाका कौल करके देनेमें शुभ कहे हैं ॥ ३३ ॥

शांतिक और पौष्टिक आदि कर्मके लिये मुहूर्त-

क्षिप्रध्रुवांत्यचरमैत्रमघासु शस्तं
स्याच्छांतिकं सह च मंगलपौष्टिकाभ्याम् ।
खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो
मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते ॥ ३४ ॥

(अन्वयः) क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु (च) मङ्गलपौष्टिकाभ्यां सह शान्तिकं शस्तं स्यात् अर्के खे विधौ चन्द्रमसि सुखगते गुरौ तनुगे लग्नस्थे सति शान्तिकं कार्यम् मौढ्यादिदुष्टसमये किन्तु गुरुशुक्रयोरस्तादिके शस्तं नो निमित्ते किन्तु केत्वाद्युत्पातदर्शनेपि शुभदं भवतीति ॥ ३४ ॥

अर्थ--हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् तीनों उत्तरा रोहिणी रेवती स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मघा ये १६ नक्षत्र मंगलकरके सहित जनेऊ व्याह आदि और विनायकशांति पुष्ययोग जनन आदि शान्तिकार्यमें शुभ कहे हैं। और लग्नसे दशवें स्थानमें सूर्य और चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा, लग्नमें बृहस्पति हो तौ भी ग्रह आदिकोंकी शांति शुभ है। गुरु शुक्रके अस्त आदि दुष्टकालमें शुभ नहीं और कोई भी निमित्त हो तो गुरु शुक्र के अस्तमें भी-शांति शुभदायक हैं ॥ ३४ ॥

हवनमें किस ग्रहके मुखमें आहुति पड़ती है—

सूर्यभात्त्रित्रिभे चांद्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।
चंद्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥ ३५ ॥

(अन्वयः) सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सुर्यविच्छुक्रपंगवः चन्द्रारेज्यागुशिखिनः होमाहुतिः स्यात् खले पापग्रहे होमाहुतिः सा नेष्टा भवति ॥ ३५ ॥

अर्थः-सूर्य जिस नक्षत्रपर हो तिससे दिन नक्षत्रतक तीन तीन नक्षत्र गिने सो श्लोकोक्त क्रमसे सूर्यादि ग्रहोंके मुखमें आहुति जाननी सो क्रूर ग्रहमें आहुति अशुभ है। जेसे-पहले ३ नक्षत्र सूर्यके, फिर ३बुध ३ शुक्रके, फिर तीन शनिश्चर के, फिर ३ चन्द्रमाके, फिर ३ मंगलके, फिर ३ बृहस्पतिके, ३ राहुके, फिर ३ केतु के ॥ ३५ ॥

अग्निका मृत्यु आदि लोकोंमें निवास—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वन्हिवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च॥३६॥

(अन्वयः) तिथिवारयुता कार्या सैका कृताप्तागुणेऽभ्रे शेषे सति भुवि पृथिव्यांवन्हिवासो भवति तस्मिन् होमे सति सौख्याय भवति शशियुग्मशेषे दिवि भूतले च वन्हिवासः तस्मिन् होमे प्राणार्थनाशौ भवत इति ॥ ३६ ॥

अर्थ-जिस दिन हवन करना हो उस दिन तक गणना करके अग्निका वास जानना जैसे शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे तिथि गिन तिस संख्यामें और एक मिलावै और वार मिलावें और चारका भाग देनेसे जो ३ बचे या शून्य बचे तो वन्हि का वास पृथ्वीमें जानना, सुखको देनेवाला है। और १ बचे तो अग्निका वास

स्वर्ग में है, सो प्राणोंका नाश करनेवाला है, और दो बचै तो पातालमें बास जानना, सो द्रव्यका नाश करता है। उदाहरण, जैसे-शुक्ल ८ शुक्र वारको हवन करना है तो ८ तिथि ६वार जोड़े तो १४ हुए १ और जोड़े तो १५ हुए, ४ का भाग दिया ३ बचे तो पृथ्वी में अग्निका वास हुआ। इसी प्रकारसे और भी जानना ॥ ३६ ॥

नूतन अन्नके भक्षणमें मुहूर्त—

नवान्नं स्याच्चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ शुभम्।
विना नंदाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

(अन्वयः) चरक्षिप्रमृदुभे सत्तनौ नन्दाविषघटी मधुपौषार्किभूमिजान् एतान्विना वर्जयित्वा नवान्नं शुभं भवति ॥

अर्थः—स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा हस्त अश्विनी पुष्य, अभिजित् मृगशिर रेवती चित्रा व अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और शुद्ध लग्नमें और नन्दा अर्थात् १।६।११ ये तिथि और विवाह प्रकरणमें कही विषघड़ी और चैत पौषमास और शनैश्चर भौम ये वार इन्होंको वर्जकर नवीन अन्न भोजन करना शुभ है॥३७॥

नौका आदि जलपान बनानेका मुहूर्त—

याम्यत्रयविशाखेन्द्रसर्पपित्र्येशभिन्नभे।
भृग्वीज्यार्कदिने नौकाघटनं सत्तनौ शुभम् ॥३८॥

(अन्वय.) याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे । एतैर्वर्जिते रहिते । भृग्वीज्यार्कदिने सत्तनौ नौकाघटनं शुभं भवतीति ॥ ३८ ॥

अर्थः—भरणी, कृत्तिका, रोहणी, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा, मघा व आर्द्रा इन नक्षत्रोंको छोड़ अन्य नक्षत्रोंमें शुक्र बृहस्पति रवि वारोंमें और श्रेष्ठ लग्नमें शुभ ग्रहसे युक्त और शुभ ग्रहसे देखे जाते हों ऐसे लग्नमें नौकाका बनवाना श्रेष्ठ है ॥ ३८ ॥

वीरसाधन और अभिचार—

मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे सौम्ये घटे तनौ।
सुखे शुक्रेऽष्टमे शुद्धे सिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

(अन्वयः) मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगे सौम्य घटे तनौ कुम्भलग्ने स्थिते सति। शुक्रे सुखे अष्टमे शुद्धे तदा वीराभिचारयोः सिद्धि र्भवति ॥ ३९ ॥

अर्थः—मूल आर्द्रा भरणी मघा व मृगशिर इन नक्षत्रोंमें और बुधवारमें और कुम्भ लग्नमें और चतुर्थ स्थानमें शुक्र हो अष्टम स्थान शुद्ध हो अर्थात् ग्रहरहित हो तो ऐसे मुहूर्तमें वीरोंका और अभिचार अर्थात् चौकी छोड़नेका मंत्र सिद्ध होता है ॥ ३९ ॥

रोगमुक्तमें स्नानमुहूर्त-

व्यंत्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये
रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे ।
स्नानं रुजा विरहितस्य जनस्य शस्तं
हीने विधौ खलखगैर्भवकेंद्रकोणे ॥ ४० ॥

(अन्वयः) व्यंत्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्ये तथा रिक्ते तिथौ चरतनौ विकवीन्दुवारे विधौ चन्द्रे हीने (निषिद्धस्थानस्थिते) सति खलखगैः पापग्रहैः भवकेन्द्रकोणे तदा रुजा रोगेण विरहितस्य (निर्मुक्तस्य) जनस्य स्नानं शस्तं स्यादिति ॥ ४० ॥

अर्थः-रेवती पुनर्वसु तीनों उत्तरा रोहिणी मघा कृत्तिका आश्लेषा इन नक्षत्रों को छोड़कर अन्य नक्षत्र हों और रिक्ता अर्थात् ४।९।१४ तिथि हों और चर अर्थात् १।४।७।१० लग्न हों और शुक्र तथा सोमको छोड़कर अन्यवार और सम चन्द्रमा निषिद्ध स्थानमें हो और पापग्रह ११।१।४।७।१०।९।५ इन स्थानोंमें हों तो ऐसे मुहूर्तमें रोगमुक्त पुरुषका स्नान करना श्रेष्ठ कहा है ॥ ४० ॥

शिल्प सीखनेका मुहूर्त—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे ।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ ४१ ॥

(अन्वयः) मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे खलग्नगे वा गुरौ खलग्नगे विधौ चन्द्रे ज्ञजीव-वर्गस्थे तदा शिल्पविद्या प्रशस्यते ॥ ४१ ॥

अर्थः—मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा ये नक्षत्र और बुध वार वृहस्पति दशम स्थानमें रहते और चन्द्रमा बुध वा वृहस्पतिके वर्गमें रहने शिल्पविद्या अर्थात् चित्रादि लिखना मूर्ति बनाना आदि श्रेष्ठ कहा है ॥ ४१ ॥

मेल करनेका मुहूर्त—

सुरेज्यमित्रभाग्येषु चाष्टम्यां तैतिले हरौ
शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे संधानमिष्यते ॥ ४२ ॥

(अन्वयः) सुरेज्यमित्रभाग्येषु अष्टम्यां तिथौ हरौ द्वादश्यां च वा तैतिले करणे तथा शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे तदा सन्धानं इष्यते । इति ॥ ४२ ॥

अर्थः—पुष्य अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र अष्टमी तथा द्वादशी तिथि और तैतिल करण और शुक्रका देखा अथवा शुक्रसे युक्त लग्न और चन्द्रमा बुध वृहस्पति शुक्र ये वार संधान अर्थात् मेल करनेमें श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ४२ ॥

परीक्षा देने का मुहूर्त—

त्यक्त्वाऽष्ट ८ भूत १४ शनिविष्टिकुजान् जनुर्भ—
मासौ मृतौ रविविधू, अपि भानि नाड्यः ।
द्व्यंगे चरे तनुलवे शशिजीवतारा—
शुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा ॥ ४३ ॥

(अन्वयः) अष्टभूतशनिविष्टिकुजान्जनुर्भमासौरविविधू मृतौ तथा नाड्यः भान्यपि (नाडीनक्षत्राण्यपि) त्यक्त्वा; द्व्यङ्गे चरे तनुलवे शशिजीवताराशुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपे परीक्षा स्यात् ॥ ४३ ॥

अर्थः—अष्टमी चतुर्दशी तिथि और शनैश्चर मंगलवार और विष्टि नाम भद्रा या विष्टिकरण और जन्मनक्षत्र और जन्ममास और आठवां सूर्य और चन्द्रमा और नाडी (१) नक्षत्र (जन्मनक्षत्र, कर्मनक्षत्रादि) इन सबको त्याग कर और द्विस्वभाव अर्थात् ३।६।९।१२ लग्नोंमें अथवा चर अर्थात् १।४।७।१० लग्न हों उसमें द्विस्वभाव और चर लग्नोंका नवांशक हो और चन्द्रमा वृहस्पति तारा ये तीनों शुद्ध हों और हस्त पुनर्वसु श्रवण ज्येष्ठा शतभिषा ये नक्षत्र हों ऐसे मुहूर्त में परीक्षाका देना श्रेष्ठ कहा ॥ ४३ ॥

सामान्यतः शुभकार्यमें लग्नशुद्धि—

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चंद्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारंभः प्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

(अन्वयः) व्ययाष्टशुद्धोपचये शुभदृग्युते लग्नगे तथा चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे तदा सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

अर्थः-बारहवां और आठवां स्थान शुद्ध हो अर्थात् वहां कोई ग्रह न हो और जन्म लग्न वा जन्म राशि से तृतीय षष्ठ दशम एकादश संख्यक लग्न हो और उसपर शुभ ग्रह अर्थात् चंद्रमा बुध बृहस्पति शुक्र इन्होंकी दृष्टि हो अथवा इन्होंसे युक्त हो और चद्रमा तृतीय षष्ठ दशम एकादश इन स्थानोंमें स्थित हो ऐसे मुहूर्त में सब कामोंका आरम्भ करना शुभ होता है ॥ ४४ ॥

नक्षत्रविशेषमें उत्पन्न हुए ज्वरादिकी दिनसंख्या—

स्वातींद्रपूर्वाशिवसार्पभे मृतिर्ज्वरेऽत्यनैत्रैः स्थिरता भवेद्रुजः।
याम्यश्रवोवारुणतक्षभेशिवा११घस्राहिपक्षो१५ऽद्व्यधिपार्कवासवे४५
मूलाग्निदास्रेनव-पित्र्यभेनखा२०बुध्न्यार्यमेज्यादितिधातृभेनगाः७
मासोऽब्जवैश्वेऽथ यमाहिमूलभे मिश्रे शपित्र्ये फणिदंशने मृतिः॥४६

(अन्वयः) स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभे ज्वरे सति पुंसः स्त्रियो वा मृतिरेव स्यात् अन्त्यभेत्रे रुजः रोगस्य स्थिरता भवेत् याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवा एकादशदिन-रोगस्थैर्यं स्यात् द्व्यधिपार्कवासव हि निश्चयेन पक्ष पञ्चदश दिवसः रोगस्थैर्यं स्यात्। मूलाग्निदास्रे नवदिवसाः पित्र्यभे नखा विंशतिदिवसा, बुध्न्या-र्यमेज्यादितिधातृभे नगाः सप्तदिवसाः, अब्जवैश्वे मासस्त्रिंशद्दिनानि रोगस्थैर्यम् "अथ" यमाहिमूलभे तथा मिश्रे शपित्र्ये फणिदंशने मृतिः मरणमेव भवेदिति ४५।४६

अर्थ-स्वाती ज्येष्ठा तीनों पूर्वा आर्द्रा आश्लेषा इन सात नक्षत्रोंमें ज्वर की उत्पत्ति होतो मृत्यु होय। रेवती अनुराधा इन दो नक्षत्रोंमें रोग होवै तो रोग

(१) जन्मनक्षत्र (१), कर्मनक्षत्र (१०) संघातनक्षत्र (१६), मानसनक्षत्र (२५) समुदाय नक्षत्र (१८), विनाशनक्षत्र (२३) इस प्रकार सर्वसाधारण मनुष्योंके ६ नाडीनक्षत्र होते हैं, और जातिनक्षत्र, देशनक्षत्र अभिषेकनक्षत्र इन तीनोंके मिलानेसे राजाके नव नाडी नक्षत्र होते हैं (दीपिका)

स्थिर हो अर्थात् बहुत दिनों तक रोग रहै भरणी श्रवण शतभिषा इन नक्षत्रोंमें ज्वरकी उत्पत्ति हो तो ११ दिनोंमें जाय । विशाखा हस्त धनिष्ठा इन नक्षत्रोंमें १५ दिनोंमें जाय ॥ ४५ ॥ मूल कृत्तिका अश्विनी इन नक्षत्रोंमें हुआ ज्वर ९ दिनोंके बाद जाय । मघा नक्षत्रमें हुआ ज्वर २० दिनके बाद जाय और उत्तराभाद्रपदा उत्तराफाल्गुनी पुष्य पुनर्वसु रोहिणी इन नक्षत्रोंमें ज्वर होवे तो ७ दिनोंमें हटै । मृगशिर उत्तराषाढा इन नक्षत्रोंमें ज्वर होवे तो एक महीनेमें जाय । भरणी आश्लेषा मूल कृत्तिका विशाखा आर्द्रा मघा इन नक्षत्रों में किसी को सर्प काट ले तो निश्चय मृत्यू होय ॥ ४६ ॥

रोगी के शीघ्र मरनेमें विशेष योग-

रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे ।
रिक्ताहरिस्कंददिने च रोगे शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः ॥४७॥

(अन्वयः) रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषु पापवारे (च) रिक्ता-हरिस्कंददिने रोगे सति रोगिजनस्य शीघ्रं झटिति मृत्यु र्भवेत् ॥ ४७ ॥

अर्थः—आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा शतभिषा भरणी तीनों पूर्वा विशाखा धनिष्ठा कृत्तिका ये नक्षत्र और सूर्य मंगल शनि ये वार और रिक्ता ४।९।१४ द्वादशी षष्ठी ये इनमें किसी मनुष्यको रोग होय तो रोगी मनुष्यकी निश्चय मृत्यू होय ॥४७॥

प्रेतदाहादिका मुहूर्त-

क्षिप्राहिमूलेंदुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ ।
प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनादि च॥४८॥

(अन्वयः) क्षिप्राहिमूलेन्द्रहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्यात् विधौ चन्द्रे झषकु-म्भगे सति प्रेतस्य दाहं त्यजेत् च पुनर्यमदिग्गमं (दक्षिणदिशि यात्रां) त्यजेत् शय्यावितानं गृहगोपनादि च त्यजेत् ॥ ४८ ॥

अर्थः—हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् आश्लेषा मूल मृगशिर श्रवण आर्द्रा स्वाती इन नक्षत्रोंमें प्रेतकी दाहादि क्रिया करै जब कुम्भ मीनका चन्द्रमा हो तब प्रेतका दाह और दक्षिणदिशामें गमन और खाटका विनवाना और घरका छवाना ये सब काम वर्जित है ॥ ४८ ॥

ईन्धन, गोबर आदि जलानेके पदार्थके संग्रहका मुहूर्त-

सूर्यर्क्षाद्रसभैरधःस्थलगतैः पाको रसैः संयुतः ।
शीर्षे युग्ममितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैः सर्पभीः ।
प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्संगमा रोगभीः ।
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादिसंस्थापने ॥४६॥

(अन्वयः) सूर्यर्क्षात्किन्तु सूर्याधिष्ठितनक्षत्रात् रसभैः अधःस्थलगतैः स्थाप्यैः तेषु काष्ठादिसंस्थापनेऽस्सैः संयुतः पाकः स्यात् युग्ममितैः शीर्षे स्थाप्ये नयोः काष्ठादिसंस्थापने शवस्य दहनं भवति युगैः मध्ये तेषु सर्पभीः स्यात् । प्रागाशादिषु वेदभैः स्थाप्यैः तेषु क्रमेण स्वसुहृदांसङ्गमः रोगभीः क्वाथादेः करणं सुखञ्च गदितम् ॥ ४६ ॥

अर्थः-सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनै । काष्ठ आदि स्थापन करनेमें सूर्य नक्षत्र से छः नक्षत्र नीचे स्थापन करे उनमें रसरहित पाक हो । फिर दो शिर पर धरे तिनमें प्रेतका दाह होवे । बीचमें चार नक्षत्र धरे तिनमें सर्पसे भय हो । फिर पूर्वआदि चार दिशाओंमें चार चार नक्षत्रोंको रक्खे उनमें क्रमसे मित्रसंगम और रोगसे भय और क्वाथ और सुख चारों क्रमसे होते है ॥ ४६ ॥

त्रिपुष्करयोग-

भद्रातिथी रविजभूतनयार्कवारे
द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचांद्रे ॥ ५० ॥

(अन्वयः) भद्रातिथी रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे त्रैपुष्करो भवति कीदृशः, मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदः वसुतक्षचान्द्रे द्विगुणकृत् स्यादिति ॥ ५० ॥

अर्थः—भद्रा अर्थात् २।७।१२ तिथि और शनैश्चर मङ्गल रविवार और विशाखा उत्तराफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा पुनर्वसु कृत्तिका उत्तराषाढ़ इन तिथि वार और नक्षत्रोंके योगको त्रैपुष्कर योग कहते है । इनमें मृत्यु और नाश आदि होवै तो तिगुनी होती है । और धनिष्ठा चित्रा मृगशिर ये नक्षत्र होवे तो त्रिपुष्कर योग होता है । इसमें मत्यु विनाश वृद्धि दुगुनी होती है ॥ ५० ॥

शवप्रतिकृति दाहमें निषिद्ध दिन—

शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नंदासु तीक्ष्णोग्रभे
पौष्णे वारुणभे त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासेऽयने ।
याम्येऽब्दात्परतश्च पातपरिघे देवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावधृतयोः शवप्रतिकृते दाहो न पक्षे सिते ॥५१॥

(अन्वयः) शुक्रारार्किषु दर्शभूतमदने नन्दासु तीक्ष्णोग्रभे पौष्णे वारुणभे- त्रिपुष्करदिने न्यूनाधिमासे याम्ये अयने अब्दात्परतः (च) पातपरिघे देवेज्य- शुक्रास्तके भद्रावैधृतयोः सिते पक्षे शवप्रतिकृतेः दाहः, न स्यादिति ॥ ५१ ॥

अर्थः—शुक्र मङ्गल शनैश्चर ये वार और अमावास्या चतुर्दशी प्रतिपदा षष्ठी एकादशी ये तिथियां और मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा तीनों पूर्वा भरणी मघा रेवती शतभिषा ये नक्षत्र और पहले कहे त्रिपुष्करयोग और न्यून अधिक- मास अर्थात् घटे बढ़े महीने वर्षदिनके बाद करना हो तो दक्षिणायन और व्यतीपात योग और परिघ योग बृहस्पति शुक्रके अस्त और भद्रा वैधृतियोग और शुक्लपक्ष ऐसे दिनोंमें मुर्देके पुतलेका दाह नहीं करना चाहिये ॥ ५१ ॥

सामान्यतः दूसरे वर्ज्य योग—

जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखांत्येऽब्जे च कर्तुर्न स-
न्मध्यो मैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्व्यङ्घ्रिभेज्ञेऽपि च ।
श्रेष्ठोऽर्केज्यविधोर्दिने श्रुतिकरस्वात्यशिवपुष्ये तथा
स्त्राशौचात्परतो विचार्यमखिलं मध्ये यथासंभवम् ॥५२॥

(अन्वयः) कर्तुः जन्मप्रत्यरितारयोः (च) अब्जे चन्द्रमसि मृतसुखान्त्ये सति शवस्य दाहो न सन् मैत्रभगादितिध्रुवविशाखाद्व्यङ्घ्रिभे (च) ज्ञेऽपि बुधवारेऽपि मध्यमो भवति अर्केज्यविधोर्दिने तथा श्रुतिकरस्वात्यशिवपुष्ये श्रेष्ठो भवति (तु) आशौचात्परतः, मध्ये यथा सम्भवं तथा अखिलं विचार्यम् ॥५२॥

अर्थः—कर्म करनेवाले मनुष्यको जन्मतारा औरप्रत्यरितारामें औ आठवें ८ चौथे ४ बारहवें १२ चन्द्रमामें कार्य करना इष्ट नहीं है। और अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी पुनर्वसु तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा और द्विचरण के नक्षत्र (मृगशिरा चित्रा

और धनिष्ठा) इन नक्षत्रोमें और बुधवारको कार्य करना मध्यम है। सूर्य बृहस्पति चन्द्रमा इन वारोंमें और श्रवण, हस्त स्वाती अश्विनी पुष्य इन नक्षत्रोंमें कार्य करना उत्तम है। यह विचार १२ दिनोंके पीछे करना योग्य है। और १२ दिनों के भीतर तो जैसा देखे वैसा ही करले ॥ ५२ ॥

मूल नक्षत्रमें उत्पन्न हुएका विचार—

अभुक्तमूलं घटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठांत्यमूलादिभवं हि नारदः।
वसिष्ठ एकद्विघटीमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेकघटीप्रमाणकम्॥५३॥

(अन्वयः) ज्येष्ठान्त्यमूलादिभवं घटिकाचतुष्टयम् अभुक्तमूलं स्यादिति नारदो जगौ एकद्विघटीमितं हि अभुक्तमूलं स्यात् इति वसिष्ठो जगौ (तु) एकघटीप्रमाणकं अभुक्तमूलं स्यादिति बृहस्पतिर्जगौ ॥ ५३ ॥

अर्थः-नारदमुनि तो ज्येष्ठाके अंतकी और मूलके आदिकी चार घड़ियोंको अभुक्त मूल कहते है। और वसिष्ठजी क्रमसे एक और दो घड़ीके प्रमाणसे अभुक्त मूल कहते हैं। और बृहस्पतिजी एक घड़ीके प्रमाणसे अभुक्तमूल कहते हैं ॥५३॥

अन्य आचार्यों का मत—

अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्यो मूलस्य शाक्रांतिमपंच नाड्यः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेद्वा मुखं पितास्याष्टसमा न पश्येत्॥५४॥

(अन्वयः) अथ मूलस्य प्रथमाष्टघट्यः शाक्रान्तिमपञ्चनाड्यः, अभुक्तमूलं स्यादिति अन्ये ऊचुः, तत्र शिशुं जातं तदा परित्यजेत् वा अष्टसमा पितास्य मुखं न पश्येदिति ॥ ५४ ॥

अर्थः-कितने ऋषि मूलकी प्रथम आठ घड़ियोंको और ज्येष्ठाके अंतकी पांच घड़ियोंको अभुक्तमूल कहते हैं। ऐसे समयमें उत्पन्न बालकको त्यागदे अथवा आठ वर्ष पिता उसका मुख न देखे ॥ ५४ ॥

मूल और आश्लेषाके चरणसे फल—

आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे द्वितीये जननी तृतीये।
धनं चतुर्थोऽस्य शुभोऽथ शांत्या सर्वत्र सत्स्यादहिभे विलोमम्॥५५॥

(अन्वयः) मूलस्य आद्ये पादे पितानाशं उपैति द्वितीये पादे जननी नाशमुपैति तृतीये धनं अथास्य चतुर्थः पादः शुभः शान्त्या सर्वत्र सत्स्यात्-अहिभे विलोमं ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

अर्थः-मूलके प्रथम चरणमें बालक जन्मे तो पिताका नाश करे। दूसरे चरण में जन्मा बालक माताका नाश करे। तीसरे चरणमें जन्मा धनका नाश करे। और चौथा चरण बालकको शांति करके शुभदायक है। आश्लेषाके चरणोंमें जन्मका विलोम अर्थात् उलटा फल करना। जैसे आश्लेषाका चौथा चरण पिता का नाशक होता है। तीसरा चरण माताका नाशक होता है। दूसरा चरण धनका नाशक होता है और पहला चरण शांतिसे शुभ है॥ ५५॥

नक्षत्रका निवास—

स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे।
मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र॥५६॥

(अन्वयः) शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे मूलं स्वर्गे तिष्ठति नभःकार्तिकचैत्रपौषे मूलं भूमौ तिष्ठति तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेषु (हि) मूलं अधस्तात् तिष्ठति (तु) मूलं यत्र तिष्ठति तत्र अशुभं शुभञ्च फलं ददाति॥ ५६॥

अर्थः-आषाढ़ भाद्रपद आश्विन माघ इन महीनोंमें मूल नक्षत्र स्वर्गमें वास करता है और श्रावण कार्तिक चैत्र पौष इन महीनोंमें मूलनक्षत्र पृथ्वीमें वास करता है। फाल्गुन मार्गशिर वैशाख ज्येष्ठ इन महीनोंमें मूल पातालमें वास करता है सो जहां मूल नक्षत्र हो वहीं उसका फल कहना॥ ५६॥

प्रसंगसे गंडांत आदिमें उत्पन्न होनेसे परिहार—

गंडांतेंद्रभशूलपातपरिघव्याघातगंडावमे
संक्रांतिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके।
वज्रे कृष्णचतुर्दशीषु यमघंटे दग्धयोगे मृतौ
विष्टौ सोदरभे जनिर्न पितृभे शस्ता शुभा शांतितः॥५७॥

(अन्वयः) गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डावमे संक्रान्तिव्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके। वज्रे वज्रयोगे कृष्णचतुर्दशीषु यमघण्टे दग्धयोगे मृतौ सोदरभे पितृभे जनिः तदा शस्ता न, शांतितः शुभा॥ ५७॥

अर्थः-गंडांत अर्थात् तिथि नक्षत्र शूलयोग महापात परिघ व्याघात योग महापात परिघ व्याघात गंडयोग तिथिक्षय सूर्यसंक्रांतिका पुण्यकाल व्यती-पात वैधृतियोग सिनी वाली अर्थात् चंद्रमा दीखनेवाली अमावास्या कुहू अर्थात्

नष्ट चंद्रमावाली अमावास्या दर्श अर्थात् चंद्रमाके दर्शनसहित अमावास्या वज्रयोग कृष्णपक्षकी चतुर्दशी यमघंटयोग भद्रा बहन अथवा भाईका नक्षत्र माता पिताका नक्षत्र इन दुष्टनिमित्तोंमें पुत्र अथवा पुत्रीका जन्म होना अनिष्ट अर्थात् अशुभ फल करनेवाला है परन्तु शांतिसे शुभ ही फल करनेवाला है॥५७॥

अश्विनी आदि नक्षत्रोंकी तारकासंख्या—

त्रि ३ त्र्यं ३ ग ६ पंचा ५ ग्नि ३ कु १ वेद ४ वह्नयः ३
शरे ५ षु ५ नेत्रा २ श्वि २ शरें ५ दु १ भू १ कृताः ४।
वेदा ४ ग्नि ३ रुद्रा ११ श्वि २ यमा २ ग्नि ३ वह्नयो ३-
ऽब्धयः ४ शतं १०० द्वि २ द्वि २ रदा ३२ भतारकाः ॥५८॥

(अन्वयः) त्रित्र्यङ्गपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः । वेदाग्निरुद्राश्वियमाग्निवह्नयः, अब्धयः शतंद्विद्विरदाः एते भतारकाः भवन्ति ॥५८॥

अर्थः-अश्विनीके ३, भ० के० ३, कृ० के ६, रो० के ५, मृ० के ३, आ० का० १, पुनं० का ४, पुष्य० के ३, आश्ले० के ५, म० के ५, पू० फा० के २, उ० फा० के २, ह० के ५, चि० का १, स्वा० का १, वि० के ४, अ० के ४, ज्ये० के ३, मू० के ११, पू० षा० के २, उ० षा० के २, अ० के ३, श्र० के ३, ध० के ४, श० के १००, पू० भा० के २, उत्तरा भाद्र० के २, रे० के ३२, ऐसे क्रमसे सब नक्षत्रोंके तारे कहे हैं ॥ ५८ ॥

अश्विनी आदि नक्षत्रोंकी आकृति—

अश्व्यादिरूपं तुरगास्ययोनिः क्षुरोऽनः,एणास्यमणिर्गृहं च।
पृषत्कचक्रे भवनं च मंचः शय्या करो मौक्तिकविद्रुमं च॥५९॥
तोरणं बलिनिभं च कुंडलं सिंहपुच्छगजदंतमंचकाः ।
त्र्यस्त्रि च त्रिचरणाभमर्दलौ वृत्तमंचयमलाभमर्दलाः ॥ ६० ॥

(अन्वयः) तुरगास्ययोनिः क्षुरः, अनः, एणास्यमणिः गृहञ्च पृषत्कचक्रे भवनं (च) मञ्चः शय्या करः (च) मौक्तिकविद्रुमम्-तोरणं बलिनिभं (च) कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः, त्र्यस्त्रि (च) त्रिचरणाभमर्दलौ, वृत्तमञ्च-यमलाभमर्दलाः, एते अश्व्यादिरूपम् स्यात् इति ॥ ५९-६० ॥

अर्थः-अश्विनीका स्वरूप घोड़ेके मुखके समान, भरणी भगके समान, कृ० छूरीके समान, रो० गाड़ीके समान, मृ० मृगके समान, आर्द्रा मणिके समान, पुन० घरके समान, पुष्य बाणके समान, आश्ले० चक्रके समान, म० घरके समान, पू० फा० मंचके समान, उ० फा० खाटके, सामन, ह० हाथके समान, चि० मोतीके समान, स्वा० मूँगाके समान ॥ ५९ ॥ वि० तोरण के समान, अ० भातकी राशिके समान, ज्ये० कुंडलके समान, मू० सिंहपुच्छ के समान, पू० षा० हस्तीके दंतके समान, उ० षा० मंचके समान, अ० त्रिकोणके समान, श्र० तीन चरणों के समान, ध० मर्दलवाजाके समान, श० गोलआकारके समान, पू० भा० मंचके समान, उ० भाद्र० जोड़ाके समान, रे० मर्दलवाजाके समान, ऐसे संपूर्ण नक्षत्रोंके आकार कहे हैं ॥ ६० ॥

बावली और तालाव देवप्रतिष्ठा आदि का मुहूर्त-

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांकशुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवेस्यात्पक्षे सिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा॥६१
रिक्तारवर्जे दिवसेऽतिशस्ता शशांकपापैस्त्रिभवांगसंस्थैः ।
व्यंत्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेंद्रेसूर्यो घटे को युवतौ च विष्णुः॥६२
शिवो नृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्व इमे स्थिरर्क्षे।
पुष्ये ग्रहा विघ्नपयक्षसर्पभूतादयोऽन्त्ये श्रवणे जिनश्च॥६३

इति मुहूर्तचिंतामणौ नक्षत्रप्रकरणम् ॥ २ ॥

(अन्वयः) सौम्यायने जीवशशांकशुक्रे दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे सिते पक्षे शुक्लपक्षे वा स्वर्क्षतिथिक्षणे रिक्तारवर्जे दिवसे जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा अतिशस्ता स्यात् शशांकपापैः त्रिभवांगसंस्थैः सत्खचरैः शुभग्रहैः व्यन्त्याष्टगैः सूर्यः मृगेन्द्रे को घटे (च) विष्णुः युवतौ शिवः नृयुग्मे (च) देव्यः द्वितनौ क्षुद्राश्चरे सर्वे इमे स्थिरर्क्षे ग्रहा पुष्ये विघ्नपयक्षसर्पभूतादय, अन्त्ये स्थाप्याः (च) जिनः श्रवणे इति ॥ ६१-६२-६३ ॥

अर्थः-उत्तरायण सूर्य में बृहस्पति चंद्रमा शुक्र इनके उदय में और मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् स्वाती पुनर्वसु श्रवण

धनिष्ठा शतभिषा तीनों उत्तरा, रोहिणी इन नक्षत्रों में और शुक्लपक्ष में और जिस देवता की प्रतिष्ठा करे उसके नक्षत्र में अथवा तिथि में अथवा मुहूर्त में जलसम्बन्धी स्थान की और बाग की और देवताओं की प्रतिष्ठा करनी शुभ है ॥ ६१ ॥ रिक्ता तिथियों को छोड़के और तिथियों में तथा मंगल को छोड़ और वारों में प्रतिष्ठा अत्यन्त शुभ है और चंद्रमा और क्रूर ग्रह लग्न से ३।६।११ स्थानों में और शुभ ग्रह १२।८ स्थानों को छोड़ कर और स्थानों में हों तो प्रतिष्ठा करनी बहुत शुभ है। सिंह लग्न में सूर्य को स्थापन करे, कुम्भ लग्न में ब्रह्मा को स्थापन करे, कन्या लग्न में विष्णु को स्थापन करे ॥ ६२ ॥ मिथुन लग्न में शिव को स्थापन करे, द्विस्वभाव अर्थात् ३।६।९।१२ लग्नों में दुर्गा आदि देवियों की स्थापना करे और अस्थिर अर्थात् २।१।८।११ लग्नों में और पुष्य नक्षत्र में चंद्रमा को लेकर नवग्रहों की स्थापना करे और रेवती नक्षत्र में और स्थिर लग्नों में गणेशजी की और यक्ष सर्प भूत आदि देवयोनियों की स्थापना करे और श्रवण में बुद्ध अवतार की स्थापना करे ॥ ६३ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणि भाषाटीकायां नक्षत्रप्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥



संक्रान्तिप्रकरणम् ३।

संक्रान्तिविषय नक्षत्र व वारपरत्वसे विचार—

घोरार्कसंक्रमणमुग्ररवौ हि शूद्रान्
ध्वांक्षी विशो लघुविधौ, च चरर्क्षभौमे।
चौरान्महोदरयुता, नृपतीन् ज्ञमैत्रे
मन्दाकिनी, स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा॥ १॥
विप्रांश्चमिश्रभभृगौ तु पशूंश्च मिश्रा
तीक्ष्णार्कजेऽन्त्यजसुखा खलु राक्षसी च।

(अन्वयः) उग्ररवौ अर्कसंक्रमणं तदा घोरा नाम्नीसंक्रान्तिः सा हि निश्चयेन शूद्रान् सुखयेत् लघुविधौ अर्कसंक्रमणं तदा ध्वाङ्क्षी नाम्नी संक्रान्तिः सा विशः सुखयेत् (च) चरर्क्षभौमे अर्कसंक्रमणं तदा महोदरयुतानाम्नी संक्रान्तिः सा चौरान् सुखयेत् ज्ञमैत्रे अर्कसंक्रमणं मन्दाकिनी नाम्नी संक्रान्तिः सा नृपतीन् सुखयेत् स्थिरगुरौ अर्कसंक्रमणं (च) मन्दा नाम्नी संक्रान्तिः सा विप्रान् सुखयेत् (तु) मिश्रभभृगौ (च) मिश्रानाम्नी संक्रान्तिः सा पशून् सुखयेत् (च) तीक्ष्णार्कजे अर्कसंक्रमणं खलु निश्चयेन राक्षसी नाम्नी संक्रान्तिः सा अन्त्यजसुखा स्यात् (अन्त्यजांश्चांडालान् सुखयति) दिनस्य प्रथमे त्र्यंशे नृपतीन् निहन्ति दिनस्य मध्ये द्विजान् अपि निहन्ति (च) अपरके विशः निहन्ति अस्ते शूद्रान् निहन्ति निशाप्रहरकेषु पिशाचकादीन् नक्तंचरानपि नटान् (च) पशुपालकान् निहन्ति सूर्योदये सकललिंगिजनं निहन्ति मकरकर्कटयोः याम्यायनम् निरुक्तमिति॥ १—२—३॥

अर्थः—उग्र नक्षत्रों में रविवारके दिन संक्रान्ति होय तो उसकी घोरा संज्ञा है। वह शूद्रों को सुख देती है। लघु नक्षत्रों में और सोमवारके दिन संक्रांति होवे तो ध्वांक्षी संज्ञा है वह बनियों को सुख देती है। चर नक्षत्रोंमें और भौमवारके दिन संक्रांति होवे तो उसको महोदरी संज्ञा है वह चोरों को सुख देती है मैत्रनक्षत्रोंमें और बुधवारके दिन संक्रांति होवैतोमन्दाकिनी संज्ञा है वह राजाओंको सुखदेती है

तथा अस्थिर नक्षत्रोंमें और बृहस्पतिवारके दिन संक्रांति होवे तो उसकी मंदा संज्ञा है ॥ १ ॥ वह मंदा ब्राह्मणोंको सुख देती है। और मिश्रसंज्ञक नक्षत्रोंमें शुक्रवारके दिन संक्रांति होवै तो उसकी मिश्रा संज्ञा है वह पशुओंको सुख देती है। तीक्ष्णसंज्ञकनक्षत्रोंमें और शनिवारके दिन संक्रांति होवै तो उसकी राक्षसी संज्ञा है वह चाण्डालोंको सुख देती है।

दिन रात्रि आदिके विभागमें संक्रांति होनेका फल—

त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन् प्रथमे निहंति
मध्ये द्विजानपि विशोऽपरके च शूद्रान् ॥ २ ॥
अस्ते निशाप्रहरकेषु पिशाचकादी-
न्नक्तंचरानपि नटान्पशुपालकांश्च ।
सूर्योदये सकललिंगिजनं च सौम्य-
याम्यायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

अर्थः-और दिनके तीन भाग करके प्रथमभाग में संक्रांति होवै तो राजाओं को नष्ट करती है। मध्यभाग में होवे तो ब्राह्मणों को नष्ट करती है और तीसरे भाग में होवे तो वैश्यों को नष्ट करती है। अस्त के समय होवे तो शूद्रों को नष्ट करती है ॥ २ ॥ रात्रि के पहले प्रहर में होवे तो पिशाच आदिकों को नष्ट करती है। दूसरे प्रहर में होवे राक्षसों को नष्ट करती है और तीसरे प्रहर में होवे तो नटों को और चौथे प्रहर में होवे तो पशुके पालकों को नष्ट करती है और सूर्योदय में होवे तो पाखण्डियों को नष्ट करती है। मकर और कर्क की संक्रांति को क्रम से उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं ॥ ३ ॥

इतर संक्रांतियों की संज्ञा—

षडशीत्याननं चापनृयुक्कन्याझषे भवेत् ।
तुलाजौ विषुवं विष्णुपदं सिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

(अन्वयः) चापनृयुक्कन्याझषे संक्रान्तिश्चेत् तदा षडशीत्याननं ज्ञेयं तुलाजौ तदा विषुवं ज्ञेयम् सिंहालिगोघटे संक्रांतिश्चेत् तदा विष्णुपदं ज्ञेयम् ॥ ४ ॥

अथः-धन मिथुन कन्या मीन इन राशियों की संक्रान्ति की षडशीतिमुखसंज्ञा है और तुला मेषकी संक्रान्ति की विषुवसंज्ञा है और सिंह वृश्चिक वृष कुम्भ इन संक्रान्तियों की विष्णुपद संज्ञा है ॥ ४ ॥

गौण और मुख्य संक्रान्ति के परपूर्व पुण्यकाल--

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः
पुण्या मताः षोडशषोडशोष्णगोः ।
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे
पूर्वापराहांतिमपूर्वभागयोः ॥ ५ ॥

[अन्वयः] उष्णगोः सूर्यस्य संक्रान्तिकालात् उभयत्र षोडश नाड्यः पुण्या मताः स्युर्निशीथतः, अर्वाक् अपरत्र संक्रमे सति पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः पुण्यौ भवत इति ॥ ५ ॥

अर्थः-सूर्य के संक्रान्ति काल से दोनों तरफ सोलह २ घड़ियां (पुण्यकाल) पवित्र मानी हैं । और अर्धरात्र के पहले और पीछे संक्रान्ति होवे तो पहले और पिछले दिन के परभाग और पूर्वभाग मे संक्रान्ति का पुण्यकाल मानना । अर्थात् यदि अर्धरात्रि से पहले संक्रान्ति होवे तो पहले दिन के पिछले भाग म पुण्यकाल मानना और यदि अर्धरात्रि से पीछे संक्रान्ति होवे तो पिछले दिन के पूर्वभाग में पुण्यकाल मानना ॥ ५ ॥

अर्धरात्रि में संक्रान्ति का विशेष विचार--

पूर्णे निशीथे यदि संक्रमः स्याद्दिनद्वयं पुण्यमथोदयास्तात् ।
पूर्वं परस्ताद्यदि याम्यसौम्यायने दिने पूर्वपरेतु पुण्ये ॥ ६ ॥

[अन्वयः] निशीथे पूर्णे संक्रमश्चेत् तदा दिनद्वयं पुण्यं स्यात् अथोदयास्तात् पूर्वं परस्ताच्च यदि याम्यसौम्यायने संक्रान्ती भवतस्तदा [तु] पूर्वपरे दिने पुण्ये स्याताम् ॥ ६ ॥

अर्थः-जो अर्धरात्रि के बीच में संक्रान्ति होवे तो दोनों दिनों में पुण्यकाल जानना और सूर्योदय से पहले और पीछे कर्क और मकर की संक्रान्ति होवे तो क्रम से पहले दिन में और पिछले दिन में पुण्यकाल जानना । अर्थात् सूर्योदय से पहले कर्कसंक्रांति होवे तो पहले दिन में पुण्यकाल और सूर्यास्त के बाद मकरसंक्रान्ति होवे तो पिछले दिन में पुण्यकाल जानना ॥ ६ ॥

अयनसम्बन्धी उदय अस्त आदि वचन का अपवाद—

संध्या त्रिनाडीप्रमिताऽर्कबिंबादर्धोदितास्तादध ऊर्ध्वमत्र ।
चेद्याम्यसौम्ये अयने क्रमात्स्तः पुण्यौस्तदानीं परपूर्वघस्रौ ७

[अन्वयः] अर्धोदितास्तात् अर्कविम्बादध ऊर्ध्वं त्रिनाड़ी प्रमिता सन्ध्या स्यात् अत्र अस्यां प्रातः सन्ध्यायां सायं सन्ध्यायां च क्रमाच्चेद्याम्यसौम्ये अयने तदानीं परपूर्वघस्रौ पुण्यौ स्तः ॥ ७ ॥

अर्थः-आधे उदय हुए और आधे अस्त हुए सूर्य के मण्डल से पहले और पीछे क्रम से तीन २ घडी सन्ध्याकाल कहा है अर्थात् आधे उदय हुए सूर्य के मण्डल से पहले तो तीन घड़ी प्रातःसन्ध्याकाल कहा है और आधे अस्त हुए सूर्य के मण्डल पीछे तीन घड़ी सायंसन्ध्या कहा है जो प्रातःसन्ध्या में दक्षिणायन की प्रवृत्ति होवे तो सूर्योदय से पश्चात् पुण्यकाल है और जो सायंसन्ध्या में उत्तरायण की प्रवृत्ति होवे तो सूर्य के अस्त से पहले पुण्यकाल जानना ॥ ७ ॥

विष्णुपदादि में विशेष पुण्यदा घड़ी—

याम्यायने विष्णुपदे चाद्या मध्यास्तुलाजयोः ।
षडशीत्यानने सौम्ये परा नाड्योऽतिपुण्यदाः ॥ ८ ॥

[अन्वयः] याम्यायने [च] विष्णुपदे आद्याः षोडश नाड्यः, अतिपुण्यदाः स्युः तुलाजयोः मध्या उभयतः षोडश षोडश नाड्यः पुण्यदाः भवन्ति [अथवा] षोडशैव घटिकाः पुण्यदाः स्युः षडशीत्यानने तथा सौम्ये पराः षोडश नाड्य अतिपुण्यदा भवन्तीति ॥ ८ ॥

अर्थः-कर्कसंक्रान्ति और वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ इनके संक्रान्ति काल से आदि की सोलह घडी पवित्र हैं । तुला और मेष की संक्रान्ति के मध्य की सोलह घड़ी पवित्र है और मिथुन कन्या धन मीन इन संक्रान्तियों की और मकर की संक्रान्ति की संक्रान्तिकाल के बाद की सोलह घड़ी पवित्र मानी है ॥ ८ ॥

सायनांश संक्रान्ति में पुण्यकाल—

तथायनांशः खरसाहताश्च स्पष्टार्कगत्या विहता दिनाद्यः ।
मेषादितःप्राक् चलसंक्रमाः स्युर्दानेजपादौ बहुपुण्यदास्ते ॥९॥

[अन्वयः] तथा अयनांशाः खरसा हताः [च] स्पष्टार्कगत्या विहृता दिनाद्यैः यल्लब्धं तत् मेषादितः प्राक् चलसंक्रमाः स्युः ते दाने जपादौ बहुपुण्यदा भवन्तीति ॥ ६ ॥

अर्थः—सूर्य की गति को स्पष्ट करके अयनांश को ६० से गुणा करे। फिर स्पष्ट की हुई सूर्य की गति का भाग दे। भाग देने से जो दिन घड़ी आदि लब्धि हो संक्रान्ति काल से उतना दिन पहले ही मेषादि १२ राशियों की चल संक्रांति होती है ये दान जप आदि करने में बहुत पुण्य देनेवाली होती हैं ॥ ६ ॥

संक्रांत्युपयोगी बृहत् सम आदि नक्षत्र—

समं मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्रपभं बृहत्स्यात् ।
ध्रुवद्विदैवादितिभं जघन्यं सार्पांबुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम् ॥१०॥

(अन्वयः) मृदुक्षिप्रवसुश्रवोऽग्निमघात्रिपूर्वास्रपभं समं [समसंज्ञकं स्यात्] ध्रुवद्विदैवादितिभं बृहत् (बृहत्संज्ञकं) स्यात्, सार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यं जघन्यं (जघन्यसंज्ञकं) स्यात् ॥ १० ॥

अर्थः—मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीनों, पूर्वा और मूल, इन नक्षत्रों को समसंज्ञा है तीनों उत्तरा रोहिणी, विशाखा और पुनर्वसु इन नक्षत्रों की बृहत्संज्ञा है और आश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी इनकी जघन्यसंज्ञा है ॥ १० ॥

इन संज्ञाओं का प्रयोजन—

जघन्यभे संक्रमणे मुहूर्ताः शरेंदवो बाणकृता बृहत्सु ।
खरामसंख्याः समभे महार्घसमर्घसाम्यं विधुदर्शनेऽपि ॥११॥

(अन्वयः) जघन्यभे संक्रमणे (सति) शरेन्दवः मुहूर्त्ताः, बृहत्सु (संक्रमणे) बाणकृताः मुहूर्त्ताः समभे खरामसङ्ख्याः मुहूर्त्ताः (ज्ञेयाः) (तत्र) महार्घसमर्घसाम्यं (क्रमात्फलं ज्ञेयम्) विधुदर्शनेऽपि (एवंफलं भवति) ॥ ११ ॥

अर्थः—जघन्य नक्षत्र में संक्रांति होवे तो १५ मुहूर्त जानना । बृहन्नक्षत्र में संक्रांति होवे तो ४५ मुहूर्त की संक्रांति में अन्न महँगा होता है और ४५ मुहूर्त की संक्रांति में सस्ता रहता है और ३० मुहूर्त की संक्रांति में जैसा भाव हो वैसा स्थिर रहता है। और चन्द्रमा के दर्शन में भी ऐसेही फल कहना ॥ ११ ॥

प्रसंग से कर्कसंक्रांति में विशोपक—

अर्कादिवारे संक्रांतौ कर्कस्याब्दविशोपकाः ।
दिशो नखा गजाः सूर्यो धृत्योऽष्टादश सायकाः ॥१२॥

(अन्वयः) अर्कादिवारे कर्कस्य संक्रान्तौ (क्रमात्) दिशः, नखाः, गजाः, सूर्याः, धृत्यः, अष्टादश, सायकाः ' (एते) अब्दविशोपकाः (ज्ञेयाः) ॥ १२ ॥

अर्थः—कर्कसक्रान्ति अर्क आदि वार में होने से वर्ष का विश्वा कहते हैं। जैसे रविवार में कर्कसंक्रान्ति होवे तो १० विश्वा, सोम में हो तो २० मंगल में हो तो ८, बुध में हो तो १२, बृहस्पति में हो तो १८ शुक्र में हो तो १८ और शनैश्चर में हो तो ५ ॥ १२ ॥

जिस अवस्था में रवि की संक्रांति हो उसका फल–

स्यात्तैतिले नागचतुष्पदे रविः सुप्तो निविष्टस्तु गरादिपंचके ।
किंस्तुघ्न ऊर्ध्वः शकुनौ सकौलवेऽनिष्टः समःश्रेष्ठ इहार्घवर्षणे॥१३

(अन्वयः) तैतिले नागचतुष्पदे (करणे) रविः सुप्तः (सन् संक्रमितः) स्यात् तु (पुनः) गरादिपञ्चके निविष्टः (सन् संक्रमितः स्यात्) किंस्तुघ्न (तथा) सकौलवे शकुनौ ऊर्ध्वः (सन् संक्रमितः स्यात्) इह अर्घवर्षणे (क्रमात्) नेष्टः, समः श्रेष्ठः (स्यात्) ॥ १३ ॥

अर्थः—तैतिल नाग चतुष्पद इन करणों में संक्रान्ति होवे तो सूती कहनी । और गर वणिज भद्रा बव बालव इन करणों में संक्रान्ति होवे तो बैठी कहनी । और किंस्तुघ्न कौलव शकुनी इनमें होवे तो खडी कहनी । और अन्न आदि के भाव में और वर्षा में सूती संक्रान्ति अनिष्ट है । बैठी सम है और खड़ी श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥

संक्रान्ति में करणपरत्व से वाहन वस्त्र हथियार भक्ष्य लेपन आदिकों को फलसहित कहते हैं––

सिंहव्याघ्रवराहरासभगजा वाहद्विषद्घोटकाः
श्वाजौ गौश्चरणायुधश्च बवतो वाहा रवेः संक्रमे ।
वस्त्रं श्वेतसुपीतहारितकपांडुवारक्तकालासितं
चित्रं कंबलदिग्घनाभमथ शस्त्रं स्याद्भुशुण्डी गदा॥१४॥

खड्गो दण्डशरासतोमरमथो कुन्तश्च पाशोऽङ्कुशो-
ऽस्त्रं बाणस्त्वथ भक्ष्यमन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् ।
दुग्धं दध्यपि चित्रितान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्करा-
ऽथो लेपो मृगनाभिकुंकुममथो पाटीरमृद्रोचनम् ॥१५॥
यावश्चोतुमदो निशांजनमथो कालागुरुश्चंद्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ।
क्षत्रा वैश्यकशूद्रसंकरभवाः पुष्पं च पुंनागकं
जाती वाकुलकेतकानि च तथा बिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ।१६॥
स्यान्मल्लिका पाटलिका जपा च संक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः।
नाशश्च तद्वृत्युपजीविनां च स्थितोपविष्टस्वपतां च नाशः१७

(अन्वयः) ववतः (ववमारभ्य) रवेः संक्रमे (सति) (क्रमात्) सिंह-व्याघ्रवराहरासभगजा, वाहद्विपद्घोटकाः । श्वा अजः गौः चरणायुधः (एते) वा[?]ः (ज्ञेयाः), (तथा) श्वेतसुपीतहारितकपाण्डुरारक्तकालासितं चित्रं कम्बलदिग्धताभ्रं (एतद्वस्त्रं ज्ञेयं), अथ भुशुण्डीगदा खङ्गः दण्डशरासतोमरं अथो कुन्तः पाशः अंकुशः अस्त्रं बाणः (एतत्) शस्त्रं स्यात्, अथ अन्नपरमान्नं भैक्ष्यपक्वान्नकम् दुग्धं, दधि अपि (तथा) चित्रितान्नगुडमध्वाज्यं तथा शर्करा (एतत्) भक्ष्यं (ज्ञेयम्), अथ मृगनाभिकुङ्कुमं अथो पाटीरमृद्रोचनम् यावः च (पुनः) ओतुमदः निशाञ्जनम् अथ कालागुरुः चन्द्रकः (एष) लेपः, लेपः, (तथा) दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रा ततः क्षत्री वैश्यकशूद्रसंकरभवाः (एषा) जातिः (ज्ञेया), च (पुनः) पुँनागकं जातीवाकुलकेतकानि च (तथा) बिल्वार्कदूर्वाम्बुजं मल्लिका पाटलिका च [पुनः] जपा (एतत्) पुष्पं स्यात् । (पुनः) संक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः तद्वृत्युपजीविनां च नाशः (स्यात्) च (तथा) स्थितोपविष्टस्वपतां नाशः (स्यात्) ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

अर्थः—बव आदि ग्यारह करणों में क्रमसे सिंह आदि संक्रांतियों के वाहन कहते हैं । जैसे बवकरणों में लगी हुई संक्रांतिका वाहन सिंह, बालवमें लगी

का व्याघ्र कौलवमें लगीका वराह, तैतिलमें लगीका गर्दभ, गरमें लगीका हस्ती, वणिजमें लगीका महिष, विष्टिमें लगीका घोडा, शकुनीमें लगीका कुत्ता, चतुष्पदमें लगीका मेढा, नागमें लगीका गौ, किंस्तुघ्नमें लगीका मुरगा होता है। इनका वस्त्र क्रमसे सुफेद पीला हरा पांडु लाल काला नीला विचित्र कंबल नंगी मेघवर्ण ऐसा है। इसी क्रमसे भुशुण्डी आदि शस्त्र कहते हैं। जैसे भुशुण्डी गदा ॥ १४ ॥ खड्ग दण्ड धनुष तोमर भाला पाश अंकुश अस्त्र बाण अंकुश अस्त्र बाण इस प्रकारसे शस्त्र जानने। अब करणके अनुसार भोजन भी कहते हैं। जैसे ववकी संक्रांतिका अन्न, फिर परमान्न भिक्षा पक्वान्न दूध दही खिचड़ी गुड़ सहद घृत सक्कर, ऐसे करणों के क्रमसे भोजन जानना और करणोंकेही क्रमसे लेपन कहते हैं। जैसे ववकी संक्रांतिका चन्दन कस्तूरी फिर केशर पाटीर चन्दन मृत्तिका गोरोचन ॥ १५ ॥ [महावर] जवादि हलदी कज्जल स्याह अगर कपूर ऐसे लेपन कहे हैं। अब वव आदि करणोंही की क्रम से जाति कहते हैं। जैसे ववकरणकी संक्रांतिकी जाति देवता, भूत सर्प पक्षी पशु मृग ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अनुलोमज प्रतिलोमज ऐसे जाति जानना। अब करणोंही के क्रमसे पुष्प, कहते हैं। जैसे ववकरणकी संक्रांतिका पुन्नाग अर्थात् नागकेसर का पुष्प, क्रमसे चमेली मौलसरी केतकी बिल्व आक दूर्वा कमल॥१६॥ मालती गुलाब जपा इन्होंके पुष्प जानने। अब इन सबोंका फल कहते हैं जो संक्रांतिके वस्त्र भोजन वाहन आदि होवें तिनका नाश हो और इन संक्रांतिके वाहन आदिकों से आजीवन करनेवालोंका नाश हो और खड़ी बैठी सूती संक्रांति में खड़े बैठे सुतोंका नाश हो ॥ १७ ॥ ॥

अब संक्रांतिवशसे शुभाशुभ फल—

संक्रांतिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे स्वभे निरुक्तं गमनं ततोऽगभे।
सुखं त्रिभे पीडनमङ्गभेंऽशुकं त्रिभेऽर्थहानी रसभे धनागमः ॥१८॥

[अन्वयः] संक्रांतिधिष्ण्याधरधिष्ण्यतस्त्रिभे स्वभे त्रिभे गमनं निरुक्तं ततोऽगभे तदा सुखं स्यात् ततस्त्रिभे स्वभे पीड़नं स्यात् अंगभेंऽशुकं वस्त्रादिप्राप्तिः स्यात् ततस्त्रिभेऽर्थहानिः रसभे धनागमो भवतीति ॥ १८ ॥

अर्थः-जिस जन्म नक्षत्रपर संक्रांति हो उस नक्षत्रसे पहले जो नक्षत्र हो उनसे अपने जन्मनक्षत्र तक गिने। जो वह ३ नक्षत्रोंमें होय तो गमन करावै। पीछे ६ नक्षत्रों में होय तो सुखद। फिर तीन नक्षत्रों में पीड़ा करै। फिर ६

नक्षत्रोंमें वस्त्रकी प्राप्ति करावे । फिर तीन नक्षत्रोंमें अर्थ की हानि होवे । फिर छः नक्षत्रोंमें धनकी प्राप्ति हो ॥ १८ ॥

कार्यविशेष में ग्रहविशेष का फल—

नृपेक्षणं सर्वकृतिश्च संगरः शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे रवेः ।
वीर्येऽथताराबलतो विधुर्विधोर्बलाद्रविस्तद्बलतः शुभाः परे॥१९॥

[अन्वयः] रवेः वीर्ये सति नृपेक्षणं विधेयं एवं चन्द्रस्यापि सर्वकृतिः [च] संगरः शास्त्रं विवाहो गमदीक्षणे विधौ अथ ताराबलतो विधुर्विधोर्बलाद्रविः शुभः अर्कबलात् कुजादयः शुभा ज्ञेयाः ॥ १९ ॥

अर्थः—रविसे लेकर ये कर्म शुभ हैं । रविके राजदर्शन शुभ कहा है, चन्द्रमा के बलसे सब कार्य, मंगलके बलसे युद्ध, बुधके बलसे शास्त्र पढ़ना, गुरु के बलसे विवाह, शुक्रके बलसे यात्रा शनिके बलसे दीक्षा आदि और ताराके बलसे चन्द्रमाशुभ जानना । जब चन्द्रसंक्रमण होवे और उसी समय तारा बली होवे तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ कहना और दुष्ट तारामें शुभ चन्द्रमा भी अशुभ जानना । ऐसेही चन्द्रबलसे, रवि संक्रमण में अशुभ मासपर्यंत शुभ है और भौम आदि रविबलसे शुभ भी अशुभ कहने । जैसे रविबलसे अशुभ और शुभ कहने और खोटा होवे तो शुभ अशुभ जानने ॥ १९ ॥

अधिक और क्षयमासों का लक्षण—

स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीन उक्तो मासोऽधिमासः क्षयमासकस्तु ।
द्विसंक्रमस्तत्र विभागयोस्तस्तिथेर्हि मासौ प्रथमांत्यसंज्ञौ २०॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ संक्रांतिप्रकरणम् ॥ ३ ॥

[अन्वयः] स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीनचान्द्रः चान्द्रमासोऽधिमासः स्यात् तत्र तस्मिन्नधिमासे द्विसंक्रमश्चेत्तदा क्षयमासः स्यात् (तु) तिथेः त्रिभागयोः हि निश्चये प्रथमान्त्यसञ्ज्ञौ मासौ स्तः ॥ २० ॥

अर्थः—शुक्ल प्रतिपदासे अमावास्यापर्यंत चांद्रमास है सो स्पष्ट सूर्य संक्रांतिसे रहित होवें तो अधिकमास कहा है । एक चांद्रमासमें दो [illegible] होवें तो क्षयमास कहा है तथा तिथिके विधानसे प्रथम और अंत्यमास जानने ॥ २० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणिभाषाटीकायां संक्रांतिप्रकरणं तृतीयम् ॥ ३ ॥

अथ गोचरप्रकरणम् ४।



ग्रहों के गतिवश से रवि, चन्द्रमा, मंगल, शनि और राहु का फल–

सूर्यो रसांत्ये खयुगेऽग्निनंदे शिवात्ययोर्भौमशनी तमश्च।
रसांकयोर्लाभशरे गुणांत्ये चंद्रोऽम्बराब्धौ गुणनंदयोश्च ॥ १ ॥
लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वये ज्ञो द्विशरेऽब्धिरामे।
रसांकयोर्नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुःशराब्धौ ॥२॥
ब्ध्यंत्ये नवांशेऽद्रिगुणे शिवाह्वौ शुक्रःकुनागे द्विनगेऽग्निरूपे।
वेदांबरे पंचनिधौ गजेषौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ ३ ॥
क्रमाच्छुभो विद्ध इति ग्रहः स्यात्पितुःसुतस्यात्र न वेधमाहुः।
दुष्टोपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभो द्विकोणे शुभदःसितेऽब्जः ॥४॥

(अन्वयः) स्वजन्मराशेः सूर्योग्रहः रसान्त्ये खयुगे अग्निनन्देशिवात्ययोः, भौमशनीतमश्च रसांकयोः लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्रः अम्बराब्धौ (च) गुणनन्दयोः लाभाष्टमे (च) आद्यशरे रसान्त्ये नगद्वयेज्ञः द्विशरेऽब्धिरामे रसांकयोः नागविधौ खनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ द्व्यन्त्ये नवांऽशे द्विगुणे शिवाह्वौ, शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे वेदाम्बरेपञ्चनिधौ गजेषौ नन्देशय मानुरसे शिवाग्नौ एते क्रमात् शुभः स्यात् विद्धः स्यादिति अत्र पितुः सुतस्य वेधं न आहुः। स्वजन्मराशेः दुष्ट, अपि खेटो विपरीतवेधात् शुभः स्यात् सिते शुक्लपक्षे अब्जश्चन्द्रः द्विकोणे तदा शुभदः स्यादिति ॥ १–२–३–४ ॥

अर्थः–जन्मराशि से छुटे स्थान में सूर्य शुभ है परन्तु उस समय में जब कि बारहवें स्थानमें शनिके विना कोई ग्रह न हो। जो बारहवें स्थानमें कोई ग्रह न हो तो सूर्य अशुभ है। उसी प्रकार दशम सूर्य शुभ है यदि चौथे शनिके विना कोई ग्रह न हो तो। तीसरे स्थानमें सूर्य शुभ है यदि नवम स्थानमें शनिके विना कोई दूसरा ग्रह न हो तो। ग्यारहवें स्थान में सूर्य शुभ है यदि पांचवें

स्थानमें शनिको छोड़ कोई ग्रह न हो तो। छठे स्थान में मंगल शुभ है यदि नवम स्थान में कोई ग्रह न हो तो ग्यारहवां मंगल शुभ है यदि पांचवें स्थानमें कोई ग्रह न हो तो तीसरे मंगल शुभ है जो बारहवें स्थानमें कोई ग्रह न हो तो। छठे स्थानमें शनि शुभ है यदि नवम स्थानमें सूर्य के विना कोई ग्रह न हो तो। तीसरे में शनि शुभ है जो बारहवें स्थानमें सूर्यके विना कोई ग्रह न हो तो। छठे में राहु शुभ है यदि नवम स्थानमें कोई ग्रह न हो तो। ग्यारहवें में राहु शुभ पांचवें में कोई ग्रह न हो तो। तीसरे मे राहु शुभ है यदि बारहवें में कोई ग्रह न हो तो। दशवे में चंद्रमा शुभ है यदि चौथे में बुधके विना कोई ग्रह न हो तो। तीसरे में चन्द्रमा शुभ है यदि नवममें बुधके विना कोई ग्रह न हो तो ॥१॥

बुध गुरु शुक्र इनका गतिविचार से फलं-

ग्यारहवें चन्द्रमा शुभ है जो आठवें बुधके विना कोई ग्रहन हो तो जन्म का चन्द्रमा शुभ है यदि पाँच में बुध के विना कोई ग्रह न हो तो। छठे चन्द्रमा शुभ है जो बारहवें बुध विना कोई ग्रह न हो तो। सातवें चंद्रमा शुभ है जो दूसरे बुधके विना कोई ग्रह न हो तो। दूसरे बुध शुभ है जो पांचवें चंद्रमा के विना कोई ग्रह न हो तो। चौथे बुध शुभ है जो तीसरे चंद्रमाके विना कोई ग्रह न हो तो। छठे बुध शुभ है आठवें चंद्रमाके विना जन्मका ग्रह न तो। दशवें बुध शुभ है जो आठवें चन्द्रमाके विना कोई ग्रह न हो तो। ग्यारवें बुध शुभ है, जो बारहवें चंद्रमाके विना कोई ग्रह न हो तो पांचवें बृहस्पति शुभ है। जो चौथेमें कोई ग्रह न हो तो ॥ २॥ दूसरे बृहस्पति शुभ है, जो बारहवें कोई ग्रह न हो तो। नवें बृहस्पति शुभ है, जो दशवें कोई ग्रह न हो तो। सातवें बृहस्पति शुभ है, जो तीसरेमें कोई ग्रह न तो। ग्यारहवें बृहस्पति शुभ है। जो आठव कोई ग्रह न हो तो। जन्मका शुक्र शुभ है, जो आठवें कोई ग्रह न हो तो। दूसरे शुक्र शुभ है, जो सातवें कोई ग्रह न हो तो। तीसरे शुक्र शुभ है जो जन्म का कोई ग्रह न हो तो। चौथे शुक्र शुभ है यदि दशवें कोई ग्रह न हो तो। पांचवें शुक्र शुभ है, जो नवें कोई ग्रह न, हो तो। आठवें शुक्र शुभ है, जो पांचवे कोई ग्रह न हो तो। नवें शुक्र शुभ है, जो ग्यारहवें कोई ग्रह न हो तो। बारहवें शुक्र शुभ है, जो छठ कोई ग्रह न हो तो। ग्यारहवें शुक्र शुभ है, जो तीसरे में कोई ग्रह न हो तो॥३॥

वामवेध और शुक्लपक्ष में चंद्रबल कहते हैं—

अर्थः—इस क्रमसे शुभ और विद्ध ग्रह होते हैं। पिता और पुत्र का वेध नहीं होता। जैसे सूर्य और शनिका चंद्रमा और बुधका इत्यादि विपरीत वेधसे

पाप ग्रह भी शुभ हो जाता है, जैसे बारहवें स्थानमें सूर्य शुभ है जो छठे स्थान में शनिके बिना कोई ग्रह न हो तो। जो शुक्लपक्षका चंद्रमा दूसरे नवें पांचवें इन स्थानोंमें हो तो वह शुभ फल देता है ॥ ४ ॥

दो प्रकारका वेध कहते हैं-

स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः।
हिमाद्रिविंध्यांतर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः॥५॥

(अन्वयः) स्वजन्मराशेः सकाशाद् वेध स्यादिह अन्ये आचार्या आहुः सः ग्रहाधिष्ठितो ज्ञेयः स वेधः हिमाद्रिविंध्यान्तर एव देशे सर्वदेशेषुनेति काश्यपोक्तिः॥५

अर्थः-नारद आदि मुनि अपनी जन्म राशिसे इस ग्रहवेधको कहते हैं। अन्य मुनि जिस राशिपर ग्रह हो उस राशिसे ग्रहवेध कहते हैं। यह ग्रहवेध हिमालय पर्वत और विंध्याचल पर्वतके मध्यके देशोंमें है और सब देशोंमें नहीं है ऐसा कश्यप मुनि कहते हैं ॥ ५ ॥

जिस राशियोंमें ग्रहण होवे तिसको अपने राशिसे शुभाशुभज्ञान-

जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा
चिंतासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयः स्युर्माननाशः सुखम्।
लाभोपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगो-
दानं शांतिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे॥ ६॥

(अन्वयः) जन्मर्क्षे ग्रहे सति निधनं स्यात् जनिभतः जन्मराशेः ग्रहणे सति घातः क्षतिः श्रीः व्यथा चिन्तासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयः स्युः माननाशः इति क्रमात् सुखम् लाभोऽपायः तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगोदानं कार्यं अथ शान्तिश्च कार्या (तु) अशुभदं ग्रहं ग्रहणं नो वीक्ष्य परे आचार्या आहुः ॥ ६ ॥

अर्थः-जन्मके नक्षत्रपर ग्रहण हो तो मृत्यु होवे जन्मकी राशिपर हो तो घात दूसरी राशिपर हो तो द्रव्यनाश, तीसरी राशिपर हो तो लक्ष्मीप्राप्ति चौथी राशिपर हो तो दुःख पांचवीं राशिपर हो तो चिन्ता, छठवीं राशिपर हो तो सुख, सातवीं राशिपर हो तो स्त्री को पीड़ा आठवीं राशिपर हो तो मरण, नवीं राशिपर हो तो माननाश, दसवीं राशी पर हो तो सुख, ग्यारहवीं राशि

पर लाभ, बारहवीं राशिपर हो तो नाश, इस क्रमसे फल होता है। दुष्ट फलके नाशके अर्थ जप सोना गौ इनका दानकरना अशुभ फल देनेवाला ग्रहण देखना योग्य नहीं है ऐसा कुछ पंडित कहते हैं ॥ ६ ॥

चन्द्रबलमें विशेष विचार–

पापांतः पापयुग्द्यूने पापाच्चन्द्रः शुभोप्यसन्।
शुभांशे वाधिमित्रांशे गुरुदृष्टोऽशुभोपि सन् ॥ ७ ॥

(अन्वयः) चन्द्रः पापान्तः पापयुक् पापात् सकाशाद्द्यूने सप्तमस्थाने तदा शुभोऽप्यसत् यदि चन्द्रः शुभांशे वा अधिमित्रांशे गुरुदिष्टस्तदा अशुभं अपि सत्स्यादिति ॥ ७ ॥

अर्थः–शुभदायक चंद्रमा भी यदि पापग्रहोंके बीच होवे वा पापग्रहसे युक्त होवे और पापग्रहसे सातवाँ होवे तो अशुभ जानना। और अशुभ चंद्रमा शुभ ग्रहके नवांशकमें हो वा मित्रके नवांशकमें हो बृहस्पतिसे देखा जाता होवे तो शुभप्रद जानना ॥ ७ ॥

शुक्लपक्षादि चंद्रमा का फल—

सितासितादौ सद्दुष्टे चंद्रे पक्षौ शुभावुभौ।
व्यत्यासे चाशुभौ प्रोक्तौ संकटेऽब्जबलं त्विदम् ॥ ८ ॥

(अन्वयः) सितादौ शुक्लपक्षप्रतिपदि सद्समीचीने चन्द्रे सति तथा असितादौ कृष्णपक्षप्रतिपदि चन्द्रेऽसमीचीने सति उभौ पक्षौ शुभौ स्याताम्। व्यत्यासे (च) अशुभौ प्रोक्तौ सङ्कटे (तु) इदं अब्जबलं विचार्यम् ॥ ८ ॥

अर्थः—शुक्लपक्षकी प्रतिपदामें चंद्रमा शुभ हो तो संपूर्ण शुक्लपक्ष शुभ है और कृष्णपक्षकी प्रतिपदामें चंद्रमा दुष्ट हो तो संपूर्ण कृष्णपक्ष शुभ जानना और इससे विपरीतमें शुक्लप्रतिपदाका चंद्रमा दुष्ट हो तो संपूर्णपक्ष अनिष्ट है। वैसे ही कृष्ण प्रतिपदामें चन्द्रमा शुभ हो तो सम्पूर्ण कृष्णपक्ष अनिष्ट है। यह चन्द्रबल संकट में विवाहमें, यात्रा आदि में विचार करना ॥ ८ ॥

ग्रहोंके दोषपरिहारार्थ नवरत्नों की धारणविधि—

वज्रं शुक्रेऽब्जे सुमुक्ता प्रवालं भौमेऽगौ गोमेदमार्कौ सुनीलम्।
केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे पाचिः प्राङ्माणिक्यमर्के तु मध्ये ॥ ९ ॥

(अन्वयः) शुक्रे शुक्र प्रीतये वज्रं धार्यं अब्जे सुमुक्ता धार्या भौमे प्रवालं धार्यम् अगौ गोमेदम् आर्कौ सुनीलं धार्यम् । केतौ वैदूर्यं गुरौ पुष्पकं ज्ञे चापिः (तु) अर्के मध्ये माणिक्यम् धार्यम् ॥ ९ ॥

अर्थः—ग्रह की दोषनिवृत्ति और प्रसन्नताके अर्थ नवरत्नोंका दान करना। अथवा उनको धारण करना कहा है। सुवर्णको मुद्रिकामें शुक्रकी प्रसन्नताके वास्ते पूर्वकी ओर हीरा धारण करना, चन्द्रमाके वास्ते आग्नेयी में मोती, भौमके वास्ते दक्षिणमें मूँगा, राहुके वास्ते नैर्ऋतिमें गोमेद, शनिके वास्ते पश्चिममें नीलम केतुके वास्ते वायव्यमें वैदूर्य, गुरुके वास्ते उत्तरमें पुष्पराज, बुधके वास्ते ईशान में पन्ना सूर्यके वास्ते मध्यमें माणिक्य धारण करना ॥ ९ ॥

दुष्ट ग्रह के रत्न—

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् ।
गोमेदवैदूर्यकमर्कतः स्यूरत्नान्यथो ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ॥१०॥

(अन्वयः) अथार्कादीनां ग्रहाणां सन्तुष्ट्यै, माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् , गोमेदवैदूर्यकम् धार्यं अर्कतः रत्नानि धार्याणि स्युः ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् धार्यम् ॥ १० ॥

अर्थः-सम्पूर्ण रत्न धारणकी सामर्थ्य न होवे तो अलग २ रत्न धारण करै। माणिक, मोती, मूंगा, गारुत्मक, पुष्पराग, हीरा, नीलम, गोमेद, वैदूर्य ये रत्न सूर्यादिकोंके वास्ते धारण करना और बुधकी प्रीतिके वास्ते सुवर्ण धारण करना ॥ १० ॥

अल्पमूल्यरत्न और तारावल-

धार्यं लाजावर्तकं राहुकेत्वो रौप्यं शुक्रेन्द्वोश्च मुक्ता गुरोस्तु ।
लोहं मन्दस्यारभान्वोः प्रवालं तारा जन्मर्क्षात्त्रिरावृत्तितःस्यात्११

(अन्वयः) राहुकेत्वोः प्रीत्यै लाजावर्त्तकं (च) शुक्रेन्दोः रौप्यं धार्यं गुरोस्तु मुक्ता धार्या मन्दस्य लोहं धार्यं आरभान्वोः प्रवालं धार्यम् जन्मर्क्षात् सकाशात् त्रिरावृत्तितः तारा स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः–राहु केतुकी प्रीतिके वास्ते लाजावर्तमणि धारण करना, शुक्रचन्द्रकी प्रीतिके वास्ते चांदी धारण करना, बृहस्पतिके वास्ते मोती धारण करना, शनिके वास्ते लोहा धारण करना, सूर्य और मङ्गलके वास्ते मूंगा धारण करना। जन्मनक्षत्रसे तीन आवृत्ति तक दिनके नक्षत्रको गिनै तो तारा होता है ॥ ११ ॥

विशेष ताराओंकी संज्ञा—

जन्माख्यसंपद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः ।
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारा नामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

(अन्वयः) जन्माख्य सम्पत् विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः वधमैत्रातिमैत्राः, एतास्ताराः स्युः. तास्ताराः नामसदृक्फलाः स्युरिति ॥ १२ ॥

अर्थः–जन्माख्य संपत् विपद् क्षेम प्रत्यरि साधक वध मैत्र अतिमैत्र ये तारा नामके तुल्य फल देते हैं ॥ १२ ॥

आवश्यक कृत्यमें ताराओंका परिहार–

मृत्यौ स्वर्णतिलान्विपद्यपि गुडं शाकं त्रिजन्मस्वथो
दद्यात्प्रत्यरितारकासु लवणं सर्वो विपत्प्रत्यरिः ।
मृत्युश्चादिमपर्यये न शुभदोऽथैषां द्वितीयेंऽशका
नादिप्रांत्यतृतीयका अथ शुभाः सर्वे ततीये स्मृताः १३

(अन्वयः) मृत्यौ सप्तम्यां वधतारायां स्वर्णतिलान् दद्यात्विपदि अपि गुडं दद्यात् त्रिजन्मसु जन्मतारासु शाकं दद्यात् अथो प्रत्यरितारकासु पञ्चम्यां तारायां लवणं दद्यात् आदिमपर्यये प्रथमवृत्तौ विपत्प्रत्यरि मृत्युश्च शुभदः न अथ द्वितीये पर्यये एषां, आदिप्रान्ततृतीयका अंशका शुभाः न, अथ तृतीये पर्यये विपत्प्रत्यरि मृत्यवश्चैते सर्वे अपि शुभाः स्मृताः, इति ॥१३॥

अर्थः–आवश्यक कृत्यमें दुष्ट ताराओंके परिहार इस प्रकार है कि वधतारा में सुवर्ण तिलदान करना और विपतमें गुड़दान जन्मके तीनों ताराओंमें शाक दान; प्रत्यरि तारामें लवणदान, और किसी २ का वचन है कि प्रथम आवृत्ति

गिननेमें विपत् प्रत्यरि मृत्यु ये शुभ नहीं। दूसरी आवृत्तिमें विपत्प्रत्यरि मृत्यु इनका क्रमसे पहला, चौथा तीसरा चरण निषिद्ध है। जैसे विपत्ताराका तीसरा चरण निषिद्ध है। जैसे विपत्ताराका पहला चरण निषिद्ध, प्रत्यरिका चौथा चरण निषिद्ध, मृत्युताराका तीसरा चरण। अथवा तीसरी आवृत्ति गिननेमें सब तारे शुभ हैं॥ १३॥

चन्द्रकी अवस्थाकी गणना की रीति-

षष्टिघ्नं गतभं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम्।
शराब्धिहृल्लब्धतोऽर्कशेषेऽवस्थाः क्रियाद्विधोः॥ १४॥

(अन्वयः) गतभं षष्टिघ्नं कार्यं भुक्तघटीयुक्तं युगाहतम् शराब्धिहृत् लब्धतः, अर्कशेषे सति क्रियात् मेषात् विधोः चन्द्रस्यावस्थाः स्युः, इति।

अर्थः-अश्विनीसे लेकर गत नक्षत्रको साठसे गुणै पीछे वर्तमान नक्षत्रकी भुक्त घड़ी मिलावै फिर उनको चौगुना करै और पैंतालीस का भाग दे जो लब्ध हो उसमें १२ का भाग देनेसे शेष चन्द्रमाकी मेषसे प्रवासादि गत अवस्था होती हैं॥ १४॥

बारह अवस्थाओंके फल सहित नाम-

प्रवासनाशौ मरणं जयश्च हास्यारतिः क्रीडितसुप्तभुक्ताः।
ज्वराख्यकंपस्थिरता अवस्था मेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाःस्युः१५

(अन्वयः) प्रवासनाशौ मरणं (च) जयः हास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः, ज्वराख्यकम्पस्थिरता मेषात् क्रमादेते अवस्थाः स्युःते नामसदृक्फलाः भवन्ति १५

अर्थः-बारह अवस्थाओंके फलों सहित इस प्रकार नाम हैं। प्रवास, नाश, मरण, जय, हास्य, रति, क्रीडा, सुप्त, भुक्त, ज्वर, कंप, स्थिरता, ये अवस्था मेष से यथाक्रम जाननी और इसके नामानुरूप फल जानना॥ १५॥

ग्रह शान्त्यर्थ औषधियुक्त जल से स्नान और दक्षिणा-

लाजाकुष्ठबलाप्रियंगुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितं स्नानं ग्रहोत्थाघहृत्।

धेनुः कम्बुररुणो वृषश्च कनकं पीतांबरं घोटकः
श्वेतो गौरसितामहासिरज इत्येता खेर्दक्षिणाः ॥१६॥

(अन्वयः) ग्रहोत्थाघहृत् लाजाकुष्ठवलाप्रियगुघनसिद्धार्थैः निशादारुभिः पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैः स्नानं निगदितम् । धेनुः कम्बुररुणः वृषश्च कनकं पीताम्बरम् श्वेतको घोटकः, असिता गौः महासिरज एताः रवेर्दक्षिणाः स्युरिति ॥ १६ ॥

अर्थः-ग्रहों का दोष दूर होनेके वास्ते औषधियों सहित जल स्नान और दक्षिणा कहते हैं कि लज्जावती कूट खरैठी फलिनी नागरमोथा सरसों हलदी देवदार शरपुङ्खा लोध ये औषधियां जल में मिला कर स्नान करना ग्रहके दोष को निवृत्त करता है। सूर्यके वास्ते गोदान, चंद्रमाके वास्ते शंख, मंगलके वास्ते लाल बैल, बुधके वास्ते सोना, बृहस्पतिके वास्ते पीला कपड़ा, शुक्रके वास्ते सफेद घोड़ा, शनिके वास्ते काली गौ, राहुके वास्ते तलवार, केतुके वास्ते बकरी दान देना। सूर्य आदि ग्रहोंकी ये दक्षिणा हैं ॥ १६ ॥

ग्रह गंतव्यराशिसे पूर्व कितने दिन फल देते हैं-

सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिघस्रान् विधुरग्निनाडीः ।
तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान् गंतव्यराशेः फलदाःपुरस्तात्१७

(अन्वयः) सूर्यारसौम्यास्फुजितः गन्तव्यराशेः सकाशात्पुरस्तात् अक्षनाग सप्ताद्रिघस्रान् फलदाः स्युः, विधुश्चन्द्रः अग्निनाड़ीः गन्तव्यराशेःपुरस्तात् फलदो भवति तमोयमेज्याः त्रिरसाश्विमासान् गन्तव्यराशेः फलदा भवन्ति ॥ इति १७

अर्थः-सूर्य आदि ग्रह अगली राशिका ऐसे घड़ी दिनमासों करके शुभ अशुभ फल पहलेही से करते हैं। सूर्य पांच दिन पहले फल करता है, मङ्गल आठ दिन पहले बुध सात दिन, पहले, शुक्र सात दिन पहले, चंद्रमा तीन घड़ी पहले, राहु तीन महीना पहले, शनैश्चर छ महीना पहले, बृहस्पति दो महीना पहले अपने शुभाशुभ फल प्रगट करते हैं ॥ १७ ॥

आवश्यक कृत्यमें दुष्टतिथि आदिकोंका दान-

दुष्टे योगे हेम चंद्रे च शंखं धान्यं तिथ्यर्धे तिथौ तंडुलांश्च ।
वारे रत्नं भे च गां हेम नाड्यां दद्यात्सिधत्थं च तारासु राजा १८

(अन्वयः) योगे व्यतीपातरूपे, दुष्टे सति राजा द्विजेभ्यः हेम सुवर्ण दद्यात् चन्द्रे [च] दुष्टे सति शङ्खंदद्यात् तिथौ दुष्टे सति तण्डुलान् च दद्यात् वारे रत्नंदद्यात् भे दुष्टे (च) गां दद्यात् नाड्यां दुष्टे सति हेम दद्यात् तारासु दुष्टासु (च) सिन्धूत्थम् दद्यादिति ॥ १८ ॥

अर्थः-राजा दुष्टयोग तथा दुष्ट घड़ीयोंमें सुवर्ण देवे, दुष्टचन्द्रमें शंख देवै, तिथ्यर्धमें धान्य देवै, दुष्ट तिथिमें चावल देवे, दुष्ट वारमें रत्न देवे, दुष्ट नक्षत्र में गौ देवै तथा दुष्ट तारामें सैंधवलवण देवे ॥ १८ ॥

ग्रह जो प्रारम्भमें वा मध्यमें वा अन्तमें राशिका फल देते हैं—

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्जमंदौ ।
अध्वान्नवह्निभयसम्मतिवस्त्रसौख्य-
दुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ॥ १९ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ गोचरप्रकरणम् ॥ ४ ॥

(अन्वयः) रविकुजौ राश्यादिगौ फलदौ स्तः सितेज्यौ मध्ये फलदौ भवतः शशिसुतः सदा फलदः स्यात् , अब्जमन्दौ चरमे फलदौ स्याताां रविवासरादौ जनिभे मासि अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानि भवन्तीति ॥ १९ ॥

अर्थः-रवि और मंगल राशिकी आदिमें फल देते हैं शुक्र और बृहस्पति बीचमें फल देते हैं, बुध सर्वदा फल करता है चंद्रमा और शनि अंतमें फल देते हैं और जिस महीनेमें अपने जन्मनक्षत्र प्रवेशमें सूर्यादि वार हों उस महीने में इस क्रमसे फल होता है। जैसे जिस महीनेमें रविवारमें जन्म नक्षत्र होवें तो मार्गफल कहना। चंद्रवारमें अन्नप्राप्ति, मंगलमें अग्निभय, बुधमें सम्पत्ति, गुरुमें वस्त्रप्राप्ति, शुक्रमें सौख्य और शनिमें दुःख ऐसा फल जानना ॥ १९ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणिभाषाटीकायां गोचरप्रकरणं चतुर्थम् ॥ ४ ॥

संस्कारप्रकरणम् ५।

प्रथम रजोदर्शन शुभसूचक-

आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेषफाल्गुने।
ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा ॥ १ ॥

(अन्वयः) माघमार्गराधेषफाल्गुने तथा ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा आद्यं प्रथमोद्भवं रजो दर्शनं शुभम्भवति ॥ १ ॥

अर्थः-माघ मार्गशिर वैशाख आश्विन फाल्गुन ज्येष्ठ श्रावण इन महीनों में पहले रजोदर्शन अर्थात् स्त्री पहले रजस्वला हो तो शुभ है तथा शुक्लपक्षमें शुभ बारमें शुभ लग्नमें और दिनमें भी शुभ है ॥ १ ॥

रजोदर्शन में उत्तम, मध्यम और अनिष्ट नक्षत्र-

श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सितांबरे।
मध्यं च मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत् ॥ २ ॥

(अन्वयः) श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौ सितांबरे आद्यं रजः शुभं, मूलादितिभे (च पितृमिश्रे मध्यमं स्यात् ॥ २ ॥

अर्थः-श्रवण धनिष्ठा शतभिषा मृगशिरा अनुराधा चित्रा रेवती पुष्प हस्त अश्विनी अभिजित् तीनों उत्तरा रोहिणी स्वाती इन नक्षत्रोंमें भी प्रथम रजोदर्शन होना शुभ है सुफैद वस्त्रोंमें शुभ है। और मूल पुनर्वसु मघा कृत्तिका विशाखा इन्होंमें प्रथम रजोदर्शन मध्यम है औरोंमें अशुभ है ॥ २ ॥

अमङ्गलसूचक प्रथम रजोदर्शन-

भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु।
रोगेऽष्टम्यां चंद्रसूर्योपरागे पाते चाद्यं नो रजोदर्शनंसत ३

(अन्वयः) भद्रानिद्रासंक्रमे दर्शरिक्तासन्ध्यापष्ठीद्वादशीवैधृतेषु, रोगे अष्टम्यां तिथौ चन्द्रसूर्योपरागे पाते पातयोगे आद्यं रजोदर्शनं नो सत् ॥ ३ ॥

अर्थः-भद्रा निद्रा संक्रांति अमावास्या रिक्तातिथि संध्यासमयछठ द्वादशी वैधृतियोग रोग अष्टमी चंद्रसूर्यका ग्रहण व्यतीपात इनमें प्रथम रजो दर्शन अशुभ है ॥ ३ ॥

रजस्वलाके स्नानमें शुभ मुहूर्त-

हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः
शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च ।
स्नायादथार्तववती मृगपौष्णवायु-
हस्ताश्विधातृभिररं लभते च गर्भम् ॥ ४ ॥

(अन्वयः) हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैः शक्रान्वितैः शुभतिथौ च शुभवासरे आर्तववती स्नायात् अथ मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातृभिश्चेदार्तववती स्नायात्तदा अरं शीघ्रं गर्भम् च लभते इति ॥ ४ ॥

अर्थः—हस्त स्वाती अश्विनी मृगशिर अनुराधा अनिष्ठा तीनों ।।उत्तरा रोहिणी ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में तथा शुभ तिथियोंमें शुभ वार में रजस्वला का स्नान शुभ है, और मृगशिर रेवती स्वाती हस्त अश्विनी रोहिणी इनमें रजस्वला स्त्री स्नान करे तो शीघ्र गर्भ धारण करे ॥ ४ ॥

गर्भाधानसंस्कारमें दिनशुद्धि-

गंडांतं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलांतकं
दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसान् पातं तथा वैधृतिम् ।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभपनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ ५ ॥
भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च संध्या भौमार्कार्की नाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेंद्वर्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वंबुपे सत् ॥ ६ ॥

(अन्वयः) स्वपत्नीगमे एतान् दोषान्त्यजेत् त्रिविधं गण्डान्तं निधनजन्मर्क्षे (च) मूलान्तकं दास्रं पौष्णं अथ उपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् । पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा (च) परिघाद्यर्धं उत्पातहतानि भानि जन्मर्क्षतः मृत्युभवनं

पापभम् पापग्रहयुक्तनक्षत्रम् इति। भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताः (च) सन्ध्या भौमार्कार्कीचतस्रः, आद्यरात्रीः रजोदर्शनं सत् न त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे गर्भाधानम् सत् न इति ॥ ५—६ ॥

अर्थः— गर्भाधानके निमित्त स्त्रीके पास गमन करनेमें इनको त्यागे। तिथि नक्षत्र लग्न इनके गंडांत निधनतारा जन्मनक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा ग्रहणदिन, व्यतीपात वैधृति मातापिताकी श्राद्धतिथी और दिन परिघका अर्धभाग इनमें स्त्रीगमन करना निषेध है और उत्पातसे दूषित नक्षत्रोंमें जन्मनक्षत्र से वा जन्मराशि में आठवें लग्नमें पापग्रह से युक्त नक्षत्र वा लग्नमें हो तब भी स्त्रीगमन न करे।५। भद्रा षष्ठी पर्वरिक्ता ४।६।१४ संध्या मङ्गल रवि शनैश्चर रजोदर्शनसे चार रात्री इनको गर्भधानमें त्याग देवे। तीनों उत्तरा मृगशिर हस्त अनुराधा रोहिणी स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा गर्भाधान के लिये श्रेष्ठ हैं ॥६॥

गर्भाधानमें लग्न आदि की शुद्धि—

केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने।
ओजांशगेऽब्जेपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात्

(अन्वयः) शुभैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणेषु स्थितैः, (च) तथा पापैः पापग्रहैः त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने अब्जे चन्द्रमसि ओजांशगेऽपि (च) युग्मरात्रौ गर्भाधानं कार्यम् चित्रादितीज्याश्विषु गर्भाधानं मध्यमम् स्यात् ॥ ७ ॥

अर्थः—लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, नवम, पंचम, इनमें शभग्रह होवें, तीसरे, छठवें ग्यारवें स्थानमें पापग्रह हों, रवि मंगल बृहस्पती से देखा लग्न होवे, चन्द्रमा विषम राशिके नवांशकमें हो, लग्नमें भी विषम राशी का नवांश हो समरात्रि होवे, तो गर्भाधान शुभ होता है और चित्रा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी, ये नक्षत्र होवें तो गर्भाधान मध्यम होता है ॥ ८ ॥

सीमन्तोन्नयनसंस्कारके मुहूर्त—

जीवार्कारदिने मृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभे-
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपे पीवरे।
सीमंतोऽष्टमषष्ठमासि शुभदैःकेंद्रत्रिकोणे खलै-
र्लाभारित्रिष वा ध्रुवांत्यसदहेप लग्ने च भांशके ॥८॥

(अन्वयः) जीवार्कारदिने मृगेज्यनिऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभैः रिक्तामार्कर-साष्टवर्ज्यतिथिभिः मासाधिपे पीवरे अष्टमषष्ठमासि शुभदैः केन्द्रत्रिकोणे स्थितैः खलैः लाभारित्रिषु वा ध्रुवान्त्यसद्दे पुम्भांशके लग्ने च तदा सीमन्तः शुभदो भवति ॥ ८ ॥

अर्थः-बृहस्पति रवि मंगल ये वार, मृगशिर पुष्य मूल श्रवण पुनर्वसु हस्त ये नक्षत्र, रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ अमावस द्वादशी छठ अष्टमी वर्जित तिथि या मासाधिप पुष्ट होवे आठवां छट्ठा महीना हो और केन्द्र त्रिकोणमें शुभग्रह क्रूर गृह लाभमें और छठे वो तीसरे होवें, नवांश और लग्न विषमराशिके हों॥ तीनों उत्तरा रोहिणी रेवती शुभग्रह का दिन ये होवें तो सीमन्तकर्म करने में श्रेष्ठ हैं ॥ ८ ॥

महीनों के अधिपति और स्त्रियों का चन्द्रबल--

मासेश्वराः सितकुजेज्यरवींदुसौरि-
चंद्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराः स्युः ।
स्त्रीणां विधोर्बलमुशंति विवाहगर्भ-
संस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ॥ ९ ॥

(अन्वयः) सितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराः मासेश्वराः स्युः विवाहगर्भसंस्कारयोः स्त्रीणां विधोः बलं उशन्ति, इतरकर्मसु भर्तुः, एव चन्द्रबलं ग्राह्यमिति ॥९ ॥

अर्थः-शुक्र मंगल बृहस्पति रवि चन्द्र शनैश्चर बुध लग्नस्वामी चन्द्र सूर्य ये दश महीनों के स्वामी हैं। विवाह में और गर्भाधानसंस्कारमें स्त्रीको चन्द्रबल देखना और अन्य कार्मों में पतिको चन्द्रबल देखना ॥ ९ ॥

पुंसवन और विष्णुपूजाका मुहूर्त—

पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा ।
मासेऽष्टमे विष्णुविधातृजीवैर्लग्ने शुभे मृत्युगृहे च शुद्धे॥१०॥

(अन्वयः) पूर्वोदितैः किन्तु पूर्वोक्ततिथिवारनक्षत्रैः तृतीये मासे पुंसवनं विधेयम्, तु अथ अष्टमे मासे विष्णुविधातृजीवैः नक्षत्रैः शुभे लग्ने मृत्युगृहे शुद्धे च यदा विष्णुपूजा स्यादिति ॥ १० ॥

अर्थः-पहले सीमन्त कर्ममें कहे तिथि आदियुक्त तीसरे मासमें पुंसवन कर्म करना और सीमन्तकर्मके अनन्तरही आठवें महीनेमें श्रवण रोहिणी पुष्य इन नक्षत्रोंमें शुभग्रहसे देखेहुए शुभ लग्नमें, और अष्टम स्थान ग्रहसे रहित हो ऐसे दिन विष्णुपूजा करनी योग्य है ॥ १० ॥

जातकर्म और जातकरणसंस्कारका मुहूर्त-

तज्जानकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽन्हि ।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात् ॥११॥

(अन्वयः) पर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेऽन्हि एकादशे द्वादशके अपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु नक्षत्रेषु तच्छिशोः जातकर्मादि विधेयम् स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः—बालकका जातकर्म पर्व और रिक्तारहित तिथिमें शुभ दिनमें और मृत्यु ध्रुव क्षिप्र चर इन नक्षत्रोंमें, ग्यारहवें बारहवें दिनमें करना शुभ है ॥ ११ ॥

प्रसूत स्त्रीके स्नान का मुहूर्त—

पौष्णध्रुवेंदुकरवातहयेषु सूती-
स्नानं समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम् ।
नार्द्रात्रयश्रुतिमघांतकमिश्रमूल-
त्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

(अन्वयः) पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु नक्षत्रेषु समित्रभरविज्यकुजेषु सूती स्नानं शस्तं स्यात् आर्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्याम् सूतीस्नानं शस्तम् न ॥ १२ ॥

अर्थः-रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, स्वाती, अश्विनी, अनुराधा ये नक्षत्र और रवि बृहस्पति, मंगल ये वार प्रसूतीस्नानमें श्रेष्ठ हैं । और आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृतिका, मूल, चित्रा, ये नक्षत्र और बुध शनैश्चर, ये वार और अष्टमी, छठ, द्वादशी रिक्ता ४।९।१४ ये तिथियां शुभ नहीं है ॥ १२ ॥

प्रथम आदि महीनोंमें बालकको दांत उत्पन्न होते हैं उनके फल-

मासे चेत्प्रथमे भवेत्सदशनो बालो विनश्येत्स्वयं
हन्यात्स क्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान् द्व्यादिके ।
षष्ठादौ लभते हि भोगमतुलं तातात्सुखं पुष्टतां
लक्ष्मीं सौख्यमथो जनौ सदशनौ वोर्ध्वं स्वपित्रादिहा १३

(अन्वयः) बालश्चेत्प्रथमे मासे सदशनो भवेत् तदा स्वयं विनश्येत् ततो द्व्यादिके मासे तदा क्रमतः स बालः, अनुजातभगिनीमात्रग्रजान् हन्यात् षष्ठादौ मासे हि निश्चयेन अतुलं भोग लभते तातात्सुखं पुष्टतां लक्ष्मीं सौख्यं च अथो जनौ जन्मकाल एव सदशनो भवेत् तदा स्वपित्रादिहा हन्यात् अथ वा ऊर्ध्वं ऊर्ध्वपंक्तौ सदशनश्चेत् स्यात्तदापि स्वपित्रादिहा हन्यादिति ॥

अर्थः-बालकको पहले मास दांत उत्पन्न हो तो स्वयं नष्ट हो, दूसरेमें उत्पन्न हो तो छोटा भ्राता मरे, तीसरे में उत्पन्न हो तो बहन मरे, चौथेमें उत्पन्न हो तो माता मरे, पांचवेंमें उत्पन्न हो तो बडा भाई मरे, छठेमें उत्पन्न होतो बहुत सौख्य प्राप्त हो, सातवेंमें उत्पन्न हो तो पिता सुख मिले । आगे भी सुख मिले और जन्मतेही दांतों सहित हो तो आप अथवा पिता आदिको को मारे और पहले ऊपरके दांत जामें तो भी आप अथवा पिता आदिको को मारे ॥ १३ ॥

दोलारोहणमें दोलाचक्र-

दोलारोहेऽर्कभात्पंच शरपंकेषुसप्तभैः ।
नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः॥१४॥

(अन्वयः) अर्कभात् सकाशाद् पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः शिशोः बालकस्य दोलारोहे दोलास्थापने सति क्रमात् नैरुज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यम् स्यादिति ॥ १४ ॥

अर्थः-सूर्यनक्षत्रसे पांच नक्षत्रों में बालकको हिंडोला में बैठावे तो बालक रोगसे वर्जित रहे, अगले पांच में मरण होवे, अगले पांच में दुबला होवे, अगले पांच में व्याधि होवे और अगले सात में दोला में बैठावे तो सुख होवे ॥ १४ ॥

बालकोंके लिये दोलारोहण तथा प्रथम बाहर निकालने का मुहूर्त-

दंतार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे स्या-
द्वारे शुभे मृदुलघुध्रुवभैः शिशूनाम् ।
दोलाधिरूढिरथ निष्क्रमणं चतुर्थ-
मासे गमोक्तसमयेऽर्कमितेऽन्हि वा स्यात ॥ १५ ॥

(अन्वयः) दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरे शुभे वारे मृदुलघुध्रुवभैः नक्षत्रैः शिशूनां बालकानांदोलादिरूढिः स्यात् अथ चतुर्थमासे गमोक्तसमये वा अर्कमितेऽह्नि निष्क्रमणम् स्यात् ॥ १५ ॥

अर्थः-३२, १२, १६, १८ और १० इन दिनोंमें और शुभ वारोंमें और मृदु लघु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें बालकोंकों हिंडोलामें बैठाना और चौथे महीनेमें गमनमें कही तिथि आदिकोंमे अथवा बारहवे दिन बालक को बाहर निकालना शुभ है१५

प्रसूता स्त्रीको जलपूजामुहूर्त-

कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सूतिका मासपूर्तौ ।
बुधेंद्वीज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतीज्यादितींद्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः १६

(अन्वयः) कवीज्यास्तचैत्राधिमासे पौषे च सूतिका जनयित्री मासपूर्तौ सत्यां जलं न पूजयेत् बुधेन्द्विज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि निश्चयेन श्रुतिज्यादितीन्द्वर्क नैर्ऋत्यमैत्रैः मासपूर्तौ सत्यां सूतिका जनयित्री जलं पूजयेत् । ।१६ ॥

अर्थः-शुक्र और गुरुके अस्तमें, चैत्रमें, अधिक मासमें, पौषमें, प्रसूता स्त्री जल न पूजै और मासकी समाप्तिमें बुध, सोम बृहस्पति इन वारोंमें रिक्तासे वर्जित तिथियोंमें और श्रवण, पुष्य पुनर्वसु, मृगशिर हस्त, मूल, अनुराधा इन नक्षत्रोंमें जलका पूजन करै ॥ १६ ॥

अन्नप्राशन मुहूर्त और लग्नशुद्धि-

रिक्तानंदाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारान्
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च ।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पंचमादोजमासे

नक्षत्रेस्यात्स्थिराख्यैःसमृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत् १७
केन्द्रत्रिकोणसहजेषु शुभैः खशुद्धे
लग्ने त्रिलाभरिपुगैश्च वदंति पापः।
लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं
मैत्रांबुपानिलजनुर्भमसच्च केचित्॥ १८॥

(अन्वयः) रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवशं अथो सौरिभौमार्कवारान् जन्मर्क्षल ग्नाष्टमं गृहलवगं लग्नं हित्वा मीनमेषालिकञ्च हित्वा षष्ठात्समे मासि तदा बालकान्नाशनं सत्स्यात् अथ पञ्चमात् ओजमासे समृदुलघुचरैः स्थिराख्यैः नक्षत्रैः हि निश्चयेन मृगदृशांकन्यकानां अन्नाशनं सत्स्यात् इति॥ १७॥

(अन्वयः) शुभैः केन्द्रत्रिकोणसहजेषु स्थितैः खशुद्धे लग्ने पापैश्च त्रिलाभ रिपुगैः लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं प्रशस्तं वदन्ति (च) मैत्राम्बुपानिलजनुर्भं अन्नप्राशनं असत् इति केचिदाचार्या वदन्ति॥ १८॥

अर्थः-४।९।१४।१।६।११।८।३०।१२। ये तिथियां और शनैश्चर, भौम, सूर्य ये वार त्यागके तथा जन्मराशि व जन्मलग्नसे अष्टमलग्न और अष्टम नवांश त्याग के तथा मीन, मेष, वृश्चिक इन लग्नोंको त्यागके छठे महीनेसे लेकर सम मासों में पुरुष बालक अर्थात् लड़कोंको अन्न-भोजन करावे और कन्याओंको पांचवें महीनेसे विषम महीनोंमें और स्थिर मृदु लघु चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें अन्न-भोजन करावे॥ १७॥ दशमस्थान ग्रहोंसे रहित हो और केन्द्र त्रिकोण तृतीय इन स्थानोंमें शुभग्रह हो और तीसरा, ग्यारहवां, छठा इन स्थानोंमें पापग्रह हों और लग्न अष्टम छठा ये स्थान चन्द्रमासे रहित हो ऐसे योगमें बालकको अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ कहा है। और अनुराधा, शतभिषा, स्वाती जन्मनक्षत्र ये सब अन्नप्राशन में अशुभ है ऐसा कितने पण्डितों का मत है॥ १८॥

ग्रहोंका स्थानवशसे फल-

क्षीणेंदुपूर्णचंद्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः।
त्रिकोणव्ययकेंद्राष्टस्थितैरुक्तं फलं ग्रहैः॥ १९॥
भिक्षाशी यज्ञकृद्दीर्घजीवी ज्ञानी च पित्तरुक्॥

कुष्ठी चान्नक्लेशवातव्याधिमान् भोगभागिति ॥२०॥

(अन्वयः) क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ग्रहैः त्रिकोणव्यय केन्द्राष्टस्थितैः तदा भिक्षाशी यज्ञकृत् दीर्घजीवी ज्ञानी पित्तरुक् च कुष्ठी चान्नक्लेशवातव्याधिमान् भोगभाक् इत्युक्तं फलं स्यात् ॥ १९-२० ॥

अर्थः-क्षीणचन्द्र, पूर्णचन्द्र, गुरु बुध, मंगल, रवि, शनैश्चर, शुक्र ये क्रमसे ९।५।१२।१।४।७ १०।८ इन स्थानोंमें हो तो क्रम से अगले फल कहना ॥ १९ ॥ क्षीणचंद्र नवें स्थानमें हो तो अन्नप्राशन करनेवाला बालक भिक्षा मांगकर भोजन करै, पांचवें स्थानमें पूर्णचन्द्र होवे तो यज्ञ करै, बारहवें बृहस्पति होवे तो दीर्घायु हो, लग्नमें बुध हो तो ज्ञानी होवे, चौथा मंगल हो तो पित्तका रोग होवे, सातवां रवि होवै तो कुष्ठी हो दशवां शनि होवे तो अन्नक्लेश और बात रोगवाला हो, आठवे शुक्र हो तो भोगवान् हो ॥ २० ॥

बालकको भूम्युपवेशनका मुहूर्त-

पृथ्वीं वराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धे
रिक्ते तिथौ ब्रजति पंचममासि बालम् ।
लब्ध्वा शुभेऽहनि कटिसूत्रमथ ध्रुवेंदु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

(अन्वयः) पृथ्वीं वराहं चाभिपूज्य कुजे विशुद्धे अरिक्ते तिथौ पञ्चममासि ब्रजति लग्ने सति शुभेऽन्हि दिवसे अथ ध्रुवेन्दुज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैः नक्षत्रैः बालं कटिसूत्रं बद्ध्वा कौ पृथिव्यामुपवेशयेत् ॥ २१ ॥

अर्थः--पांचवें महीनेमें पृथ्वी और वराह की पूजाकर मंगलग्रह शुद्ध सबल हो और रिक्तारहित तिथि हो, चरलग्न हो शुभवार हो और तीनों उत्तरा, रोहिणी मृगशिर, ज्येष्ठा, अनुराधा, लघुनक्षत्र ये हों तब बालकके कटिमें सूत्र बांधके पृथ्वीमें बैठावे ॥ २१ ॥

बालककी उपजीविकाकी परीक्षा-

तस्मिन्काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च ।
स्वर्णं रौप्यं यच्च गृह्णाति बालस्तैराजीवैस्तस्य वृत्तिःप्रदिष्टा २२

(अन्वयः) पुरस्तात् वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च स्वर्ण रौप्यं स्थापयेत् तस्मिन् काले बालः यद्गृह्णाति तस्य वालस्य तेरेव आजीवैः वृत्तिः प्रदिष्टा ॥२२॥

अर्थः—उसी समयमें बालकके आगे वस्त्र शस्त्र पुस्तक, कलम, सुवर्ण और चांदी धरै और बालक इनमेंसे जिस चीजको पकड़े उसीसे उसकी आजीविका होगी ऐसा जानना ॥ २२ ॥

तांबूल भक्षण करानेका मुहूर्त—

वारे भौमार्किहीने ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितींद्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ।
सौम्यैः केंद्रत्रिकोणैरशुभगगनगैः शत्रुलाभत्रिसंस्थै-
स्तांबूलं सार्धमासद्वयमितसमये प्रोक्तमन्नाशने वा ॥ २३ ॥

(अन्वयः) भौमार्किहीने वारे ध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्रस्वातीवस्वभ्युपेतैर्नक्षत्रैः मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने सौम्यैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणैः अशुभगगनगैः पापग्रहैः शत्रुलाभत्रिसंस्थैः तदा सार्धमासद्वयमितसमये ताम्बूलं प्रोक्तम् वा अन्नाशने अन्नाशनसमये ताम्बूलं प्रोक्तम् ॥ २३ ॥

अर्थः-मंगल और शनिको छोड़ दूसरे वार हों और श्रवण, मूल, पुनर्वसु ज्येष्ठा, स्वाती, धनिष्ठा इनके सहित ध्रुव मृदु लघुसंज्ञक नक्षत्र हों, मिथुन, मकर, कन्या, कुम्भ, वृष, मीन, ये लग्न हों और शुभग्रह केन्द्र और त्रिकोण में हो और पापग्रह छठे ग्यारहवें तीसरे स्थान में हों ऐसे समय में ढाई महीने के बालकको नागर पान खिलावे अथवा अन्नप्राशन के दिन खिलावे ॥ २३ ॥

बालकके कान वेधनेका मुहूर्त—

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां
युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमिते मास्यथो वा ।
जन्माहात्सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेज्यशुक्रेंदुवारे-
ऽथोजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२४॥
संशुद्धे मृतिभवने त्रिकोणकेंद्रत्र्यायस्थैः शुभखचरैः कवीज्यलग्ने

पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थेत्रिदशगुरौशुभावहः स्यात्२५

(अन्वयः) चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां युग्माब्दं जन्मतारां एतान् हित्वा ऋतुमुनिवसुभिः संमिते मासि अथो वा जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ह्यिज्यशुक्रेन्दुवारे अथ ओजाब्दे विष्णुयुग्मादिति मृदुलघुभैः नक्षत्रैः कर्णवेधः प्रशस्तः स्यादिति ॥ मृतिभवने संशुद्धे शुभखचरैः शुभग्रहैः त्रिकोण केन्द्रस्थैः कवीज्यलग्ने पापाख्यैः पापग्रहैः, अरिसहजायगेहसंस्थैःत्रिदशगुरौ लग्ने तदा शुभावहः स्यात् ॥ २४-२५ ॥

अर्थः—चैत्र, पौष, तिथिक्षय, देवशयन जन्ममास रिक्तातिथि, समवर्ष, जन्मतारा इनको त्याग कर छठवां सातवां इन महीनोंमें अथवा जन्मदिनसे बारहवें, सोलहवें, दिन और बुध बृहस्पति शुक्र सोम इन वारोंमें ओज अर्थात् विषम वर्षोंमें और श्रवण धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त अश्विनी, पुष्य अभिजित् इनमें कर्णवेध अर्थात् कानोंका वेधना श्रेष्ठ है ॥२४॥ अष्टमस्थान ग्रहरहित हो और शुभग्रह १।४।५।१।७।१०।३।११ इन स्थानोंमें हों और शुक्र गुरुका लग्न अर्थात् वृष, तुला, धनु, मीन ये लग्न हों और पापग्रह ३।६।११ इन स्थानोंमें स्थित हों, गुरु लग्नपे हों ऐसे समय में कर्णवेध शुभ कहा है ॥ २५ ॥

दक्षिणायनमें चूडाआदिका निषेध—

गीर्वाणांबुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलं राजाभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्या-
त्पक्षं वार्धं च केचिज्जहति तमपरे यावदीक्षा तदुग्रे ॥ २६ ॥

(अन्वयः) याम्यायने गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशाः चौलो राजाभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव स्यात् वा सुरगुरुसितयोः बाल्यास्त वार्द्धे सति नो केतूदये किन्तु धूमकेतूदयेनैव स्यात् केचिदाचार्याः पक्षं जहति वा च अर्द्धं जहति तदुग्रे किन्तु महाउग्राख्यकेतूदये अपरे आचार्याः तं केतुं यावदीक्षां तावज्जहतीति ॥ २६ ॥

अर्थः-देवता और जलाशयकी प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, गृहप्रवेश चौल-

कर्म राज्याभिषेक, यज्ञोपवीत ये सब दक्षिणायनमें शुभदायक नहीं होते। और बृहस्पति व शुक्र ये बालक अस्तंगत और वृद्ध हों तब भी पूर्वोक्त काम शुभ नहीं होते और धूमकेतु ताराके उदयमें भी शुभ नही होते और किसी २ ने केतु उदय से पीछे १५ दिन अथवा सात दिन वर्ज्य है और कोई २ आचार्य उग्र धूमकेतु जब तक देख पड़े उतने दिन तक त्यागते है ॥ २६ ॥

शुक्र गुरु की बाल्य और वार्धक्यमें दिन संख्या-

पुरः पश्चाद्भृगोर्बाल्यं त्रिदशाहं च वार्धकम्।
पक्षं पंचदिनं ते द्वे गुरोः पक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥

(अन्वयः) भृगोः शुक्रस्य पुरः पूर्वस्यां दिश्युदितस्य पश्चात् त्रिदशाहं वार्द्धकं स्यात् च पुनः भृगोर्वार्द्धक्यं पक्षं पञ्चदिनं स्यात् गुरोस्ते द्वे बाल्यवार्द्धक्ये पक्षं उदाहृते ॥ २७ ॥

अर्थः-पूर्वमें और पश्चिममें उदय हुये शुक्रके तीन दिन और दश दिन बाल्य क्रमसे जानना और पूर्व पश्चिममें अस्त हुए का १५ दिन और पांच दिन क्रमसे वृद्धभाव जानना और बृहस्पतिका बाल्य और वृद्धता १५ दिनको जानना ॥२७॥

मतान्तरसे बाल्यवार्धक्य—

ते दशाहं द्वयोः प्रोक्ते केश्चित्सप्तदिनं परैः।
त्र्यहं त्वात्ययिकेऽप्यन्यैरर्धाहं च त्र्यहं विधोः ॥ २८ ॥

(अन्वयः) द्वयोर्गुरुशुक्रयोस्ते बाल्यवार्द्धक्ये दशाहं प्रोक्ते इति कैश्चित् परैस्तु सप्तदिनं अन्यैरपि त्र्यहं बाल्यवार्द्धक्य प्रोक्तम्। आत्ययिके यथा सम्भवं तथा कार्यं विधोस्तु बाल्यवार्द्धक्ये क्रमेणार्द्धं त्र्यहं च भवत इति ॥ २८ ॥

अर्थः-किसीके मतमें दिशाओंका नियम त्याग कर गुरु शुक्रकी बाल्य वृद्धता दश दिन कही है और कितने पण्डितोंने सात दिन बाल्य और वार्द्धक्य कहा है और किसीने अवश्य कार्यमें बालत्व और वृद्धत्व तीन दिनका कहा है और चन्द्रमाका बालत्व आधे दिन का है और वृद्धत्व तीन दिन कहा है ॥ २८ ॥

चूडासंस्कारमें मुहूर्त—

चूडा वर्षात्तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी-
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।

वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ २९ ॥
क्षीणचंद्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपंगुताज्वराः ।
स्युः क्रमेण बुधजीवभार्गवैः केंद्रगैश्च शुभमिष्टतारया ॥३०॥

(अन्वय) गर्भाधानकालाज्जन्मकालाद्वा तृतीयाद्वर्षात् विषमे वर्षे अष्टा-
रिक्तायष्ठीपर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये क्षेन्दुशुक्रेज्यकानां वारे लग्नांशयोः
चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते शाक्रोपेतैर्विमैत्रैः मृदुचरलघुभैः आयषट्-
त्रिस्थपापैः तदा चूड़ा प्रभवति ॥ २९ ॥

(अन्वयः) क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैः केन्द्रगैः क्रमेण मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुता
ज्वराः स्युः । बुधजीवभार्गवैः केन्द्रगैश्चेष्टतारया शुभम् भवतीति ॥ ३० ॥

अर्थः-गर्भाधानसे अथवा जन्मकालसे तीसरे अथवा पांचवें वर्षमें और
अष्टमी द्वादशी रिक्ता पडवा छठ, पहले कहा हुआ पर्व चतुर्दशी अष्टमी आदि
को छोड़ अन्य दिनोंमें और चैत्ररहित उत्तरायण में और बुध सोम शुक्र गुरु
इन वारों में तथा इनके नवांशमें अपने जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमस्थान का
लग्न न हो और लग्नसे अष्टमस्थानमें कोई ग्रह न हो। ज्येष्ठायुक्त और अनुराधा
रहित मृदु चर लघु ये नक्षत्र हों एकादशषष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें पापग्रह हों
तो इनमें चूडाकर्म श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ क्षीण चंद्र, भौम, शनि, सूर्य ये केंद्रस्थान में
होवें तो क्रमसे यह फल कहना। मृत्यु शस्त्र से मृत्यु, लंगड़ापन ज्वर ये होवें
और बुध जीव भार्गव ये ग्रह केंद्रमें होवें तो शुभ फल कहना और शुभतारा में
चूड़ाकर्म करना ॥ ३० ॥

संस्कार्यकी माता गर्भवती हो तो—

पंचमासाधिके मातुर्गर्भे चौलं शिशोर्न सत् ।
पंचवर्षाधिकस्येष्टं गर्भिण्यामपि मातरि ॥ ३१ ॥

(अन्वयः) शिशोर्मातुर्गर्भे पञ्चमासाधिके सति चौलं सत् न । पञ्चवर्षा-
धिकस्य शिशोर्मातरि गर्भिण्यामपि पंचमादूर्ध्वं चौलमिष्टं कल्याण-
कारि भवतीति ॥ ३१ ॥

अर्थः-संस्कार्यकी माताका गर्भ पांच महीने से अधिक का हो तो चौल शुभ नहीं; अर्थात् पांच महीने से पहले शुभ है और पांच वर्षके उपरांत बालकका चौलकर्म माता गर्भवती हो तो भी इष्ट है ॥ ३१ ॥

चौलमें तारावल—

तारादौष्ट्येऽब्जे त्रिकोणोच्चगे वा क्षौरं सत्स्यात्सौम्यमित्रस्य वर्गे
सौम्ये भेऽब्जे शोभने दुष्टतारा शस्ता ज्ञेया क्षौरयात्रादिकृत्ये॥३२॥
ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ ३३ ॥

(अन्वय) तारादौष्ट्ये सति अब्जे चन्द्रे त्रिकोणोच्चगे वा सौम्यमित्रस्ववर्गे तदा क्षौरं सत्स्यात् । शोभने अब्जे सौम्ये भे तदा क्षौरयात्रादिकृत्ये शस्ता ज्ञेया ॥ ३२ ॥

(अन्वयः) ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोः बालकस्य चौलादि [चौलोपनयन विवाहादिकं] न आचरेत् न कारयेत्, ज्येष्ठापत्यस्य [आद्यगर्भस्य पुत्रस्य] ज्येष्ठे ज्येष्ठमासे चौलादि न आचरेत् मार्गेऽपि न इष्यते इति कैश्चित् ॥ ३३ ॥

अर्थः-दुष्ट तारा होवे और चंद्रमा त्रिकोणमें हो अथवा उच्चमें हो तो शुभ जानना और बुध गुरु शुक्रों के षड्वर्ग में अथवा अपने मित्रके षड्वर्ग में अथवा अपने षड्वर्ग में चंद्र होवे तो शुभ है और शुभ ग्रहकी राशि पर चंद्र हो और अपने गोचर करके शुभ चंद्र हो तो दुष्ट तारा भी शुभ जानना ॥ ३२ ॥ ऋतुमती और सूतिका के बालकका चौलादि नहीं करवावे और जेठ बालकका जेठ महीनेमें चौल न करावे और किसी आचार्यने मार्गशीर्षमें भी जेठ बालकका चौल कर्म नहीं करना ऐसा कहा है ॥ ३३ ॥

क्षौरमुहूर्त और निषिद्धकाल—

दंतक्षौरनखक्रियाऽत्र विहिता चौलोदिते वारभे
पातंग्यारखीन्विहाय नवमं घस्रं च संध्यां तथा
रिक्तां पर्वनिशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्न हि पुनःकार्या हितप्रेप्सुभिः॥३४॥

(अन्वयः) चौलोदिते वारभे दन्तक्षौरनखक्रियात्र न विहिता नवमं घस्रञ्च विहाय तथा सन्ध्यां दन्तक्षौरनखक्रिया विहिता पुन: रिक्तां पर्वनिशां निरास नरणग्रामप्रयाणोद्यतस्नाताभ्यक्तकृताशनैः हितप्रेप्सुभिः हि निश्चयेन दन्तक्षौरनखक्रिया न कार्या ॥ ३४ ॥

अर्थः-चौलमें कहे चार नक्षत्रों में दन्तक्रिया क्षौरक्रिया और नखक्रिया कही हैं और शनि भौम रविवारोंको त्यागके क्षौरक्रिया करानी और क्षौरसे नवें दिन क्षौर करावे और प्रातःकाल सायंकाल रिक्तातिथि पर्व रात्रि इनको त्याग करके क्षौर करावे और शुभ की इच्छा करने वाले आसनरहित क्षौर न करावें और रण ग्रामयात्रा इनमें जानेके समय क्षौर नहीं करावें और स्नान करके तेल मत्स्य भोजन कर भूषण पहिनकर क्षौर नहीं करावे ॥ ३४ ॥

ऋतुपाणिपीडमृतिबंधमोक्षणे क्षुरकर्म च द्विजनृपाज्ञया चरेत् ।
शववाहतीर्थगमसिंधुमज्जनक्षुरमाचरेन्न खलु गर्भिणीपतिः॥ ३५॥

(अन्वयः) ऋतुपाणिपीडमृतिबन्धमोक्षणे द्विजनृपाज्ञया क्षुरकर्म चरेत् कुर्यात्, च पुनः गर्भिणीपतिः शववाहतीर्थगमसिन्धुमज्जनक्षुर खलु निश्चयेन-क्षुरकर्म न आचरेत् इति ॥ ३५ ॥

अर्थः-यज्ञमें विवाहमें मरणमें बन्धसे छूटनेपर दुष्ट वार हो तो भी ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से क्षौर करावे और गर्भवतीका पति मुरदाका ढोना अर्थात् कांधियां लगाना, तीर्थयात्रा, समुद्रस्नान, क्षौरकर्म यह न करै ॥ ३५ ॥

राजाओंके क्षौरमें और वर्ज्य नक्षत्र—

नृपाणां हितं क्षौरभे श्मश्रुकर्म
दिने पंचमे पंचमेऽस्योदये वा ।
षडग्निस्त्रिमैत्रोऽष्टकः पंचपित्र्योऽ
ब्दतोऽध्यर्यमाक्षौरकृन्मृत्युमेति ॥ ३६ ॥

(अन्वयः) क्षौरभे पञ्चमे पञ्चमे दिने नृपाणां श्मश्रुकर्महितं प्रशस्तम् स्यात् वा अस्योदये किन्तु क्षौरभस्योदये तत्कर्म शस्तं स्यात्, षड्ग्निस्त्रिमैत्रोऽष्टकः पञ्चपित्र्यः, अध्यर्यमाक्षौरकृत् अब्दतः वर्षानन्तरं मृत्युम् एति प्राप्नोतीति ॥ ३६ ॥

अर्थः—राजाओं को पांचवें दिन क्षौरनक्षत्रमें वा उसके उदयमें श्मश्रुकर्म कराना उचित है और क्षौरमें छ वार कृत्तिका आवे और तीन वार अनुराधा आवे आठ वार रोहिणी आवे, पांच वार मघा आवे, चार वार उत्तराफाल्गुनी आवे तो पुरुषकी वर्ष दिन के भीतर मृत्यु होय ॥ ३६ ॥

बालकको लिखना आरम्भ करानेका मुहूर्त—

गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य पंचमाब्दके
तिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिके रवावुदक् ।
लघुश्रवोनिलांत्यभादितीशतक्षमित्रभे
चरोनसत्तनौ शिशोर्लिपिग्रहः सतां दिने । ३७ ॥

(अन्वयः) गणेशविष्णुवाग्रमाः प्रपूज्य-पञ्चमाब्दके सति शिवार्कदिग्द्विषट् शरत्रिके तिथौ रवौ उदक् लघुश्रवोऽनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभे चरोनसत्तनौ 'सति' सतां दिने शिशो र्बालकस्य लिपिग्रहः सत्स्यादिति ॥ ३७ ॥

अर्थः—गणेश, विष्णु, सरस्वती लक्ष्मी, इनका पूजन करके पांचवें वर्षमें एकादशी द्वादशी, दशमी, द्वितीया, षष्ठी, पंचमी, तृतीया. इन तिथियोंमें उत्तरायण सूर्यमें और हस्त, अश्विनी, पुष्य अभिजित्, श्रवण, स्वाती, रेवती, पुनर्वसु, आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा, इन नक्षत्रोंमें और सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र इन वारोंमें मेष, कर्क तुला, मकर इनसे रहित शुभ स्वामीके लग्न में बालकको लिखने का मुहूर्त करावे ॥ ३७ ॥

विद्यारम्भमें मुहूर्त-

मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेऽशिवमूलपूर्विकात्रये
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके ।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवांत्यमित्रभे परैः
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेंद्रगैः स्मृता ॥ ३८ ॥

[अन्वयः] मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेऽशिवमूलपूर्विकात्रये गुरुद्वये अर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवांत्यमित्रभे नक्षत्रे शुभैः शुभग्रहैः त्रिकोणकेन्द्रगैः तदा अधीतिः उत्तमा स्मृता परैरिति ॥ ३८ ॥

अर्थ—मृगशिर, आर्द्रा पुनर्वसु हस्त चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शत-

भिषा, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा पुष्य आश्लेषा ये नक्षत्र और सूर्य गुरु बुध शुक्र ये वार षष्ठी पंचमी आदि तिथियोंमें और शुभग्रह केन्द्र त्रिकोणम हों तो इनमें अध्ययन अर्थात् बालकोंको पढ़ना आरम्भ कराना श्रेष्ठ कहा है ॥ ३८ ॥ किसी २ के मतसे ध्रुव सञ्ज्ञक नक्षत्र, रेवती और अनुराधामें भी विद्यारम्भ शुभ है। दीपिका के बचनानुसार ये नक्षत्र धनुर्विद्याके आरम्भके है।

यज्ञोपवीत के लिये नित्य काम्य और गौणकाल-

विप्राणां व्रतबंधनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पंचमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे।
वश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद्द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाहुर्बुधाः ॥३९॥

(अन्वयः) गर्भात् सकाशाद् अथवा जनेः सकाशाद्ष्टमे वर्षे वा पञ्चमे वर्षे विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं तथा षष्ठे वर्षे वा एकादशे वर्षे क्षितिभुजां व्रतबन्धनं निगदितं पुनरष्टमे अथव द्वादशे वत्सरे वैश्यानां व्रतबन्धनं निगदितम् अथ द्विगुणे काले गते सति तदा गौणं स्यादिति बुधा आहुः ॥ ३९ ॥

अर्थः-ब्राह्मणोंका गर्भसे अथवा गर्भसे अथवा जन्म से पांचवें, वा आठवें वर्षमें व्रत तेजके अर्थ यज्ञोपवीत करावे, क्षत्रियका बलकी इच्छा से छठे वा ग्यारहवें वर्ष में यज्ञोपवीत करावे, वैश्य का धनकी इच्छा से आठवें वा बारहवें वर्ष में यज्ञोपवीत करावे और गौणकाल पंडितों ने इससे दुगुना कहा है ॥३९॥

व्रतबन्धनमें नक्षत्र आदि की शुद्धि—

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा-
रौद्रेऽर्कविद्गुरुसितेंदुदिने व्रतं सत्।
द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ च
कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराह्णे ॥ ४० ॥

(अन्वयः) क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रे नक्षत्रे अर्कविद्गुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् स्यात्। (च द्वित्रीषु रुद्ररविदिक्प्रमिते तिथौ कृष्णादिमत्रिलवेपि च पुनः, अपराह्णे न सत् ॥ ४० ॥

अर्थः—हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित रोहिणी तीनों उत्तरा आश्लेषा श्रवण शतभिषा पुनर्वसु स्वाती मूल मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा तीनों पूर्वा आर्द्रा ये नक्षत्र यज्ञोपवीत के निमित्त श्रेष्ठ कहे हैं। रवि बुध गुरु शुक्र सोम ये वार और द्वितीया तृतीया पंचमी एकादशी द्वादशी दशमी ये तिथियां कृष्णपक्षकी भी पंचमी पर्यन्त तिथियों में और जिसमें अहराह्न अर्थात् तीसरा तृतीयांश न हो ऐसे समय में जनेऊ श्रेष्ठ है ॥ ४० ॥

व्रतबन्धनमें सामान्यतः अशुभयोग–

कवीज्यचंद्रलग्नपा रिपौ मृतौ व्रतेऽधमाः ।
व्ययेऽब्जभार्गवौ तथा तनौ मृतौ सुते खलाः ॥ ४१ ॥

(अन्वयः) कवीज्यचन्द्रलग्नपा रिपौ मृतौ च व्रते सति अधमाः स्युः । अब्ज-भार्गवौ व्यये तथा खलाः पापग्रहाः तनौ मृतौ तदा व्रते सति अधमा भवन्तीति ४१

अर्थः–छठे स्थानमें वा अष्टम स्थानमें, शुक्र गुरु चंद्र लग्नस्वामी होवें तो यज्ञोपवीत में मृत्यु करै और चन्द्र शुक्र बारहवें स्थानमें अशुभ हैं। और पापग्रह लग्नमें अष्टमस्थानमें वा पंचमस्थानमें अशुभ है ४१ ॥

व्रतबन्धमें सामान्यतः लग्नशुद्धि–

व्रतबंधेऽष्टषड्रिःफवर्जिताः शोभनाः शुभाः
त्रिषडाये खलाः पूर्णो गोकर्कस्थो विधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

(अन्वयः) शोभनाः शुभाः, अष्टषड्रिःफवर्जिताः तदा शोभनाः भवन्ति खलाः पापग्रहाः त्रिषडाये पूर्णो विधुस्तनौ गोकर्कस्थस्तदा शुभा भवन्तीति ४२

अर्थ–शुभग्रह आठरें छवें बारहवें स्थानमें हों तो यज्ञोपवीतमें शुभ नहीं। अन्य स्थानोंमें हों तो शुभ है और पापग्रह तीसरे छठें ग्यारहवे स्थानमें शुभ हैं। वृष और कर्क राशि का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में स्थित हो तो व्रतबंधमें शुभ है।

ब्राह्मण आदि वर्णोंके और शाखाओंके स्वामी–

विप्राधीशौ भार्गवेज्यौ कुजार्कौ
राजन्यानामौषधीशो विशां च।
शूद्राणां ज्ञश्चांत्यजानां शनिः स्या-

च्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ॥ ४३ ॥

(अन्वयः) भार्गवेज्यौ विप्राधीशौ स्तः कुजार्कौ राजन्यानां अधिपौ भवतः, औषधीशश्चन्द्रः च पुनः विशां अधिपः स्यात् ज्ञः शूद्राणामधिपः स्यात् च पुनः शनिः, अन्त्यजानां अधिपः स्यात् जीवशुक्रारसौम्याः शाखेशाः स्युरिति ॥ ४३ ॥

अर्थः—शुक्र बृहस्पति ब्राह्मणोंके स्वामी है, मंगल सूर्यक्षत्रियके स्वामी हैं, चन्द्रमा वैश्योंका स्वामी है बुध शूद्रोंका स्वामी है। शनि नीचोंका स्वामी है। गुरु ऋग्वेद का स्वामी है। भौम सामका स्वामी हैं और बुध अथर्व का स्वामी है ॥ ४३ ॥

वर्णेश और शाखेशके अधिपतिका प्रयोजन—

शाखेशवारतनुवीर्यमतीव शस्तं
शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् ।
जीवे भृगौरिपुगृहे विजिते च नीचे
स्याद्वेदशास्त्रविधिना रहितो व्रतेन ॥ ४४ ॥

(अन्वयः) शाखेशवारतनुवीर्यं अतीव शस्तं स्यात् शाखेशसूर्यशशिजीवबले व्रतं सत् स्यात् । जीवे भृगौ रिपुगृहे विजिते च पुनः नीचे तदा व्रतेन वेदशास्त्रविधिना रहितः स्यात् ॥ ४४ ॥

अर्थः—जो अपना शाखाधिप हो उसका वार लग्न गोचर प्रकारसे बलये हों तब यज्ञोपवीतमें श्रेष्ठ है। जैसे ऋग्वेदियोंका गुरुवारमें धन मीन लग्नमें गुरुबल हो तो यज्ञोपवीत अत्यंत शुद्ध है और गुरु भृगु शाखेश वर्णेश रिपुस्थानमें हों युद्धमें पराजित हों नीच राशिमें हों तो यज्ञोपवीत करने से बालक शास्त्र से विमुख रहे ॥ ४४ ॥

जन्ममास आदिकोंके प्रसंगमे पुनः विधान—

जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते विद्याधिको व्रती ।
आद्यगर्भेऽपि विप्राणां क्षत्रादीनामनादिमे ॥ ४५ ॥

(अन्वयः) विप्राणामाद्यगर्भेऽपि जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रते सति व्रती जनो विद्याधिकः स्यात् । क्षत्रादीनामनादिमे गर्भे व्रते सति विद्याधिकः स्यादिति ॥ ४५ ॥

अर्थः-जन्मनक्षत्रमे, जन्ममासमें,जन्मलग्नमें,ब्राह्मणोंके ज्येष्ठ बालकका और द्वितीय आदि बालक का यज्ञोपवीत हो तो विद्यामें निपुण हो, क्षत्रिय वैश्यके दूसरे आदि गर्भके बालकका जन्म नक्षत्र आदिमें यज्ञोपवीत हो तो व्रतवाला विद्वान् हो ॥ ४५ ॥

व्रतबन्धमें बालकका गुरुबल-

वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निंदितः ॥ ४६ ॥

(अन्वयः) गुरु वटुकन्या जन्मराशेः त्रिकोणायद्विसप्तगः श्रेष्ठः स्यात् खषट्त्र्याद्ये तदा पूजया सन् स्यात् अन्यत्र निन्दितो भवतीति ॥ ४६ ॥

अर्थः-वटु और कन्याकी जन्म राशिसे नवां पांचवां ग्यारहवां दूसरा सातवां इन स्थानों गुरु श्रेष्ठ है और दशवां छठां तीसरा प्रथम इन स्थानोंमें पूजा करने से श्रेष्ठ है । अन्य स्थानों मे निन्दित है ॥ ४६ ॥

गुरु दुष्ट होने से अपवाद-

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रिःफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥४७॥

(अन्वयः) गुरुः स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे रिष्फाष्टतुर्यगः अपि इष्टः स्यात् नीचारिस्थो गुरुः शुभोऽप्यसत् स्यात् ॥ ४७ ॥

अर्थः-चतुर्थ आदि निन्द्य स्थानोंमें स्थित गुरु कर्कपर स्थित हो वा धन मीन पर हो वा मेष सिंह वृश्चिक पर हो वा धन मीनके नवांशपर हो वा वर्गोत्तम में हो तो शुभ फलका देनेवाला होता है और मकर राशिका और शत्रुकी राशि बृहस्पति अशुभ है ॥ ४७ ॥

व्रतबन्धमें वर्ज्य मुहूर्त-

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके ।
प्राक्संध्यागर्जिते नेष्टो व्रतबंधो गलग्रहे ॥ ४८ ॥

[अन्वयः] कृष्णे कृष्णपक्षे प्रदोषे, अनध्याये निशि रात्रौ अपराह्णे प्राक्संध्यागर्जिते सति तथा गलग्रहेपि व्रतबन्धो नेष्टो भवति ॥ ४८ ॥

अर्थः-प्रथ त्रिभागरहित कृष्णपक्षमें, प्रदोषमें, अनध्यायमें शनिवारमें रात्रिमें

दिनके तीसरे तृतीयांशमें, प्रातः कालके गर्जनमें तथा गलग्रहमें व्रतबन्ध उत्तम नहीं ॥ ४८ ॥

रवि आदिकों का अंशफल–

क्रूरो जडो भवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्वटुः ।
यज्ञार्थभाक् तथा मूर्खो रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् ॥ ४९ ॥

[अन्वय.] रव्याद्यंशे तनौ क्रमात् वटुः षट्कर्मकृत् स्यात् । तथा यज्ञार्थभाक् मूर्खो भवेदिति ॥ ४९ ॥

अर्थः—जन्ममें रवि आदिकोंका अंश हो तो क्रूर, जड़, पापी चतुर, षट्कर्मी, यज्ञार्थ जने वाला, मूर्ख यह फल क्रमसे कहना ॥ ४९ ॥

स्वनवांशमें चन्द्रनवांश का फल–

विद्यानिरतः शुभराशिलवे पापांशगते हि दरिद्रतरः ।
चंद्रे स्वलवे बहुदुःखयुतः कर्णादितिभे धनवान्स्वलवे ॥ ५० ॥

(अन्वयः) शुभराशि लवे चन्द्रे तदा व्रता विद्यानिरतः स्यात् पापांशगते चन्द्रे हि निश्चयेन दरिद्रतरः स्यात् स्वलवे दुःखयुतः स्यात् स्वलवे कर्णादितिभे तदा धनवान् भवेदिति ॥ ५० ॥

अर्थः-शुभ राशिके नवांशमें चन्द्रमा होवे तो बालक विद्या सीखे । क्रूरग्रहके नवांशमें चन्द्रमा होवे तो दरिद्री होय । कर्कका नवांश हो तो अत्यन्त दुःखी हो श्रवण और पुनर्वसु नक्षत्र हों और चन्द्रमा अपने नवांशकमें हो तो यज्ञोपवीत करने से वह धनवान होता है ॥ ५० ॥

केंद्र स्थानमें स्थित सूर्यादिकों का फल–

राजसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः ।
प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केंद्रे सूर्यार्किखेचरैः ॥ ५१ ॥
शुक्रे जीवे तथा चंद्रे सूर्यभौमार्किसंयुते ।
निर्गुणः क्रूरचेष्टः स्यान्निर्घृणः सद्युते पटुः ॥ ५२ ॥

[अन्वयः] शुक्रे जीवे तथा चन्द्रे सूर्यभौमार्किसंयुते सति निर्गुणः स्यात् क्रूरचेष्टः स्यात् निर्घृणः स्यात् सद्युते सति पटुर्भवेत् ॥ ५१ ॥

अर्थः-सूर्यादि ग्रह केंद्रमें हों तो क्रमसे यह फल कहना-राजसेवा करे, वैश्यका कार्य करे, शस्त्रवृत्तिवाला हो, पढावे, पंडित हो धनी हो, म्लेच्छ की सेवा करै ॥ ५ ॥ शुक्र बृहस्पति चन्द्रमा ये ग्रह सूर्य मंगल शनैश्चरसे युक्त हों तो गुणशून्य, क्रूरचेष्टा वाला, दया रहित हो और ये शुभ युक्त हों तो चतुर होय ॥ ५३ ॥

योग विशेषसे अन्य फल-

विधौ सितांशगे सिते त्रिकोणगे तनौ गुरौ ।
समस्तवेदविद्व्रती यमांशगेऽतिनिर्घृणः ॥५३॥

[अन्वयः] विधौ सितांशगे सिते त्रिकोणगे गुरौ तनौ लग्नस्थे सति व्रती समस्तवेदवित् स्यात् यमांशगे अतिनिर्घृणः स्यादिति ॥ ५३ ॥

अर्थः-चन्द्रमा शुक्रके नवांशमें हो शुक्रत्रिकोणमें हो और बृहस्पति लग्नमें हो तो व्रती संपूर्ण वेदों का जानने वाला होवे और शनिके नवांशकमें चंद्रमा हो, लग्नमें गुरु हो, शुक्रत्रिकोण में हो तो भी बालक कृतघ्न हो ॥ ५३ ॥

अनध्यायका विचार—

शुचिशुक्रपौषतपमां दिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः ।
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणं च व्रतेष्वनध्यायाः ॥५४॥

[अन्वयः] शुचिशुक्रपौषतपसान् दिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः भूतादित्रितयाष्टमी च पुनः संक्रमण एते व्रतेषु अनध्याः स्युः ॥

अर्थ.-आषाढ शुक्ल दशमी ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौषशुक्ल एकादशी, माघ शुक्ल द्वादशी और चतुर्दशी पूर्णिमा अमावस्या प्रतिपदा अष्टमी संक्रांतिदिन ये यज्ञोपवीतमें अनध्याय हैं ॥ ५४ ॥

प्रदोषका लक्षण-

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ५५ ॥

[अन्वयः] रात्र्यर्धसार्द्धप्रहरयाम्यमध्यस्थितैस्तदग्रिमैः क्रमात्, अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात् इति ॥ ५५ ॥

अर्थः-द्वादशीमें अर्धरात्रिसे पहले त्रयोदशी आवे तो प्रदोष जानना, छठमें

डेढ प्रहर रात जानेके पहले सप्तमी आवे तो प्रदोष कहना तृतीयामें प्रहरभर रात जानेके पहले चतुर्थी आवे तो प्रदोष जानना यह क्रम है ॥ ५५ ॥

ऋग्वेदियोंका ब्रह्मौदनसंस्कार विचार–

प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबंधानंतरं यदि चेत् ।
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपि शांतिपूर्वकं तत्स्यात् ॥ ५६ ॥

[अन्वयः] ब्रह्मौदनपाकाद् प्राक् व्रतबन्धानन्तरं यदि चेत् उत्पातानध्ययनोत्पत्तौ अपि तदा तत् शान्तिपूर्वकं स्यात् इति ॥ ५६ ॥

अर्थः–ब्रह्मौदन पाकसे पहले और यज्ञोपवीतके अनंतर यदि उत्पात अनध्याय होवे तो भी शांतिपूर्वक ब्रह्मौदनपाक करना ॥ ५६ ॥

वेद विशेषसे नक्षत्र विशेष–

वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूल-
पूर्वासु पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ।
ध्रौवेषुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेश-
कर्णे मृगांत्यलघुमैत्रधनादितौ सत ॥ ५७ ॥

[अन्वयः] शशिशिवाहिकरात्रिमूलपूर्वासु पौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये । ध्रौवेषु शाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णे मृगांत्यलघुमैत्रधनादितौ वेदक्रमात् सत् स्यात् इति ॥ ५७ ॥

अर्थः–मृगशिर आश्लेषा आर्द्रा हस्त चित्रा स्वाती मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें ऋग्वेदवालोंका यज्ञोपवीत शुभ है । रेवती हस्त अनुराधा मृगशिर पुनर्वसु पुष्य रोहिणी तीनों उत्तरा इनमें यजुर्वेदवालोंका यज्ञोपवीत शुभ है । अश्विनी धनिष्ठा पुष्य अश्विनी हस्त अभिजित् अनुराधा धनिष्ठा पुनर्वसु इनमें अथर्ववेदियों का यज्ञोपवीत शुभ है ॥ ५७ ॥

नांदीश्राद्धके बाद माता रजस्वला हो उसका विचार–

नांदीश्राद्धोत्तरं मातुः पुष्पे लग्नांतरे न हि ।
शान्त्या चौलं व्रतं पाणिग्रहः कार्योऽन्यथा न सत् ॥५८॥

अर्थः—नांदीश्राद्ध के बाद यदि संस्कारवाले बालक की माता को पुष्पदर्शन

होवे और अन्य शुद्धलग्न न मिलता हो तो शांति करके यज्ञोपवीत विवाह ये श्रेष्ठ हैं अन्यथा नहीं ॥ ५८ ॥

अब छुरिकाबन्ध का मुहूर्त—

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे ।
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥ ५९ ॥

(अन्वयः) विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमजे नृपाणां क्षत्रियाणां विवाहतः प्राक्पूर्वं छूरिका बन्धनं शस्त स्यादिति ॥ ५९ ॥

अर्थः—चैत्र को छोड़ यज्ञोपवीत में कहे महीनों में अर्थात् माघ फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ इनमें और यज्ञोपवीत में कहे नक्षत्र जन्मलग्न आदिकों में और भौम गुरु शुक्र इनके अस्तरहित समयमें भौमरहित वारोंमें विवाहसे पहिले क्षत्रियों को छूरी कटिमें धारण करना शुभ है ॥ ५९ ॥

केशांत और समावर्तनका मुहूर्त-

केशांतं षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे शुभम् ।
व्रतोक्तदिवसादौ हि समावर्तनमिष्यते ॥ ६० ॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

(अन्वयः) षोडशे वर्षे चौलोक्तदिवसे व्रतोक्तदिवसादौ हि निश्चयेन समावर्तनं इष्यते ॥ ६० ॥

अर्थः—चूडाकर्ममें कहे दिनमें सोलहवें वर्षमें केशान्तकर्म करना उत्तम है और यज्ञोपवीतमें कहे दिनमें समावर्तन कर्म कहा है ॥ ६० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणिभाषाटीकायां संस्कारप्रकरणं पंचमम् ॥ ५ ॥



विवाहप्रकरणम् ६ ।

विवाहमें लग्नशुद्धिविचार–

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः ।
तस्माद्विवाहसमयः परिचिंत्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

(अन्वयः) शुभशीलयुक्ता या भार्या सा त्रिवर्गकरणं भवति तस्याः भार्यायाः लग्नवशेन शीलं शुभं भवति तस्मात्कारणात् हीति निश्चयेन विवाहसमयः परिचिन्त्यते विचार्यते, यतः तन्निघ्नतां किन्तु विवाहाधीनताम् सुतशील सुधर्मउपगताः प्राप्ता इति ॥ १ ॥

अर्थः–शुभशीलसे युक्त स्त्री धर्म अर्थ काम इनको देनेवाली होती है और सो शुभ शील, स्त्री को लग्नके वशसे होता है इसवास्ते विवाह समयके विषयमें विचार करना योग्य है, क्योंकि पुत्र शील धर्म विवाहके लग्नके आधीन है ॥१॥

प्रश्नलग्नसे विवाहका योगद्वय–

आदौ संपूज्य रत्नादिभिरथ गणकं वेदयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहं दिगीशानलहयविशिखे प्रश्नलग्नाद्यदींदुः ।
दृष्टो जीवेन सद्यः परिणयनकरो गोतुलाकर्कटाख्यं
वा स्यात्प्रश्नस्य लग्नं शुभखचरयुतालोकितं तद्विदध्यात् ॥२॥

(अन्वयः) अथाऽऽदौ स्वस्थचित्तं गणकं रत्नादिभिः सम्पूज्य कन्योद्वाहं वेदयेत् प्रश्नलग्नात् यदि इन्दुश्चन्द्रः दिगीशानलहयविशिखे जीवेन दृष्टः तदा सद्यः शीघ्रं परिणयनकरः स्यात् वा गोतुलाकर्कटाख्यं प्रश्नस्य लग्नं स्यात् शुभखचरयुतालोकितं तदा तद् परिणयनं विदध्यात् ॥ २ ॥

अर्थः–पहिले ज्योतिषीको रत्नादिकोंसे पूज उसको स्वस्थ चित्त देखकर कन्याके विवाहका प्रश्न करे। प्रश्नलग्नसे दशवें, ग्यारहवें, तीसरे, सातवें

पाचवें चन्द्रमा बृहस्पतिसे देखा जाता होवे तो शीघ्र विवाह कहना और वृष तुला कर्क इनमें से प्रश्नलग्न हो और उसको शुभ ग्रह देखते होवें तो भी विवाह शीघ्र कहना ॥ २ ॥

अन्य योगद्वय-

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहं बलिनौ यदि पश्यतः ।
रचयतो वरलाभमिमौ यदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

(अन्वयः) बलिनौ शशिभार्गवौ विषमभांशगतौ तनुगृहं यदि पश्यतः स्तदा वरलाभं रचयतः- यदा इमौ शशिभार्गवौ युगलभांशगतौ तदा युवतिप्रदौ स्याताम् ॥ ३ ॥

अर्थः-विषम अर्थात् मेष मिथुन आदि राशिमें और विषम नवांशमें स्थित बली चन्द्रमा और शुक्र लग्न स्थानको देखें तो कन्याको वरलाभ कहना और यही ग्रह वृष कर्क आदि सम राशियोंपर होवें तो वरको कन्याका लाभ कहना ३

प्रश्नलग्नमें वैधव्यकारक योगत्रय-

षष्ठाष्टस्थः प्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्ने क्रूरः सप्तमे वा कुजः स्यात्।
मूर्ताविन्दुः सप्तमे तस्य भौमो रंडा सा स्यादष्टसंवत्सरेण ॥ ४ ॥

(अन्वयः) प्रश्नलग्नात् सकाशाद् यदि इन्दुश्चन्द्रः षष्ठाष्टस्थः क्रूरः लग्ने वा कुजः सप्तमे तदा अष्टसम्वत्सरेण रण्डा स्यात् वा इन्दुः मूर्तौ तस्य सप्तमे भौमः तदा सा अष्टसम्वत्सरेण रण्डा स्यादिति ॥ ४ ॥

अर्थः—जो प्रश्नलग्नसे छठवें आठवें चंद्रमा हो वा लग्नमें क्रूर ग्रह सातवें मंगल हो अथवा लग्नमें चन्द्रमा हो उसे सातवें मंगल हो तो विवाहवर्षसे आठ वर्षके भीतर कन्या विधवा होवे ॥ ४ ॥

प्रश्नलग्नसे कुलटामृतवत्सायोग-

प्रश्नतनोर्यदि पापनभोगः पंचमगो रिपुदृष्टशरीरः ।
नीचगतश्च तदा खलु कन्या सा कुलटा त्वथवा मृतवत्सा ॥५॥

(अन्वयः) प्रश्नतनोः यदि पापग्रहः पञ्चमगः रिपुदृष्टशरीरः सन् नीचगतश्च स्यात्तदा खलु निश्चयेन सा कन्या कुलटा भवेत् अथवा मृतवत्सा भवेत् ॥५॥

अर्थः-जो प्रश्नलग्नसे पापग्रह पांचवें हो और शत्रुसे देखा जाता और नीच

राशिपर हो तो कन्या कुलटा अर्थात् व्यभिचारिणी होवे अथवा उसके बालक मर जावें ॥ ५ ॥

विवाहभंगका योग—

यदि भवति सितासिरिक्तपक्षे
तनुगृहतः समराशिगः शशांकः ।
अशुभखचरवीक्षितोऽरिरंध्रे
भवति विवाहविनाशकारकोऽयम् ॥ ६ ॥

(अन्वयः) सितातिरिक्तपक्षे कृष्णपक्षे तनुगृहतः शशाङ्कश्चन्द्रः समराशिगः अशुभखचरवीक्षितः, अरिरन्ध्रे स्थितः तदायं योगो विवाहविनाशकारको भवति ॥ ६ ॥

अर्थः—जो कृष्णपक्ष में चन्द्रमा वृषकर्कादि समराशियों पर स्थित प्रश्न लग्नसे छठवे, आठवें स्थित हो और पापग्रहसे देखा जाता हो तो यह योग विवाहको भंग करता है ॥ ६ ॥

जन्म लग्नादिसे वैधव्य योग और उसका परिहार—

जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः ।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाहं स्फुटं
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

(अन्वयः) जन्मोत्थं जन्मकालीनं चकारात् प्रश्नलग्नोत्थं बालविधवा योगं विलोक्य सुतया कन्यया सावित्र्या व्रतं रह एकान्ते विधाय उत पैप्पलं व्रतं विधाय तदा इमां कन्यांशलग्ने चिरजीविने वराय दद्यात् अच्युतमूर्तिपिप्पल-घटैः स्फुटं विवाहं कृत्वा तां कन्यां चिरजीविने वराय दद्यात्–अत्र पुनर्भूभवो दोषो न भवेत् इति ॥ ७ ॥

अर्थः—कन्या के जन्म से बालविधवा का योग देखकर उससे सावित्री अथवा पीपल का व्रत कराके चिरजीवी वरको देवे अथवा अच्छे लग्न में नारायणकी मूर्ति, पीपल वा कुम्भ इनके साथ विवाह कराकर चिरजीवी वरको देवे । इसमें पुनर्भूभव दोष अर्थात् दूसरे विवाह का दोष नहीं होता ॥७॥

दूसरा योग—

प्रश्नलग्नक्षणे यादृशापत्ययुक् स्वेच्छया कामिनी तत्र चेदा व्रजेत् ॥ कन्यका वा सुतो वा तदा पंडितैस्तादृशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

(अन्वयः) प्रश्नलग्नक्षणे स्वेच्छया यादृशापत्ययुक् कामिनी चेदाव्रजेत् कन्या वा सुतो वा तदा अस्याः तादृशापत्यं पण्डितैः विनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

अर्थः—प्रश्नलग्न के समय में जैसी सन्ततिवाली स्त्री अपनी इच्छा से आ जावे अथवा पुत्र या कन्या आजावे वैसीही सन्तान इस कन्या को पण्डित बतलावे ॥ ८ ॥

शंखभेरीविपंचीरवैर्मङ्गलं जायते वैपरीत्यं तदा लक्षयेत् । वायसो वा खरः श्वा शृगालोऽपि वा प्रश्नलग्नक्षणे रौति नादं यदि ॥ ९ ॥

(अन्वयः) प्रश्नलग्नक्षणे शङ्खभेरीविपञ्चीरवैः मङ्गलं जायते, अपिवा वायसः, वा खरः श्वा शृगालः प्रश्नलग्नक्षणे यदि नादं शब्दं रौति तदा वैपरीत्यं लक्षयेत् ॥ ९ ॥

अर्थः—प्रश्नसमय में शंख भेरी वीणा का शब्द हो तो मंगल होवे । और कौआ, गर्दभ, कुत्ता, गीदड़ ये शब्द करें तो अमंगल होवे ॥ ९ ॥

विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रै-
र्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचितऋक्षैः ।
वस्त्रालंकारादिसमेतैः फलपुष्पैः
संतोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणं हि ॥ १० ॥

(अन्वयः) विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैः वा करपीडोचितऋक्षैः वस्त्रालङ्कारादिसमेतैः फलपुष्पैः आदौ कन्यां सन्तोष्य अनुपश्चात्कन्यावरणं हि निश्चयेन स्यात् ॥ १० ॥

अर्थ—उत्तराषाढ़ स्वाती श्रवण तीनों पूर्वा अनुराधा धनिष्ठा कृत्तिका

अथवा विवाहमें कहे नक्षत्र इनमें वस्त्र आभूषण फल पुष्प आदि से कन्या को वरे ॥ १० ॥

वरके वरने का मुहूर्तः—

धरणिदेवोऽथवा कन्यकसोदरः
शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः ॥
वरवृतिं वस्त्रयज्ञोपवीतादिना
ध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैः संचरेत् ॥ ११ ॥

(अन्वयः) धरणिदेवः, अथवा कन्यकासोदरः शुभदिने गीतवाद्याभिः संयुतः, वस्त्रयज्ञोपवीतादिना ध्रुवयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयैः नक्षत्रैः वरवृतिं आचरेत् ॥ ११ ॥

अर्थः—ब्राह्मण अथवा कन्या का भ्राता शुभ दिनमें गीत (गाना) और बाजेके साथ वस्त्र यज्ञोपवीत आदि लेकर तीनों उत्तरा रोहिणी कृत्तिका तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में वरको वरे ॥ ११ ॥

कन्या का विवाहकाल और विवाहमें ग्रहशुद्धि—

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो नराणामुभयोश्चंद्रविशुद्धितो विवाहः ११

(अन्वयः) षडब्दकोपरिष्टात् गुरुशुद्धिवशेन समवर्षेषु कन्यकानां विवाहः शुभः स्यात् रविशुद्धिवशात् विषमवर्षेषु वराणां विवाहः शुभः स्यात् चन्द्र विशुद्धित उभयोः कन्यावरयो विवाहः शुभः स्यादिति ॥ १२ ॥

अर्थः—सम अर्थात् युग्म वर्षों में छः वर्षके उपरान्त गुरुके बलसे कन्याका विवाह करना और रविके बलसे वरका विवाह करना चन्द्रमाका बल दोनोंको देखना ॥ १२ ॥

विवाह में विहित महीने—

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः ।
अलिमृगाऽजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥१३॥

(अन्वयः) रवौ मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेपि शुचेः त्रिलवे तदा करपीडनं भवति, अलिमृगाजगते कार्तिकपौषमधुषु अपि मासेषु करपीडनं भवतीति ॥ १३ ॥

अर्थः-मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष, इन राशियोंपर सूर्य हो और मिथुन राशिपर सूर्य हो तो आषाढके शुक्ल प्रतिपदासे लेकर दशमीपर्यन्त विवाह हो सकता। उसी प्रकार से कार्त्तिकमें वृश्चिकका सूर्य, पौषमें मकरका सूर्य, चैत्रमें मेषका सूर्य होवे तो इन महीनों में विवाह हो सकता है ॥ १३ ॥

जन्ममासादिप्रयुक्त निषेध और विधान-

आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौ करग्रहः।
नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोःसुतप्रदः॥१४॥

(अन्वयः) आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोः जन्ममासभतिथौकरग्रहो न उचितः, अथ चेद्यदि द्वितीयजनुषोः सुतप्रदस्तदा विबुधैः प्रशस्यते ॥ १४ ॥

अर्थः-पहले गर्भका पुत्र और पहले गर्भकी कन्या इनका विवाह जन्ममास जन्मनक्षत्र जन्मतिथिमें पण्डितोंने उत्तम नहीं कहा है, और दूसरे गर्भके वर और कन्याओंका विवाह पुत्रको देनेवाला होता है ॥ १४ ॥

ज्येष्ठद्वंद्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि।
केचित्सूर्यं वन्हिगं प्रोज्झ्य चाहुर्नैवान्योन्यं ज्येष्ठयोःस्याद्विवाहः१५

(अन्वयः) ज्येष्ठद्वन्द्वं विवाहो मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठंचेत्कदापि नैव युक्तं (च) वन्हिगं सूर्यं प्रोह्य विवाहः स्यात् केचिदाहुः, अन्योन्यं ज्येष्ठयो र्विवाहो नैवस्यादिति ॥ १५ ॥

अर्थः-दो ज्येष्ठ अर्थात् मास वर तथा कन्या और मासहोवै तो विवाहमें मध्यम कहा है और तीन ज्येष्ठ कभी युक्त नहीं। कोई पण्डित कहते हैं, कि कृतिकापर सूर्य हो तो उसे त्याग ज्येष्ठ भी विवाह करना। आपसमें जेठे कन्या-वरोंका विवाह करना शुभ नहीं है ॥ १५ ॥

एक विवाहादि शुभकार्यसे दूसरे विवाह आदि शुभकार्यके लिये कालमर्यादाः-

सुतपरिणयात्षण्मासांतः सुताकरपीडनं
न च निजकुले तद्वद्वा मंडनादपि मुण्डनम्॥
न च सहजयोर्देये भ्रात्रोः सहोदरकन्यके
न सहजसुतोद्वाहोऽब्दार्धे शुभे न पितृक्रिया॥ १६ ॥

(अन्वय) निजकुले सुतपरिणयात् सुताकरपीडनं न स्यात् वा तद्वद्

मण्डनादपि मुण्डनं न, चपुनः सहजयोः भ्रात्रोः सहजसुतोद्वाहो न स्यात् शुभे शुभकार्ये पितृ क्रिया न कार्या ॥ १६ ॥

अर्थः—एक कुलमें पुत्रके विवाहसे छः महीनेतक कन्याका विवाह न करे और विवाह करके मुण्डन अर्थात् चौल यज्ञोपवीत आदि कर्म छः महीने तक न करे, और एक माताके दो पुत्रोंका विवाह एकही माताकी दो कन्याओंके साथ नहीं करना और एक मातासे हुये दो भ्राताओंका छः महीनेके भीतर विवाह नहीं करना और छः महीनोंके भीतर पितरोंकी क्रिया श्राद्ध आदि भी नहीं करना ॥ १६ ॥

वध्वा वरस्यापि कुले त्रिपूरुषे नाशं व्रजेत्कश्चन निश्चयोत्तरम् ।
मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शांत्याथवा सूतकनिर्गमे परैः ॥१७॥

(अन्वयः) निश्चयोत्तरं त्रिपूरुषे कुले वध्वा वरस्यापि कश्चन नाशं व्रजेत् तत्र मासोत्तरं विवाह इष्यत अथवा सूतक निर्गमे शान्त्या विवाहः कार्यः, इति परैः इष्यते ॥ १७ ॥

अर्थः—वर अथवा वधूके कुलमें विवाहका निश्चय हो जानेके बाद तीन पीढ़ीके भीतर किसीकी मृत्यु हो जावे तो एक महीने पीछे शान्ति करके विवाह हो सकता है और कोई कहते हैं, कि सूतक निवृत्त हो जानेके बाद शांतिकरके विवाह करे ॥ १७ ॥

दूसरे चौल आदि कृत्यों में विचार—

चूडाव्रतं चापि विवाहतो व्रताच्चूड़ा न चेष्टा पुरुषत्रयांतरे ।
वधूप्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः षण्मासतो वाब्दविभेदतः शुभः ॥१८

(अन्वयः) पुरुषत्रयान्तरे विवाहतश्चूड़ाव्रतमपि च नेष्टं व्रताच्चूड़ा नेष्टा वधूप्रवेशात् च पुनः सुताविनिर्गमः नेष्टः वा अब्दविभेदतः षण्मासतः शुभं स्यादिति ॥ १८ ॥

अर्थः—तीन पीढ़ीके भीतरके मनुष्यों का विवाह करनेके बाद ६ महीने तक चूड़ाकरण और व्रतबन्ध और व्रतबन्ध करनेके बाद छः महीने तक चूड़ाकरण शुभदायक नहीं होता और वधूप्रवेशके बाद ६ महीने तक पुत्रीका गवना न करे और वर्षके भेदसे छः महीना के भीतर भी शुभ है ॥ १८ ॥

वधूवरों के श्वशुर आदिकोंके बाधक अनिष्ट—

श्वश्रूविनाशमहिजौ सुतरां विधत्तः
कन्यासुतौ निर्ऋतिजौ श्वशुरं हतश्च ।
ज्येष्ठभजाततनया स्वधवाग्रजं च
शक्राग्निजा भवति देवरनाशकर्त्री ॥ १६ ॥

[अन्वय,] अहिजौ कन्यासुतौ सुतरां श्वश्रूविनाशं विधत्तः निर्ऋतिजौ च पुनः श्वशुरं हतः ज्येष्ठाभजाततनया च पुनः स्वधवाग्रजं हन्यात् शक्राग्निजा तदा देवरनाशकर्त्री भवति ॥ १६ ॥

अर्थः—आश्लेषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुए कन्या पुत्रोंका विवाह हो तो सासका नाश हो । मूलमें उत्पन्न हुए अपने ससुरका नाश करते हैं । और ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न हुई कन्या, अपने पतिके ज्येष्ठ भाईको नष्ट करती है । और विशाखामें जन्मी देवरका नाश करती है ॥ १६ ॥

इस दोष का अपवाद ।

द्वीशाद्यपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा ।
मूलांत्यपादसार्पाद्यपादजाते तयोः शुभे ॥ २० ॥

[अन्वयः] द्वीशाजपादत्रयजा कन्या देवरसौख्यदा भवति मूलान्त्यपाद सार्पाद्यपाद जाते तयोः कन्यावरयोः शुभौ भवत इति ॥ २० ॥

अर्थः—विशाखाके आदिके तीन चरणोंमें उत्पन्न हुई कन्या देवरको सुखद होती है । और मूलके चौथे चरणोंमें उत्पन्न हुए कन्या पुत्र देते श्वशुरको सुख देते हैं । और आश्लेषाके पहले चरणमें उत्पन्न हुए कन्यापुत्र, सासको सुख देते हैं ॥ २० ॥

आठ वर्ण आदिके नाम—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ २१ ॥

[अन्वयः] वर्णः वश्यं तथा तारा च पुनः योनिः ग्रहमैत्रकम् गणमैत्रं च भकूटं च पुनः, एते गुणाधिका भवन्तीति ॥ २१ ॥

अर्थः—वर्ण वश्य तारा योनि ग्रहमैत्री गणमैत्री भकूट नाडी इन वर्ण आदिकों

की परस्पर मैत्री हो तो एक अधिक गुण वाले हैं। जैसे वर्णमैत्री में एक गुण वश्यमें दो गुण इसी प्रकार और भी जानना ॥ २१ ॥

वर्णकूटका विचार-

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥ २२ ॥

(अन्वयः) झषालिकर्कटाः द्विजाः स्युः ततो नृपाः ततोऽङ्घ्रिजाः विशः वरस्य वर्णतः वधू वर्णोऽधिका बुधैर्न शस्यते ॥ २२ ॥

अर्थः—मीन, वृश्चिक, कर्क, ये राशि ब्राह्मण वर्ण हैं। और मेष, सिंह, धनु, क्षत्रिय हैं। और वृष, कन्या, मकर, यह वैश्य हैं। और मिथुन, तुला, कुम्भ, यह राशि शूद्र हैं। सो वरके वर्ण से श्रेष्ठ वर्णवाली कन्या पंडितोंने अच्छी नहीं कही है ॥ २२ ॥

वश्यकूटका विचार-

हित्वा मृगेंद्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् २३

[अन्वयः] मृगेन्द्रं हित्वा सर्वे राशयो नरराशिवश्या भवन्ति तथा एषां जलजाश्च भक्ष्याः भवन्ति अलिं विना सिंहस्य वशे सर्वेऽपि राशयो वश्या भवन्ति नराणां व्यवहारतः अन्यद् ज्ञेयमिति ॥ २३ ॥

अर्थः-सिंहको छोड़के संपूर्ण राशि नर राशियों के वश्य हैं। और जलचर राशि नर राशियोंके भक्ष्य हैं। और वृश्चिक के विना सब राशि सिंहके वश्य हैं और चौपायोंका और जलचरोंका वश्यावश्य मनुष्योंके व्यवहारसे जानना २३

ताराकूटका विचार—

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

[अन्वयः] कन्यर्क्षात् वरभं यावत् गणयेत् वरभादपि कन्याभं यावद् गणयेत् नवहृत् त्रिष्वद्रिभं शेषे सति असत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

अर्थः-कन्या नक्षत्र से वर नक्षत्र तक गिने। वैसेही वर नक्षत्रसे कन्या नक्षत्र

तक गिनै। और अलग अलग अंक में ९ नौ का भाग देने से तीन, पांच., सात बचे तो अशुभ समझना ॥ २४ ॥

योनिकूट का विचार-

अश्विन्यंबुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यांत्ययोः कुञ्जरः
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णांबुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चांद्राब्जयोन्योरहिः ॥ २५ ॥
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्तोस्तथैवोंदुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

(अन्वयः) अश्विन्यम्बुपयोः हयः योनि र्निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः योनिः स्यात् वस्वजयाद्भयोः सिंहः योनिः समुदितः याम्यान्त्ययोः कुञ्जरःयोनि रुदितः देवपुरोहितानलभयोः मेषः योनिः स्यात् तथैव वैश्वाभिजितोः नकुलः योनिरुदितः चन्द्राब्जयोन्योः, अहिः योनिः स्यात् ॥ २५ ॥

ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरंगयोनि रुदितः तथा मूलार्द्रयोः श्वा योनि रुदितः अथादितिसार्पयोः मार्जारः योनिः स्यात् द्वीशभचित्रयोरपि व्याघ्रः योनिः स्यात च पुनः अर्यम्णबुध्न्यर्क्षयोः गौःयोनिः पादगयोः भयोन्योः परस्परमहावैरं स्यात् तद्वैरं त्यजेदिति ॥ २६ ॥

अर्थः—अश्विनी शतभिषा नक्षत्रकी अश्वयोनि है। स्वाती हस्तकी भैंसा है। धनिष्ठा पूर्वाभाद्रपदाकी सिंह, भरणी रेवती हस्ती है, पुष्य कृत्तिका की मैंढा है; श्रवण पूर्वाषाढ़ की वानर है, उत्तराषाढ अभिजित्की नकुल है, मृगशिर रोहिणीकी सर्प है ॥ २५ ॥ ज्येष्ठा अनुराधाकी मृग है, मूल आर्द्राकी कुत्ता है, पुनर्वसु आश्लेषाकी विलाव है, मघा पूर्वाफाल्गुनीकी मूष है, विशाखा चित्रा की व्याघ्र है, उत्तराफाल्गुनी उत्तराभाद्रपदाकी गौ है श्लोकके चरणमें जो योनि हैं उनका महावैर जानना और सो वैर योनिमेलकमें त्याग देना ॥ २६ ॥

ग्रहकूट ग्रहोंकी परस्पर मैत्री—

मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौ वैरिणौ
सौम्यश्चास्य समो विधोर्बुधरवी मित्रे न चास्य द्विषत्।
शेषाश्चास्य समाः कुजस्य सुहृदश्चंद्रेज्यसूर्या बुधः
शत्रुः शुक्रशनी समौ च शशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥ २७ ॥
मित्रे चास्य रिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समा गीष्पते-
र्मित्राण्यर्ककुजेंदवो बुधसितौ शत्रूसमः सूर्यजः।
मित्रे सौम्यशनी कवेः शशिरवी शत्रू कुजेज्यौ समौ
मित्रे शुक्रबुधौ शनेः शशिरविक्ष्माजा द्विषोऽन्यः समः ॥२८॥

(अन्वयः) द्युमणेः कुजेज्यशशिनो मित्राणि भवन्ति शुक्रार्कजौ वैरिणौ भवतः च पुनः, अस्य सौम्यः समः स्यात् विधोः बुधरवी मित्रे भवतः [च] अस्य द्विषश्च च पुनः शेषाः समाः भवन्ति कुजस्य चन्द्रेज्यसूर्याः सुहृदः स्युः बुधः शत्रुः स्यात् शुक्रशनी समौ च भवतः शशभृत्सूनोः सिताहस्करौ मित्रे भवतः च पुनः अस्य-शशी रिपुः स्यात् गुरुशनिक्ष्माजाः समाः स्युः गीष्पतेः अर्कजेन्दवः मित्राणि भवन्ति बुधसितौ शत्रू भवतः सूर्यजः समः शशिरवी शत्रू स्याताम् कुजेज्यौ समौ-स्तः शनेः शुक्रबुधौ मित्रे भवतः शशिरविक्ष्माजाः द्विषः शत्रवा भवन्ति अन्यः समः स्यात् ॥ २७-२८ ॥

अर्थः—सूर्यके मंगल बृहस्पति और चन्द्रमा मित्र हैं और शुक्र शनि शत्रु है और बुध इसका सम है। चन्द्रमाके बुध सूर्य मित्र हैं। इसके शत्रु नहीं, बाकी ग्रह चन्द्रमाके सम हैं। चन्द्रमा बृहस्पति सूर्य मित्र हैं, बुध शत्रु है और शुक्र शनि सम है। बुधके शुक्र रविमित्र है ॥ २७ ॥ चंद्रमा शत्रु है, और गुरु, शनि, मङ्गल सम हैं। गुरुके सूर्य मङ्गल चन्द्रमा मित्र है, बुध शुक्र, है, और शनिश्चर सम है। शुक्रके बुध शनि मित्र हैं, चन्द्र, सूर्य शत्रु, और मंगल, गुरु सम हैं। शनिके शुक्र, बुध मित्र हैं, चन्द्र, मङ्गल शत्रु हैं और गुरु सम है ॥ २७-२८ ॥

गणकूट का विचार और फल—

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि-
वस्विंद्रमूलवरुणानलतक्षराधाः।

पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि
मैत्रादितींदुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥२६॥
निजनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्या-
दमरमनुजयोः सा मध्यमा संप्रदिष्टा ।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो
दनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकांततोऽत्र ॥ ३०॥ ॥

(अन्वयः) मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः, पूर्वोत्तरात्रयविधातृय-मेशभानि, मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि नक्षत्राणि क्रमतः रक्षोनरामरगणाः स्युरिति ॥ २६ ॥

(अन्वयः) निजनिजगणमध्ये अत्युत्तमा प्रीतिः स्यात् सा प्रीतिः, अमर-मनुजयोः मध्यमा सम्प्रदिष्टा असुरमनुजयोश्चेत् मृत्युरेव प्रदिष्टः दनुजविबुधयोः अत्र एकान्ततो वैरं स्यात् ॥ ३० ॥

अर्थः—मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा, इनका राक्षसगण है। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, इनका मनुष्य हस्त, अभिजित् इनका देवतागण है । एक गण के स्त्री पुरुष होवें तो अति उत्तम प्रीति हो । स्त्री, पुरुष, देव, मनुष्य गण के होवें तो मध्य प्रीति हो । असुर मनुष्य गण के हों तो मृत्यु कहनी । देव राक्षस हों तो महा वैर हो । देव मनुष्य में चार गुण हैं । एक गण में छ गुण ऐसा जानना ॥ २६ ॥ ३० ॥

राशिकूट का विचार—

मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

(अन्वयः) षष्ठाष्टके सति मृत्युर्ज्ञेयः नवात्मजे अपत्यहानिः स्यात् द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं अन्यत्र द्वयोः सौख्यकृत् स्यादिति ॥ ३१ ॥

अर्थः—स्त्री पुरुष की परस्पर छठीं आठवीं राशि होवे तो मृत्यु जानना और नवीं पांचवीं राशि हो तो संतान नष्ट हों । दूसरी, बारहवीं, हो तो दरिद्रता हो ।

तीसरी, ग्यारहवीं, चौथी, दसवीं, सातवीं ये राशि होवें तो विवाह सुख देने वाला होता है ॥ ३१ ॥

दुष्ट भकूट का परिहार—

प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो-
ऽथो राशीश्वरसौहृदेऽपि गदितो नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि।
अन्यर्क्षांशपयोर्बलित्वसखिते नाड्यर्क्षशुद्धौ तथा
ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे निरुक्तो बुधैः ॥३२॥

(अन्वयः) दुष्टभकूटके प्रोक्ते सति एकाधिपत्ये तु परिणयः शुभो गदितः, अथो राशीश्वरसौहृदेऽपि यदि नाड्यर्क्षशुद्धिः तदा परिणयः शुभो गदितः अन्यर्क्षांशपयोः बलित्वसखिते तथा नाड्य र्क्षशुद्धौ सत्यां परिणयःशुभःस्यात् ताराशुद्धिवशेन राशिवशताभावे बुधैः परिणयो निरुक्तः इति ॥ ३२ ॥

अर्थः—स्त्री व पुरुष की राशि का एक स्वामी होवे तो दुष्ट भकूट अर्थात् छठे, आठवीं, राशि में भी विवाह शुभ है। अथवा राशि स्वामियों की मैत्री होवे और नाडी नक्षत्रों की शुद्धि होवे तब भी दुष्ट कूट में विवाह शुभ है। परस्पर राशियों में षडष्टक हो और राशियों के स्वामियों में मित्रता न हो, नवांश के स्वामियों में बलवान् मित्रता हो और नाडीनक्षत्रों की शुद्धि हो, तारा शुद्ध हो, राशिवश्य का भाव हो अर्थात् वश्यावश्य बनता हो तब भी पण्डितों ने विवाह करना शुभ कहा है ॥ ३२ ॥

दुष्ट गणकूट भकूट ग्रहकूट इनका परिहार—

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वंद्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥३३॥

(अन्वयः) राशिस्वामिनोः अंशनाथद्वन्द्वस्यापि मैत्र्यां सत्यां गणानां दोषो न भवति, सद्भकूटं खेटारित्वं नाशयेत् खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटं नाशयेदिति ॥ ३३ ॥

अर्थः—स्त्री पुरुष की राशियों के स्वामियों में मित्रता हो तथा नवांश के स्वामियों में मित्रता होवे तो गण का दोष नहीं लिया जाता और सद्भकूट तीसरे

ग्यारहवें इत्यादि ग्रह वैरकृत दोष को नष्ट करता है। इसीप्रकार ग्रहों की प्रीति दुष्ट भकूट को नाश करती है ॥ ३३ ॥

नाडीकूट का विचार—

ज्येष्ठारौद्रार्यमांभः पतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येंदुत्वाष्ट्रमित्रांतकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या।
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं च परा स्या-
द्दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः३४

(अन्वयः) ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भः पतिभयुगयुगं दास्रभं च एकनाडी स्यात् पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनि बुध्न्ये च मध्या नाडी स्यात्, वाय्वग्नि-व्यालविश्वोडुयुगयुगं अथो पौष्णभं च अपरा नाडी, स्यात् दम्पत्योः कन्यावरयो रेकनाड्यां परिणयनं असत स्यात् मध्यनाड्यां हि निश्चयेन मृत्युः स्यात् ॥ ३४ ॥

अर्थः-ज्येष्ठा आर्द्रा उत्तराफाल्गुनी शतभिषा इन नक्षत्रों से दो दो जैसे ज्येष्ठा मूल आदि और अश्विनी यह एक नाडी के हैं और पुष्य मृगशिर, चित्रा, अनुराधा· भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढा, पूर्वाफाल्गुनी; उत्तराभाद्रपदा ये नक्षत्र मध्यनाडी के हैं। स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, उत्तरा-षाढ़ा, श्रवण रेवती ये नक्षत्र तृतीय नाडी के हैं। स्त्री पुरुष का एक नाडी में विवाह होवे तो दुष्ट फल कहना मध्य नाडी में हो तो मृत्यु कहना ॥ ३४ ॥

पूर्व मध्य अपरभाग योगी नक्षत्र—

पौष्णेशशाक्राद्रसमूर्यनंदा-
पूर्वार्धमध्यापरभागयुग्मम्।
भर्ता प्रियः प्राग्युजि भे स्त्रियाः स्या-
न्मध्ये द्वयोः प्रेम परे प्रिया स्त्री ॥ ३५ ॥

[अन्वयः] पौष्णेशशाक्राद्रसमूर्यनन्दा, पूर्वार्द्धमध्यापरभागयुग्मम् स्यात् प्राग्युजि भे स्त्रियाः भर्ता प्रियः स्यात् मध्ये युजि भे द्वयोः प्रेम भवति परे युजि भे स्त्री नृणां प्रिया भवेदिति ॥ ३५ ॥

अर्थः-रेवती, आर्द्रा, ज्येष्ठा, इनसे लेकर छः बारह नव पूर्वभाग मध्यभाग पर भाग क्रम से जानना। जैसे रेवती से छः पूर्वभाग आर्द्रा से बारह मध्यभाग और ज्येष्ठा से नव पर भाग। पूर्व भाग में दोनों के नक्षत्र हों भर्ता प्रिय होवे। मध्यभाग में परस्पर प्रीति हो। पर भाग में स्त्री प्रिय हो ॥ ३५ ॥

प्राचीन विद्वानों के मत से वर्गकूट—

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ॥३६॥

[अन्वयः] खगेशमार्जारसिंहशुनां सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणां अष्टौ अकचटतपयशवर्गाः भवन्तीति ॥ ३६ ॥

अर्थः—अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, लवर्ग, शवर्ग ये आठ वर्ग क्रम से गरुड़, बिलाड, सिंह, कुत्ता, सर्प, मूसा, मेंढा, इनके जानना और अपने से पांचवां शत्रु जानना ३६

नक्षत्रैक्य और राश्यैक्यमें विचार—

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाडीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ३७

[अन्वयः] द्वयोः कन्यावरयोः राश्यैके चेद्यदि ऋक्षभिन्नं तथा एव नक्षत्रैक्ये राशियुग्मम् तदा नाडीदोषः गणानाञ्च दोषः नो, नक्षत्रैक्ये तदा पादभेदे शुभं स्यादिति ॥ ३७ ॥

अर्थः-वरवधुओं की राशि एक हो और नक्षत्र भिन्न हो तथा नक्षत्र एक हो और चरण का भेद होवे तो भी शुभ है ॥ ३७ ॥

नौकर आदिकों का नक्षत्र स्वामि नक्षत्र से पूर्व होने से फल-

सेव्याधमर्णयुवतीनगरादिभं चे-
त्पूर्वं हि भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् ।
सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाश-
ग्रामादिसौख्यहृदिदं क्रमशः प्रदिष्टम् ॥ ३८ ॥

[अन्वयः] भृत्यधनिभर्तृपुरादिसद्भात् सेव्या धमर्णनगरादिभं चेद्यदि

पूष हि निश्चयेन, सेवाविनाशधननाशनभर्तृनाशग्रामादिसौख्यहृत् इदं क्रमशः प्रदिष्टमिति ३८ ॥

अर्थः—स्वामी, ऋण लेनेवाला, युवती, नगर आदिकों का नक्षत्र नौकर, धनी, भर्ता पुरवासी इन्हीं के नक्षत्र से पूर्व होवे तो क्रम से सेवानाश धननाश भर्तृनाश ग्रामादि सुतनाश फल कहने । जैसे प्रथम जन्मनक्षत्र सेव्य का है दूसरा सेवक का होवे तो सेवा का नाश होवे ऐसे ही आगे भी जानना ॥ ३८ ॥

राशिस्वामियों का और नवांशविधि-

कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचंद्रमाः
कविभौमजीवशनिसौरयो गुरुः ।
इह राशिपाः क्रियमृगास्यतौलिकें
दुभतो नवांशविधिरुच्यते बुधैः ॥ ३९ ॥

[अन्वयः] कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रमाः कविभौमजीवशनिसौरयः गुरुश्च क्रमेणेह राशिपा भवन्ति क्रियमृगास्यतौलिकेन्दुभतः नवांशविधिः बुधैरुच्यते ३९

अर्थः-मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्रमा, सूर्य बुध शुक्र, मंगल, गुरु, शनि, और गुरु ये ग्रह क्रम से मेषादि राशियों के स्वामी कहे हैं, मेष मकर तुला कर्क इन राशियों से नवांशविधि कही है, जैसे मेष का नवांश मेष से वृष का मकर से मिथुन का तुला से कर्क का कर्क से सिंह का मेष से कन्या आदिका मकरादिकों से इस क्रम से धनु आदिकों का मेषादिकों से ऐसे जानना ॥ ३९ ॥

होरा का विचार-

समगृहमध्ये शशिरविहोरा ।
विषमभयमध्ये रविशशिनोः सा ॥ ४० ॥

[अन्वयः] समगृहमध्ये शशिरविहोरा स्यात् विषमभयमध्ये रविशशिनोः सा होरा भवतीति ४० ॥

अर्थः-समराशियों में तो प्रथम चन्द्रमा की होरा अर्थात् पन्द्रह भाग है और दूसरी पन्द्रह भाग सूर्य की है विषमराशियों में पहिली सूर्य की होरा व दूसरी चन्द्रमा की ॥ ४० ॥

त्रिशांश और द्रेष्काण—

शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाण-
शैलाष्टपञ्चविशिखाः समराशिमध्ये ।
त्रिंशांशको विषमभे विपरीतमस्मा-
द्द्रेष्काणकाः प्रथमपंचनवाधिपानाम् ॥४१॥

[अन्वयः] समराशिमध्ये शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाणशैलाष्टपञ्चविशिखाः, त्रिंशांशकः विषमभे अस्मात् विपरीतं ज्ञेयं प्रथमपञ्चनवाधिपानां द्रेष्काणकाः स्युरिति ॥ ४१ ॥

अर्थः—शुक्र बुध गुरु शनि मंगल इन ग्रहों का पांच सात आठ पांच पांच इस क्रम से समराशियों में त्रिंशांश में जानना । जैसे शुक्र पांच अंशों का स्वामी बुध सात अंशों का स्वामी और विषम राशियों में उलटा जानना । जैसे प्रथम पांच अंश का स्वामी, भौम फिर पांच का शनि स्वामी इसी प्रकार और भी जानना । दश अंश का द्रेष्काण होता है । सो प्रथम द्रेष्काण नवम राशिके स्वामी का इस प्रकार होता है ॥ ४१ ॥

द्वादशांश और षड्वर्गों का उपसंहार—

स्याद्द्वादशांश इह राशित एव गेहं
होराथ दृक्कनवमांशकसूर्यभागाः ।
त्रिंशांशकश्च षडिमे कथितास्तु वर्गाः
सौम्यैः शुभं भवति चाशुभमेव पापैः ॥ ४२ ॥

(अन्वयः) द्वादशांश इह राशित एव गेहं अथ होरा स्यात् दृक्कनवमांशकसूर्यभाः । त्रिंशांशकश्च इमे षड्वर्गाः कथिताः तु पुनस्ते सौम्यैः शुभं भवति पापैश्चा शुभमेव भवतीति ॥ ४२ ॥

अर्थः—यह षड्वर्ग में अपनी राशि से ढाई भाग का द्वादशांश जानना । जैसे मेष का द्वादशांश मेष आदि, वृष का वृष आदि । और राशि होरा द्रेष्काण नवमांश द्वादशांश त्रिंशांश ये षड्वर्ग कहे हैं । यह सौम्यग्रहों के शुभ हैं पापग्रहों के अशुभ हैं जो मिले होवें तो अधिक वर्ग की तरह फल कहना ॥ ४२ ॥

गण्डान्तदोष का विचार-

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभांत्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनी
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गंडांतकम् ।
कर्काल्यंडजभांततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगा
पूर्णान्तादृघटिकात्मकं त्वशुभदं नंदातिथेश्चादिमम् ॥४३

(अन्वयः) ज्येष्ठा.पौष्णभसार्पभान्त्यघटिका युग्मं च पुनः मूलाश्विनी, पित्र्यादौ घटिकाद्वयं तद्भस्य गण्डान्तकं निगदितं ततः कर्काल्यंडजभान् अर्ध-घटिका सिंहाश्वमेषादिगा पूर्णान्ते घटिकात्मकं तु पुनः नन्दातिथेश्च आदिमम् गंडान्तं अशुभं स्यादिति ॥ ४३ ॥

अर्थः-ज्येष्ठा रेवती आश्लेषा इनकी अन्त की दो घड़ी गंडांत है और मूल अश्विनी मघा इनकी आदि की दो घड़ी गंडांत हैं यह नक्षत्रगंडांत है और कर्क वृश्चिक मीन इनके अन्त की आधी घड़ी गंडांत है और सिंह धनु मेष इनकी आदि की आधी घडी गंडान्त है। यह लग्न गण्डान्त है और ५ । १० १५ इन तिथियों की अन्त की एक घड़ी गण्डान्त है और १ । ६ । ११ इन तिथियों की आदि की एक घड़ी गण्डान्त है यह तिथि गण्डान्त है यह अशुभ फल देनेवाली है ॥ ४३ ॥

कर्तरीदोष का विचार-

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तथा ।
कर्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥४४॥

(अन्वयः) यदा लग्नाद् सकाशाद् पापौ पापग्रहौ ऋज्वनृजू व्ययार्थस्थौ तदा कर्तरी ज्ञेया सा कर्तरी मृत्युदारिद्र्यशोकदा भवेत् इति ॥ ४४ ॥

अर्थः-जो लग्न से सीधा चलनेवाला पापग्रह बारहवें स्थान में होवे और पापग्रह वक्री दूसरे स्थान में होवे तो कर्तरीनाम दोष कहना। सो मृत्यु दारिद्र व शोक देनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

ग्रहयोग विचार-

चंद्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं शुभम् ।

सौख्यं सापत्न्यवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ॥४५॥

(अन्वयः) सूर्यादियुक्ते चन्द्रे दारिद्र्यं मरणं शुभम् सौख्यं सापत्न्यवैराग्यं स्यात् पापद्वययुते चन्द्रे मृत्युरेव स्यादिति ॥ ४५ ॥

अर्थः-सूर्ययुक्त चन्द्रमा होवे तो दरिद्रता हो मंगलयुक्त चन्द्रमा हो तो मरण हो बुधयुक्त चन्द्रमा हो तो शुभ हो गुरुयुक्त चन्द्रमा हो तो सौख्य हो शुक्रयुक्त चन्द्रमा हो तो शत्रुता हो शनियुक्त चन्द्रमा हो तो वैराग्य हो और दो पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा हो तो मृत्यु हो इस प्रकार ग्रहयोग फल जानना ॥ ४५ ॥

अष्टम लग्नदोष अपवादसहित-

जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौ नेष्टः करग्रहः ।
एकाधिपत्ये राशीशमैत्रे वा नैव दोषकृत ॥४६॥

(अन्वयः) जन्मलग्नभयोः मृत्युराशौ करग्रहः नेष्टः स्यात् राशीशे एकाधिपत्ये वा मैत्रे तदा दोषकृत् नैव स्यादिति ॥ ४६ ॥

अर्थः-जन्मलग्न व जन्मराशि से अष्टमराशि में विवाह होना श्रेष्ठ नहीं परंतु जन्मराशि व जन्मलग्न में से किसीका और विवाह लग्न का स्वामी एक ही हो वा राशीश्वरों में मित्रता होवे तो दोष नहीं ॥ ४६ ॥

पहिले श्लोक के उत्तरार्ध का विवरण-

मीनोक्षकर्कालिमृगस्त्रियोष्टमं लग्नं यदा नाष्टमगेहदोषकृत् ।
अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ४७

(अन्वयः) मीनोऽक्षकर्कालिमृगस्त्रियः यदाऽष्टमं लग्नं तदा अष्टमं दोषकृत् न, अन्योन्यमित्रत्ववशेन सा वधूः सुतायुः गृहसौख्यभागिनी च भवेदिति ॥४७॥

अर्थः-मीन वृष कर्क वृश्चिक मकर कन्या ये राशि जो अष्टमलग्न में हों तो अष्टम लग्न दोष करनेवाला न हो और आपस में ग्रहों की मैत्री हो तो वह वधू पुत्र आयु और गृहसौख्य से संयुक्त होती है ॥ ४७ ॥

मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने तदधिपतिर्वा न शुभकरः स्यात्
व्ययभवनं वा भवति तदंशस्तदधिपतिर्वा कलहकरः स्यात् ४८

(अन्वयः) मृतिभवनांशः यदि विलग्ने स्यात् अथवा तदधिपतिः विलग्ने

तदा न शुभकरः स्यात् वा तदंशः व्ययभवनं वा तदधिपति र्व्ययभवनं तदा कलहकरः स्यादिति ॥ ४८ ॥

अर्थः-अष्टमलग्न वा अष्टमभवनका नवांशक लग्न में हो अथवा अष्टमलग्न का स्वामी हो तो शुभप्रद नहीं होता और जन्मलग्न व जन्मराशि से द्वादशभवन विवाहलग्न में हो अथवा व्ययभवन का अंश होवे अथवा उसका स्वामी होवे तो कलह का करनेवाला होता है ॥ ४८ ॥

विषघटीका दोषविचार—

खरामतो ३० ऽन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे
खवेदतः ४० के रदत ३२ श्च सार्पभे ।
खबाणतो ५० श्वे धृतितो १८ ऽर्यमांबुपे
कृते २० ऽङ्गतत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४९ ॥
मनो १४ र्द्विदैवानिलसाम्यशाक्रभे
कुपक्षतः २१ शैवकरेष्टि १६ तोऽजभे
युगाश्वितो २४ बुध्न्यभतोययाम्यधे
खचंद्रतो १० मित्रभवासवश्रुतौ ॥ ५० ॥
मूलेऽङ्गबाणा ५६ द्विषनाडिकाः कृताः
वर्ज्याः शुभेऽथो विषनाडिका ध्रुवाः ।
विघ्ना भभोगेन खतर्क ६० भाजिताः
स्फुटा भवेयुर्विषनाडिकास्तथा ॥ ५१ ॥

(अन्वयः) अन्त्यादितिवह्निपित्र्यभे खरामतः के खवेदतः सार्पभे च पुनः रदतः, अश्वे खबाणत , अर्यमाम्बुपे धृतित. भगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे कृते रिति । द्विदैवानलसौम्यशाक्रभे मनोः शैवकरे कुपक्षतः, अजभे, अष्टितः बुध्न्यभतोययाम्यभे युगाश्विनः मित्रभवासवश्रुती खचन्द्रतः । मूले अङ्गबाणात् एते विषनाडिकाः कृता , अथो शुभे विषनाडिका ध्रुवा वर्ज्याः, तथा विषनाडिकाश्च याः

भभोगेन निघ्नाः खतर्कभाजितास्तदा स्फुटा विषनाड़िका ध्रुवा भवेयुरिति ॥ ४६—५०-५१ ॥

अर्थः-रेवती पुनर्वसु कृत्तिका मघा इन नक्षत्रोंमें ३० तीस घड़ीके बादकी चार घड़ी विषघड़ी हैं। रोहिणीमें ४० चालीस घड़ी पीछे चार घड़ी, अश्लेषा में ३२ घड़ी पीछे चार घड़ी, अश्विनीमें ५० घड़ी, पीछे भरणी शतभिषामें १८ अठ्ठारह घड़ी पीछे वि घड़ी, पूर्वाफाल्गुनी चित्रा उत्तराषाढ़ा पुष्य इन नक्षत्रोंमें २० घड़ी पीछे चार घड़ी विषसंज्ञक है ॥ ४६ ॥ विशाखा, स्वाती, मृगशिर, ज्येष्ठा, इनमें १४ घड़ी उपरान्त चार घड़ी विषसंज्ञक है, आर्द्रा हस्तमें २१ घड़ी पीछे चार घड़ी विषसंज्ञक है और श्रवणमें १६ सोलहघड़ीके उपरान्त चार घड़ी विषकी हैं। उत्तराभाद्रपदा, पूर्वाषाढा, भरणी इन नक्षत्रोंमें २४घड़ीके उपरान्त चार घड़ी विषकी हैं। अनुराधा धनिष्ठा श्रवण इन नक्षत्रोंमें १० दश घड़ीके उपरान्त चार घड़ी विष की है ॥ ५० ॥ मूल नक्षत्रमें ५६ छप्पन घड़ीसे आगे जो विषनाड़ी हैं सो शुभ काममें वर्जित हैं। विषनाडीके ध्रुवाको इष्ट नक्षत्र के भोगसे गुणा कर पीछे साठका भाग देवे तो ध्रुवा स्पष्ट हो जाता है। उसी प्रकार विषनाड़ीको भी नक्षत्रभोगसे गुणा कर फिर साठका भाग देने से जो लब्धि हो उसे विषनाड़ी स्पष्ट जानना ॥ ५१ ॥

दुर्मुहूर्त दोष और विवामुहूर्त-

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वंबुविश्वे-
ऽभिजिदथ च विधातापींद्र इंद्रानलौ च ।
निर्ऋतिरुदकनोथोऽप्यर्यमाथो भगः स्युः
क्रमश इह मुहूर्ता वासरे बाणचंद्राः ॥ ५२ ॥

(अन्वयः) गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वेभिजित् अथ च विधातापीन्द्रः च पुनः इन्द्रानलौ निर्ऋतिः उदकनाथः अपि अर्यमं अथो भगः क्रमश इह वासरेर्वाणचन्द्राः मुहूर्ताः स्युः ॥ ५२ ॥

अर्थः-शिव भुजग मित्र पितृ वसु जल विश्वेदेव अभिजित विधाता इंद्र इन्द्राग्नी निर्ऋति उदकनाथ अर्यमा भग इनके दिनमें पंद्रह मुहूर्त कहे हैं ॥५२॥

अथ रात्रिमुहूर्तके विषय विचार-

शिवोऽजपादादष्टौ स्युर्भेशा अदितिजीवकौ ।

विष्णवर्कत्वाष्ट्रमरुतो मुहूर्ता निशि कीर्तिताः ॥ ५३ ॥

(अन्वयः) शिवः अजपादात् अष्टौ भेशाः स्युः अदितिजीवकौ विष्णवर्कत्वा-ष्ट्रमरुतो निशि मुहूर्ताः कीर्तिताः ॥ ५३ ॥

अर्थः-शिव अजपात् आदि आठ नक्षत्रोंके स्वामी अदिति, गुरु, विष्णु, अर्क, त्वष्टा मरुत् आदि ये १५ मुहूर्त रातमें होते है ॥ ५३ ॥

रवि आदि वारोंमें दुर्मुहूर्त-

रवावर्यमा ब्रह्मरक्षश्च सोमे
कुजे वह्निपित्र्ये बुधे चाभिजित्स्यात् ।
गुरौ तोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये
शनावीशसार्पौ मुहूर्ता निषिद्धाः ॥ ५४ ॥

(अन्वयः) रवौ अर्यमा सोमे च पुनः ब्रह्मा रक्षः कुजे वन्हिपित्र्ये, बुधे च अभिजित् स्यात् गुरौ तोयरक्षौ भृगौ ब्राह्मपित्र्ये शनौ ईशसार्पौ एते मुहूर्ता निषिद्धाः स्युरिति ॥ ५४ ॥

अर्थः-रविवारमें अर्यमा, सोमवारमें ब्राह्म व राक्षस, मंगलवारमें अग्नि पित्र्य, बुधवारमें अभिजित् गुरुवारमें जल राक्षस, भृगुवारमें ब्राह्म पितृ, शनिवा रमें ईश सार्प ये मुहूर्त निषिद्ध है ॥ ५४ ॥

विवाहमें विहित नक्षत्र आदि और अभिजितका मान-

निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्रपित्र्य-
ब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः शुभो विवाहः ।
रिक्तामारहिततिथौ शुभेऽह्नि वैश्व-
भांत्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ॥ ५५ ॥

(अन्वयः) शशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मान्त्योत्तरपवनैः निर्वेधैः विवाहः शुभः स्यात् , रिक्तामारहिततिथौ, शुभेऽह्नि वैश्वभान्त्यांघ्रिश्रुतितिथि भागतो-ऽभिजित् एतेषु नक्षत्रेषु विवाहः शुभो भवतीति ॥ ५५ ॥

अर्थ-मृगशिर हस्त मूल अनुराधा मघा रोहिणी रेवती तीनों उत्तरा स्वाती

वेधसे रहित इन नक्षत्रोंमें और रिक्ता अर्थात् ४।९।१४। और अमावास्या इनसे रहित तिथियोंमें और शुभवारोंमें विवाह करना शुभ है । उत्तराषाढ़का चौथा चरण और श्रवणका पन्द्रहवां भाग अभिजित् होता है ॥ ५५ ॥

पंचशलाका चक्र–

बेधोऽन्योन्यमसौ विरिंच्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयो-
र्विश्वेंद्वोर्हरि पित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः ।
स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिभादित्योस्तथोपांत्ययोः
खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्ययोर्वा तृतीयद्वयोः ॥ ५६ ॥

(अन्वयः) विरिंच्यभिजितोः याम्यानुराधर्क्षयोः विश्वेन्द्वोः हरिपित्र्ययोः हस्तोत्तराभाद्रयोः स्वातीवारुणयोः निर्ऋतिभादित्योः तथा उपान्त्योः, असौ अन्योन्यं (परस्परं) ग्रहकृतो वेधो भवेत् तत्र तुरीयचरणाद्ययोः वा तृतीयद्वयोः गते खेटे अन्योन्यं वेधो भवेत् ॥ ५६ ॥

अर्थः–रोहिणी और अभिजित्का वेध है, भरणीका और अनुराधाका वेध है, उत्तराषाढ़ा और मृगशिरका वेध है; श्रवणका और मघाका वेध है, हस्तका और उत्तराभाद्रपदाका वेध है, स्वातीका और शतभिषाका वेध है, मूलको और पुनर्वसुकावेध है, उत्तराफाल्गुनीका और रेवतीका वेध है चौथे चरणका पहले चरणके साथ होता है और उसी प्रकार दूसरे चरणका तीसरे चरणके साथ होता है और उसी प्रकार दूसरे चरणका तीसरे चरणके साथ परस्पर वेध होता है। ऐसे ग्रहसे किया वेध जानना जैसे अभिजित् पर कोई ग्रह हो तो रोहिणी विद्ध जाननी। ऐसे ही चरण वेधका उदाहरण जैसे पुनर्वसुके चौथे चरणपर कोई ग्रह होवै तो मूलका पहला चरण विद्ध जानना ॥ ५६ ॥

सप्तशलाका वेधचक्र—

शाक्रेऽब्जे शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसु-
द्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे मिथः ।
हस्तोपांतिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्ट्रभा-
जांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुभृद्रेखिके ॥५७॥

(अन्वयः) अद्रिरेखे किन्तु सप्तशलाका चक्रे, शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसुद्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे तथा सार्पानुराधे हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादितित्वाष्ट्रभेजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे मिथोऽन्योन्यं विद्धे भवतः इति ॥ ५७ ॥

अर्थः-ज्येष्ठा और पुष्य का शतभिषा और स्वाती का, पूर्वाषाढ़ा और आर्द्रा का, रेवती और उत्तराफाल्गुनी का, धनिष्ठा और विशाखा का. उत्तराषाढ़ा और मृगशिरका अश्विनी पूर्वाफाल्गुनी का; आश्लेषा और अनुराधा का, हस्त और उत्तराभाद्रपदा का: रोहिणी और अभिजित् का, मूल और पुनर्वसु का: चित्रा और पूर्वाभाद्रपदा का, भरणी और मघा का, कृत्तिका और श्रवण का परस्पर वेध होता है। यह सप्तशलाका चक्र के वेध है ॥ ५७ ॥

क्रूरग्रहोंसे आक्रांत आदि दोष—

ऋणानि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च।
भुक्त्वा चंद्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ ५८ ॥

(अन्वयः) क्रूरविद्धानि यानि ऋक्षाणि क्रूरभुक्तानि च, ऋक्षाणि चन्द्रेण भुक्त्वा भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते इति ॥ ५८ ॥

अर्थः-क्रूर ग्रहसे विद्ध हुए, क्रूरग्रहसे छूटे हुए, क्रूरग्रह जिसपर प्राप्त होने वाला होय और उत्पातोंसे दूषित ऐसे नक्षत्र यदि चन्द्रमासे भोग कर छोड़ दिये गये हों तो शुभ कहते हैं ॥ ५८ ॥

लत्ता दोषका प्रमाण-

ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठे भं सप्तगोजातिशरैर्मितं हि।
संलत्तयंतेऽर्कशनीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्काग्निमितं पुरस्तात् ५९

(अन्वयः) सप्तगोजाति शरैर्मितंभं स्वपृष्ठे हिनिश्चयेनज्ञराहुपूर्णेन्दुसिता संलत्तयन्ते, सूर्याष्टतर्काग्निमितंभं अर्कशनीज्यभौमाः पुरस्तात् संलत्तयन्ते ॥५९॥

अर्थः-जिस नक्षत्र पर बुध हो उसके पीछे सातवें ७ नक्षत्र पर लात मारता है। और जिस नक्षत्र पर हो तिससे आगेके नवें नक्षत्रपर लात मारता है। पूर्ण चन्द्रमा पीछेके बाइसवें २२ नक्षत्रपर लात मारता है। शुक्र अपने पीछेवाले पांचवें नक्षत्रको लात मारता है। सूर्य आगेके बारहवें नक्षत्रको लात मारता है। शनिश्चर आगे के आठवें नक्षत्र पर लात मारता है। बृहस्पति आगेके छठे

नक्षत्र पर लात मारता है। मंगल आगेके तीसरे नक्षत्र पर लात मारता है। यह लत्ता योग कहाता है ॥ ५९ ॥

पात दोष विचार—

हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातजगंडशूलयोगानाम्।
अंते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं तत्स्यात ॥ ६० ॥

(अन्वयः) हर्षणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगंडशूलयोगानाम् अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं स्यात् ॥ ६० ॥

अर्थः-हर्षण वैधृति साध्य व्यतीपात गंड शूल इन योगों के अन्त में जो नक्षत्र होवे उसमें पातदोष लगता है ॥ ६० ।

महापात दोष विचार—

पंचास्याजौगोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे।
तत्रान्योन्यं चंद्रभान्वोर्निरुक्तं क्रांतेः साम्यं नो शुभं मंगलेषु॥६१॥

(अन्वयः)-पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ कन्यामीनौ कर्क्यली चापयुग्मे चन्द्रभान्वोः तत्रान्योन्यं क्रान्तेः साम्यं निरुक्तं तन्मंगलेषु शुभं नो इति ॥ ६१ ॥

अर्थः-सिंह, मेष, वृष, मकर, तुला, कुम्भ, कन्या मीन, कर्क, वृश्चिक, धन मिथुन इन राशियों पर चन्द्रमा सूर्य एक रेखा पर स्थित हो तो क्रांति साम्यदोष होता है यह सब शुभ कार्यों में वर्जित है ॥ ६१ ॥

खार्जूर दोष विचार-

व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वशूलांत्यवज्रे परिघातिगंडे।
योगे विरुद्धे त्वभिजित्समेतः खार्जूरमर्काद्विषमे शशी चेत्॥६२॥

(अन्वयः) व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वशूलान्त्यवज्रे परिघातिगंडे चेत् योगे विरुद्धे सति अर्थात् शशी चन्द्रः अभिजित्समेता विषमर्क्षगस्तदा एकार्गलाख्यो दोषः हि निश्चयेन स्यात् ॥ ६२ ॥

अर्थः-व्याघात गंड व्यतीपात विष्कंभ शूलवैधृति वज्र परिघ अतिगंड इन योगों में जिस दिन कोई योग होवे उस दिन जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्र से अभिजित् समेत गिने जिस दिन चन्द्रमा विषम नक्षत्र पर हो उसी दिन खार्जूर (एकार्गल) दोष होता है ॥ ६२ ॥

उपग्रह दोष विचार-

शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिधृतिश्च प्रकृतेश्च पंच ।
उपग्रहाः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुबाह्लिकानाम् ६३

(अन्वयः) सूर्यभतः सकाशात् अब्जताराः शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यः तिथिः धृतिश्च च पुनः प्रकृतेः पञ्च एते उपग्रहाः भवन्ति ते कुरुबाह्लिकानां देशे शुभा न भवन्तीति ॥ ६३ ॥

अर्थः-सूर्यके नक्षत्रसे पांचवें, आठवें दशवें, चौदहवें, सातवें, उन्नीसव, पन्द्रहवें, अठारहवें, इक्कीसवें, बाइसवें, तेइसवें, चौबीसवें, पच्चीसव, ऐसी गिनती के नक्षत्र पर चन्द्रमा होवे तो उपग्रह दोष होता है। यह कुरु देश और बाह्लिक देशमें शुभ नहीं है ॥ ६३ ॥

पात उपग्रह लत्ता इनका अपवाद और अर्धयाम-

पातोपग्रहलत्तासु नेष्टोंऽघ्रिः खेटपत्समः ।
वारस्त्रिघ्नोऽष्टिभिस्तष्टः सैकः स्यादर्धयामकः ॥ ६४ ॥

(अन्वयः) पातोपग्रहलत्तासु खेटपत्समः अंघ्रिः नेष्टः स्यात् वारस्त्रिघ्नः अष्टभिस्तष्टः सैकः तदा अर्धयामको भवतीति ॥ ६४ ॥

अर्थः-पातदोष उपग्रहदोष लत्तादोष इन तीन दोषोंमें नक्षत्रके जिस चरण पर कोई ग्रह हो दूषित नक्षत्रका वही चरण श्रेष्ठ नहीं होता। वार के अंकको तीनसे गुणा करै फिर आठका भाग देवै जो अंक बचै तिसमें एक जोड़ दे उतने ही संख्यक अर्धयाम होता ह ॥ ६४ ॥

कुलिक दोष विचार-

शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिका रवेः ।
रात्रौ निरेकास्तिथ्यंशाऽशनौ चांत्योपि निंदिताः॥६५॥

(अन्वय.) रवेः शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिकाः स्युः ते रात्रौ निरेकाः कार्याः शनौ तिथ्यंशाः ॥ ६५ ॥

अर्थः-रविवार के दिन में चौदहवां, रात में तेरहवां मुहूर्त, चन्द्रवार को दिन में बारहवां, रात्रिमें ग्यारहवां, मंगल को दिन में दशवां रात्रि में नववां बुधवार को दिन में आठवां, रात्रि में सातवां बृहस्पति को दिन में छठा, रात्रि

में पांचवां शुक्रवार को दिन में चौथा, रात्रि में तीसरा शनिवार को दिन में दूसरा, रात्रि में प्रथम मुहूर्त्त कुलिक होता है शनि को रात में अन्तिम मुहूर्त्त भी निन्दित है। यह विवाहादि शुभ कर्ममें निंदित है॥ ६५॥

दग्धतिथ्याख्य विचार—

चापांत्यगे गोघटगे पतंगे कर्काजगे स्त्रीमिथुने स्थिते च।
सिंहालिगे नक्रघटे समाः स्युस्तिथ्यो द्वितीयाप्रमुखाश्च दग्धाः६६

(अन्वयः) पतङ्गे सूर्ये चापान्त्यगे गोघटगे कर्काजगे च पुनः स्त्रीमिथुने स्थिते सिंहालिगे नक्रघटे तदा द्वितीयाप्रमुखाः च पुनः तिथ्यः दग्धाःस्युः॥६६॥

अर्थः—धन और मीनके सूर्यमें द्वितीया, वृष कुम्भके सूर्यमें चतुर्थी कर्क मेषके सूर्यमें छठ, कन्या मिथुनके सूर्यमें अष्टमी सिंह वृश्चिकके सूर्यमें दशमी, मकर तुलाके सूर्यमे द्वादशी दग्ध तिथि होती हैं॥ ६६॥

जामित्र दोष—

लग्नाच्चंद्रान्मदनभवनगे खेटे न स्यादिह परिणयनम्।
किंवा बाणाशुभगमितलवगे जामित्रं स्यादशुभकरमिदम् ६७

(अन्वयः) लग्नाच्चन्द्रान् मदनभवनगे खेटे इह परिणयनं न स्यात् किंवा बाणाशुभगमितलवगे सति जामित्रं स्यात् इदं अशुभकरं स्यात्॥ ६७॥

अर्थः—लग्न से अथवा चन्द्रमासे सातवें स्थानमें कोई ग्रह का हो तो विवाह शुभ नहीं है अथवा विवाहके नवांशसे पचपनवें ५५ नवमांश पर कोई ग्रह हो तो सूक्ष्म जामित्र दोष होता है, यह जामित्र दोष अशुभ करता है। ६७॥

एकार्गल दोष—

एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः।
नश्यंति चंद्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा॥६८॥

(अन्वयः) चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने सति एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः नश्यन्ति तु पुनः यथा अर्काभ्युदये दोषाः नश्यन्तीति॥६८॥

अर्थः—चन्द्रमा और सूर्य के बल से युक्त लग्न में एकार्गल दोष, उपग्रह दोष पातदोष, लत्तादोष जामित्रदोष कर्त्तरी दोष, उदयास्त सम्बन्धी संपूर्ण दोष नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्य के उदय में रात्रि नष्ट हो जाती है॥ ६८॥

देश विशेष दोषों का अपवाद-

उपग्रहर्क्षं कुरुबाल्हिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितं भम् ।
सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ६६

(अन्वयः) कुरुवाल्हिकेषु देशेषु त्यजेत् कलिङ्गवंगेषु पातितभं त्यजेत् सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितभं सर्वदेशेषु (तु) किल निश्चयेन विद्धं त्यजेदिति ॥ ६६ ॥

अर्थः—उपग्रहदोष, कुरुदेश और बाल्हिक देशमें वर्जित है। कलिंग और वंगदेशमें पातदोष वर्जित है। सौराष्ट्र और शाल्वदेश में लत्तादोष वर्जित है और सम्पूर्ण देश में वेधको अवश्य त्याग करै ॥ ६६ ॥

दश दोषोंके बनाने का क्रम-

शशांकसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषे खं भू युगांगानि दशेशमिथ्यः ।
नागेंदवोऽकेंदुमिता नखाश्चेद्भवन्ति चैते दशयोगसंज्ञाः॥७०॥

(अन्वयः) शशांकसूर्यर्क्षयुतेः भशेषे खंभूयुगाङ्गानि दशेशतिथ्यः नागेन्दवोऽर्केन्दुमिता च पुनः नखाः (च) एते दशयोगसंज्ञाः भवन्तीति ॥ ७० ॥

अर्थः—अश्विन्यादि चन्द्रमा और सूर्य के नक्षत्र की संख्या जोड़ कर सत्ताईस का भाग देवे यदि० । १ । ४ । ६ । १० । ११ । १५ । १८ । १६ । २० इनमें से कोई अंक शेष रहे तो दश योग समझ लेना ॥ ७० ॥

दश योग का फल और परिहार-

वाताभ्राग्निमहीपचोरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षति-
र्योगांके दलिते समे मनुयुतेऽथौजे तु सैकेऽर्धिते ।
भं दासादथ सम्मितास्तु मनुभी रेखाः क्रमात्संलिखे-
द्वेधोऽस्मिन् ग्रहचंद्रयोर्न शुभदः स्यादेकरेखास्थयोः॥७१॥

(अन्वयः) समे योगांके दलिते अथ ओजे मनुयुते (तु) सैके अर्धिते दासाद् भं वाताभ्राग्निमहीपचोरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षतिः तु पुनः मनुभिः सम्मिताः रेखाः क्रमात्संलिखेत् अस्मिन् ग्रहचन्द्रयोः एकरेखास्थयोः वेधः शुभदः न स्यादिति ॥ ७१ ॥

अर्थः-शून्य बचै तो घातदोष, एक बचै तो अभ्रदोष, चार बचै तो अग्नि छः बचै तो रोग दोष, दश बचै तो चौर दोष, ग्यारह बचै तो मृत्युदोष, पंद्रह बचै तो रोगदोष अठारह बचै तो वज्रदोष, उन्नीस बचै तो कलह दोष, बीस बचै तो द्रव्यनाश दोष यह दश योगका फल जानना जो चन्द्र नक्षत्र और सूर्यके नक्षत्रका योग समांक होय तो उसको आधा करके १४ मिला दे उतनी संख्या अश्विनी से गिनै। अब विषमांक कहते हैं चन्द्रसूर्यके नक्षत्र का योग विषम हो तो एक और युक्त कर दे फिर आधा करै जो शेष बचें उसको अश्विनी से गिनें अब चक्र कहते हैं। चौदह रेखा क्रम से लिखै एक रेखा पर ग्रह चन्द्रमा होवै तो वेध होता है यह शुभप्रद नहीं है ॥७१॥

बाणदोष कथन-

लग्नेनाढ्या याततिथ्योऽङ्कतष्टाः शेषे नागद्व्यब्धितर्केन्दुसंख्ये।
रोगो वह्नी राजचौरौ च मृत्युर्बाणश्चायं दाक्षिणात्यप्रसिद्धः ७२

(अन्वयः) लग्नेन आढ्या याततिथ्योऽङ्कतष्टाः नागद्व्यब्धितर्केन्दुसङ्ख्ये शेषे सति रोगः बाणः वह्निः राजचौरौ च पुनः मृत्युः बाणः अयं बाणश्च दाक्षिणात्यप्रसिद्ध इति ॥ ७२ ॥

अर्थः-जिस दिनमें बाणका विचार करना होवै उस दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से बीती हुई सब तिथियों को वर्तमान दिनतक गिनकर लग्न में जोड़े फिर नवका भाग देवे जो आठका अंक बचे तो रोग बाण, दो बचे तो अग्नि बाण, चारबचे तो राजबाण, छः बचे तो चौरबाण, एक बचे तो मृत्युबाण यह दाक्षिणात्य (महाराष्ट्रों) में प्रसिद्ध है ॥ ७२ ॥

बाण दोष अपवाद-

रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रांतियातां-
शकमितिरथ तष्टांकैर्यदा पंच शेषाः।
रुगनलनृपचोरा मृत्युसंज्ञश्च बाणो
नवहृतशरशेषे शेषकैक्ये सशल्यः ॥ ७३ ॥

(अन्वयः) रसगुणशशिनागाब्ध्याढ्यसंक्रान्तियातांशकमितिः अथाङ्कैः तष्टा सती यदा पञ्च शेषाः स्युः तदा रुगनलनृपचोरा बाणाः मृत्युसंज्ञश्च बाणः शेषकैक्ये नवहृतशरशेषे सति सशल्यो बाणो भवतीति ॥ ७३ ॥

अर्थः-सूर्य की संक्रांति के जितने अंश गये हों उनको छ ६ तीन ३ एक १ आठ ८ चार ४ इन अंको में जोड़ कर फिर सब अंकोंमें नवका भाग देने से जो पांच बचे तो रोग अग्नि नृप चौर मृत्यु यह बाणक्रम से जाने। नवका भाग देने से जो कुछ बाकी रहें, उन बचे हुए अंकोंकी जोड के नवका भाग दे यदि पांच बचे तो सशल्य बाण जानना ॥ ७३ ॥

समय भेद वार भेद और कर्म से तीन प्रकार का बाण परिहार-

रात्रौ चौररुजौ दिवा नरपतिर्वह्निः सदा सन्ध्ययो-
र्मृत्युश्चाथ शनौ नृपो विदि मृतिर्भौमेऽग्निचोरौ रवौ।
रोगोऽथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे
वर्ज्याश्च क्रमतोबुधै रुगनलक्ष्मापालचोरामृतिः ॥ ७४ ॥

(अन्वयः) चौररुजौ बाणौ रात्रौ त्याज्यौ दिवा नरपतिः सदा दिवारात्रौ वन्हिः बाणस्त्याज्य. सन्ध्ययोः मृत्युश्च बाणस्त्याज्यः, अथ शनौ नृपो बाणस्त्याज्यः विदि मृतिर्बाणः त्याज्यः भौमे अग्निचोरौ त्याज्यौ रवौ रोगो बाणस्त्याज्यः अथ व्रतगेहगोपनृपसेवायानपाणिग्रहे रुगनलक्ष्मापालचौरा समृतिः क्रमत एते बुधै वंर्ज्या इति ॥ ७४ ॥

अर्थः—रात्रि में चौरवाण और रोगवाण वर्जित है दिन में राजवाण वर्जित है, अग्नि बाण दिन रात हमेशा वर्जित है। प्रातःकाल सायंकाल दोनों संध्याओं में मृत्युवाण वर्जित है। शनिश्चर को राजवाण, बुधको मृत्युवाण, मंगल को अग्निवाण और चौर बाण, रविवार को रोगवाण इस प्रकार यह उक्त दिनों में वर्जित है। यज्ञोपवीत में रोग बाण, घरके छावने बनवाने में अग्नि बाण, राजसेवा में राजवाण, यात्रा में चौरवाण और विवाह में मृत्युवाण वर्जित है ॥ ७४ ॥

ग्रहों की दृष्टि—

त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रमस्यं पश्यंति खेटाश्चरणाभिवृद्ध्या ॥
मंदोगुरुर्भूमिसुतः परे च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥७५॥

(अन्वयः) त्र्याशं त्रिकोणं चतुरस्रं अस्तं खेटाः ग्रहाः चरणाभिवृद्ध्या पश्यन्ति, मन्दः गुरु भूमिसुतः च पुनः परे ग्रहाः क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्तीति॥७५॥

अर्थः–सब ग्रह अपने स्थानसे तीसरे दसवें स्थानको एक चरण दृष्टि से देखते हैं। नवमें पांचवें स्थान को दो चरण से देखते हैं। चौथे आठवें स्थान को तीन चरण से देखते हैं। सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टिसे देखते हैं। शनैश्चर अपने से तीसरे दसवें स्थान को चार चरण से देखता है बृहस्पति पांचवें नववे स्थान को चार चरण करके देखता है मंगल चौथे और आठवें स्थान को चार चरण करके देखता है सूर्य चन्द्रमा बुध शुक्र ये सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥ ७५ ॥

उदयास्तादि शुद्धि—

यदा लग्नांशेशो लवमथ तनुं पश्यति युतो
भवेद्वायं वोढुः शुभफलमनल्पं रचयति ।
लवद्यूनस्वामीलवमदनभं लग्नमदनं
प्रपश्येद्वा वध्वाः शुभमितरथा ज्ञेयमशुभम् ॥ ७६ ॥

लवेशो लवं लग्नपो लग्नगेहं प्रपश्येन्मिथो वा शुभं स्याद्वरस्य ।
लवद्यूनपोऽशंद्युनं लग्नपोऽस्तंमिथोऽवेक्षतेस्याच्छुभंकन्यकायाः ७७

लवपतिशुभमित्रं वीक्षतेंशं तनुं वा
परिणयनकरस्य स्याच्छुभं शास्त्रदृष्टम् ।
मदनलवपमित्रं सौम्यमंशं द्युनं वा
तनु मदनगृहं चेद्वीक्षते शर्मवध्वाः ॥ ७८ ॥

(अन्वयः) यदा लग्नांशेशः लवं अथ तनुं पश्यति वा अयं युतो भवेत्तदा वोढुर्वरस्य अनल्पं फलं रचयति लवद्यूनस्वामी लवमदनभं वा लग्नमदनं प्रपश्येत्तदा वध्वाः कन्यकायाः शुभं स्यात् इतरथा अशुभं ज्ञेयम् । ॥ ७६ ॥

(अन्वयः) लवेशः लवं लग्नपः लग्नगेहं प्रपश्येत् तदा वरस्य शुभं स्यात् अथवा मिथः प्रपश्येत् तदापि वरस्यशुभं स्यात् लग्नद्यूनपः अंशद्युनं लग्नपः अस्तं ईक्षते तदा कन्यकायाः शुभं स्यात् वा मिथः प्रपश्येत् तदा कन्यायाः शुभं स्यादिति ॥ ७७ ॥

(अन्वयः) लग्नपतिशुभमित्रं अंशं वा तनूं वीक्षते तदा परिणयनकरस्य शास्त्रदृष्टं शुभं स्यात् मदनलवपमित्रं सौममंशंवा द्युनं तनुमदनगृहंचेद् वीक्षते तदा वध्वाः कन्यकायाः शर्म कल्याणं न वाच्यमिति ॥ ७८ ॥

अर्थः—जब लग्नका नवांशेश नवांश को या लग्नको देखता होय या नवमांश से अथवा लग्नसे युक्त होय तो वरके लिये शुभ फल को देनेवाला होता

है। नवांशसे सप्तम नवांशका स्वामी नवांशराशि से सप्तमराशिको देखता होवै या युक्तहोवै अथवा लग्न से सप्तम भावको देखता होय या सप्तम भाव से युक्त होय तो वधूके लिए विशेष शुभ फल देने वाला होता है और जो लग्न नवमांश स्वामी नवमांश को या लग्न को न देखता होय या युक्त हीन होय तो वरके लिये अशुभ फलप्रद है और नवमांश से सप्तम नवमांश का स्वामी नवांश से सप्तमको या लग्न से सप्तम भावको न देखता होवै या युक्त हीन होय तो वधूके लिये अशुभ है ॥ ७६ ॥ नवांशका स्वामी नवांशको और लग्न का स्वामी लग्नको देखता होय तो वरको शुभ है अथवा परस्पर नवांशका स्वामी लग्नको देखता होवै और लग्नेश नवांशको देखता होवै तो वरके वास्ते शुभ है। नवमांशसे सप्तम नवमांश का स्वामी अंशसे सप्तम नवमांश को देखता होवै और लग्न स्वामी लग्न से सप्तम घरको देखता होय तो कन्याको शुभ है अथवा परस्पर नवमांशसे सप्तम भाव का स्वामी लग्नसे सप्तम स्थानको देखता होवै और लग्न से सप्तम का स्वामी नवमांशसे सप्तमको देखता होवे तब भी कन्याका ही शुभ है। यह विचार लग्नविषयका है ॥७७॥ चन्द्रमा बुध बृहस्पति शुक्र इन ग्रहों में से कोई ग्रह अंशेश का मित्र हो और लग्न के नवमांश की राशिको या लग्नको देखता हो तो भी वरको शुभ है और जो चन्द्रमा बुध बृहस्पति शुक्र इन शुभ ग्रहो में से कोई सातवें स्थान के नवमांश के स्वामी का मित्र हो और अपने नवमांश या राशिको देखता हो या सातवें स्थानको देखता हो तो कन्या का विवाह शुभ है ॥ ७८ ॥

अर्क संक्रांति दोष-

विषुवायनेषु परपूर्वमध्यमान् दिवसांस्त्यजेदितरसंक्रमेषुहि ॥
घटिकास्तु षोडश शुभक्रियाविधौ परतोपि पूर्वमपिसंत्यजेद्बुधः ॥७९॥

(अन्वयः) विषुवायनेषु शुभक्रियाविधौ परपूर्वमध्यमान् दिवसान् त्यजेत् इतरसंक्रमेषु हि निश्चयेन परतः अपि पूर्वमपि षोडशषोडशघटिकाः (तु) बुधः संत्यजेदिति ॥ ७९ ॥

अर्थः—मेष तुला कर्क मकर संक्रांति विषे प्रथम मध्यम अन्त तीन दिनों को त्यागै और बाकी आठ संक्रांतियों में प्रथम और अन्तमें १६ सोलह २ घड़ी शुभकर्म में त्याग करै ॥ ७९ ॥

संक्रांति के घड़ियोंका विवरण—

देवद्वयं कृतवोऽष्टाष्टौ नाड्योंकाः खनृपाः क्रमात् ।
वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेः प्रायोऽर्कस्यातिनिन्दिताः ॥८०॥

(अन्वयः) अर्कादिः संक्रमणे देवद्वयङ्कर्तवोऽष्टाष्टौ नाड्यः खनृपाः अंकाः क्रमात् वर्ज्याः प्रायो वाहुल्येन अर्कस्य अतिनिन्दिताः भवन्ति ॥ ८० ॥

अर्थः-सूर्यसंक्रांतिसे पहले पीछे तेतीस घड़ी, चन्द्रमा की संक्रांति से पहले पीछे दो दो घड़ी, मंगलकी संक्रांति से पहले पीछे नव घड़ी, बुधकी संक्रांति से पहले पीछे छः घड़ी, बृहस्पति की संक्रांतिसे पहले पीछे अठासी घड़ी, शुक्र की संक्रांतिसे पहले पीछे नव घड़ी, शनिश्चर की संक्रांति से पहले पीछे एकसौ साठ घड़ी वर्जित हैं ॥ ८० ॥

पंग्वन्धवधिरादयलग्न—

घस्रे तुलाली बधिरौ मृगाश्वौ रात्रौ च सिंहाजवृषा दिवांधाः ।
कन्यानृयुक्कर्कटका निशांधाः दिने घटोऽन्त्यो निशि पंगुसंज्ञः ८१

(अन्वयः) तुलाली घस्रे बधिरौ स्मृतौ, मृगाश्वौ रात्रौ बधिरौ भवतः, च पुनः सिंहाजवृषाः दिवान्धा भवन्ति कन्यानृयुक्कर्कटका निशान्धा उक्ताः घटः दिने पंगुसंज्ञः अन्त्यः निशिपंगुसंज्ञो भवतीति ॥ ८१ ॥

अर्थः—दिनमें तुला वृश्चिक रात्रिमें धनु मकर बधिर (बहरे) होते हैं। दिन में सिंह मेष वृष और रात्रिमें कन्या मिथुन कर्क अन्ध होते हैं। दिनमें कुम्भ और रात्रिमें मीन ये दो लग्न पंगु (लंगडे) हैं ॥ ८१ ॥

तथा अन्य आचार्योंका मत—

बधिरा धन्वितुलालयोऽपराह्णे मिथुनं कर्कटकोऽङ्गना निशांधाः
दिवसांधा हरिगोक्रियास्तुकुब्जास्मृगकुम्भांतिमभानिसंध्ययोर्हि॥

(अन्वयः) धन्वितुलालयः अपराह्णे बधिराः स्मृताः मिथुनं कर्कटोऽङ्गना निशान्धाः भवन्ति तु पुनः हरिगोक्रियाः दिवसान्धाः स्युः मृगकुम्भान्तिमभानि हिनिश्चयेन सन्ध्ययोः कुब्जाः पंगवः स्मृता इति ॥ ८२ ॥

अर्थः—धन तुला वृश्चिक यह लग्न अपराह्णमें बधिर (बहरे) रात्रिमें मिथुन कर्क कन्या यह लग्न अंध हैं। दिनमें सिंह वृष मेष ये लग्न अंध हैं प्रातःकाल और सायंकाल मकर कुम्भ मीन यह लग्न कुबड़े हैं ॥ ८२ ॥

तथा फल—

दारिद्र्यं बधिरतनौ दिवांधलग्ने
वैधव्यं शिशुमरणं निशांधलग्ने ।

पंग्वंगे निखिलधनानि नाशमीयुः
सर्वत्राधिपगुरुदृष्टिभिर्न दोषः ॥८३॥

(अन्वयः) बधिरतनौ दारिद्र्यं दिवांधलग्ने वैधव्यं निशान्धलग्ने शिशुमरणं पंग्वगे निखिलधनानि नाशम् ईयुः सर्वत्र सर्वस्मिन् अधिपगुरुदृष्टिभिः दोषो न भवेत् ॥ ८३ ॥

अर्थः-बधिर (बहरे) लग्नमें विवाह हो तो वर कन्या दरिद्र हों दिवांध लग्न में विवाह हो तो कन्या रण्डा होती है। रात्रि के अंधे लग्न में विवाह हो तो सन्तान का मरण होता है। पंगुले में विवाह हो तो धन का नाश होता है। यदि इन लग्नोंको बृहस्पति देखता हो या लग्न स्वामी की दृष्टि हो तो विवाह शुभ है ॥ ८३ ॥

विवाह में विहित नवमांश कथन—

कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवे झषगे वा ।
यर्हि भवेदुपयामस्तर्हि सती खलु कन्या ॥ ८४ ॥

(अन्वयः) कार्मुकतौलिककन्या युग्मलवे वा झषगे यार्हि उपयामो भवेत्तर्हि खलु निश्चयेन सा कन्या सती भवेदिति ॥ ८४ ॥

अर्थः-धन कन्या तुला मिथुन इनके नवमांश में विकल्प करके मीन के नवमांश में विवाह हो तो कन्या पतिव्रता होय ॥ ८४ ॥

विहित नवांश में क्वचिन्निषेध—

अंत्यनवांशे न च परिणेया काचन वर्गोत्तममिह हित्वा ।
नो चरलग्ने चरलवयोगं तौलिमृगस्थेशशभृति कुर्यात् ॥८५॥

(अन्वयः) अन्त्यनवांशे काचन कन्या न परिणेया न विवाह्या वर्गोत्तमं इह हित्वा चरलग्ने नो चरलवयोगं नो शशभृति चन्द्रे तौलिमृगस्थे सति तदा परिणयनं कुर्यादिति ॥ ८५ ॥

अर्थ -अन्त के नवमांश में कन्या का विवाह करना नहीं चाहिये परन्तु अंत का नवमांश वर्गोत्तम हो तो विवाह श्रेष्ठ है। तुला, मकर राशि के चन्द्रमा हो तो चर लग्न के चर नवमांश में विवाह करना श्रेष्ठ नहीं है ॥ ८५ ॥

लग्न भंगयोग—

व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चंद्रखला न शस्ता।
लग्नेट्कविग्लौश्चरिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेट्शुभारश्च मदे च सर्वे ८६

(अन्वयः) शनिः व्यये अवनिजः खे भृगुस्तृतीये चन्द्रखलास्तनौ तदा शस्ताः न लग्नेट् कविग्लौश्च रिपौ मृतौ न शस्ताः ग्लौश्चन्द्रः लग्नेट् शुभारश्च सर्वे मदे सप्त मस्थानि सति न शस्ता इति ॥ ८६ ॥

अर्थः-विवाह के लग्न से बारहवें शनि, दशवें मंगल, तीसरे शुक्र, लग्न में चन्द्रमा और क्रूरग्रह अच्छे नहीं होते। लग्नस्वामी शुक्र चन्द्रमा छठे अच्छे नहीं होते, चन्द्रमा लग्न स्वामी, सौम्यग्रह और मंगल ये आठवें अच्छे नहीं हैं। सातवें तो कोई ग्रह शुभ नहीं हैं ॥ ८६ ॥

रेखाप्रदरव्यादिग्रहाः-

त्र्यायाष्टषट्सु रविकेतुतमोऽर्कपुत्रा-
स्त्र्यायारिगः क्षितिसुतो द्विगुणायगोऽब्जः।
सप्तव्ययाष्टरहितौ ज्ञगुरू सितोऽष्ट-
त्रिद्यूनषड्व्ययगृहान्परिहृत्य शस्तः ॥ ८७ ॥

(अन्वयः) रविकेतुतमोर्कपुत्रास्त्र्यायाष्टषट्सु क्षितिसुतः त्र्यायारिगः अब्जः द्विगुणायगः ज्ञगुरू सप्तव्ययाष्टरहितौ सितः, अष्टत्रिद्यूनषड्व्ययगृहान् परिहृत्य तदा शस्तः स्यादिति ॥ ८७ ॥

अर्थः-तीसरे ग्यारहवे आठवें छठे इन स्थानों में सूर्य केतु राहु शनि ये ग्रह शुभ होते हैं। तीसरे छठे ग्यारहवें स्थान में मंगल शुभ हैं। दूसरे तीसरे ग्यारहवें इन स्थान में चन्द्रमा शुभ हैं। सातवें आठवें स्थानको छोड़कर और स्थान में बुध बृहस्पति शुभ होते हैं। आठवें तीसरे सातवें छठे बारहवें स्थानोंको छोड़ कर शुक्र शुभ है ॥ ८७ ॥

कर्त्तरी आदि महादोषों का अपवाद-

पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी
दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न।

भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्भौमोऽष्टमो दोषकृ-
न्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ८८

(अन्वयः) कर्तरिकारको पापौ रिपुगृहे नीचास्तगौ तदा कर्तरी दोषः नैव सिते अरिनीचगृहगे तदा षष्ठदोषः अपि न भवेत् भौमे अस्ते रिपुनीचगे भौमोऽष्टमः हि निश्चयेन दोषकृत् न भवेत् शशिनि चन्द्रे नीचे नीचनवांशके तदा रिःफाष्ट दोषः अपि भवेदिति ॥ ८८ ॥

अर्थः-कर्त्तरी दोष करनेवाले क्रूरग्रह शत्रुस्थानमें स्थित हों अथवा नीच राशि में होवें या अस्त हुए होवें तो कर्त्तरी दोष नहीं है। शत्रु के स्थान नीच राशि इनमें शुक्र स्थित हो तो छठे स्थान स्थित शुक्रका भी दोष नहीं है। अस्त हुआ हो शत्रु की राशि राशि पर स्थित हो नीच राशि पर स्थित हो इस प्रकार का मंगल आठवें स्थान में स्थित हो तो दोष नहीं है। नीच राशि पर स्थित हो और नीच के नवमांश में स्थित हो तो छठे आठवें बारहवें चन्द्रमा का भी दोष नहीं होता ॥ ८८ ॥

नव दोषोंका परिहार—

अब्दायनर्तु तिथिमासभपक्षदग्ध-
तिथ्यंधकाणबधिरांगमुखाश्च दोषाः
नश्यन्ति विद्गुरुसितेष्विह केन्द्रकोणे
तद्वच्च पापविधुयुक्तनवांशदोषाः ॥ ८९ ॥

(अन्वयः) विद्गुरुसितेषु इह केन्द्रकोणे स्थितेषु तदा अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्धकाणबधिरांगमुखाश्च दोषाः नश्यन्ति, च पुनः तद्वत् पापविधुयुक्तनवांशदोषो न भवेदिति ॥ ८९ ॥

अर्थः-अब्ददोष १ अयनदोष २ ऋतुदोष ३ रिक्तादि तिथिदोष ४ मासदोष ५ नक्षत्रदोष ६ पक्षदोष ७ दग्धतिथ्यादि दोष ८ अन्धलग्नादिदोष ९ यह सम्पूर्ण दोष बुध बृहस्पति शुक्र सप्तम रहित केन्द्रमें अथवा नवम स्थानमें स्थित हों तो नाशको प्राप्त होते हैं। पापयुक्त चन्द्रमा और पापग्रह युक्त नवमांशका भी दोष बुधादिकोंके केन्द्र या कोणमें स्थित होनेसे नाश होते हैं ॥ ८९ ॥

तथा अन्य परिहार—

केंद्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायांति चंद्रे लाभेतद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः॥९०॥

(अन्वयः) जीवः केन्द्रे कोणे वा रवौ आये वा लग्ने वर्गोत्तमे अपिवा चन्द्रे वर्गोत्तमे सति तदा सर्वे दोषाः नाशमायान्ति-चन्द्रे लाभे तद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः नश्यन्तीति ॥ ९० ॥

अर्थः-प्रथम चौथे पांचवें नवें दशमें स्थानोंमें स्थित बृहस्पति हो तो सम्पूर्ण दोष नाश को प्राप्त होते हैं अथवा सूर्य ग्यारहवें स्थान में हो तो सम्पूर्ण दोष नाशको प्राप्त होवें और चन्द्रमा या लग्न वर्गोत्तमांश में हो तो सब दोष नाश हो जातेहैं। ग्यारहवें चंद्रमा हो तो दुर्मुहूर्त दोष और अशदोष का नाश हो जाता है ९०॥

तथा अन्य दोष परिहार—

त्रिकोणे केंद्रे वा मदनरहिते दोषशतकं
हरेत्सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षं सुरगुरुः।
भवेदाये केंद्रेऽगप उत लवेशो यदि तदा
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति ॥ ९१ ॥

(अन्वयः) सौम्यः त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते तदा शतकं दोषं हरेत् शुक्रो द्विगुणमपि दोषं हरेत्-सुरगुरुः लक्षं दोषं हरेत् अङ्गपः आये केन्द्रे भवेत् उत लवेशः यदि आये केन्द्रे भवेत्तदा दोषाणां समूहं शमयति क इव दहन स्तूलमिव ॥ ९१ ॥

अर्थः-प्रथम चौथे पाँचवें नवमें दशवें स्थानों में बुध हो तो १०० सौ दोषों को नाश करता है और उक्त स्थानों में शुक्र हो तो दो सौ २०० दोषों को हरता है। यदि बृहस्पति होवे तो १००००० एक लक्ष दोषों को नाश करता है और लग्नका स्वामी अथवा नवमांश का स्वामी ग्यारहवें पहले चौथे दशवें स्थान में हो तो दोषों के समूहों को यथा अग्नि रुईको भस्म करती है उसी प्रकार नाश करे ॥ ९१ ॥

लग्न विंशोपक कथन—

द्वौ द्वौ ज्ञभृग्वोः पंचेंदौ रवौ सार्धत्रयो गुरौ।
रामा मंदांशुकेत्वारे सार्धैकैकं विशोपकाः ॥ ६२ ॥

(अन्वयः) ज्ञभृग्वोः द्वौ द्वौ रवौ पञ्चेन्दौ गुरौ सार्द्धत्रयः मन्दांशुकेत्वारे सार्द्धैकैकं रामाः, विशोपका स्युरिति ॥ ६२ ॥

अर्थः-दो दो विश्वा बुध और शुक्र फल देते है। पाँच विश्वा चद्रमा साढेतीन विश्वा सूर्य और बृहस्पति तीन विश्वा शनिश्चर राहु केतु मंगल यह ग्रह डेढ़ डेढ़ विश्वा फल देते हैं ॥ ६२ ॥

श्वशुर आदि ग्रहोंका विचार—

श्वश्रुः सितोऽर्कः श्वसुरस्तनु तनु
र्जामित्रपः स्याद्दयितो मनः शशी
एतद्बलं संप्रति भाव्यतांत्रिक
स्तेषां सुखं संप्रवदेद्विवाहतः ॥ ६३ ॥

(अन्वयः) सितः श्वश्रूः अर्कः श्वशुरः तनुः तनुः स्यात् जामित्रपः दयिता स्यात् शशी मनः स्यात्-, एतद्बलं एतेषां शुक्रादीनां बलं संप्रति भाव्यविवाहतः तेषां श्वश्वादीनां सुखं प्रवदेदिति ॥ ६३ ॥

अर्थः-शुक्र कन्याकी सासु हैं और सूर्य श्वशुर हैं और लग्न शरीर हैं सप्तम स्वामी पति हैं चन्द्रमा मन हैं अब ज्योतिष वेत्ता इन्हीं ग्रहों से विचार करके विवाह से उनका शुभाशुभ फल कहैं ॥ ६३ ॥

संकीर्ण जातिके विवाह समय का वर्णन—

कृष्णे पक्षे सौरिकुजार्केऽपि च वारे
वर्ज्ये नक्षत्रे यदि वा स्यात्करपीडा।
संकीर्णानांहि सुतायुर्धनलाभ-
प्रीतिप्राप्त्यै सा भवतीह स्थितिरेषा ॥ ६४ ॥

(अन्वयः) कृष्णे पक्षे सौरिकुजार्केपि वारे च पुनः वर्ज्य नक्षत्रे यदि वा संकीर्णानां करपीडा स्यात् तर्हि सा सुतायुर्धनलाभप्रीतिप्राप्त्यै इह एषा स्थिति र्भवति ॥ इति ॥ ६४ ॥

अर्थः-कृष्णपक्ष शनिश्चर मंगल एतवार और विवाह में वर्जित नक्षत्रों में यदि नीच जातिके विवाहादि हो जावैं तो पुत्र आयु धनलाभ प्रीति को प्राप्त करता है ॥ ६४ ॥

गांधर्व विवाह वर्णन—

गांधर्वादिविवाहेऽर्काद्वेद ४ नेत्र २ गुणे ३ दवः १ ।
कु १ युगां ६ गा ग्नि ३ भू १ रामा ३ स्त्रिपद्यामशुभाः शुभाः ६२

(अन्वयः) गान्धर्वादि विवाहे अर्कान्नक्षत्रात् वेदनेत्रगुणेऽन्दवः कुयुगाङ्गाग्निभूरामाः त्रिपद्यां शुभाः शुभाः न भवन्तीति ॥ ६५ ॥

अर्थः-गान्धर्वादि विवाहों में सूर्यके नक्षत्रसे चार नक्षत्र अशुभ, पीछे दो न० शुभ तीन न० अशुभ एक न० शुभ फिर एक न० अशुभ चार न० शुभ फिर छः न० अशुभ तीन न० शुभ पीछे एक न० शुभ पीछे तीन न० अशुभ ऐसे तीन पदों में शुभ और अशुभ जानना ॥ ६५ ॥

विवाह के प्रथम कर्तव्यों का विचार—

विधोर्बलमवेक्ष्य वा दलनकंडनं वारकं
गृहांगणविभूषणान्यथ च वेदिकामंडपान् ।
विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्तथोद्वाहतो
न पूर्वमिदमाचरेत्त्रिनवषण्मिते वासरे ॥ ६६ ॥

(अन्वयः) विधोः बलं अवेक्ष्य वा दलनकण्डनं वारकं गृहाङ्गणविभूषणानि अथ वेदिकामण्डपान् उद्वाहतः विवाहविहितोडुभिः पूर्वं विरचयेत् तथा इदं त्रिनवषण्मिते वासरे न आचरेदिति ॥ ६६ ॥

अर्थः—चन्द्रमा का बल देखकर मंगल कलश अन्नका काड़ना पछोरना पीसना घर आँगन को भूषित करना वेदी मंडप बनाना विवाहके नक्षत्रमें शुभ है, परन्तु विवाह दिन से ३, ६, ९ दिन पहले न होय ॥ ६६ ॥

विवाह में वेदी लक्षण व दिन नियम—

हस्तोच्छ्राया वेदहस्तैः समंतात्तुल्या वेदी सद्मतो वामभागे।
युग्मे घस्ने षष्ठहीने च पंचसप्ताहे स्यान्मंडपोद्वासनं सत् ॥९७॥

(अन्वयः) सद्मतो वामभागे हस्तोच्छ्राया समन्ताद्वेदहस्तैः तुल्या वेदी स्यात् युग्मे घस्ने षष्ठहीने च पञ्चसप्ताहे मण्डपोद्वासनं सत् स्यात् ॥ ९७ ॥

अर्थः-मकान के बाँये तरफ चार हाथ चोखुटी और एक हाथ ऊंची वेदी बनाना। छठे दिनको छोड़कर समदिनमें और पाँचवें और सांतवें दिनमें मंडप का विसर्जन करै।

किसी आचार्यने तेल चढ़ाने की संख्या कही है—

मेषादिराशिजवधूवरयोर्बटोश्च
तैलादिलेपनविधौ कथिताऽत्र संख्या।
शैला दिशः शरदिगत्तनगाद्रिबाणबाणात्तबाणगिरयो
७,१०,५,१५,५,७,७,५,५,५,५,७ विबुधैस्तु कैश्चित् ९८

(अन्वयः) मेषादिराशिजवधूवरयोः वटोश्च तैलादिलेपनविधौ कैश्चित् विबुधैः शैला दिशः शरदिगत्तनगाद्रिबाणबाणात्तबाणगिरय इति संख्या कथिता ९८

अर्थः-मेषादि राशिमें उत्पन्न कन्या, वरोंकी तेल लगाने की संख्या जाननी मेष राशिमें सात, वृषमें दश, मिथुन में पांच, कर्क में दश, सिंहमें पांच, कन्या में सात; तुला में सात, वृश्चिक में पांच, धनमें पांच, मकर में पांच, कुंभमें पांच, मीनमें सात, यह मत कितने ही पंडितों का है ॥ ९८ ॥

विवाह मंडपे स्तंभ विवरणम्—

सूर्येऽङ्गनासिंहघटेषु शैवे स्तंभोऽलिकोदंडमृगेषु वायौ।
मीनाजकुंभे निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के ॥९९॥

(अन्वयः) अङ्गनासिंहघटेषु सूर्ये शैवे ईशानकोणे अलिकोदण्डमृगेषु सूर्ये वायौ वायव्यकोणे मीनाजकुम्भे सूर्ये निर्ऋतौ वृषयुग्मकर्के अग्निकोणे विवाहे स्तम्भः स्थाप्य इति ॥ ९९ ॥

अर्थः-कन्या सिंह तुला के सूर्य में ईशानकोण (पूर्व उत्तर के मध्य) में विवाह स्तंभ को स्थापन करें। वृश्चिक धन मकर इन राशि के सूर्य होने से

वायु कोण में स्तंभ को स्थापन करना शुभ है। मीन मेष कुंभ के सूर्य में नैर्ऋत्य कोणमें स्तंभ स्थापित करै। वृष मिथुन कर्क राशि के सूर्य में अग्निकोणमें स्तंभ स्थापन करै तो अतीव शुभ है॥ ९९॥

गोधूलि प्रशंसा-

नास्यामृक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिंता
नो वा वारो न च लवविधिर्नो मुहूर्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषो
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥१००॥

(अन्वयः) अस्यां ऋक्षं न तिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता नो वा वारः नच लवविधिः नो मुहूर्तस्य चर्चा नो वा योगः न मृतिभवनं नैव जामित्रदोषः सा गोधूलिः सर्वकार्येषु मुनिभिः शस्ता उदिता इति॥ १००॥

अर्थः-जिस मूहूर्त्त में नक्षत्र तिथि, करण, लग्न, वार, मुहूर्त्त योग आठवें स्थान का दोष, जामित्रदोष, यह कुछ भी न बनते हों और मुहूर्त्त भी न होय तो भी श्रेष्ठ मुनियों ने गोधूलि लग्नको सम्पूर्ण कार्य में श्रेष्ठ कहा है॥ १००॥

गोधूलि के भेद—

पिंडीभूते दिनकृति हेमंततौं स्यादर्धास्ते तपसमये गोधूलिः।
संपूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ॥

(अन्वयः) हेमन्तर्तौ दिनकृति सूर्ये पिण्डीभूते सति गोधूलिः स्यात् तपससय अर्द्धास्ते सति गोधूलिः स्यात् जलधरमालाकाले सम्पूर्णास्ते गोधूलिर्ज्ञेया सकलशुभे कार्यादौ त्रेधा योज्या॥ १०१॥

अर्थः—मार्गशीर्ष (अगहन) पौष माघ फाल्गुन इन महीनों में पिंडीभूत (गोल सूर्य) हो तो गोधूली लग्न जानना। चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ इन महीनों में सूर्य आधा अस्त होवें तो गोधूलि लग्न जानना। श्रावण भादों कुआर कार्तिक में अस्त के बाद गोधूलि जानना यह गोधूलि लग्न जानने का क्रम है॥ १०१॥

गोधूलि समय में वर्ज्य दोष—

अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के

लग्नान्मृत्यौ रिपुभवने लग्ने चेंदौ ।
कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थे भौमे
वोढुर्लाभे धनसहजे चन्द्रे सौख्यम् ॥ १०२ ॥

(अन्वयः) गुरुदिवसे अर्के अस्तं याते सति गोधूलिः शुभा स्यात् सौरे सार्के गोधूलिः शुभा, लग्नात् मृतौ रिपुभवने च पुनः लग्ने इन्दौ सति कन्यानाशः स्यात् तनुमदनमृत्युस्थे भौमे सति वोढुर्नाशः स्यात् चन्द्रे सति सौख्यं स्यादिति ॥ १०२ ॥

अर्थः-बृहस्पति को सूर्य अस्त में गोधूलि लग्न और शनिवार को सूर्य देखते गोधूलि लग्न शुभ है । गोधूलि लग्न से आठवें छठे, लग्न में चन्द्रमा होय तो कन्या का नाश कहना और गोधूलि लग्न में या सातवें आठवें स्थान में मंगल हो तो वर का नाश होवै, दूसरे तीसरे ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो तो सुख होता है ॥ १०२ ॥

सूर्यकी स्पष्ट गतिका विचार—

मेषादिगेऽर्केऽष्टशरा ५८ नगाक्षाः ५७
सप्तेषवः ५७ सप्तशरा ५७ गजाक्षाः ५८ ।
गोक्षाः ५९ खतर्काः ६० कुरसाः ६१ कुतर्काः ६१
क्वंगानि ६१ षष्टि ६० र्नवपंच ५९ भुक्तिः ॥१०३॥

(अन्वयः) मेषादिगे अर्के सति अष्टशरा नागाक्षाः सप्तेषवः सप्तशरा गजाक्षाः गोक्षाः खतर्काः कुरसाः कुतर्काः क्वङ्गानि षष्टिः नवपञ्च भुक्तिः स्यादिति ॥ १०३ ॥

अर्थः-मेषादि बारह राशियों की स्थूलरूप सूर्य की गति यह है । मे० रा० सूर्य की ५८ गति वृ० रा० सूर्य की ५७ ग०, मि० रा० सू० ५७ ग० क० रा० सूर्य की ५८ ग० सिं० रा० सूर्य की गति ५८, कन्याराशि सूर्य की गति ५९, तु० रा० सूर्य की गति ६०, वृश्चिक रा० सूर्य की गति ६१, ध० रा० सूर्य की गति ६१, म० रा० सूर्य की गति ६१, कुं० रा० सूर्य की गति ६० और मीन राशि के सूर्य की गति ५९ है, यह कलात्मक गति कही जाती है ॥ १०३ ॥

तत्काल सूर्य स्पष्ट कथन—

संक्रांतियातभस्राद्यैर्गतिर्निघ्नी खषट् ६० हृता।
लब्धेनांशादिना योज्यं यातर्क्षं स्पष्टभास्करः ॥१०४॥

(अन्वयः) गतिः संक्रांतियातवस्राद्यैर्निघ्नी खषट् हृता लब्धेन अंशादिना योज्यं यातर्क्षं स्पष्टभास्करो भवतीति ॥ १०४ ॥

अर्थः—जो सूर्य की संक्रान्ति के बीते हुए दिन हैं उनको सूर्य को संक्रान्ति की गति से गुणा करै और उसी संख्या में ६० साठ का भाग देवै जो बचे उसे अंश आदिक जाने फिर सूर्य की बीती हुई राशि जोड़ देने से सूर्य स्पष्ट हो जाते हैं ॥ १०४ ॥

इष्ट लग्न के अंशादि बनाने का क्रम—

तनोरिष्टांशकात्पूर्वं नवांशा दशसंगुणाः।
रमाप्ता लब्धमंशाद्यं तनोर्वर्गादिसाधने ॥ १०५ ॥

(अन्वयः) तनोर्वर्गादिसाधने तनोरिष्टांशकात् पूर्वं नवांशाः दशगुणाः रामाप्ता लब्धं अंशाद्यं स्यादिति ॥ १०५ ॥

अर्थः—लग्न के नवमांश की बीती हुई संख्याको दशसे गुणा करके तीन का भाग देवै जो कुछ लब्ध हो वह लग्न का अंश कला विकला जानै उतने अंश पर षड्वर्ग का साधन करै ॥ १०५ ॥

इष्ट घड़ी बनाने की विधि—

अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्ययुक्तै
र्भागैर्निघ्नात्स्वोदयात्खाग्निभक्तात्।
भोग्यं भुक्तं चान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्या भक्तं स्वेष्टनाड्यो भवेयुः ॥ १०६ ॥

(अन्वयः) सायनादर्कात्लग्नात् भोग्यभुक्तैर्भागैर्निघ्नात् स्वोदयात् खाग्नि-भक्तात् लब्धं भोग्यं भुक्तं च स्यात् तदन्तरालोदयाढ्यं षष्ट्या भक्तं तदा स्वेष्टना-ड्योभवेयुरिति ॥ १०६ ॥

अर्थः-उदय मान से सायन सूर्य के भोग्य अंशों को गुणा करै, तिस पीछे सायन लग्न भुक्त अंशो को सायन लग्न के राशि के उदयमान से गुणा करै, दोनों में ३० से भाग दे जो भोग्यकाल और भुक्तकाल आवे उन दोनों को जोड़ कर उसमें सायन सूर्य से सायन लग्न तक के उदयमानों को मिला दे पुनः ६० साठ से भाग दे वही इष्टकाल हो जाता है ॥ १०६ ॥

घटी लाने का दूसरा प्रकार-

चेल्लग्नार्कौ सायनावेकराशौ तद्विश्लेषघ्नोदयःखाग्निभक्तः।
स्वेष्टः कालो लग्नमूनं यदार्का-
द्रात्रेः शेषोऽर्कात्सषड्भान्निशायाम् ॥ १०७ ॥

(अन्वयः) चेद्यदि सायनौ लग्नार्कौ एकराशौ स्यातम् तद्विश्लेषघ्नोदयः खाग्निभक्तस्तदा स्वेष्टः कालः स्यात् यदार्काल्लग्नात् लग्नभूतं तदा रात्रिशेषे इष्टकालो भवेत् निशायां रात्रौ अर्कात्सषड्भं तदा इष्टकालो भवतीति ॥ १०७ ॥

अर्थः-सायन सूर्य और सायन लग्न अगर एकही राशि के हों तो उनका अन्तर करके अन्तरांश को उदयमान से गुणा कर ३० का भाग देने से इष्टकाल हो जाता है। सायनसूर्य से सायनलग्न कम हो तो वह रात्रि शेष का इष्टकाल हो जाता है। यदि रात्रि समय की लग्न होवे तो राशि सायन सूर्य में जोड़ कर क्रिया करनी चाहिये ॥ १०७ ॥

विवाह आदि शुभकार्य में विशेष वर्ज्य-

उत्पातान्सहपातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्च योगांस्तथा
चंद्रेज्योशनसामथास्तमयनं तिथ्याः क्षयर्द्धी तथा।
गण्डांतं च सविष्टिसंक्रमदिनं तन्वंशपास्तं तथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान् पापस्य वर्गास्तथा ॥१०८॥
सेन्दुक्रूरखगोपयांशमुदयास्तांशुद्धिचंडायुधान्
खार्जूरं दशयोगयोगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम्।
बाणोपग्रहपापकर्तरि तथा तिथ्यृक्षवारोत्थितं

दुष्टं योगमथार्धयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ॥१०६॥
क्रूराक्रांतविमुक्तभं ग्रहणभं यत्क्रूरगंतव्यभं
त्रेधोत्पातहतं च केतुहतभं सन्ध्योदितं भं तथा ।
तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं सर्वानिमान्सन्त्यजे-
दुद्वाहे शुभकर्मसु ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषानपि ॥११०॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ विवाहप्रकरणम् ॥ ६ ॥

(अन्वयः) उद्वाहे शुभकर्मसु उत्पातान् सह पातदग्धतिथिभिः च पुनः दुष्टान् योगान् तथा चन्द्रेज्योशनसा अथ अस्तमयनं तथा तिथ्याः क्षपर्द्धी गण्डान्तं (च) सत्रिप्टिसंक्रमदिनं तथा तन्वंशयास्तं तन्वंशेशविधून् अथाष्टरिपुगान् पापस्य वर्गान् तथा सेन्दुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधान् खार्जूरं दशयोगयोगसहितं जामित्रलत्ताव्यधम् वाणोपग्रहपापकर्तरि तथा तिथ्यृक्षयोगोत्थितं दुष्टयोगं अथार्द्धयामकुलिकाद्यान् वारदोषान् अपि क्रूराक्रान्तविमुक्तभं ग्रहणभं क्रूरगन्तव्यभं यत्त्रेधोत्पातहतं (च) केतुहतभं तथा सन्ध्योदितं भं तद्वच्च ग्रहभिन्नयुद्धगतभं ग्रहकृतान् लग्नस्य दोषान् अपि इमान्सर्वान् त्यजेदिति ॥ १०८-१०९-११० ॥

अर्थः—उत्पात योग, महापात योग, दग्धतिथि, दुष्ट योग, चन्द्र बृहस्पति शुक्र का अस्तोदय तीनों प्रकार के गण्डान्त, वृद्धि और न्यून तिथि, भाद्र संक्रांति दिन, लग्न स्वामी और नवमांश के स्वामी का अस्त, लग्न स्वामी और चन्द्र का आठवें छठे स्थान में या पापग्रह के षट्वर्ग चन्द्रमा या पापग्रहों से युक्त लग्न या नवमांश, उदयास्त शुद्धि चन्द्रायुध, खार्जूर दोषदश योग दोष, जामित्र दोष लत्ता दोष, वेध बाण पंचक, उपग्रहदोष कर्त्तरी दोष, वार तिथि नक्षत्र से उत्पन्न दोष, दुष्टयोग, वार वेला दोष, कुलिक इत्यादि वार दोष क्रूर ग्रह से युक्त त्यक्त नक्षत्र सूर्यचन्द्र के ग्रहण नक्षत्र और जिस नक्षत्र पर क्रूर ग्रह जाने वाला होय सो नक्षत्र तीनों उत्पात से हत नक्षत्र, केतु से हत नक्षत्र सूर्य के अस्त समय का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से चौदहवाँ नक्षत्र, ग्रह भिन्न नक्षत्र और युद्ध नक्षत्र जितने लग्न सम्बन्धी दोष है इन सबको

यज्ञोपवीत विवाहादि सम्पूर्ण शुभ कर्म में भलीभांति त्याग करे यह शुभप्रद नहीं है ॥ १०८-१०९-११० ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ भाषाटीकायां विवाह प्रकरणम् षष्ठम् ॥ ६ ॥



वधूप्रवेशप्रकरणम् ७।



पतिके घरमें वधूका नूतन प्रवेश--

समाद्रिपंचांकदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनांतराले।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥१॥

(अन्वयः) विवाहात्सकाशात् अष्टिदिनान्तराले समाद्रिपञ्चांकदिने वधूप्रवेशः शुभः स्यात् परस्तात् (प्रतिबन्धवशात्) विषमाब्दमासदिने अक्षवर्षात्परतः यथा इष्टं तथा कार्यमिति ॥ १ ॥

अर्थः—विवाह दिन से सोलह १६ दिन के भीतर नव सात पाँच दिन में वधूप्रवेश शुभ है यदि किसी कारण से सोलह दिन के भीतर वधूप्रवेश न हो तो विषम वर्ष विषम मास विषम दिन में वधूप्रवेश करना और पाँच वर्ष के बाद निज इच्छा से वधूप्रवेश करे फिर विषम वर्ष का नियम नहीं है ॥ १ ॥

वधूप्रवेश में नक्षत्रशुद्धि—

ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रेवसुमूलमघानिले।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्ताराके बुधे परैः ॥ २ ॥

(अन्वयः) ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले वधूप्रवेशः सत् स्यात् रिक्ताराकें बुधे परैः आचार्यैर्वधूप्रवेशो न शस्त इति ॥ २ ॥

अर्थः-ध्रुवसंज्ञक (तीनों उत्तरा रोहिणी) क्षिप्रसंज्ञक (अश्विनी पुष्य हस्तअभिजित) मृदुसंज्ञक (चित्रा अनुराधा रेवती मृगशिरा) नक्षत्र और श्रवण

धनिष्ठा मूल मघा स्वाती नक्षत्रों में वधूप्रवेश करना शुभ है (४-६-१४) तिथि मंगलवार रविवार में बधूप्रवेश अशुभ हैं किसी के मत से बुधवार भी अशुभ है ॥ २ ॥

विवाह हुए वरस में स्त्री के घर में रहने का विचार-

ज्येष्ठे पतिज्येष्ठमथाधिके पतिं हन्यादिमे भर्तृगृहे वधूः शुचौ ।
श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं तातं मधौ तातगृहे विवाहतः॥३॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ वधूप्रवेशप्रकरणम् ॥ ७ ॥

(अन्वयः) विवाहतः सकाशाद् भर्तृगृहे स्थिता वधूः यदि आदिमे प्रथमे ज्येष्ठे मासि तदा पतिज्येष्ठं हन्यात् अथाधिके अधिकमासे पतिं हन्यात् शुचौ श्वश्रूं सहस्ये श्वशुरं क्षये तनुं मधौ चैत्रे मासे तातगृहे तिष्ठन्ती वधूः तातं हन्तीति ॥ ३ ॥

अर्थः—ज्येष्ठ मास में पति गृह स्थित वधू पतिके ज्येष्ठ को नाश करती हैं अधिक मास (मलमास) में पति को और आषाढ़ में सास को हनन करती है पौष में श्वशुर को और क्षयमास में निज शरीर ही का नाश करती है यदि विवाह होजाने के पीछे वधू चैत्र मास में निज पिता ही के घर रह जाय तो पिता ही को नाश करती है ॥ ३ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ भाषाटीकायां सप्तमं बधूप्रवेशप्रकरणम् समाप्तम् ॥ ७ ॥



द्विरागमनप्रकरणम् ८ ।



द्विरागमन का मुहूर्त-

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्वपे मृदूडुनि ॥ १ ॥

(अन्वयः) अथ ओजहायने रवौ घटालिमेषगे सति रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके सति लघुध्रुवे चरे अस्रप मृदूडुनि पपु भेषु द्विरागमं चरेत् इति ॥ १ ॥

अर्थः-विषम (१, ३, ५) वर्षों में कुम्भ वृश्चिक मेष राशि के सूर्य में बृहस्पति सूर्य शुद्ध हो तो बुध और बृहस्पति शुक्र चन्द्रवार में मिथुन मीन कन्या तुला वृष लग्नों में लघु संज्ञक (अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित) ध्रुव (तीनों उत्तरा रोहिणी) चर (श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुनर्वसु स्वाती) मूल मृदु (मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा) इन नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ है ॥ १ ॥

सन्मुख शुक्रदोष विचारः-

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्या
द्गच्छेयुर्न शिशुगर्भिणी नवोढाः ।
बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा
वन्ध्या चेद् भवति च गर्भिणी स्वगर्भा ॥ २ ॥

(अन्वयः) यदि दैत्येज्यः शुक्रोऽभिमुखदक्षिणे तदा शिशुगर्भिणीनवोढाः हि निश्चयेन न गच्छेयुः चेद्बालो व्रजति तदा विपद्यते नवोढा व्रजति तदा वन्ध्या भवति गर्भिणी चेद् व्रजति स्वगर्भा भवतीति ॥ २ ॥

अर्थः-द्विरागमन में यदि शुक्र सन्मुख अथवा दाहिने तरफ हो तो बालक, गर्भिणी नवीन ब्याही स्त्री ये यात्रा न करें बालक चले तो मृत्युको प्राप्त होय गर्भिणीका गर्भनाश होय और नवोढ़ा चले तो वंध्या होवे ॥ २ ॥

शुक्रदोषका परिहार-

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः ।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्नहि ॥३॥

(अन्वयः) नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः नृपपीडने नववधूप्रवेशने हि निश्चयेन प्रतिभार्गवः दोषकृन् न भवति ॥ ३ ॥

अर्थः-नगरप्रवेश, ग्राम के उपद्रव, विवाह निमित्त यात्रा, देवता तीर्थ की यात्रा, राजा से पीड़ा होने पर, अन्य देश की यात्रा नवीन वधू प्रवेशमें सन्मुख शुक्र का दोष नहीं ॥ ३ ॥

तथा द्वितीय परिहार—

पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसंभवः स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसंभवः।
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले तथा ॥४॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ द्विरागमनप्रकरणम् ॥ ८ ॥

(अन्वयः) पित्र्ये गृहे चेत्कुचपुष्पसम्भवः स्यात् तदा स्त्रीणां प्रतिशुक्रसम्भवः दोषो नास्ति भृग्वङ्गिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाजमुनेः कुले यथा स्यात्तथा दोषो नास्ति ॥ ४ ॥

अर्थः-यदि पिता के गृह में स्त्री के कुच और रजादर्शन हो जावे तो सन्मुख शुक्रका दोष नहीं है तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, इन ऋषियों के कुलकी स्त्रियोंको शुक्र सन्मुखका दोष नहीं हैं ॥ ४ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ भाषाटीकायां द्विरागमनप्रकरणमष्टमम् ॥ ८ ॥



अग्न्याध्यानप्रकरणम् ९।



प्रथम अग्निके आधान में मुहूर्त-

स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगे दिनेशे
मिश्रध्रुवान्त्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये।
रिक्तासु नो शशिकुजेज्यभृगौ न नीचे
नास्तंगते न विजिते न च शत्रुगेहे ॥ १ ॥

(अन्वयः) दिनेशे सूर्ये उत्तरगे, मिश्रध्रुवान्त्यशशिशक्रसुरेज्यधिष्ण्ये रिक्तासु, नो शशिकुजेज्यभृगौ न नीचे न अस्तंगते न विजिते शत्रुगृहे च न तदा अग्निहोत्रविधिः स्यात् ॥ १ ॥

अर्थः-उत्तरायण सूर्य कृतिका विशाखा तीनों उत्तरा रोहिणी रेवती मृगशिरा ज्येष्ठ पुष्य नक्षत्रों में रिक्ता (४।९।१४) यह तिथि न हो चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई ग्रह नीच की राशि में न हो और अस्त न हो शत्रुक्षेत्रीभी न हो और ग्रहयुद्ध में हारा हुआ न हो तो अग्न्याधान प्रारंभ करना शुभ है ॥ १ ॥

अग्न्याधान में लग्नशुद्धि-

नो कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने
नोऽब्जे तनौ रविशशीज्यकुजे त्रिकोणे।
केन्द्रद्यूनषट्त्रिभगवे च परस्त्रिलाभ
षट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

(अन्वयः) कर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्ने नो अब्जे चन्द्रे तनौ सति नो रविशशीज्यकुजे त्रिकोणे केन्द्रद्यूनषड्भवनगे च परैः ग्रहैः त्रिलाभषट्खसंस्थितैः निधनशुद्धियुते विलग्ने सति तदाऽग्निहोत्रविधिः कुर्यादिति ॥ २ ॥

अर्थः-कर्क मकर मीन कुम्भ इनमें से कोई लग्न न होवै इनका नवमांश भी न होवै चन्द्रमा लग्न में स्थित न हो तो अग्न्याधान कर्म करना चाहिये । रवि चन्द्र मंगल गुरु ये ग्रह ३।५ होवें अथवा १।४।७।१०।६।३।११ में होवें शनि राहु केतु शुक्र बुध तीसरे ग्यारहवें छठे दशवें स्थित होवें और अष्टम स्थान ग्रह से शून्य होवें तो अग्न्याधान कर्म शुभ है ॥ २ ॥

यज्ञ में लग्नशुद्धि-

चापे जीवे तनुस्थे वा मेषे भौमेऽम्बरे द्युने ।
षट्त्र्यायेऽब्जे रवौ वा स्याज्जाताग्निर्यजति ध्रुवम् ॥३॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ अग्न्याधानप्रकरणम् ॥९॥

(अन्वयः) जीवे चापे वा तनुस्थे भौमे मेषे सति अथवा भौमे अम्बरे द्युने अब्जे चन्द्रे षट्त्र्याये, वा रवौ षट्त्र्याये तदा जाताग्निः अग्निहोत्रकर्ता स्यात् ध्रुवं निश्चयेन ॥ ३ ॥

अर्थः-लग्न में धनराशि की बृहस्पति हो अथवा मेषराशि का मंगल लग्न में अथवा दशवें वा सातवें स्थित होवै छठे आठवें ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा वा मंगल हो ऐसे लग्न में अग्निहोत्र का प्रारम्भ करना शुभ है ॥ ३ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ भाषाटीकायां अग्न्याधानप्रकरणं नवमम् ॥ ९ ॥



राजाभिषेकप्रकरणम् १० ।

राजाभिषेक में कालशुद्धि—

राजाभिषेकः शुभ उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैरुदितर्बलान्वितैः ।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥१॥

(अन्वयः) उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैः, उदितैः भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैः बलान्वितैः चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे नो तदा राजाभिषेकः शुभः स्यादिति ॥१॥

अर्थः-उत्तरायण सूर्य में बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र ये ग्रह उदित होवें और मंगल सूर्य लग्नेश जन्मकालिक महादशा अन्तर्दशा के स्वामी जन्मराशी ये बलयुक्त उच्चके अथवा निज स्थान में स्थित हों तो राज्याभिषेक शुभ है । चैत्र-मास रिक्ता तिथि मंगलवार रात्रि और अधिकमास को छोड़ कर ॥ १ ॥

नक्षत्र और लग्नशुद्धि—

शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वोपचये शुभे तनौ ।
पापैस्त्रिषष्ठायगतैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थितैः॥२॥

(अन्वयः) शाक्रश्रवः क्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिः शीर्षोदये वाऽपचये शुभे तनौ पापैः त्रिषष्ठायगैः शुभग्रहैः केन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थैः तदा राजाभिषेकः शुभो भवतीति ॥ २ ॥

अर्थ -ज्येष्ठा श्रवण अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् चित्रा मृगशिरा रेवती अनुराधा रोहिणी तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में राज्याभिषेक शुभ है । मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुम्भ यह लग्न होवें वा जन्म लग्न से व जन्म राशि से तीसरी छठी ग्यारहवीं दशवीं कोई लग्न होवें और शुभग्रह लग्न में होवें अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो राज्याभिषेक शुभ है । पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें स्थित होवें और शुभ ग्रह १।४।७।१०।५।६।२।३।११ इन स्थानों में स्थित होवें तो राज्याभिषेक शुभ है ॥ २ ॥

स्थान विशेषसे ग्रहोंका फल—

पापैस्तनौ रुङ्निधने मृतिः सुते पुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ।

स्यात्खेऽलसो भ्रष्टपदो धनांबुगैः सर्वं शुभं केंद्रगतैः शुभग्रहैः॥३॥

(अन्वयः) पापैः पापग्रहैस्तनौ तदा रुक्स्यात् निधने सति मृतिः स्यात् सुते पुत्रार्तिः स्यात् अर्थव्ययगै र्दरिद्रता स्यात् खे अलसः, धुनाम्बुगैः भ्रष्टपदो भवति शुभग्रहैः केन्द्रगतैः सर्वं शुभं भवति ॥ ३ ॥

अर्थः—लग्न में पापग्रह हों तो राजा को रोग हो, आठवें स्थान में पापग्रह होवें तो मृत्यु होय, पाँचवें स्थान में पापग्रह होवें तो पुत्र पीड़ा, दूसरे और बारहवें स्थान में पापग्रह होवें तो दरिद्रता होय दशवें पापग्रह होने से उद्योग रहित होवै 'सातवें' चौथे पापग्रह होवें तो ऐश्वर्य भ्रष्ट हो जाय । यदि शुभ ग्रहकेन्द्र में हों तो सम्पूर्ण दोष शुभ हो जाते हैं ॥ ३ ॥

स्थिर सम्पत्ति योग—

गुरुर्लग्नकोणे कुजोऽरौ सितः खे स राजा सदा मोदते राजलक्ष्म्या।
तृतीयायगौ सौरिसूर्यौ खबंध्वोर्गुरुश्चेद्धरित्री स्थिरा स्यान्नृपस्य॥४॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ राजाभिषेकप्रकरणम् ॥१०॥

(अन्वयः) गुरुः लग्नकोणे कुजः अरौ शत्रुगृहे सितः खे सति तदा राजा राजलक्ष्म्या मोदते सौरिसूर्यौ तृतीयायगौ चेद्गुरुः खबन्ध्वोः तदा नृपस्य धरित्री स्थिरा स्यात् ॥ ४ ॥

अर्थ.—लग्न में और नवें पाँचवें बृहस्पति होवें और मंगल छठे स्थान में हों, दशम स्थान में शुक्र हों तो राज्याभिषेक किया हुआ राजा सदा राजलक्ष्मी से आनन्द करता है । शनैश्चर तीसरे, सूर्य ग्यारहवें, बृहस्पति दशवें और चौथे होवें ऐसे योग में राज्याभिषेक हो तो राजाकी पृथ्वी सदैव स्थिर रहे ॥ ४ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ भाषाटीकायां राजाभिषेकप्रकरणं दशमम् ॥ १० ॥



यात्राप्रकरणम् ११ ।

यात्रा के अधिकारी-

यात्रायां प्रविदितजन्मनां नृपाणां
दातव्यं दिवसमबुद्धजन्मनां च ।
प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतै
र्विज्ञाते ह्यशुभशुभे बुधः प्रदद्यात् ॥१॥

(अन्वयः) प्रविदितजन्मनां नृपाणां अबुद्धजन्मनां च यात्रायां दिवसं दातव्यम् अशुभशुभे विज्ञाते सति उदयनिमित्तमूलभूतैः प्रश्नाद्यैर्बुधः दिवसं प्रदद्यात् इति ॥ १ ॥

अर्थः-जिन राजाओं के जन्मकाल का ग्रह जानै उनको शुभ दिन बलाबल देख कर और जिनका जन्मकाल का ग्रह न जानै उनको प्रश्न लग्न से शुभाशुभ जानकर यात्रा का मुहूर्त बतावै ॥ १ ॥

प्रश्न लग्न विचार-

जननराशितनू यदि लग्नगे तदधिपौ यदि वा तत एव वा ।
त्रिरिपुखायगृहं यदिवोदयो विजय एव भवेद्वसुधापतेः ॥२॥

(अन्वयः) यदि जननराशितनू लग्नगे तदा वसुधापतेः विजय एव स्यात् यदि वा तदधिपौ लग्नगतौ स्यातां तदापि वसुधापते विजयः स्यात् अथवा तत एव जन्मलग्नजन्मराशिभ्यामेव वसुधापतेः विजय एव भवेदिति ॥ २ ॥

अर्थः-जन्मलग्न जन्मराशि यदि प्रश्न लग्न में हो अथवा जन्मराशि और जन्मलग्न के पति प्रश्न लग्न में होवें अथवा जन्मलग्न जन्मराशि से तीसरा छठा दशवां ग्यारहवां स्थान का लग्न हो तो यात्रा राजा की जय करै ॥ २ ॥

तथा अन्य प्रश्न लग्नफलम्--

रिपुजन्मलग्नभमथाधिपौ तयोस्तत एव वोपचयसद्म चेद्भवेत् ।
हिबुकेद्युनेऽथ शुभवर्गकस्तनौ यदि मस्तकोदयगृहं तदा जयः३

यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा शुभवस्तुयदि श्रुतिदर्शनगम् ।
यदि पृच्छति चादरतश्च शुभग्रहदृष्टयुतं चरलग्नमपि ॥४॥

(अन्वयः) प्रश्नलग्नात् रिपुजन्मलग्नभं हिबुके द्युने तदा राज्ञो विजयो भवेत् अथवा तयोरधिपौ प्रश्नलग्नात् हिबुके वा द्युने तदापि विजय एव वा तत एव रिपुजन्मलग्नराशिभ्यामेव उपचयसंज्ञःप्रश्नलग्नात् हिबुके वा द्युने चेज्जयो भवेत् अथवा तनौ लग्ने शुभवर्गकः स्यात्तदा एव जयः यदि मस्तकोदयः शीर्षोदय स्तदापि जयः स्यात् ॥ ३ ॥

(अन्वयः) यदि पृच्छितनौ वसुधा रुचिरा स्यात् वा यदि शुभवस्तु श्रुति-दर्शनगं वा यदि चादरतः पृच्छति शुभ दृष्टयुतं चरलग्नं अपि तदा वसुधापतेः जयः स्यादिति ॥ ४ ॥

अर्थः-यदि शत्रु का जन्म लग्न जन्मराशि और उनके स्वामी प्रश्न लग्न से चौथे सातवें स्थान में हों तो राजा का जय होय । शत्रु के जन्मलग्न, जन्मराशि से तीसरी छठवीं दसवीं ग्यारहवीं लग्न, प्रश्नलग्नसे, चौथे सातवें होय तौ भी जय होय । यदि प्रश्न लग्न में शुभ ग्रहों का षडवर्ग हो तो जय होय अथवा शीर्षोदय राशि प्रश्न लग्न में हो तो राजा का जय होय ॥ ३ ॥ प्रश्न लग्न में सुन्दर भूमि होय अथवा शुभ वस्तु दीखती होय या सुनने में आवे या राजा आदर से पूछें अथवा प्रश्नलग्न चर हो और शुभग्रह की दृष्टि हो तो राजा की अवश्य जय होय ॥ ४ ॥

अशुभ फल देनेवाला प्रश्न-

विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टेऽथ चन्द्रे
मृतिभमदनसंस्थे लग्नगे भास्करेऽपि
हिबुकनिधनहोराद्यूनगे वापि पापे
सपदि भवति भंगः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

(अन्वयः) विधुकुजयुतलग्ने सौरिदृष्टे तदा प्रश्नकर्तुः भंगो भवति अथ भृतिभवनसंस्थे चन्द्रे भास्करे अपि हिबुकनिधनहोराद्यूनगे तदानीं प्रश्नकर्तु र्नृपस्य सपदि शीघ्रं भंगो भवतीति ॥ ५ ॥

अर्थः-चन्द्र मंगल युक्त लग्न होवें और शनिश्चर की दृष्टि हो तो प्रश्न कर

राजा का नाश पराजय होय। यदि चन्द्रमा आठवें सातव होय रवि लग्न में होवे तो भी पराजय हो अथवा पापग्रह चौथे आठवे सातवें और लग्न स्थानमें यदि स्थित हो तो प्रश्न करनेवाले राजा का विनाश होय ॥ ५ ॥

प्रश्न लग्न विशेष—

त्रिकोणे कुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवा
यदैकोपि वा नो गमोऽर्काच्छशी वा।
बलीयांस्तु मध्ये तयोर्यो ग्रहः स्या-
त्स्वकीयां दिशं प्रत्युतासौ नयेच्च ॥ ६ ॥

(अन्वयः) कुजात् सकाशाद् सौरिशुक्रज्ञजीवाः त्रिकोणे यदा एको वा त्रिकोणे सति गमो गमनं नो वा अर्काच्छशी चन्द्रः त्रिकोणे तत्रापि न गमनं स्यात् तयोर्मध्ये यो ग्रहो बलीयांस्तु पुनः बलवान् स्यात्स्वकीयां दिशं असौ प्रत्युत सांप्रतं (च) नयेत् इति ॥ ६ ॥

अर्थः—मंगल से नवें पाँचवें शनि शुक्र बुध बृहस्पति होवै यदि इनमें से कोई भी ग्रह त्रिकोण में होवै तो उस दिशा को गमन न करै और सूर्य चन्द्रमा त्रिकोण में होवै तो भी विचारित दिशा का गमन नहीं होय। इनमें जो ग्रह बलवान् होवै सो अपनी दिशा को उलटा प्राप्त करै ॥ ६ ॥

योगान्तर—

प्रश्ने गम्यदिगीशात्खेटः पञ्चगमो यः।
बोभूयाद्बलयुक्तः स्वामाशां नयतेऽसौ ॥ ७ ॥

(अन्वयः) गम्यदिगीशात् खेटः प्रश्ने प्रश्नलग्ने बलयुक्तः यः ग्रहः पञ्चमगो बोभूयादसौ स्वां आशां दिशं नयते प्रापयति इति ॥ ७ ॥

अर्थः–जानेवाली दिशाका स्वामी प्रश्नलग्न में जहां पड़ा हो तिससे पाँचवें स्थान में जो ग्रह बलयुक्त होवै तो वह ग्रह अपनी दिशाको प्राप्त करता है ॥७॥

धनुर्मेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनिज्ञोशनोराशिगे चैव मध्या।
रवौ कर्कमीनालिसंस्थेऽतिदीर्घा जनुः पंचसप्तत्रिताराश्च नेष्टाः ॥ ८

(अन्वयः) रवौ धनुर्मेषसिंहेषु गतेषु यात्रा प्रशस्ता फलदा भवति शनिज्ञो-

शनोराशिगे रवौ (च) मध्यमा एव यात्रा मध्यमफलदा स्यात् कर्कमीनालिसंस्थे सति यात्रा अतिदीर्घा स्यात् जनुःपञ्चसप्तत्रिताराश्च नेष्टा भवन्तीति ॥ ८ ॥

अर्थः-धन मेष सिंह राशिके सूर्य में यात्रा अति शुभ है। मकर कुम्भ मिथुन कन्या वृष तुला राशि के सूर्य में यात्रा मध्यम है और कर्क मीन वृश्चिकके सूर्य में (यात्रा करनेवाला) बहुत रोज के बाद घर आवै। यात्रा में प्रथम पाँचवाँ सातवाँ तीसरा ये तारा पॅ शुभ नही हैं ॥ ८ ॥

तिथि आदि की शुद्धि-

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो
सिताद्या तिथिः पूर्णिमाऽमा न रिक्ता।
हयादित्यमित्रेंदुजीवान्त्यहस्त
श्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ॥ ९ ॥

(अन्वयः) षष्ठी न द्वादशी च न अष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमाऽमा च न रिक्ता न हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवै. एव नक्षत्रैः यात्रा प्रशस्ता भवतीति ॥ ९ ॥

अर्थः-छठ द्वादशी अष्टमी शुक्लपक्ष की प्रतिपदा पूर्णिमा अमावस्या चौथ चतुर्दशी नवमी इन तिथियों में यात्रा श्रेष्ठ नहीं है। अश्विनी पुनर्वसु अनुराधा मृगशिरा पुष्य रेवती हस्त श्रवण धनिष्ठा इन नव नक्षत्रों में यात्रा श्रेष्ठ है ॥९॥

वारशूल और नक्षत्रशूल-

न पूर्वदिशि शुक्रभे न विधुसौरिवारे तथा
न चाजपदभे गुरौ यमदिशीनदैत्येज्ययोः ।
न पाशिदिशि धातृभे कुजबुधेऽर्यमर्क्षे तथा
न सौम्यककुभि व्रजेत्स्वजयजीवितार्थी बुधः ॥१०॥

(अन्वयः) शक्रभे न तथा विधुसौरिवारेऽपि पूर्वदिशि न व्रजेत् (च) अजपदभे गुरौ गुरुवासरेऽपि यमदिशि न व्रजेत् इनदैत्येज्ययोः धातृभे

पाशिदिशि न व्रजेत् कुजबुधे तथाऽर्यमर्क्षे सौम्यककुभि स्वजयजीवितार्थी बुधे न व्रजेदिति ॥ १० ॥

अर्थः—ज्येष्ठा नक्षत्र और चन्द्रवार शनिवार में पूर्व दिशा को न जाय। पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र गुरुवार में दक्षिण की यात्रा न करै। रविवार शुक्रवार और रोहिणी नक्षत्र में पश्चिम दिशा में यात्रा न करै। मंगल बुधवार में और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर को न जाय ॥ १० ॥

कालशूल—

पूर्वाह्णे ध्रुवमिश्रभैर्न नृपतेर्यात्रा न मध्यान्हके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णके न लघुभैर्नो पूर्वरात्रे तथा।
मित्राख्यैर्न च मध्यरात्रिसमये चोग्रैस्तथा नो चरै
रात्र्यंते हरिहस्तपुष्यशशिभिः स्यात्सर्वकाले शुभा॥११॥

(अन्वयः) ध्रुवमिश्रभैः नक्षत्रैः पूर्वाह्णे यात्रा न कार्या तीक्ष्णाख्यैः मध्याह्नके यात्रा शुभा न लघुभैः अपराह्णके यात्रा तथा मित्राख्यैश्च पूर्वरात्रे यात्रा न कार्या तथोग्रैश्च मध्यरात्रिसमये यात्रा शुभा न चरैर्नक्षत्रैः रात्र्यन्ते यात्रा न स्यात् हरिहस्तपुष्यशशिभिः सर्वकाले यात्रा शुभा शुभफलदा भवतीति ॥ ११ ॥

अर्थः-तीनों उत्तरा, रोहिणी विशाखा, कृतिका इन नक्षत्रों में पूर्वाह्णकाल में राजाओं को यात्रा करना अशुभ है। मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा इन नक्षत्रोंमें मध्याह्न समय में यात्रा करना श्रेष्ठ नहीं होता और हस्त पुष्य अश्विनी अभिजित् इन नक्षत्रों में अपराह्णकाल में यात्रा अशुभ है-मृगशिर रेवती चित्रा अनुराधा इन नक्षत्रों में रात्रि के पूर्वभाग में और तीनों पूर्व भरणी मघा इन नक्षत्रोंमें रात्रि के अन्तभाग में यात्रा करना शुभ नहीं है। श्रवण हस्त पुष्य मृगशिरा इन नक्षत्रों में दिनरात्रि चाहै जिस समय यात्रा करै शुभ है ॥ ११ ॥

नक्षत्रों की वर्ज्य घड़ी—

पूर्वाग्निपित्र्यांतकतारकाणां भूपप्रकृत्युग्रतुरंगमाः स्युः।
स्वातीविशाखेंद्रभुजङ्गमानां नाड्यो निषिद्धामनुसंमिताश्च १२

(अन्वयः) पूर्वाग्निपित्र्यन्तकतारकाणां भूपप्रकृत्युग्रतुरंगमा स्युः स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानां तारकाणां मनुसंमिताश्च नाड्यः निषिद्धाः भवन्तीति ॥ १२ ॥

अर्थः-तीनों पूर्वाओं में प्रथम की सोलह घड़ी निषिद्ध हैं कृत्तिका में इक्कीस घड़ी निषिद्ध है। मघा में ग्यारह घड़ी, भरणी में सात घड़ी और स्वाती विशाखा आश्लेषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में चौदह २ घड़ी निषिद्ध हैं ॥ १२ ॥

तथा वर्ज्यघड़ी—

पूर्वार्धमाग्नेयमघानिलानां त्यजेद्धि चित्राहियमोत्तरार्धम्।
नृपः समस्तां गमने जयार्थी स्वातीं मघां चोशनसो मतेन१३

(अन्वयः) जयार्थी नृपः गमने यात्रायां चित्राहियमोत्तरार्द्धं हि निश्चयेन त्यजेत् पूर्वार्धमाग्नेयमघानिलानां स्वाती मघाञ्चोशनसः मतेन जयार्थी राजा गमने यात्रायां त्यजेदिति ॥ १३ ॥

अर्थः-कृत्तिका, मघा, स्वाती, नक्षत्रों का पूर्वार्ध और चित्रा, आश्लेषा भरणी, नक्षत्रों का उत्तरार्ध यात्रा में जय की इच्छा करके त्यागना चाहिये। शुक्राचार्य के मत से स्वाती और मघा नक्षत्र समग्रही त्याग देना चाहिये ॥१३॥

नक्षत्रों की जीवपक्षादि संज्ञा—

तमोभुक्तताराः स्मृता विश्वसंख्याः
शुभो जीवपक्षो मृतश्चापि भोग्याः।
तदाक्रांतभं कर्तरीसंज्ञमुक्तं
ततोऽन्येंदुसंख्यं भवेद्ग्रस्तनाम ॥ १४ ॥

(अन्वयः) तमोभुक्तताराः विश्वसंख्याः भोग्याः स्मृताः जीवपक्षः शुभः, ते विश्वसंख्याः मृतः मृतपक्षश्चापि तदा क्रान्तभं कर्तरीसंज्ञं उक्तं ततोऽसेन्दुसंख्यं ग्रस्तनाम भवेदिति ॥ १४ ॥

अर्थः-राहु के भोगे तेरह नक्षत्रों की जीवपक्ष संज्ञा है सो शुभ है और राहु से आक्रान्त नक्षत्र से भोग्य तेरह नक्षत्र मृतपक्ष संज्ञक है और जिस पर राहु है सो कर्तरी संज्ञक है और पन्द्रहवां ग्रस्त संज्ञक है ॥ १४ ॥

यात्रा शुभाशुभ विचार—

मार्तण्डे मृतपक्षगे हिमकरश्चेज्जीवपक्षे शुभा
यात्रा स्याद्विपरीतगे क्षयकरी द्वौ जीवपक्षे शुभा।

ग्रस्तर्क्षं मृतपक्षतः शुभकरं ग्रस्तात्तथा कर्तरी
यायींदुः स्थितिमान् रविर्जयकरौ तौ द्वौ तयोर्जीवगौ १५

(अन्वय) मार्तण्डे सूर्ये मृतपक्षगे सति हिमकरश्चेज्जीवपक्षे स्यात्तदा यात्रा शुभा शुभफलदा भवति विपरीतगे तदा क्षयकरी स्यात् द्वौ जीवपक्षे स्यातां तदा शुभा भवति मृतपक्षतः ग्रस्तर्क्षं शुभकरं स्यात् इन्दुश्चन्द्रः यायी स्यात् रविः स्थितिमान् भवेत् तौ द्वौ रविचन्द्रमसौ जीवगौ तयोः विजयकरौ सन्धिकरौ स्यातामिति ॥ १५ ॥

अर्थः-मृतपक्ष में सूर्य होय और जीवपक्ष में चंद्रमा होय तो यात्रा शुभ है, और जीवपक्ष में सूर्य हो और मृतपक्ष में चंद्र होवै तो यात्रा करनेवाला नाशको प्राप्त होवै। चंद्रमा सूर्य दोनों जीवपक्ष में हों तो यात्रा शुभ है और मृतपक्ष नक्षत्र से ग्रस्त नक्षत्र पन्द्रहवां नक्षत्र शुभ है। ग्रस्त नक्षत्र से कर्तरि संज्ञक नक्षत्र शुभ हैं और सूर्य जीवपक्ष मे हो तो किलावाले राजाकी जीत होवै। और चंद्रमा जीवपक्ष में हो तो चढ़नेवाले राजा की जीत होवै और दोनों जीवपक्ष में होवैं तो मेल करा देवै ॥ १५ ॥

कुलाकुलादियोग कहते हैं-

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यभ्रवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्यु।
सूर्येंदुमंदगुरवश्च कुलाकुला ज्ञो-
मूलांबुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः ॥ १६ ॥
पूर्वाश्वीज्यमघेंदुकर्णदहनद्वीशेंद्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेंद्रवेदैर्मिताः।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
संधिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः१७

(अन्वयः) स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यभ्रवाणि विषमास्तिथयः सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च वासराः एते प्रत्येकम् अकुला अकुलसंज्ञकाः स्युः। ज्ञोमूला-

स्युपेशविधिभं दशषड्द्वितीथ्यः एते प्रत्येकम् कुलाकुलाः कुलाकुलसंज्ञकाः स्युः ॥ १६ ॥

(अन्वयः) पूर्वाश्विज्यमघेन्दुकर्णदिहनद्वीशेन्द्रचित्राः तथा शुक्रारौ अर्काष्टेन्द्रवेदैर्मितास्तिथयश्च कुलसंज्ञकाः स्युः । अकुले अकुलसंज्ञके तिथिनक्षत्रवारगणे समरे संग्रामे सति यायी राजा जयी स्यात् यदि कुलसंज्ञके तिथिनक्षत्र वारगणे सति स्थायी राजा तद्वत् विजयी स्यात् कुलाकुलगणे युध्यतोः उभयोर्भूमीशयोः संधिः स्यात् ॥ १७ ॥

अर्थः—स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु तीनों उत्तरा रोहिणी यह बारह नक्षत्र, विषम (प्रतिपदा, तीज, पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी पूर्णिमा यह आठ) तिथि एतवार, सोमवार, शनिश्चर, बृहस्पति, ये चार वार अकुल संज्ञक है। बुधवार मूल शतभिष आर्द्रा अभिजित् ये चार नक्षत्र दशमी, छठ, द्वितीया ये न्यारे २ कुलाकुल संज्ञक हैं ॥ १६ ॥ तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा ज्येष्ठा चित्रा ये बारह नक्षत्र, शुक्र, मंगलवार, द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी, चतुर्थी ये चार तिथि एक एक कुल संज्ञक हैं। यदि अकुल संज्ञक तिथिवार नक्षत्रों में युद्ध आरम्भ होवै तो चढ़ाई करनेवाला राजा की जय होय। कुल संज्ञक तिथि वार नक्षत्र में किलावाले राजा की जय होय कुलाकुला योग में परस्पर मिलाप हो जाय ॥ १७ ॥

मार्ग में राहुचक्र—

स्युर्धर्मे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रींद्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथो भानि कामे ।
वह्न्यार्द्राम्बुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षेऽथ रोहिण्याप्येंद्वंत्यर्क्षविश्वार्यमभदिनकरक्षाणि पथ्यादिराहौ ॥१८॥

(अन्वयः) अथ पथ्यादिराहौ पथिराहुचक्रे दस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीश मैत्राणि नक्षत्राणि धर्मे स्युः अथ याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडूनि भानि अर्थे स्युः अथ वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्य नि नक्षत्राणि कामे स्युः अथ रोहिणी आप्यंपूर्वाषाढा, मृगः अन्त्यरेवती विश्वमुत्तराषाढा अर्यमभमुत्तराफल्गुनी दिनकरःहस्तः एतानिभानिमोक्षेस्युः ॥ १८ ॥

अर्थः-अश्विनी पुष्य, आश्लेषा, धनिष्ठा, शतभिष, विशाखा और अनुराधा ये नक्षत्र धर्मस्थान में स्थान करै। भरणी, पूर्वभाद्रपदा, ज्येष्ठा, श्रवण पुनर्वसु, मघा, स्वाती, ये नक्षत्र अर्थस्थान में स्थित करै। कृत्तिका, आर्द्रा, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, मूल, अभिजित्, पूर्वाफाल्गुनी ये नक्षत्र, कामस्थान में लिखै। रोहिणी, पूर्वाषाढ, मृगशिरा, रेवती उत्तराषाढ, उत्तराफाल्गुनी, हस्त ये नक्षत्र मोक्ष स्थान में लिखना इसीको पथि राहुचक्र कहते हैं ॥ १८ ॥

राहुचक्र का फल-

धर्मगे भास्करे वित्तमोक्षे शशी वित्तगे धर्ममोक्षस्थितः शस्यते।
कामगे धर्ममोक्षार्थगः शोभनो मोक्षगे केवलं धर्मगः प्रोच्यते१६

(अन्वयः) धर्मगे धर्मभागे स्थिते भास्करे सति चेद्वित्तमोक्षे शशी अर्थमार्गे वा शशी स्यात्तदा शस्यते वित्तगे अर्थगे भास्करे सति धर्ममार्गगः मोक्षमार्गगो वा शशी शोभनः अथ कामगे भास्करे सति धर्ममोक्षार्थगः शशि शोभनः मोक्षगे भास्करे सति केवलं धर्मगः शशी शोभनो प्रोच्यते अर्थात्तद्विपरीतावस्थितयोर्द्वयोः सूर्याचन्द्रमसोरशुभत्वं स्यात् ॥ १६ ॥

अर्थः-धर्म मार्ग में सूर्य स्थित होवै और अर्थ-मोक्ष स्थान में चन्द्रमा हो तो शुभ है। अर्थ स्थान में सूर्य और धर्म-मोक्ष स्थान में चन्द्रमा होवे तो शुभ है। काम स्थान में स्थित रवि और धर्म अर्थ मोक्ष इन स्थानों में स्थित चंद्रमा होवै तो शुभ है। मोक्ष में सूर्य और धर्म में चन्द्रमा हो तो भी शुभ है इनसे विपरीत स्थित सूर्य चन्द्रमा हो तो यात्री को अशुभ है ॥ १६ ॥

तिथिचक्रका प्रकार-

पौष पक्षत्यादिका द्वादशैवं
तिथ्यो माघादौ द्वितीयादिकास्ताः।
कामात्तिस्रः स्युस्तृतीयादिवच्च
यानेप्राच्यादौ फलं तत्र वक्ष्ये ॥ २० ॥
सौख्यं क्लेशो भीतिरर्थागमश्च
शून्यं नैस्व्यं निःस्वता मिश्रता च।

द्रव्यक्लेशो दुःखमिष्टाप्तिरर्थो
लाभः सौख्यं मंगलं वित्तलाभः ॥ २१ ॥
लाभो द्रव्याप्तिर्धनं सौख्यमुक्तं
भीतिर्लाभो मृत्युरर्थागमश्च ।
लाभः कष्टद्रव्यलाभौ सुखं च
कष्टं सौख्यं क्लेशलाभौ सुखं च ॥ २२ ॥
सौख्यं लाभः कार्यसिद्धिश्च कष्टं
क्लेशः कष्टासिद्धिरर्थो धनं च ।
मृत्युर्लाभो द्रव्यलाभश्च शून्यं
शून्यं सौख्यं मृत्युरत्यन्तकष्टम् ॥ २३ ॥

(अन्वयः) अत्र पौषे पौषमासे पक्षतिः प्रतिपत् तदादिकाः द्वादशतिथयोऽधोधो लेख्याः माघादौ माघादिमासेषु द्वितीयादिकास्तिथयो लेख्याः (यथा) माघे माघमासे द्वितीयादिकाः फाल्गुने तृतीयादिकाः चैत्रे चतुर्थ्यादिका एवं वैशाखादिमासेषु पञ्चम्यादिका द्वादश द्वादश तिथयो लेख्याः तास्तिथ्यादिकाः कामात्त्रयोदशीतस्तिस्रस्त्रयोदशीचतुर्दशीपञ्चदश्यस्तृतीयादितिथिवत्स्युः (यथा) त्रयोदशी तृतीयावत् चतुर्दशी चतुर्थीवत्पञ्चदशी पञ्चमीवत्स्युरित्यर्थः तत्र प्रत्यादौ याने पूर्वादिदिग्गमने शुभाशुभं फलं सौख्यं क्लेश इत्यादिनावृत्तत्रयेण वदेत् सौख्यं क्लेशइत्यादिवृत्तत्रयंस्पष्टार्थमेव (यथा) तत्र पौषमासे प्रतिपादि दिक्चतुष्टये सौख्यं क्लेशोऽर्थागमश्चेति फलचतुष्टयं क्रमेण ज्ञेयम् एवंद्वितीयादिष्वपि क्रमेण दिक्चतुष्टये फलंस्यात् तदेतत्सर्वं माघादिमासेषु द्वितीयादि तिथिषु ज्ञेयमित्यर्थः ॥२०-२१-२२-२३ ॥

अर्थः—पौष के महीने से बारह मास बराबर लिखै और उतने ही १२ कोष्ठ नीचे लिखै यानी १४४ कोठे हुए उनमें कृष्ण और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर लिखै ॥ २० ॥ पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर इनको क्रम से सौख्य, क्लेश, भीति, अर्थागम, शून्य नैस्स्य निःस्वत्व मिश्रता द्रव्यक्लेश, दुःख इष्टाप्ति

अर्थलाभ, लाभ, सौख्य, मंगल वित्तलाभ ॥ २१ ॥ लाभ द्रव्यप्राप्ति, धन, सौख्य, भीति, लाभ, मृत्यु, अर्थागम, लाभ कष्ट द्रव्यलाभ, सुख कष्ट, सौख्य, क्लेश, लाभ, सुख ॥ २२ ॥ सौख्यलाभकार्य सिद्धि कष्ट क्लेश कष्ट से सिद्धि अर्थ, धन मृत्यु, लाभ, द्रव्यलाभ, शून्य शून्य सौख्य, मृत्यु, अत्यन्त कष्ट, यह फल क्रम से जाने ॥ २३ ॥

सब अंकों का ज्ञान—

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टो
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी ।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्या-
त्स्थानत्रयेऽकयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ २४ ॥

(अन्वयः) अत्र तिथ्यृक्षवारयुतिः तिथिनक्षत्रवाराणां युति स्थानत्रये स्थाप्या क्रमेण अद्रिगजाग्निभिश्च तष्टा भक्तावशिष्टा सति प्रथमे स्थानेवियति शून्ये सति अतिदुःखी यात्राकार्ता स्यात् एवं मध्ये द्वितीयस्थाने वियति सति धनक्षतिर्द्रव्यनाशः अथ चरमे तृतीयस्थाने वियति सति मृतिः स्यात् स्थानत्रयेऽकयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ भवेताम् ॥ २४ ॥

अर्थः—शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर तिथि, वार नक्षत्र इनके योग को तीन जगह स्थापन करै और क्रम से सात आठ तीन का भाग देने से जो प्रथम स्थान में शून्य बचै तो यात्रा करनेवाला दुःखी होय। द्वितीय स्थान में शून्य बचने से धन नाश तीसरे स्थान में यदि शून्य होवे तो मृत्यु होय। और तीनों स्थानों में शून्य न आवै तो सौख्य और जय होय ॥ २४ ॥

अथ महाडल और भ्रमण योग-

रवेर्भतोऽब्जभान्मितिर्नगावशेषिता द्व्यगाः ।
महाडलो न शस्यते त्रिषण्मता भ्रमो भवेत् ॥ २५ ॥

(अन्वयः) रवेर्भतः सूर्यनक्षत्रादब्जभस्य चन्द्र नक्षत्रस्यो मितिर्गणना कार्या सा नगैः सप्तभिरव शेषिता सती द्व्यगा द्विशेषमिता सप्तशेषमिता वा भवेत्तदा महाडलो योगः न शस्यते प्रयुक्तप्रकारेण यदि त्रिषण्मिता त्रिशेषमिता षट् शेषमिता वा स्यात्तदा भ्रमणाख्यो योगः स्यात्सोपि न शस्यते ॥ २५ ॥

अर्थः—सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिन कर उसमें सात का भाग देवै यदि दो बचे या सात बचै तो महाडल दोष कहना सो यात्रा में शुभ नहीं है और जो तीन या छ बचै तो भ्रमण नामदोष होता है सो भी यात्रा में अशुभ है ॥ २५ ॥

हैवरसंज्ञकयोग-

शशांकभं सूर्यभतोऽत्र गण्यं पक्षादितिथ्या दिनवासरेण ।
युतं नवाप्तं नगशेषकं चेत्स्याद्धैवरं तद्गमनेऽतिशस्तम् ॥२६॥

(अन्वयः) अत्र सूर्यभतः शशांकभं गण्यं पक्षादितिथ्या पक्षस्य शुक्लस्य कृष्णस्य च.दिः प्रतिपत्तस्याः सकाशाद्गतयानया तिथ्या युतं दिनवासरेण रविवारादिना च युतम्, तत्र नवाप्तं नवभि ९ राप्तं भक्तं नगशेषकं चेत्तदा हैवरं हैवराख्यम्, गमनेऽतिशस्तं शुभंस्यात् ॥ २६ ॥

अर्थः—सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनै और उसी में तिथिवार गिनकर मिला देवै और नवका भाग देने से यदि सात बचै तो हैवरयोग कहना सो यात्रा में श्रेष्ठ है ॥ २६ ॥

घातचन्द्र और तिथि का परिहार-

भूपंचांकद्व्यंगदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचंद्रः ।
मेषादीनां राजसेवाविवादे वर्ज्यो युद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः २७

(अन्वयः) मेषादीनां मेषादिराशीनां भूपंचांकद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काश्च घाताख्यचन्द्रो ज्ञेयः, यथा मेषस्य प्रथमो मेष एव, वृषस्य पंचमः कन्यास्थः मिथुनस्य नवमः कुम्भस्य इत्यादि. एते घातचन्द्रा ज्ञेया इत्यर्थः, स घातचन्द्रो राजसेवाविवादे यात्रायुद्धाद्ये च वर्ज्यः अन्यत्र विवाहान्नप्राशनादिमंगलकृत्ये न वर्ज्यः ॥ २७ ॥

अर्थ—मेष राशि को जन्म का वृष राशिको पाँचवाँ, मिथुनको नवां, कर्कको दूसरा, सिंह को छठा कन्या का दशवां, तुला को तीसरा वृश्चिकको सातवां, धन को चोथा, मकर को आठवां, कुम्भ को ग्यारहवां, मीनको बारहवां, यह घात चन्द्र हैं सो राजसेवा विवाद युद्ध आदि कार्यों में वर्जित हैं और अगह शुभ हैं ॥ २७ ॥

आग्नेयत्वाष्ट्रजलपित्र्यवासवरौद्रभे ।
मूलब्राह्माजपादर्क्षे पित्र्यमूलाजभे क्रमात् ॥ २८ ॥
रूपद्व्यग्न्यग्निभूरामद्व्यग्न्यब्ध्यब्धियुगाग्नयः ।
घातचन्द्रे धिष्ण्यपादा मेषाद्वर्ज्या मनीषिभिः ॥२९॥

(अन्वयः) आग्नेयत्वाष्ट्रजलपित्र्यवासवरौद्रभे मूलब्राह्माजपादर्क्षे पित्र्यमूलाजभे क्रमात् क्रमेण रूपद्व्यग्न्यग्निभूरामद्व्यग्न्यब्ध्यब्धियुगाग्नयः धिष्ण्यपादाः मेषात् मेषराशितः घातचन्द्रे मनीषिभि. वर्ज्यास्त्याज्याः ॥ २८-२९ ॥

अर्थः—कृत्तिका, चित्रा, शतभिषा, मघा, धनिष्ठा, आर्द्रा, मूल, रोहिणी, पूर्वाभाद्रपद, मघा मूल, पूर्वाभाद्रपद यह मेषादि बारहों राशि के क्रम से घात नक्षत्र है ॥ २८ ॥ और किसी २ आचार्य का मत है कि मेषराशिवाले को कृत्तिका का प्रथम चरण वृषराशि को चित्रा का दूसरा चरण मिथुन राशि को शतभिषा का तीसरा चरण, कर्क राशि को मघा का तीसरा चरण, सिंह राशि को धनिष्ठा का प्रथम चरण, कन्या राशिको आर्द्राका तीसरा चरण, तुलाराशि को मूलका दूसरा चरण, वृश्चिकराशिको रोहिणीका चौथा चरण, धन राशिको पूर्वाभाद्रपद का चौथा चरण, मकर राशिवाले को मघाका चौथा चरण, कुम्भराशि को मूल का चौथा चरण, मीनराशि को पूर्वाभाद्रपद का तीसरा, घात है इसको इसी क्रम से जाने ॥ २९ ॥

घात तिथि का विचार—

गोस्त्रीझषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नंदा ।
कौर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुः कुम्भहरौ न शस्ता॥३०॥

(अन्वयः) अथ गोः वृष, स्त्री कन्या, झषो मीनः, एतद्राशिमिति नरे पूर्णा तिथिः घाततिथिः, नृयुक्मिथुनं कर्कटकः प्रसिद्धः अनयोर्भद्रातिथिः घाततिथि, कौर्प्यो वृश्चिक, अजो मेष. एतयोर्नन्दातिथिः घाततिथि, धनुः कुम्भसिंहानां जया तिथिः घाततिथि, एते घाततिथयो यात्रायां युद्धादौ च न शस्ता इति ॥ ३० ॥

अर्थः-वृष कन्या मीन राशिको पंचमी दशमी पूर्णिमा घात, मिथुन कर्क राशि को द्वितीया द्वादशी सप्तमी घात वृश्चिक मेषराशि को प्रतिपदा षष्ठी

एकादशी घात, मकर तुला राशिको चौथा चतुर्दशी नवमी घात, और धन कुम्भ सिंह राशिको तृतीया त्रयोदशी अष्टमी घात तिथि होती है सो यात्रा में अशुभ है ॥ ३० ॥

घातवारों का विचार—

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मंदश्चंद्रो द्वंद्वेऽर्कोजभे ज्ञश्च कर्के।
शुक्रः कोदंडालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ता ३१॥

(अन्वयः) नक्रे भौमः मकरराशिनां भौमे घातवारः, गोहरिस्त्रीषु वृषसिंहकन्यासु मन्दः शनिर्घातवारः, द्वन्द्वे मिथुने चन्द्रः अजभे मेषेऽर्कः, कर्कश्च बुधः धनुर्वृश्चिकमीनेषु शुक्रः जूकस्तुला कुम्भतुलयोर्जीवो गुरुर्घातवार इत्यर्थः घातवारा अपि यात्रादौ न शस्ताः ॥ ३१ ॥

अर्थः-मकर राशि के पुरुष को मंगलवार घात है, वृष सिंह कन्या को शनिश्चर घात है, मिथुन को सोमवार, मेष को रविवार, कर्क को बुधवार, धन मीन वृश्चिक को शुक्रवार, कुम्भ तुला को वृहस्पति घात है, इन घातवारों में यात्रा अशुभ है ॥ ३१ ॥

घातनक्षत्रोंका विचार—

मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यंबुपांत्यभम्।
याम्यब्राह्मेशसार्पं च मेषादेर्घातभं न सत् ॥ ३२ ॥

(अन्वयः) मघाकरस्वातिमैत्रमूलश्रुत्यंबुपांत्यभं याम्यब्राह्मेशसार्पं च मेषादेर्घातभं नक्षत्रं, स्पष्टार्थमेतदपि यात्रादौ न शस्तम् ॥३२॥

अर्थः-मेष को मघा, वृष को हस्त, मिथुन को स्वाती, कर्क को अनुराधा, सिंह को मूल, कन्या को श्रवण, तुला को शतभिष, वृश्चिक को रेवती, धन को भरणी, मकर को रोहिणी कुम्भ को आर्द्रा, मीन को आश्लेषा ये घातनक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ नहीं हैं ॥ ३२ ॥

घातलग्नों का विचार—

भूमि १ द्व्य २ब्ध्य ४ द्रि ७ दिक् १० सूर्या १२
गा ६ ष्टां ८ के ९ शा ११ ग्नि १२ सायकाः ५।

मेषादिघातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥३३॥

(अन्वयः) भूमि १ द्वय २ वेद ४ द्रि ७ दिक् १० सूर्या १२ गा ६ ष्टां ८ के ६ शा ११ त्रि ३ सायकाः ५ मेषादि मेषादिराशीनां घ तलग्नानि सुधीः यात्रायां वर्जयेत्, स्पष्टमेवार्थः ॥ ३३ ॥

अर्थः-मेषको आदि लेकर बारहां राशियों को क्रम से यह लग्न घातक है। मेष, वृष, कर्क तुला, मकर मीन, कन्या वृश्चिक, धनु कुम्भ, मिथुन, सिंह, ये घात लग्नयात्रा में वर्जित हैं ॥ ३३ ॥

नव ६ भूम्यः १ शिव ११ वह्नयो ३ ऽक्ष ५ विश्वे १३-
ऽर्क १२ कृताः ४ शक्र १४ रसा ६ स्तुरंग ७ तिथ्यः १५ ।
द्वि २ दिशो १० मा ३० वसव ८ श्च पूर्वतः स्यु-
स्तिथयः संमुखवामगा न शस्ताः ॥ ३४ ॥

(अन्वयः) नवभूम्य इति एतास्तिथयः पूर्वतः पूर्वदिशामारभ्य अष्टदिक्षु ज्ञेयाः, यथा पूर्वस्यां नवभूम्यः नवमी प्रतिपच्च, आग्नेय्यां शिववह्नय एकादशी तृतीया च, एवमग्रेपि एतास्तिथयो योगिन्य इति जीर्णास्तास्तिथयः संमुखवामगा न शस्ता ॥ ३४ ॥

अर्थः-प्रतिपदा और नवमीको पूर्व दिशामें योगिनीका वास रहता है। एकादशी और तृतीयाको अग्निकोणमें, पञ्चमी तेरसको दक्षिण दिशामें, चौथ द्वादशीको नैर्ऋत्य कोणमें, छठ चतुर्दशीको पश्चिम दिशामें, सप्तमी पूर्णिमाको वायव्य कोणमें द्वितीया दशमीको उत्तर दिशामें, अमावास्या, और अष्टमीको ईशान कोणमें योगिनीका वास होता है, सन्मुख और बायें तरफ अशुभ और पीछे दाहिने शुभ होती है ॥ ३४ ॥

कालपाशयोग--

कौबेरीतो वैपरीत्येन कालो वारेऽर्काद्ये संमुखे तस्य पाशः ।
रात्रावेतौ वैपरीत्येन गण्यौ यात्रायुद्धे संमुखे वर्जनीयौ ॥३५॥

(अन्वयः) कौबेरी उत्तरादिक् तस्याः विपरीतदिक्षु अर्काद्ये वारे कालः स्यात्। तस्य संमुखे पाश तद्यथा रवावुत्तरदिशि कालः दक्षिणे पाश इत्यर्थः

चन्द्रे वायव्यां कालः आग्नेय्यां पाशः, एवं भौमादिष्वपि, कालपाशौ रात्रौ वैपरीत्येन गण्यौ यथा-रात्रौ कालदिशि पाश इति वैपरीत्यं ज्ञेयम्, एतौ यात्रायुद्धादिषु संमुखे वर्जनीयौ-इति ॥ ३५ ॥

अर्थः-उत्तरदिशासे सूर्यादि वारों में विपरीत करके कालपाश जानना। जैसे एतवार को उत्तर में काल दक्षिणमें पाश चन्द्रको वायव्यमें काल, अग्निकोणमें पाश ऐसे और भी यह काल और पास रातमें उलटे गिनना यह यात्रामें अति निन्दित है ॥ ३५ ॥

परिघदंडाख्ययोग--

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु सप्तसप्तानलर्क्षतः ।
वायव्याग्नेयदिक्संस्थं पारिघं नैव लंघयेत् ॥३६॥

(अन्वयः) पूर्वादिष्विति अनलर्क्षतः कृतिकातःसप्तभानि पूर्वस्याम्, मघातः सप्त याम्यायाम् अनुराधातः सप्त पश्चिमायाम्, धनिष्ठातः सप्तभान्युत्तरस्याम्, तत्र वायव्याग्नेयदिक्संस्थं पारिघं पारिघो दण्डः स्यात्तं सर्वथा नोल्लंघयेत् ॥ ३६ ॥

अर्थः-कृत्तिकासे सात नक्षत्र पूर्वमें मघासे सात नक्षत्र दक्षिणमें, अनुराधासे सात नक्षत्र पश्चिममें, और धनिष्ठासे सात उत्तरमें, इस चतुष्कोण चक्रमें, अग्निकोण और वायव्यकोणमें बंधा जो परिघदण्ड है उसे उल्लंघन न करै, जिस दिशाका नक्षत्र होय उसी दिशामें यात्रा करै ॥ ३६ ॥

निंद्य दंडका अपवाद-

अग्नेर्दिशं नृप इयात्पुरुहूतदिग्भै-
रेवं प्रदक्षिणगतो विदिशोऽथ कृत्ये ।
आवश्यकेऽपि परिघं प्रविलंघ्य गच्छे-
च्छूलं विहाय यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३७ ॥

(अन्वयः) नृपः पुरुहूतदिक् प्राची तत्स्थैः कृत्तिकादिसप्तनक्षत्रैः अग्नेर्दिशमियाद्गच्छेत्। एवमनेन प्रकारेण विदिशः नैर्ऋत्यादिकोणे प्रदक्षिणगतः, अथ आवश्यके कृत्ये कर्तव्ये परिघदण्डमपि लंघयित्वा नृपो गच्छेत्, परन्तु शूलं विहाय त्यक्त्वा यदि दिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३७ ॥

अर्थः-यदि राजा पूर्व दिशाके कृत्तिकादि नक्षत्रोंमें अग्निकोणको यात्रा करै, इसी तरह दक्षिण दिशाके नक्षत्रोंसे नैर्ऋत्यकोण और पश्चिमके नक्षत्रसे वायव्य-कोण यात्रा करै, उत्तर के नक्षत्रों में ईशानकोणकी यात्रा करै तो शुभ है। यदि आवश्यकीय कार्य होय तो परिघदण्डको उल्लंघन करके दिशाकी लग्न शुद्ध हो तो दिक्शूलको त्याग करके यात्रा करै ॥ ३७ ॥

दूसरा अपवाद-

मैत्रार्कपुष्याश्विनभैर्निरुक्ता यात्रा शुभा सर्वदिशासु तज्ज्ञैः।
वक्रीग्रहः केंद्रगतोऽस्यवर्गो लग्ने दिनं चास्य गमे निषिद्धम्॥३८

(अन्वयः) मैत्रार्कपुष्याश्विनभैः नक्षत्रैः सर्वदिशासु चतुर्दिक्षु तज्ज्ञैर्ज्यौतिर्विकैर्यात्रा शुभा निरुक्ता निगदिता। वक्र ग्रहो यदि केन्द्रगः स्यात्तर्हि गमे यात्रायां निषिद्धः, अथवास्य वक्रीग्रहस्य लग्ने वर्गः षड्वर्गश्चेत्सोपि गमने निषिद्धः, चास्य वक्रीग्रहस्य दिनं वारोपिगमने निषिद्धमिति ॥ ३८ ॥

अर्थः-अनुराधा हस्त पुष्य अश्विनी इन नक्षत्रो में सम्पूर्ण दिशा में यात्रा करना और वक्री ग्रह केन्द्रमें होय तो अशुभ है। वक्रीग्रह का लग्न में षड्वर्ग भी निषिद्ध है और वक्री ग्रहका दिन भी अशुभ है ॥ ३८ ॥

अयनशूल-

सौम्यायने सूर्यविधू तदोत्तरां
प्राचीं व्रजेत्तौ यदि दक्षिणायने।
प्रत्यग्यमाशां च तयोर्दिवानिशं
भिन्नायनत्वेऽथ वधोऽन्यथा भवेत्॥ ३९॥

(अन्वयः) यदि सूर्यचन्द्रौ सौम्यायने उत्तरायणगतौ स्यातां तदा उत्तरां प्राचींवा व्रजेत्, तद्दिङ्मुखयात्रा शुभेत्यर्थः यदि तौ रविचन्द्रौ दक्षिणायनगतौ स्यातां तदा प्रत्यग्यमाशांच प्रतीचीं दक्षिणां वा व्रजेत्, अथ तयोर्भिन्नायनत्वे-अयनभेदे सति दिवानिशंव्रजेत्, (यथा) सूर्यो यस्मिन्तपते तां दिवा दिशं व्रजेत्, एवं चन्द्रोऽपि रात्रौ ज्ञेयम्, अथान्यथा चेत्कुर्यात्तदा वधो मरणं भवेत् ॥ ३९ ॥

अर्थः-यदि सूर्य चन्द्रमा उत्तरायण मे होवें तो उत्तर और पूर्व दिशा में यात्रा करे और दक्षिणायन सूर्य चन्द्रमा में दक्षिण और पश्चिम यात्रा शुभ होती है।

जिस अयनमें सूर्य हो उस दिन उस दिशाको दिनमें जावै और चन्द्रमा जिस अयनमें होवे उस दिन उसदिशामें रात्रिमें यात्रा करै ॥ ३९ ॥

संमुख शुक्रका दोष—

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति
गोलभ्रमाद्वाथ ककुब्भसंघे ।
त्रिधोच्यते संमुख एव शुक्रो
यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ॥ ४० ॥

(अन्वयः) शुक्रो यस्यां दिशि प्राच्यां प्रतीच्यां वा उदेति कालांशवशेनोदयं करोति तत्र गन्तुः पुंसः शुक्रः संमुखः अयमेकः प्रकारः; अथवा गोलभ्रमवशेन यत्र यस्यां दिशि उत्तरस्यां दक्षिणस्यां वा यदि याति गच्छति तत्र गन्तुः पुंसः संमुखः शुक्रः स्यात् अयं द्वितीयः प्रकारः, अथ यत्र ककुब्भसंघे प्राच्यादिदिशि कृत्तिकादि काद्विन्यासवशेन यद्दिङ्नक्षत्रे चरति तत्रदिशि गन्तुः संमुखः शुक्रः स्यादित्ययंतृतीयः प्रकारः, एवं शुक्रस्त्रिधा प्रकारेण संमुखं यत्र यस्यांदिशि उदि शुक्रो दृश्यते तांतः दिशमेव न गच्छेत् ॥४०॥

अर्थः—शुक्र जिस दिशा में उदय होय, अथवा दक्षिण उत्तर गोलके भ्रमणसे जिस दिशामें हो और कृत्तिकादि नक्षत्र करके पूर्वादि दिक् विषे, जिस दिशामें हो यह ३ प्रकार शुक्र के दिशा जानने का है परन्तु इन तीनों में जिस दिशामें उदय होय वही प्रधान मानने योग्य है उस दिशाकी यात्रा अशुभप्रद है ॥ ४० ॥

वक्रास्तादिदोष अपवादसहित—

वक्रास्तनीचोपगते भृगोः सुते
राजा व्रजन्याति वशं हि विद्विषाम् ।
बुधोऽनुकूलो यदि तत्र सञ्चलन्
रिपूञ्जयन्नैव जयः प्रतीदुजे ॥ ४१ ॥

(अन्वयः) भृगोः सुते शुक्रे वक्रास्तनीचापगते वक्रोपगते अस्तोपगते वा उपलक्षणत्वाद्ग्रहयुद्धपराजिते वर्णरहिते वा सति राजा परगाष्ट्रं व्रजन् सन् हि निश्चयेन विद्विषां शत्रूणां वशं याति निबद्धोभवतीत्यर्थः, तत्र शुक्रास्ते यदि

बुधोनुकूलः पृष्ठदिक् संस्थो भवेत्तदा संचलन्गच्छन् राजा रिपून् शत्रून् जयेत्, प्रतीन्दुजे बुधसंमुखत्वे सति गन्तूराज्ञो नैव जयः किंतु पराजयइति॥ ४१ ॥

अर्थः-शुक्र वक्री, अस्त, नीचका होवै ऐसे समय में यदि राजा युद्धके लिये जावै तो शत्रु के वशमें हो शुक्रके अस्तमें बुध पीछे हो तो जय प्राप्त होवै यदि सन्मुख हो और यात्रा करै तो यात्री राजा अवश्य हारही जावे इसमें कुछ संशय नही है ॥ ४१ ॥

यावच्चंद्रः पूषभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोंऽधो न दुष्टोऽग्रदक्षे। मध्येमार्गं भार्गवास्तेऽपि राजा तावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेऽपि तस्य ४२

(अन्वयः) चन्द्रो यदा पूषभाद्रेवतो नक्षत्रादारभ्यकृत्तिकाद्ये पादे रेवत्यश्विनी भरणी कृत्तिका प्रथमचरणे यावच्चन्द्रस्तिष्ठति तावच्छुक्रोन्धो ज्ञेयः, दा शुक्रोन्धो यदा भवेत्तदा अग्रे संमुखे दक्षे दक्षिणभागे च दुष्टो न स्यात्, सुमुहूर्तप्रस्थितो राजा मार्गमध्ये यदि भार्गवास्ते शुक्रास्तो भवेत्तावत्कालं तस्मिन्नेव प्रयाणे तिष्ठेत् यावच्छुक्रोदयो भवेत्, यदि शुक्रो गन्तू राज्ञः संमुखो दैववशात्तावत्तस्य शुक्रस्य संमुखत्वेऽपि तस्मिन्नेव प्रयाणे तिष्ठेत् ॥ ४२ ॥

अर्थ.—यदि अंध शुक्र हो तो सन्मुख और दक्षिण दोष नहीं होता " रेवती नक्षत्र लेकर कृत्तिकाके प्रथम चरण तक शुक्र अन्ध रहता है यह सामने और दाहिने अशुभ नहीं होता और यात्रा करके मार्ग में शुक्र अस्त और सन्मुख हो जावें तो वहीं पर ठहर जावै शुक्र शुद्ध होने पर यात्रा करै ॥ ४२ ॥

यात्रा में निषिद्ध लग्न—

कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ सर्वथा यत्नतो बुधैः। तत्र प्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ ४३ ॥

(अन्वयः) यत्र प्रयाण समये बुधैः यत्नतः सर्वथा कुम्भकुम्भांशकौ त्याज्यौ वर्जनीयौ, तत्र तस्मिन् कुम्भकुम्भांशकौ नृपतेः प्रयातु गच्छतुः तदा पदे पदे अर्थ नाशः धननाशः स्यात् ॥ ४३ ॥

अर्थः—पण्डितों करके सदैव कुम्भ लग्न और कुम्भका नवमांश त्याज्य है यदि यात्रा करै तो राजाकी लक्ष्मी सदैव पद २ पर नाश होय ॥ ४३ ॥

अथ मीनलग्न उतवा तदंशके चलितस्य वक्रमिह वर्त्म जायते।

जनिलग्नजन्मभपती शुभग्रहौ भवतस्तदा तदुदये शुभागमः ॥४४॥

(अन्वयः) अथ उत वितर्के इह यात्रासमये मीनलग्ने वा तत्रत्विलग्नान्तरे तदंशके मीनांशे वा चलितस्य राज्ञो वर्त्म वक्रं कुटिलं जायते, जनिलग्नजन्मभपती जनिर्जन्मकालीनलग्नं जनिलग्नं जन्मभं जनराशिः तयोर्जन्मराश्योः पतो स्वामिनौ शुभग्रहौ तदुदये यात्रालग्ने भवतस्तदा गमो गमनं शुभः स्यात् एवं जन्म लग्नं जन्मराशिश्च यात्रा लग्ने भवतस्तदा गमनं शुभः स्यात्, पापश्चा शुभं भवेत् ॥ ४३ ॥

अर्थः—मीन लग्न अथवा मीन लग्न के नवमांश में यदि राजा यात्रा करै तो मार्ग टेढ़ा मिले और जन्म लग्न व जन्म राशिका स्वामी शुभग्रह लग्न में होवै तो यात्रा शुभप्रद है ॥ ४३ ॥

दूसरा योग—

जन्मराशितनुतोऽष्टमेऽथवा स्वारिभाच्च रिपुभे तनुस्थिते ।
लग्नगोस्तदधिपा यदाथवा स्युर्गतं हि नृपतेर्मृतिप्रदम् ॥४५॥

(अन्वयः) जन्मराशितनुतः स्वस्य जन्मराशेर्जन्मलग्नाच्चाष्टमे राशौ तनुस्थिते लग्नस्थे, तथा स्वारिभात् स्वशत्रो र्भाद्राशेर्लग्नाच्च रिपुभे षष्ठराशौ तनुस्थिते वा सति, अथवा तदधिपाः स्वराशिलग्नाभ्यामष्टमभवने. स्वशत्रो र्जन्मराशिलग्नाभ्यां षष्ठभवने तेषां स्वामिनो यात्रा लग्नगताः स्युर्यदा तदा हि निश्चयेन नृपतेर्गतं गमनं मृतिप्रदं मरणं भवेदिति ॥ ४५ ॥

अर्थः—जिन जन्मराशिसे अथवा जन्मलग्नसे आठवीं राशि में लग्न स्थित हो,वैं और जाने वाले शत्रु की राशि व लग्न से छठी राशि में लग्न स्थिर हो अथवा अपनी राशि और लग्न से अष्टम भवनके स्वामी या अपने शत्रुकी जन्म राशि और लग्नसे छठवीं राशिके स्वामी यात्रा लग्नमें हों तो यात्रा करने से राजा की मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥

दूसरा शुभलग्न–

लग्ने चंद्रे वापि वर्गोत्तमस्थे यात्रा प्रोक्ता वांछितार्थैकदात्री ।
अंभोराशौ वा तदंशे प्रशस्तं नौकायानं सर्वसिद्धिप्रदायि ॥४६॥

(अन्वयः) अत्र मीनकुम्भव्यतिरिक्ते यस्मिन्कस्मिंश्चिल्लग्ने वर्गोत्तमस्थे वर्गोत्तमनवांशगते सति वा अथवा चन्द्रे वर्गोत्तमस्थे सति यात्रा प्रोक्ता कथिता वांच्छितार्थस्य मनोभीष्टार्थस्यैकाऽद्वितीया दात्री, अम्भोराशौ जलचरराशौ यात्रा लग्नगते अथवा लग्नान्तरे तदंशे जलचरांशे सति नौकायानं प्रशस्तं सर्वसिद्धि प्रदायि स्यात् ॥ ४६ ॥

अर्थः—मीन और कुम्भ वर्जित कोई लग्न वर्गोत्तम नवमांशमें स्थित होवे अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तममें स्थित होवे तो यात्रा वांच्छित फल देनेवाली होवै और जलराशि लग्नमें होवै अथवा लग्नमें जलराशिका अंश होवै तो नौकाकी यात्रा सम्पूर्ण सिद्धि को देने वाली होती है ॥ ४६ ॥

अन्य प्रकारसे लग्न—

दिग्द्वारभे लग्नगते प्रशस्ता यात्रार्थदात्री जयकारिणी च ।
हानिं विनाशं रिपुतो भयं च कुर्यात्तथा दिक्प्रतिलोमलग्ने ॥ ४७

(अन्वयः) दिग्द्वारभे लग्नगते लग्नस्थिते यात्रा अर्थदात्री जयकारिणी च यात्रा प्रशस्ता अति शस्ता स्युः, तथा दिक् प्रतिलोमलग्ने लग्नगते सति यदि यात्रां कुर्यात्तदा हानिं यात्राहानिं विनाशं द्रव्यविनाशं रिपुतो भयं च कुर्यात् ॥ ४७ ॥

अर्थः—मेषादिकोंकी पूर्वादि चारो दिशामें स्थित क्रमसे कहनी सो यात्रा के दिशा की राशि लग्नमें होवै तो यात्रा धनके देनेवाली और जयके करनेवाली अति श्रेष्ठ है यदि विपरीत होवै तो हानि विनाश शत्रुसे भय होवै ॥ ४७ ॥

मंगलकारक लग्न—

राशिः स्वजन्मसमये शुभसंयुतो यो
यः स्वारिभान्निधनगोऽपि च वेशिसंज्ञः ।
लग्नोपगः स गमने जयदोऽथ भूप-
योगैर्गमो विजयदो मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ४८ ॥

(अन्वयः) स्वजन्मसमये यो राशिः शुभसंयुतः शुभग्रहैश्चन्द्रबुधगुरुशुक्रैः संयुतोऽस्ति स राशिश्चेद्यात्रालग्नोपगः स्यात्, अथवा स्वारिभान्निधनगः षष्ठे

यो राशिः स चेद्यात्रा लग्नोपगः स्यात्, अथवा यो राशिर्वेशिसंज्ञः सूर्याक्रान्तराशेर्द्वितीयो राशिर्वेशिसंज्ञः स चेद्यात्रालग्नोपगः स्यात्, तदा स राशिर्गमने जयदः स्यात्, अथवा भूपयोगैर्जातकोक्तयात्रालग्नावस्थितै राजयोगैर्गमो मुनिभिर्विजयदः प्रोक्तः ॥ ४८ ॥

अर्थः—जन्मके समय में शुभग्रह सहित जो राशि हो वह यात्रालग्नमें होवे अथवा अपने शत्रुकीजन्म लग्न जन्मराशि से आठवीं जो राशि है सो यात्रा लग्न में होवे और जन्मके समयमें सूर्याकांत राशि से दूसरी राशि लग्नमें स्थित होवे तो यह मुहूर्त यात्रामें जयका देने वाला होता है। जातकमें कहे हुए राजयोगमें यात्रा करनेसे जय होती है ऐसा मुनियोंने कहा है ॥४८॥

दिशाओंके स्वामी—

सूर्यः सितो भूमिसुतोऽथ राहुः
शनिः शशी ज्ञश्च बृहस्पतिश्च ।
प्राच्यादितो दिक्षु विदिक्षु चापि
दिशामधीशाः क्रमतः प्रदिष्टाः ॥ ४९ ॥

(अन्वयः) अथ प्राच्यादितो दिक्षु विदिक्षु चापि क्रमतः सूर्यः सितो भूमिसुतः राहुः शनिः शशिज्ञः बृहस्पतिश्च दिशामधीशाः दिगीश्वराः प्रदिष्टाः कथिताः स्युरिति ॥ ४९ ॥

अर्थः—पूर्वदिशाका स्वामी सूर्य अग्नि कोणका शुक्र दक्षिणका मंगल नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिमका, शनिश्वर, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तरका बुध और ईशान कोणका बृहस्पति स्वामी होता है ॥ ४९ ॥

दिशाके स्वामीका प्रयोजन—

केन्द्रे दिगधीशे गच्छेदवनीशः ।
लालाटिनि तस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥ ५० ॥

(अन्वयः) दिगधीशे दिक्स्वामिनि सूर्यः सित इत्यादिनोक्ते केन्द्रे केन्द्रवर्तिनि सति अवनीशो राजा गच्छेत् तस्मिन् दिगधीशे लालाटिनि योगे सति अरिसेनां नेयान्न गच्छेत् ॥ ५०॥

अर्थः—केन्द्रमें दिशाका स्वामी होवे तो राजा शत्रुकी सेना में यात्रा करे और लालाटिक योगमें न जाय ॥ ५० ॥

लालाटिक योग—

प्राच्यादौ तरणिस्तनौ भृगुसुतो लाभव्यये भूसुतः
कर्मस्थोऽथ तमो नवाष्टमगृहे सौरिस्तथा सप्तमे ।
चन्द्रः शत्रुगृहात्मजेऽपि च बुधः पातालगो गीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहे विलग्नसदनाल्लालाटिकाः कीर्तिताः ॥५१॥

(अन्वयः) अथ प्राच्यादौ प्राच्याद्यष्टदिक्षु क्रमेण विलग्नसदनात् यात्रा-लग्नगृहात्तरणिस्तनौ, भृगुसुतः लाभव्यये, भूसुतः भौमः कर्मस्थः दशमस्थः, तमो राहु नवाष्टमगृहे, तथा सौरिः शनिः सप्तमे, चन्द्रः शत्रुगृहात्मजेऽपि, बुधश्च पातालो चतुर्थस्थः गीष्पतिः गुरुर्वित्तभ्रातृगृहे चेत्तदा लालाटिकाः कीर्तिताः कथिताः ॥ ५१ ॥

अर्थः—पूर्वादि अष्टदिशाओं में लग्न आदि स्थानों में सूर्यादि ग्रह होनेसे लालाटिक योग कहा जाता है। जैसे-लग्नमें सूर्य हो तो पूर्व को जानेवाले को लालाटिक योग होता है। ऐसे ही शुक्र ग्यारहवें बारहवें हो तो अग्निकोण में। मंगल नववें हो तो दक्षिण जानेवाले को। राहु नववें आठवें नैर्ऋत्यमें, शनिश्चर सातवें पश्चिममें चन्द्रमा पाँचवें छठे वायव्यमें, बुध सातवें उत्तरमें, बृहस्पति दूसरे तीसरे ईशानमें लालाटिक योग होता है ॥ ५१ ॥

पर्युषित यात्रायोगचतुष्टय—

मृगे गत्वा शिवे स्थित्वादितौ गच्छञ्जयेद्रिपून् ।
मैत्रे प्रस्थाय शाक्रे हि स्थित्वा मूले व्रजंस्तथा ॥ ५२ ॥
प्रस्थाय हस्तेऽनिलतक्षधिष्ण्ये स्थित्वा जयार्थी प्रवसेद्द्विदैवे।
वस्वंत्यपुष्ये निजसीम्नि चैकरात्रोषितः क्ष्मां लभतेऽवनीशः॥५३

(अन्वयः) मृगे मृगनक्षत्रे गत्वा शिवे रौद्रभे स्थित्वादितौ पुनर्वसौ गच्छन् सन् रिपून् शत्रून् जयेत्, तथा मैत्रेऽनुराधायां प्रस्थाय प्रस्थानं कुर्यात् शाक्रे ज्येष्ठायां स्थित्वा मूले व्रजन् सन् हि निश्चयेन शत्रून् जयेत्, हस्ते प्रस्थायानिल-

तत्त्वाष्णिये स्थित्वा द्विदैवे विशाखायां जयार्थी भूपादिः प्रव्रसेद्देशान्तरं गच्छेत्, पुनः वस्वन्त्यपुष्ये धनिष्ठारेवती पुष्येषु निजसीम्नि स्वनगरप्रांते प्रस्थितः सन्यदि एकरात्रोषितः स्यात्तदा अवनीशो राजा क्ष्मां भूमिं लभते जयं प्राप्नोतीति ॥ ५२-५३ ॥

अर्थः-यदि मृगशिरा नक्षत्रमें मुहूर्त्त करके किसी मित्रके मकानमें ठहर जावें और वहांपर आर्द्रा नक्षत्र व्यतीत करके पुनर्वसु नक्षत्रमें जावे तो पहुंचते पहुंचते शत्रुको जीत लेवै और अनुराधा में यात्रा करके ज्येष्ठाको पूर्ववत् व्यतीत करके मूल नक्षत्रमें जावे तो भी शत्रु को जीत लेवै ॥ ५२ ॥ हस्तमें प्रस्थान करके स्वाती चित्रा नक्षत्रमें स्थित होकर विशाखामें यात्रा करै और धनिष्ठा रेवती पुष्य नक्षत्रमें प्रस्थान करके एक रात्रि पर्यन्त अपनी सीमामें रहकर यात्रा करने से राजा पृथ्वीको पाता है चार योग सिद्ध है ॥ ५३ ॥

उषःकालादि समयबल-

उषःकालो विना पूर्वां गोधूलिः पश्चिमां विना ।
विनोत्तरां निशीथः सन् याने याम्यां विनाऽभिजित् ॥५४॥

(अन्वयः) पूर्वां विना उषः कालः पश्चिमां विना गोधूलिः उत्तरस्विना निशीथोर्द्धरात्रिः याम्यां दक्षिणां विना अभिजिन्मुहूर्तमपि याने गमने सत्स्यादिति ॥ ५४ ॥

अर्थः—उषःकाल (प्रातःकाल) को त्याग करके पूर्वदिशा को जावे। गोधूलि (सूर्यास्त समय) को त्यागकरके पश्चिम दिशा को यात्रा करै। निशीथकाल (अर्धरात्रि) को त्याग करके उत्तर दिशाकी यात्रा श्रेष्ठ है। अभिजित् (दोपहर) को त्याग करके दक्षिण दिशाकी यात्रा प्रशस्त है ॥ ५४ ॥

लग्न आदि बारह भावोंकी संज्ञा—

लग्नाद्भावाः क्रमाद्देह १ कोश २ धानुष्क ३ वाहनम् ४ ।
मंत्रो ५ रि ६ मार्ग ७ आयुश्च ८ हृ ९
द्व्यापारा १० गम ११ व्ययाः १२ ॥ ५५ ॥

(अन्वयः) लग्नात्क्रमाद् देहकोशधानुष्कवाहनं मन्त्रोरिमार्ग आयुश्च हृद्व्यापाराऽऽगमव्ययाः भावाः स्युरिति ॥ ५५ ॥

अर्थः-देह १ कोश २ धानुष्क ३ वाहन ४ मंत्र ५ शत्रु ६ मार्ग ७ आयु ८ हृदय ९ व्यापार १० प्राप्ति ११ खर्च १२ यह बारहलग्नसे भाव जानने.जिस स्थानमें क्रूरग्रह होवें उसको पीड़ा कहनी, जिसमें सौम्य ग्रह होवें उसमें शुभ कहना ॥५५॥

केंद्र आदि में शुभ ग्रह होवें तो—

केंद्रे कोणे सौम्यखेटाः शुभाः स्युर्याने पापत्र्यायषट्खेषु चंद्रः ।
नेष्टो लग्नांत्यारिरंध्रे शनिःखेस्तेऽशुक्रो लग्नेट् नगांत्यारिरंध्रे ५६

(अन्वयः) यदि सौम्यखेटाः शुभग्रहाः केन्द्रे कोणे स्युस्तदा याने गमने शुभाः शुभफलदाः स्युः, पापाः पापग्रहास्त्र्यायषट् खेषु तृतीयैकादशषष्ठदशम स्थानस्थाः याने शुभफलदाः स्युः, चन्द्रो लग्नान्त्यारिरन्ध्रे लग्नद्वादश षष्ठाष्टमेषु स्थितो नेष्टोऽशुभफलदः स्यात्, शुक्रोस्ते सप्तमे नेष्टः, लग्नेट् यात्रा लग्नस्वामी नगान्त्यारिरंध्रे सप्तमद्वादशषष्ठाष्टमस्थश्चेत्त शनिष्टोऽशुभफलदो मृत्युदः स्यादिति ॥ ५६ ॥

अर्थः-शुभग्रह १।४।७।१०।९।५। होवें तो शुभ है। और पापग्रह ३।११।६।१० हो तो शुभ है। और चन्द्रमा १।१२।६।८। होवे तो अशुभ है और दशवें शनि सातवें शुक्र हो तो अशुभ है। लग्नस्वामी सातवें बारहवें छठें आठवें स्थानों में हो तो अशुभफलप्रद होता है ॥ ५६ ॥

योग यात्रा और तिससे आरंभ का प्रयोजन-

योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगुणैरपि भूदेवानाम् ।
चौराणां शुभशकुनैरुक्ता भवति मुहूर्तादपि मनुजानाम् ॥५७॥

(अन्वयः) धरणिपतीनां योगाद्दशमाणसहितयोगयात्रा लग्नवशाद्दुष्टेपि- तिथ्यादौ सिद्धिर्वाञ्छितकार्यनिष्पत्तिः स्यात् एवं भूदेवानां ब्राह्मणानामृक्ष गुणैरपिसिद्धिः स्यात्, चौराणां शुभ शकुनैर्वा मनुजानामितरमनुष्याणां मुहूर्तादपि सिद्धिर्भवति ॥ ५७ ॥

अर्थ-राजाओंको योगसे सिद्धि प्राप्त होनी है और ब्राह्मणोंको नक्षत्र बलसे चौरों को शुभ शकुनसे सामान्य मनुष्योंको मुहूर्त्त बनने से सिद्धि मिलती है॥५७॥

योगयात्रा विषे लग्न शुद्धि—

सहजे रविर्दशमभे शशी तथा शनिमंगलौ रिपुगृहे सितः सुते ।

हिबुके बुधोगुरुरपीह लग्नगःसजयत्यरीन्प्रचलितोऽचिरान्नृपः५८

(अन्वयः) रविः सहजे तृतीये स्थाने स्यात् तथा शशिः चन्द्रो दशम भे दशमस्थाने, शनिमंगलौ रिपुगृहे षष्ठस्थाने स्याताम्, सितः शुक्रः सुते पंचमस्थाने, बुधोहिबुके चतुर्थस्थाने, गुरुर्लग्नगश्चेत्स्यादपि इदैवंविधयोगे यात्रा लग्ने स नृपो राजा प्रचलितः गच्छन् सन्नचिरात् स्वल्पकाले नैवारीन् शत्रून् जयति वशीकरोतीति ॥ ५८ ॥

अर्थः-सूर्य तीसरे, चन्द्रमा दशवें, शनि मंगल छठें, शुक्र पांचवें बुध चौथे, बृहस्पति लग्नमें हो तो ऐसे योगमें राजा निज शत्रुको जीत करके अतिशीघ्र लौटकर आता है ॥ ५८ ॥

दूसरा योग---

भ्रातरि सौरिर्भूमिसुतो वैरिणि लग्ने देवगुरुः ।
आयगतेऽर्के शत्रुजयश्चेदनुकूलो दैत्यगुरुः ॥ ५९ ॥

(अन्वयः) भ्रातरि तृतीयस्थाने सौरिः शनिः स्यात् वैरिणि षष्ठे भूमिसुतो मंगलः, लग्ने देवगुरुः अर्के रविरायगते लाभस्थानस्थिते, एवं विधयोगे राज्ञः शत्रुजयो चेद्दैत्यगुरुर्भवेत् शुक्रोनुकूलस्तदा ॥ ५९ ॥

अर्थः-यदि यात्रा लग्नसे शनिश्चर तीसरे घरमें होवै और छठे स्थानमें मंगल होय । बृहस्पति लग्नमें, सूर्य ग्यारहवें होवै और शुक्र अनुकूल (पीछे) होवै तो यात्रा करनेवाले राजाओंको जय मिलती है ॥ ५९ ॥

तनौ जीव इन्दुर्मृतो वैरिगोऽर्कः ।
प्रयातो महींद्रो जयत्येव शत्रून् ॥ ६० ॥

(अन्वयः) तनौ लग्ने जीवो गुरुः स्यात् मृतावष्टमस्थाने इन्दुश्चन्द्रः स्यात्, वैरिगः षष्ठस्थानगतोऽर्कश्चेत्स्यादेवंविधे योगे प्रयातो महीन्द्रो राजा शत्रून् जयत्येव ॥ ६० ॥

अर्थः-बृहस्पति लग्नमें, सूर्य छठें, चन्द्रमा आठवें, हो ऐसे योगमें राजा शत्रु पर चढ़ाई करै तो विजयलक्ष्मी ॥ ६० ॥

राजविजयसंज्ञकयोग-

लग्नगतः स्याद्देवपुरोधाः। लाभधनस्थैः शेषनभोगैः ॥ ६१ ॥

(अन्वयः) देवपुरोधाः बृहस्पति र्लग्नगतः स्यात् शेषनभोगैरन्यैर्ग्रहैः लाभधनस्थैरेकादश द्वितीयस्थानस्थैश्चेत्तदेवं विधेयोगे राज्ञो विजयः स्यात् ॥ ६१ ॥

अर्थः—लग्न में बृहस्पति होवे और बाकी ग्रह ग्यारहवें और दूसरे स्थान में हों तो राजा अवश्य दिग्विजय करे ॥ ६१ ॥

ऐसे योग में राजा जयशाली होता है—

द्यूने चंद्रे समुदयगेऽर्के जीवे शुक्रे विदि धनसंस्थे।
ईदृग्योगे चलति नरेशो जेता शत्रून् गरुड इवाहीन् ॥६२॥

(अन्वयः) चन्द्रे द्यूने सप्तमस्थाने सति अर्के समुदयगे सति जीवशुक्रे विदि बुधे एषु त्रिषु ग्रहेषु धनसंस्थेषु द्वितीयस्थानस्थेषु सत्सु, ईदृग्योगे एवं विधेयोगे नरेशश्चलति तदा शत्रून् जेता जेष्यति अहीन्सर्पान् गरुड इव यथा जयति ॥ ६२ ॥

अर्थः-सप्तम स्थानमें चन्द्रमा होय और सूर्य लग्नमें बृहस्पति शुक्र बुध ये ग्रह दूसरे स्थानमें हों तो जैसे सर्पोंको गरुड इस प्रकार राजा शत्रु दलको विजय करै॥६२॥

दूसरे योगमें शत्रु शलभ सरीखे होते हैं—

वित्तगतः शशिपुत्रो भ्रातरि वासरनाथः।
लग्नगते भृगुपुत्रे स्युः शलभा इव सर्वे ॥ ६३ ॥

(अन्वयः) शशिपुत्रो बुधो वित्तगतः द्वितीयस्थः वासरनाथः सूर्यो भ्रातरि तृतीयस्थः भृगुपुत्रे शुक्रे लग्नगते सति, एवं विधेयोगे चेद्राजा चलति तदा सर्वे शत्रवः शलभा इव स्युः, यथा शलभा अग्नौ स्वयमेव गत्वा पतन्ति तथा शत्रवोपि पतन्ति ॥ ६३ ॥

अर्थः-बुध दूसरे, सूर्य तीसरे, शुक्र लग्न में होवे और राजा यात्रा करै तो राजा के प्रताप शत्रुदल अग्नि में पतगों की भांति भस्म हो जावै ॥ ६३ ॥

इस योगमें शत्रु सेना वश होती है—

उदये रविर्यदि सौरिररिगः शशी दशमेऽपि।
वसुधापतिर्यदि याति रिपुवाहिनी वशमेति ॥ ६४ ॥

(अन्वयः) यदि उदये लग्ने रविः स्यात् सौरिः शनिः अरिः षष्ठस्थः स्यात् शशी चन्द्रः दशमस्थः स्यात्तदा ईदृशयोगे यदि वसुधापतिः राजा याति तर्हि रिपुवाहिनी शत्रुसेना वशमेतीति ॥ ६४ ॥

अर्थः--सूर्य लग्नमें, शनिश्चर छठे, चन्द्रमा दशवें, स्थानमें हो तो यात्री राजाके वशमें शत्रु सेना हो जावै ॥ ६४ ॥

दूसरे दो योग--

तनौ शनिकुजौ रविर्दशमभे बुधो भृगुसुतोऽपि लाभदशमे ।
त्रिलाभरिपुषु भूसुतशनी गुरुज्ञभृगुजास्तथा बलयुताः ॥६५॥

(अन्वयः) तनौ लग्नस्थौ शनिमंगलौ यथा संभवं स्यातां रविर्दशमभे स्यात्, बुधो लाभे दशमे वा स्यात् भृगुसुतो वापि लाभे दशमे वा स्यात् तदैवं विधे योगे प्रचलितस्य राज्ञो जयः स्यात्, त्रिलाभरिपुभेषु भूसुतशनी मंगलशनैश्चरौ यदि स्यातां यस्मिन् कस्मिंश्चित्स्थाने स्थिता गुरुज्ञभृगुजा बलयुताः स्युस्तदैवं विधे योगे तथा राज्ञो विजय इति ॥ ६५ ॥

अर्थः-(१) शनि और मंगल लग्नमें हों, सूर्य दशवें हो बुध दशवें या ग्यारहवें हो अथवा शुक्र दशवें या ग्यारहवें हो तो ऐसे योग में यात्रा करने वाले राजा को जय होती है (२) मंगल और शनि तीसरा, छठवां, ग्यारहवाँ इनमें से किसी स्थान में हों और बुध, गुरु, शुक्र ये जहाँ कहीं बलवान् होकर पड़े हों तौ भी राजा का विजय होती है ॥ ६५ ॥

दूसरा योग और त्वरितागति—

समुदयगे विबुधगुरौ मदनगते हिमकिरणे ।
हिबुकगतौ बुधभृगुजौ सहजगताः खलखचराः ॥६६॥

(अन्वयः) समुदयगे लग्नस्थे विबुधगुरौ सति हिमकिरणे चन्द्रे मदनगते सप्तमस्थे, सति, हिबुकं चतुर्थस्थानं तत्रगतौ बुधभृगुजौ स्यातां खलखचरे पापग्रहे सहजं तृतीयस्थानं तत्रगते च सति एवंविधे योगे वसुधापति यदि याति रिपुवाहिनी तदा वशमेतीति ॥ ६६ ॥

अर्थः-बृहस्पति लग्न में हों, सातवें चन्द्रमा, चौथे बुध और शुक्र होवें और पापग्रह तीसरे स्थान में होवें तो ऐसे योग में यदि राजा यात्रा करे तो शत्रु की सेना को वश में करै ॥ ६६ ॥

राजविजयाख्य दूसरा योग-

त्रिदशगुरुस्तनुगो मदने हिमकिरणो रविरायगतः।
सितशशिजावपि कर्मगतौ रविसुतभूमिसुतौ सहजे ॥९७॥

(अन्वय.) त्रिदशगुरुः बृहस्पतिर्लग्नगः स्यात् हिमकिरणश्चन्द्रः मदने सप्तमे स्यात् सितशशिजौ शुक्रबुधावपि कर्मगतौ दशमगतौ स्यातां रविः सूर्य आयगतः एकादशस्थ. स्यात् रविसुतभूमिसुतौ शनिमंगलौ सहजे स्यातां एवं-विधे योगे राज्ञो विजय एवेति ॥ ९७ ॥

अर्थः—बृहस्पति लग्न में हो चन्द्रमा सातवें, सूर्य ग्यारहवें, शुक्र बुध दशवें, शनि मंगल तीसरे. ऐसे योग में राजा यात्रा करै तो जय मिलै ॥ ९७ ॥

देवगुरौ वा शशिनि तनुस्थे वासरनाथे रिपुभवनस्थे।
पंचमगेहे हिमकरपुत्रः कर्मणि सौरिः सुहृदि सितश्च ॥९८॥

(अन्वयः) देवगुरौ शशिनि चन्द्रे वा तनुस्थे लग्नस्थे सति, वासरनाथे सूर्ये रिपु भवनस्थे षष्ठस्थे हिमकरपुत्रः बुधश्च पञ्चमगेहे सौरिः शनिः कर्मणि दशमे स्यात्, सितः शुक्रः सुहृदि चतुर्थस्थाने स्यात् एवंविधे योगे राज्ञो विजय एवेति ॥ ९८ ॥

अर्थः-बृहस्पति अथवा चन्द्रमा लग्न में, सूर्य छठे, बुध पांचवें, शनि दशवें, शुक्र चौथे हों और राजा शत्रु पर चढ़ाई करै तो विजय होवै ॥ ९८ ॥

हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ त्रिदशपतिगुरुर्हि केंद्रस्थितः।
व्ययगृहसहजारिधर्मस्थितो यदि च भवति निर्बलश्चंद्रमाः ९९

(अन्वयः) हिमकिरणसुतो बुधो बली सन् चेत्तनौ लग्ने स्यात् हि निश्चयेन त्रिदशपतिगुरुर्बृहस्पतिश्चेत्केन्द्रस्थितः यदि च निर्बलः बलरहितः सन् चन्द्रो व्ययगृहसहजारिधर्मस्थिते भवति तदैवं विधे योगे राज्ञो विजय एव स्यादिति ॥ ९९ ॥

अर्थः-जिस यात्रा लग्न में बली बुध होवै, बृहस्पति केन्द्र में और निर्बल चन्द्रमा बारहवें तीसरे छठे नव स्थानों में से किसी स्थान में हो और राजा यात्रा करै तो विजयलक्ष्मी प्राप्त होवै ॥ ९९ ॥

द्रव्यसमूहलाभकारक दूसरा योग—

अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः ।
कविरिह केंद्रगगीष्पतिदृष्टो वसुचयलाभकरः खलु योगः ७०

(अन्वयः) अशुभखगै. पापग्रहैर्हिं निश्चितं नवाष्टमदस्थैः सद्भिर्यदि कविः शुक्रः हिबुकसहोदरलाभगृहस्थः चतुर्थतृतीयैकादशस्थानस्थितः सन् केन्द्रस्थितो यो गीष्पतिर्गुरुस्तेन दृष्टो भवेत् एवं विधो योगो वसुचयो द्रव्यसमूहस्तस्य लाभकरः स्यात् खलु एवं राज्ञो विजयोपि स्यादिति ॥ ७० ॥

अर्थः—पापग्रह नवमें, आठवें, सातवें, स्थानोंको छोड़कर और स्थानों में होवें, शुक्र चौथे तीसरे ग्यारहवें होवै केन्द्रमें स्थित बृहस्पति पर शुक्रकी दृष्टि हो ऐसे योगमें राजा चलै तो राजाको खजाना मिलै ॥ ७० ॥

राजा के विजय का दूसरा योग—

रिपुलग्नकर्महिबुके शशिजे परिवीक्षिते शुभनभोगमनैः ।
व्ययलग्नमन्मथगृहेषु जयः परिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥७१॥

(अन्वयः) रिपुलग्नकर्म हिबुके शशिजे बुधे शुभनभोगमनैः शुभग्रहैश्चन्द्र गुरुशुक्रैः परिवीक्षिते दृष्टे सति, व्ययलग्नमन्मथगृहेषु परिवर्जितेषु रहितेष्व शुभनामधरैः पापग्रहैश्चेत्तदैवं विधे विशिष्टे योगे राज्ञो जय एव स्यादिति ॥

अर्थः—बुध छठें, दशवें, चौथे, लग्न इनमेंसे किसी स्थानमें होवे और शुभग्रहकी दृष्टिहोवै । पापग्रह बारहवाँ, लग्न और सातवाँ स्थानको छोड़कर अन्यस्थानोंमें स्थित होवें, यदि ऐसे योगमें राजा यात्रा करै तो विजय होवै । लक्ष्मी प्राप्त करै ॥ ७१ ॥

राज्य प्राप्ति का योगः—

लग्ने यदि जीवः पापा यदि लाभे
कर्मण्यपि वा चेद्राज्याधिगमः स्यात् ।
धने बुधशुक्रौ चंद्रो हिबुके वा
तद्वत्फलमुक्तं सर्वैर्मुनिवर्यैः ॥ ७२ ॥

(अन्वयः) लग्ने जीवो गुरुर्यदि स्यात्, अथवा लाभे एकादशस्थाने कर्मणि दशमस्थानेऽपि पापग्रहाश्चेत्स्युस्तदा राज्याधिगमः राज्यप्राप्तिर्भवेत्, अथवा

द्यूने सप्तमे बुधशुक्रौ स्यातां चन्द्रश्च हिबुके चतुर्थस्थाने स्यादेवं विधे योगे सर्वैं मुनिवर्यैस्तत्फलमुक्तं राज्यादिगमः स्यात् ॥ ७२ ॥

अर्थः-बृहस्पति लग्नमें, पापग्रह ग्यारहवें, दशवें हों ऐसे योगमें राजा चले तो राज्य प्राप्ति करै। बुध शुक्र सातवें और चन्द्रमा चौथे हों यदि ऐसे योग में राजा चले तो भी आचार्यों का मत है कि राज्य प्राप्त होवै ॥ ७२ ॥

रिपुतनुनिधने शुक्रजीवेंदवो ह्यथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहस्थितौ।
मदनभवनगश्चंद्रमा वांबुगःशशिसुतभृगुजांतर्गतश्चंद्रमा।७३।

(अन्वयः) रिपौ षष्ठे शुक्रः तनौ जीवः निधने अष्टमे इन्दुश्चन्द्रः एतादृशे योगे राज्ञो विजयः स्यादिति. (१) अथ बुधभृगुजौ तुर्यगेहचतुर्थस्थानं तत्र स्थितौ चेत्स्यातां चन्द्रमा मदनभवनगः सप्तमस्थानस्थितश्चेत्स्यात्तदेवं विधे योगे राज्ञो विजयः स्यादिति (२) अथवा चन्द्रमा अंबुगश्चतुर्थः सन् शशिसुत भृगुजयोर्बुधशुक्रयोरन्तगति मध्यवर्ती स्यात् (३) एतादृशे योगे गन्तू राज्ञो विजय एवेति ॥ ७३ ॥

अर्थः—यदि यात्रा लग्नसे छठें घरमें शुक्र और लग्नमें, बृहस्पति, चन्द्रमा आठवें हों तो ऐसे योगमें यात्रा करनेसे जय होवै। बुध शुक्र चौथे, चन्द्रमा सातवें हों तो भी राजाकी जय हो। अथवा चन्द्रमा चौथे, बुध शुक्रके बीच में होवै तो भी राजाकी जय होवै ॥ ७३ ॥

दूसरा राजविजय योग—

सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे चेत्।
क्रमतोऽरिसोदरखगात्रयहोरा हिबुकायगैर्गुरुदिनेऽखिलखेटैः७४

(अन्वयः) सितजीवभौमबुधभानुतनुजाः क्रमेण तनुमन्मथारिहिबुकत्रिगृहे चेत्तदेवं विधे योगे विजयः स्यादेव, गुरुदिने बृहस्पतिवासरे अखिलखेटैः समस्तग्रहैः सूर्यादिभिः सप्तभिः क्रमतोऽरिसोदरखगात्रयहोरा हिबुकायगैश्चेत्तदैतादृशे योगे राज्ञो विजयः स्यादित्यर्थः ॥ ७४ ॥

अर्थः—लग्न में शुक्र हो, सातवें बृहस्पति, छठे मंगल, चौथे बुध, तीसरे शनै श्चर ऐसे योग में यदि राजा यात्रा करै तो जय को प्राप्त होवै। बृहस्पति वारहवें छठे सूर्य, तीसरे चन्द्रमा, दशवें मंगल, छठे बुध, लग्न में बृहस्पति, चौथे शुक्र, ग्यारहवें शनैश्चर होवैं और राजा यात्रा करै तो विजय होवै ॥ ७४ ॥

दूसरे दो दो योग-

सहजे कुजो निधनगश्च भार्गवो
मदने बुधो रविररौ तनौ गुरुः ।
अथ चेत्स्युरीज्यसितभानवो जल-
त्रिगता हि सौरिरुधिरौ रिपुस्थितौ ॥ ७५ ॥

(अन्वयः) अथ सहजे तृतीये कुजो मङ्गलः स्यात् निधनगः अष्टमे भार्गवः शुक्रो मदने सप्तमे बुधः अरौ षष्ठे रविः सूर्यः तनौ लग्ने गुरुः ऐतादृशे योगे गन्तू राज्ञो विजय एव, ईज्यसितभानवो बृहस्पतिशुक्रसूर्याः जलत्रिगताश्चतुर्थ तृतीयस्थानगताश्चेत्स्यु सौरिरूधिरौ शनिमङ्गलौ रिपुस्थितौ भवेतां एवं विधे योगे हि निश्चतं राज्ञो विजयः स्यादिति ॥ ७५ ॥

अर्थः-तीसरे मंगल, आठवें शुक्र, सातवें बुध, छठे सूर्य, लग्नमें बृहस्पति हों ऐसे योगमें राजाकी जय होवै । गुरु शुक्र सूर्य चौथे तीसरे स्थानमें होवें, शनि मंगल छठे स्थानमें हो ऐसे योगमें राजा चले तो अवश्य जयको प्राप्त होवै ॥७५॥

नामविशेषपुरस्कारसे तीन योग फल सहित—

एको ज्ञेज्यसितेषु पंचमतपःकेंद्रेषु योगस्तथा
द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः
योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमं रिपूणां वधं ।
चाथो क्षेमयशोवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन्॥७६॥

(अन्वय)—ज्ञेज्यसितेषु बुध बृहस्पति शुक्रेषु एकोऽपि यथा-बुधो वा गुरु र्वा शुक्रो वा चेत्पंचमतपःकेन्द्रेषु स्यात् तदा योगाख्यो योगः, तथा तेषु ज्ञेज्य शुक्रेषु द्वौ बुध गुरू बुधशुक्रौ वा एषु पंचमतपःकेन्द्रेषु तदा अधियोगः, तथा तेषु ज्ञेज्यशुक्रेषु सकलाः सर्वेऽपिचेत्पंचमतपः केन्द्राणामन्यतमस्थानभेदेन स्थानैक्ये न वा स्थिताश्चेत्स्युः तदा योगाधियोगाख्यो योगः, अथ योगे व्रजन् गच्छन्राजा क्षेमं कुशलं लभते, अधियोगे राजा व्रजन् क्षेमं कुशलं तथा रिपूणां शत्रूणां वध च लभते, योगाधियोगे व्रजन् राजा क्षेमयशोऽवनीः लभते ॥ ७६ ॥

अर्थः—बुध बृहस्पति शुक्र इन तीनोंमें से एक ग्रह पंचम स्थान नाम स्थान और केन्द्रमें हो तो योगाख्य योग कहना, इसमें राजा चले तो आने जाने में कुशल रहे। यदि दो ग्रह उक्त स्थानों में हो तो अधियोगाख्य योग कहना इसमें राजा यात्रा करे तो कुशल से रहे और शत्रु को मारे यह फल होवे तीनों ग्रह उक्त स्थानोंमें होवें तो योगाधियोग होता है इस योग में राजा शत्रु पर चढ़ाई करे तो कुशल, यश, पृथ्वी, शत्रु का वध इतने फलों को प्राप्त होवे ॥७६॥

विजयादशमीसंज्ञक योग—

इषमासि सिता दशमी विजया शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता
श्रवणर्क्षयुता सुतरां शुभदा नृपतेस्तु गमे जयसंधिकरी ।७७

(अन्वयः) सिता शुक्लादशमी इषमासि आश्विने विजयाभिधा तत्र शुभकर्मसु सिद्धिकरी कथिता, श्रवणर्क्षयुता सा विजया सुतरां नितरां नृपतेः गमे गमने चेत्तदा जयसन्धिकरी कथिता ॥ ७७ ॥

अर्थः—आश्विन शुक्लपक्ष दशमीको विजय नाम दशमी होती है सो सम्पूर्ण कामों में सिद्धि करनेवाली होती है यदि श्रवण नक्षत्रसे युक्त होतो बहुतही शुभप्रद होती है इसमें राजा दूसरे राज्य पर चढ़ाई करे तो विजय होवे अथवा संधि (मिलाप) होवे ॥ ७७ ॥

दूसरे अंतःकरण विशुद्धि आदि योग—

चेतोनिमित्तशकुनैः खलु सुप्रशस्तै-
र्ज्ञात्वा विलग्नबलमुर्व्यधिपः प्रयाति ।
सिद्धिर्भवेदथ पुनः शकुनादितोऽपि
चेतोविशुद्धिरधिका न च तां विनेयात् ॥ ७८ ॥

(अन्वयः) अथ चेतोनिमित्तशकुनैः चेतोन्तःकरणम्, निमित्तं मङ्गलस्फुरणादि, शकुनानि पक्षिप्रमाणानि, एतैःखलु अतिसुप्रशस्तैः सद्भिः तथा विलग्नबलमपि ज्ञात्वा उर्व्यधिपो राजा प्रयाति गच्छति तदा सिद्धिर्भवेत्, पुनरपि शकुनादितः सकाशात् चेतो विशुद्धिरधिका तां चेतो विशुद्धिं विना नेयात् न गच्छेत् ॥ ७८ ॥

अर्थः-अंतःकरण शुद्ध, अंगोंका फरकना, शुभ शकुन, यह सब अच्छे होवें और लग्न बली होवै तो राजा मनोवाञ्छित फलको प्राप्त करै और लग्न शुद्ध हो शकुन अच्छा न होवै तो यात्रा न करै यदि शकुन अच्छे हों लग्न शुद्ध हो और चित्त प्रसन्न न होवै तो कदापि यात्रा न करै ॥ ७८ ॥

यात्रामें निषिद्ध निमित्त-

व्रतबंधनदेवताप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसूतकासमाप्तौ ।
न कदापि चलेदकालविद्युद्घनवर्षातुहिनेऽपिसप्तरात्रम् ॥७९

(अन्वयः)-व्रतबन्धनं यज्ञोपवीतम्, देवता प्रतिष्ठा प्रसिद्धा, करपीड़ा विवाहः, उत्सवो होलिकादिः, सूतकं द्विविधं-जननसूतकं मरणसूतकंच, एतेषां समाप्तौ समाप्तिं विना कदापि नैव चलेद्गच्छेत् ॥ विद्युत प्रसिद्धा, घनो घनग र्जितम्, वर्षा वृष्टिः, तुहिनं तुषारः, सप्तरात्रं दिवससप्तकं न चलेत् इति ॥ ७९ ॥

अर्थ-यज्ञोपवीत देवता ओंकी प्रतिष्ठ, विवाह, उत्सव, जनन और मृत अशौच इनके समाप्त होनेके प्रथम यात्रा न करनी चाहिये, बिना समय बिजली और मेघगर्जना मेघवर्षना, बर्फपड़ना, इनके होनेसे सातदिन पर्यन्त कभी भी यात्रा नहीं करनी चाहिये ऐसे समयमें यात्रा शुभ नहीं होती ॥ ७९ ॥

एकदिनसाध्य गमन प्रवेशमें विशेष-

महीपतेरेकदिने पुरात्पुरे यदा भवेतां गमनप्रवेशकौ ।
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैव कदापि पंडितः ॥८०॥

(अन्वयः)-महीपते राज्ञो यदा पुरात्पुरे एक दिने एव गमनप्रवेशकौ भवेतां स्याताम् यस्मिन्नेव दिने एकस्मात्पुराद्गमनं तस्मिन् दिने एव च नगरान्तरे प्रवेशः । तत्र तथा कथंचित्तंचाङ्गशुद्धिमालोच्य, भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिन्यश्च एतान् दोषान् पंडितः कदापि नैव विचारयेत् ॥ ८० ॥

अर्थ-यदि एकही दिनमें एक नगर से दूसरे नगरमें यात्रा और प्रवेश होवै तो पंडितजन नक्षत्र वार दिक्शूल सन्मुख शुक्र योगिनी आदिका विचार न करें ॥ ८० ॥

एक दिनसाध्य गमनप्रवेश करने होवें तो विचार—

यद्येकस्मिन् दिवसे महीपतेर्निर्गमप्रवेशौ स्तः ।

तर्हि विचार्यः सुधिया प्रवेशकालो न यात्रिकस्तत्र ॥ ८१ ॥

(अन्वयः) महीपते राज्ञः यदि एकस्मिन्दिवसे निर्गमप्रवेशौ स्तः तर्हि सुधिया तत्र प्रवेशकालो यात्रिकः गमनशीलः न ।विचार्यः ॥ ८१ ॥

अर्थः-यदि एकही दिन आना और जाना होय तो प्रवेशकाल विचार योग्य है जानेके समय का न विचार करै ॥ ८१ ॥

प्रायशः नवमीका निषेध—

प्रवेशान्निर्गमं तस्मात्प्रवेशं नवमे तिथौ ।
नक्षत्रे च तथा वारे नैव कुर्यात्कदाचन ॥८२॥

(अन्वयः) प्रवेशात् गृहप्रवेशतिथितोनवमे तिथौ निर्गमं गमनं न कुर्यात् एवं तस्मात् गमनदिवसान्नवमतिथौ गृहप्रवेशं न कुर्यात् । यस्मिन्नक्षत्रे गृहप्रवेशः कृतस्ततो नवमे नक्षत्रे प्रयाणं न कार्यम् । यथा-मृगे प्रवेशो हस्ते गमनम् । एवं वारेपि विचार्य्यम् । यथा बुधवारे प्रवेशस्ततो नवमे दिवसे गुर्वाख्ये कदाचन प्रयाणं नैव कुर्यात् ॥ ८२ ॥

अर्थ-प्रवेश के तिथि नक्षत्र वार इन्हीं नवम तिथि नक्षत्र वारोंमें गमन नहीं करै और गमन दिन से नवें तिथि नक्षत्र वारों में प्रवेश न करै ॥ ८२ ॥

यात्रा करने के दिन विधि—

अग्निं हुत्वा देवतां पूजयित्वा
नत्वा विप्रानर्चयित्वा दिगीशम् ।
दत्त्वा दानं ब्राह्मणेभ्यो दिगीशं
ध्यात्वा चित्ते भूमिपालोऽधिगच्छेत् ॥ ८३ ॥

(अन्वयः)-गमनसमये अग्निं हुत्वा हवनं कृत्वा देवतां पूजयित्वा, विप्रान् नत्वा, दिगीशमर्चयित्वा, ब्राह्मणेभ्यो दानं दत्वा, चित्ते अन्तः करणे दिगीशं ध्यात्वा भूमिपालः अधिगच्छेत्, ॥ ८३ ॥

अर्थः-राजा अग्निमें हवन करके देवताओं का पूजन करके ब्राह्मणों को नमस्कार करके और दिशाके स्वामीको पूजा करके ब्राह्मणोंको दान देकर दिग्स्वामीकाहृदय में ध्यान करके यात्रा करै ॥ ८३ ॥

नक्षत्रोंके दोहद (ईप्सित अर्थ)--

कुल्माषांस्तिलतंडुलानपि तथा माषांश्च गव्यं दधि
त्वाज्यं दुग्धमथैणमांसमपरं तस्यैव रक्तं तथा।
तद्वत्पायसमेव चाषपललं मार्गं च शाशं तथा।
षाष्ठिक्यं च प्रियंग्वपूपमथवा चित्रांडजान् सत्फलम्॥८४॥
कौर्मं सारिकगौधिकं च पललं शाल्यं हविष्यं हया-
दृक्षे स्यात्कृसरान्नमुद्गमपि वा पिष्टं यवानां तथा।
मत्स्यान्नं खलु चित्रितान्नमथवा दध्यन्नमेवं क्रमा-
द्भक्ष्याभक्ष्यमिदं विचार्य मतिमान् भक्षेत्तथालोकयेत्॥८५॥

(अन्वयः) गमनसमये अश्विन्यादिः सप्तविंशतिभेषु नक्षत्रदोहदम्। कुल्मा षांस्तिलतण्डुलानपि तथा माषांश्चेत्यादिक मिदमेवं क्रमात् भक्ष्याभक्ष्यं मतिमान् विचार्य भक्षयेत् तथा आलोकयेत्पश्येदित्यर्थः॥ ८४॥ ८५॥

अर्थः-अश्विन्यादि नक्षत्रोंमें निम्न लिखित पदार्थों का भक्ष्य समझे तो भक्षण करै नहीं तो स्पर्शकर लेवे यदि स्पर्श करना योग्य न समझे तो दृष्टि से यात्रा समय में देखलेवे। पाकला (खड़े भीगे उड़द) १ तिल २ चावल ३ उड़द ४ गौका दही ५ गौ का घृत ६ गौका दूध ७ हरिणमांस ८ मृग रक्त ९ खीर १० चषया का मांस ११ मृग मांस १२ खरहा का मांस १३ साठीका चावल १४ प्रियंगु १५ पूडा १६ अनेक वर्णका पक्षी १७ उत्तम फल॥ ८४॥

ज्येष्ठा आदि नक्षत्रके दोहद --

अर्थः--१८ कछुआका मांस १९ मैनाका मांस २० गोहका मांस २१ शल (सेह) का मांस २२ मूँग २३ खिचड़ी २४ मूँगचावल २५ जवका सत्तू २६ मछली का मांस २७ अनेकवर्ण का चावल २८ दही भात ये भक्ष्याभक्ष्य अश्विनी आदि नक्षत्रोंमें क्रमसे उक्त क्रिया कर इससे दुष्ट नक्षत्र दोष दूर होता है॥८५॥

दिशाओं के दोहद--

आज्यं तिलौदनं मत्स्यं पयश्चापि यथाक्रमम्।

भक्षयेद्दोहदं दिश्यमाशां पूर्वादिकां व्रजेत् ॥ ८६ ॥

(अन्वयः) आज्यं घृतं पूर्वस्यां, तिलौदनं दक्षिणस्यां, मत्स्यं प्रसिद्धं पश्चिमायां, पयो दुग्धमुत्तरस्याम्, एतदपि यथाक्रमं दिश्यमभीष्टदिग्भवं दोहदं भक्षयेत् ततः पूर्वादिकां आशां दिशं व्रजेत् गच्छेत् ॥८६॥

अर्थः-पूर्व के गमन में घृत भोजन करै दक्षिण के गमन में तिल चावल, पश्चिम के गमन में मच्छी (मछली) उत्तर के गमन में दूध भक्षण करके यात्रा करै तो शुभ है ॥ ८६ ॥

सूर्य आदि वारों के दोहद-

रसालां पायसं कांजीं शृतं दुग्धं तथा दधि ।
पयोऽशृतं तिलान्नं च भक्षयेद्वारदोहदम् ॥ ८७ ॥

(अन्वयः) यथा रसला शर्करादधिमरीचकर्पूरैलासंसृष्टा लोके शिखरिणीति प्रसिद्धा, तां रविवारे । पायसकांज्यौ चन्द्रमंगल वारयोः । शृतं पक्वं दुग्धं बुधवारे । दधि गुरुवारे । पयोऽशृतं अशृतमपक्वं दुग्धं शुक्रवासरे । तिलान्नं तिलमिश्रमोदनं शनौ तथा चैतद्वारदोहदं रविवारादौ क्रमेण भक्षयेत् ततः गमनं व्रजेत् ॥ ८७ ॥

अर्थः-सिखरण १ खीर २ काजी ३ पका दूध ४ दही ५ बिना पका दूध ६ तिल मिला चावल ७ ये वस्तुक्रम से रतवार आदि सात वारोंमें भक्षण करै तो दुष्टवार दोष दूर हो जावै ॥ ८७ ॥

प्रतिपदा आदि तिथियोंके दोहद—

पक्षादितोऽर्कदलतंडुलवारि सर्पिः-
श्राणा हविष्यमपि हेमजलं त्वपूपम् ।
भुक्त्वा व्रजेद्रुचकमंबु च धेनुमूत्रं
यावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् ॥ ८८ ॥

(अन्वयः) पक्षादितः प्रतिपदादि पञ्चदशतिथिषु क्रमेण अर्कदलतन्डुल वारिसर्पिःश्राणा हविष्यमपि हेमजलं त्वपूपं रुचकमम्बु च धेनुमूत्रं यवान्नपायस

गुडानसृगन्नमुद्गान् तिथिदोहदं भुक्त्वा भोजनं कृत्वा व्रजेत् गच्छेत्। पक्षयो-रुभयोरेवं यात्रायोगे विधिः कथितः इति ॥ ८८ ॥

अर्थः-आकके पत्ते १ प्रतिपदा को, तण्डुलजल २ को घृत ३ यवागू ४ को मूँग आदि ५ को सुवर्ण जल, ६ को मालपूवा ७ को विजोरा ८ को जल ६ को गोमूत्र १० को यवविकार ११ को खीर १२ को गुड़ १३ को रुधिर १४ को मूंग १५ को अमावास्या पूर्णिमा को ये उभय पक्ष तिथि दोहद दोषों के नाशके लिये भक्षण तथा स्पर्श तथा अवलोकन करै ॥ ८८ ॥

गमन समय में कर्तव्य विधि—

उद्धृत्य प्रथमत एव दक्षिणांघ्रिं
द्वात्रिंशत्पदमभिगत्य दिश्ययानम् ।
आरोहेत्तिलघृतहेमताम्रपात्रं
दत्वादौ गणकवराय च प्रगच्छेत् ॥ ८६ ॥

(अन्वयः) राजागमनसमय एव प्रथमतो दक्षिणांघ्रिं दक्षिणचरणमुद्धृत्य पश्चात् द्वात्रिंशतं पदं द्वात्रिंशत्पदपरिमितां भूमिं अभिगत्य गत्वा दिश्ययानं वक्ष्यमाणं दिग्विशेषं हस्तादियानं आरोहेत। आरोहणसमये तिलघृतहेमताम्र पात्रं आदौ गणकवराय ज्यौतिर्विच्छ्रेष्ठाय चकारादन्येभ्योपि ब्राह्मणेभ्यो यथा शक्ति दानं दत्वा प्रगच्छेत् इति ॥ ८६ ॥

अर्थः-राजा प्रथम बत्तीसपद दक्षिण पग उठाकर चलै और दिशा विशेष सवारी पर चढ़ते वक्त तिल घृत सुवर्ण तांबा का पात्र ये ज्योतिषी को देकर-यात्रा करै ॥ ८६ ॥

कौनसी दिशा में कौन से वाहन से जाना—

प्राच्यां गच्छेद्गजेनैव दक्षिणस्यां रथेन हि ।
दिशि प्रतीच्यामश्वेन तथोदीच्यां नरैर्नृपः ॥६०॥

(अन्वयः) यथा गमनसमये प्राच्यां पूर्वदिशायां गजेन, दक्षिणस्यां रथेन, प्रतीच्यां दिशि अश्वेन, तथा उदीच्यां उत्तरस्यां नरैर्नृयानैः नृपः गच्छेत् ॥ ६० ॥

अर्थः-हाथी की सवारी से पूर्वदिशा की यात्रा करै। रथ करके दक्षिण को, घोड़ा करके पश्चिम को, पालकी करके उत्तर को यात्रा श्रेष्ठ है ॥ ६० ॥

निर्गम के स्थान आदिका विस्तार—

देवगृहाद्वा गुरुसदनाद्वा स्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ।
प्राश्य हविष्यं विप्रानुमतः पश्यन् शृण्वन्मंगलमेयात् ॥९१॥

(अन्वयः) देवा विष्णवादयः पूज्यन्ते यस्मिन् गृहे तद्देवगृहं, गुरुरध्यापकः स्वस्य कुलगुरुर्वा, स्वगृहं स्वशयनागृहम्, बहुस्त्रीसत्वे मुख्यकलत्रं पट्टराज्ञी तद्गृहं एषां मध्ये मनोभीष्टात् स्थानात् भोजनसम्भवे हविष्यमन्नं प्राश्य भक्षयित्वा विप्रानुमतः कृतोत्सवः मंगलं मंगलद्रव्यं मनोभीष्टं पश्यन् सन् शृण्वन् सन् एयात् गच्छेदिति ॥ ९१ ॥

अर्थः-राजा गमन समय में देवस्थान से या गुरुस्थान से वा निज गृहसे वा पटरानी के स्थान से हविष्य भोजन करके ब्राह्मण की आज्ञा से मंगल वस्तु देखता हुआ और मंगल शब्द सुनता हुआ गमन करै ॥ ९१ ॥

प्रस्थान करना होवे तो क्रम से वस्तु—

कार्याद्यैरिह गमनस्य चेद्विलंबो भूदेवादिभिरुपवीतमायुधं च ।
क्षौद्रं चामलफलमाशु चालनीयं सर्वेषां भवति यदेव हृत्प्रियं वा ॥९२॥

(अन्वयः) कार्याद्यैः इह किंचिदावश्यकं कार्यं ना भूदिति गमनस्य चेद्विलम्बः स्यात्तदा विचारिते यात्रालग्ने भूदेवादिभिर्ब्राह्मणप्रभृतिभिरेतानि वस्तूनि आशु चालनीयानि प्रस्थापनीयानि । यथा ब्राह्मणेनोपवीतम्, क्षत्रियेणायुधं, वैश्येन मधु, शूद्रेण आमलकफलं, नारिकेलादि । वा अथवा सर्वेषां वर्णानांयदेव हृत्प्रियं मनोभीष्टं तदेव भवति ॥ ९२ ॥

अर्थः—यदि यात्रा के मुहूर्त के दिन आवश्यकीय कार्य्यवश यात्रा न कर सके तो ब्राह्मण यज्ञोपवीत, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद, शूद्र आँवला, (नारियल फल) अथवा जिसको जो पदार्थ प्रिय हो अथवा रोजगार विशेष से वस्तु प्रस्थान धरे ॥ ९२ ॥

प्राचीन आचार्यों के मत से प्रस्थान का परिमाण—

गेहाद्गेहांतरमपि गमस्तर्हि यात्रेति गर्गः ।
सीम्नः सीमांतरमपि भृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ॥

प्रस्थानं स्यादिति कथयतेऽथो भरद्वाज एवं ।
यात्रा कार्या बहिरिह पुरात्स्याद्वसिष्ठो ब्रवीति ॥९३॥

(अन्वयः) गेहाद्गेहान्तरमपि स्वगृहात्परगृहमतिसमीपवर्त्यपि तत्रापि चेत् गमो गमनं स्यात्तर्हि यात्रा जातेति गर्गः कथयते । अथवा सीम्नः स्वग्रामसीमामुल्लंघ्य सीमान्तरं ग्रामान्तरसीमां प्राप्य वसेदिति भृगुः कथयते । अथ बाणविक्षेपमात्रं प्रस्थानं स्यादिति भरद्वाजः कथयते । अथवा इह पुरान्नगराद् बहिर्यात्रा कार्या स्यादित्येवं वसिष्ठो ब्रवीति ॥ ९३ ॥

अर्थः–गर्गाचार्य के मत से घर से दूसरे घर जाकर ठहरे उसको भी यात्रा कहते हैं । शुक्राचार्य के मत से सीमा से दूसरी सीमा में जाने को यात्रा कहते हैं और भरद्वाज एक बाण पहुँचने तक की दूर को यात्रा कहते हैं । वसिष्ठ जी नगर से बाहर जाने को यात्रा कहते हैं ॥ ९३ ॥

मुनियों के मत से प्रस्थान का प्रमाण–

प्रस्थामत्रधनुषां हि शतानि पञ्च
केचिच्छतद्वयमुशंति दशैव चान्ये ।
संप्रस्थितो य इह मंदिरतः प्रयातो
गंतव्यदिक्षु तदपि प्रयतेन कार्यम् ॥९४॥

(अन्वयः) अत्र गमन समये (१) तादृशानां धनुषां पञ्च शतानि शतद्वयं हस्तसहस्रद्वयमिति यावत् । स्वगृहात्तावद्धस्तावधि प्रस्थानं स्यादिति केचिदाहुः । अन्ये तु तादृशानां धनुषां शतद्वयं अष्टौ शतानि हस्ता,स्तावत्प्रस्थानमित्याहुः । अपरे तु इह यात्राकाले मन्दिरतः स्वगृहाद्दशैव धनूंषि चत्वारिंशद्धस्तास्तावद्दूरे संप्रस्थितः प्रयात एव तदपि प्रस्थानं प्रयतेन सविधानेन राजादिना गन्तव्यदिक्षु यस्यां दिशि गमनं चिकीर्षितं तद्दिगभिमुखं कार्यमिति ॥९४॥

अर्थः—कितने ऋषि तो पाँच सौ धनुष (दो हजार हाथ) प्रस्थान कहते हैं, कोई आठ सौ हाथ कहते हैं, कोई दश धनुष कहते हैं । चार हाथ का एक धनुष होता है सो प्रस्थान जिस दिशा में जाना होय उसी तरफ धरे ॥ ९४ ॥

---

(१) हस्तैश्चतुर्भिर्भवतीह दण्डमित्यादिना धनुषः प्रमाणम् ॥

राजा आदिके प्रस्थान में दिनों का प्रमाण-

प्रस्थाने भूमिपालो दशदिवसमभिव्याप्य नैकत्र तिष्ठेत्
सामंतः सप्तरात्रं तदितरमनुजः पञ्चरात्रं तथैव ।
ऊर्ध्वं गच्छेच्छुभाहेऽप्यथ गमनदिनात्सप्तरात्राणि पूर्वं
चाशक्तौ तद्दिनेऽसौ रिपुविजयमना मैथुनं नैव कुर्यात् ॥ ९५ ॥

(अन्वयः) अथ भूमिपाल एकत्र प्रस्थाने दशदिवसमभिव्याप्य दशाहोरात्राणि न तिष्ठेत् न वशेदित्यर्थः । सामन्तो मांडलिकश्चतुर्द्धारिक एकत्र प्रस्थाने सप्तरात्रं न वशेत् । तदितरमनुजः ब्राह्मणादिः तथैव एकत्र प्रस्थाने पञ्चरात्रं न वशेत् । ऊर्ध्वं अवधि दिवसातिक्रमानन्तरं पुनर्गृहमागत्य शुभाहे पूर्वोक्त प्रकारेण विचारितशुभदिवसे गच्छेत् । अथ असौ राजादिः रिपुविजयमना शत्रुजये कृतांत करणः सन् गमनदिनात्पूर्वं सप्तरात्राणि मैथुनं नैव कुर्यात् । अशक्तौ च तद्दिनेऽपि मैथुनं स्त्री गमनं नैवकुर्यात् ॥ ९५ ॥

अर्थः-राजा प्रस्थान में दशदिन नहीं ठहरे माण्डलिक राजा सात रात्रि न ठहरे और मनुष्य पांच रात्रि न रहे यदि रह भी जावै तो घर आकर दूसरा मुहूर्त शुभ दिन में करे महाराजा शत्रुजीतने की इच्छा वाला यात्रा दिनसे सात दिन प्रथम मैथुन न करे और यदि ऐसा न कर सके तो एक रात्रि अवश्य मैथुन न करे ॥ ९५ ॥

प्रस्थान में त्याज्य वस्तु—

दुग्धं त्याज्यं पूर्वमेव त्रिरात्रं क्षौरं त्याज्यं पंचरात्रं च पूर्वम् ।
क्षौद्रं तैलं वासरेऽस्मिन्वमिश्च त्याज्यं यत्नाद्भूमिपालेन नूनम् ॥ ९६ ॥

(अन्वयः) यात्रादिनात्पूर्वं भूमिपालेन यत्नात् त्रिरात्रंदुग्धं त्यज्यम् । एवंच पंचरात्रं पूर्वं क्षौरं क्षौर सबन्धि मुंडनं श्मश्रु कर्म च त्याज्यम् । अस्मिन्वासरे यात्रा दिने क्षौद्रं मधुभक्षणेन तैलं तैललेपनं त्याज्यम् । वमिश्च वमनं चकारदेव शरीरशोधनार्थं बलात्कारकृताऽवा यात्रा दिनेपि निषिद्धा नूनं निश्चितम् ॥ ९६ ॥

अर्थः-दूध तीन रात्रि प्रथम त्याग करे, हजामत पांच दिन पहले त्यागदे और यात्रा के दिन शहद खाना, तेल लगाना, उलटी (वमन) ये सब वर्जित हैं ॥ ९६ ॥

भुक्त्वा गच्छति यदि चेत्तैलगुडक्षारपक्वमांसानि ।
विनिवर्तते स रुग्णः स्त्रीद्विजमवमान्य गच्छतो मरणम् ॥६७॥

(अन्वयः) यदि चेत् तैलगुडक्षारपक्वमांसानि यो भुक्त्वा भोजनं कृत्वा गच्छति स राजादी रुग्णो रोगसहितो विनिवर्तते निवर्तते । अथ गमन समये, स्त्रीद्विजं अवमान्य मान भङ्गं कृत्वा गच्छतः पुंसो मरणं स्यादिति ॥ ६७ ॥

अर्थः-तेल गुड क्षार पका मांस ये वस्तु भोजन करके चले तो रोगी होकर पीछे लौट आवे । ब्राह्मण और स्त्री का तिरस्कार करके जाय तो मृत्यु होती है ॥६७॥

यदि मासु चतुर्षु पौषमासादिषु वृष्टिर्हि भवेदकालवृष्टिः ।
पशुमर्त्यपदांकिता न यावद्वसुधा स्यान्नहि तावदेव दोषः ॥६८॥

(अन्वयः) पौषमासादिषु चतुर्षु पौषमाघफाल्गुनचैत्राख्येषु मासु मासेषु यदि वृष्टिर्भवेत् हिनिश्चितंतर्हि अकालवृष्टिरुच्यते । यदि वसुधा पृथिवी पशुमर्त्यपदाङ्किता पशवो गावादयः मर्त्या मनुष्या स्तेषां पादै अरणै रंकिता चिन्हिता न भवति तावदकालवृष्टि दोषो नहि स्यादेव ॥ ६८ ॥

अर्थः-जो पौषके महीनेसे लेकर चार महीनेमें वर्षा होवै सो अकाल वृष्टि कही गई है । यदि इस वर्षामें मनुष्य या पशुके पदसें पृथ्वी चिहित न हो तो अति दोष और चिहित होवै तो दोष नहीं है ॥ ६८ ॥

आवश्यक यात्रामें दुष्ट शकुन आदिकों की शांति-

अल्पायां वृष्टौ दोषोऽल्पो भूयस्यां दोषो भूयान् ।
जीमूतानां निर्घोषे वृष्टौ वा जातायां भूपः ।
सूर्येन्दोर्बिंबे सौवर्णे कृत्वा विप्रेभ्यो दद्या-
द्दुःशाकुन्ये साज्यं स्वर्णं दत्वा गच्छेत्स्वेच्छाभिः ॥६९॥

(अन्वयः) अल्पायामकालवृष्टावल्पो दोषः स्यात् भूयस्यां अकालवृष्टौ भूयानतिशयेन महान्दोषः स्यात् । जीमूतानां मेघानां निर्घोषे शब्दे वृष्टौ जातायां वा सूर्येन्दोर्बिम्बे सौवर्णे कृत्वा भूयो राजा विप्रेभ्यो दद्यात् । दुःशाकुन्ये दुष्टे शकुने प्रस्थानकाले संभूते सति साज्यं संघृतं स्वर्णं सुवर्णं ब्राह्मणेभ्यो दत्वा स्वेच्छाभिगच्छेत् ॥ ६९ ॥

अर्थः-अकालवृष्टि अधिक होनेसे अधिक दोष और कम होनेसे कम दोष होता है और अकाल वृष्टि होवे अथवा मेघ गर्जे तो राजा सुवर्णका चन्द्रमा सूर्यका बिंब बना कर ब्राह्मणोंको देवै और दुष्ट शकुनमें सुवर्ण घृतदान देकर यात्रा करै।९९।

शुभसूचना करनेवाले शकुन—

विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषम् ।
सद्वाक्यं कुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणि मृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥१००॥
आदर्शांजनधौत वस्त्ररजका मीनाज्यसिंहासनं
शवि रोदनवर्जितं ध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ।
भारद्वाजनृयानवेदनिनदा मांगल्यगीतांकुशा
दृष्टाः सत्फलदाः प्रयाणसमये रिक्तो घटः स्वानुगः ॥१०१॥

(अन्वयः) विप्राश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषमित्यादिभिः एते पदार्था गन्तुर्भूपादेः प्रयाणसमये यात्राकाले संमुखं दृष्टाः सत्फलदाः शुभफलदाः स्युः । तथा रिक्तोघटः जलरहितो कलशः स्वानुगः स्वस्य पश्चाद्भाग गामी सोपि शुभफलदः स्यात् ॥ १००-१०१ ॥

अर्थः—दो अथवा बहुत ब्राह्मण, घोड़ा, हस्ती, फल, अन्न, दूध, दही, गौ, सरसो कमल, वस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, पपैया, नेउला, बँधा एक पशु, मांस, श्रेष्ठवाक्य, फल, ऊख, भरा कलश, छाता, मृत्तिका, कन्या, रत्न, पगडी, सफेद बैल बिना बँधा मदिरा, पुत्रवती स्त्री, जलती अग्नि यह पदार्थ गमन समय में देखे तो अति शुभ है ॥ १०० ॥ सीसा, काजल, धोवा वस्त्र लिया हुआ धोबी, मछली, घृत, सिंहासन, रोदन रहित मुर्दा, ध्वजा, शहद, मेढा धनुष, गोरोचन, भरद्वाज पक्षी, नृयान (पालकी) वेदध्वनि, मांगलिक गान, अंकुश ये पदार्थ यात्रा के समय में सन्मुख आवें और बिना जलका घडा लिया हुआ आदमी पीछे आता हो तो अति श्रेष्ठ है ॥ १०१ ॥

अशुभसूचक अपशकुन—

वंध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेंधनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ।
नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतिता व्यंगक्षुधार्ता असृक्
स्त्रीपुष्पं सरटः स्वगेहदहनं मार्जारयुद्धं क्षुतम् ॥१०२॥
काषायी गुडतक्रपंकविधवाकुब्जाः कुटुम्बे कलि-
र्वस्त्रादेः स्खलनं लुलायसमरं कृष्णानि धान्यानि च ।
कार्पासं वमनं च गर्दभरवो दक्षेऽतिरुट् गर्भिणी
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोऽन्धबधिरोदक्या न दृष्टाः शुभाः ॥१०३॥

(अन्वयः) वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणांगारेन्धनक्लीबविट् तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट् तृणव्याधिता । एते पदार्थाः गन्तुर्भूपादेर्यात्रासमये दृष्टाः सन्तो न शुभाः न शुभफलदाः स्युः किन्तु गमने अशुभ फलदाः ॥ १०२-१०३ ॥

अर्थः—बांझ स्त्री, चर्म, धानकी भूसी, हाड़, सर्प, लवण, अँगार, इंधन, हिजड़ा, विष्ठा लिये पुरुष, तैल, पागल, वसा। (चर्बी) औषध, शत्रु, जटावाला, संन्यासी, तृण, रोगी, बालक को छोड़ और कोई नंगा मनुष्य, तेल लगा कर बिना स्नान किया हुआ, छूटे केश, जाति से पतित, कान नाक कटा (अंग भंगी) भूखा, रुधिर, रजोधर्मवती स्त्री, गिरगिट, निज घर का जलना, बिलाओं का लड़ना, छींक, ये सन्मुख यात्रा समय में अशुभ हैं ॥ १०२ ॥ गेरू से रँगे कपड़े वाला, गुड, छांछ, कीच, विधवा स्त्री, कुबड़ा, कुल में लड़ाई, शरीर से वस्त्र गिर पड़ना, भैंसों की लड़ाई, काला अन्न रूई, वमन दहिने हाथ गधे का शब्द, अति क्रोध, गर्भवती, शिर मुँड़ा, गीले वस्त्रवाला, दुष्ट वचन बोलनेवाला, अन्धा, बहिरा, ये पदार्थ यात्रा समय में सन्मुख आवें तो अति निन्दित हैं ॥ १०३ ॥

दूसरे शुभशकुन—

गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं

नो शब्दो न विलोकनं च कपिऋक्षाणामतो व्यत्ययः ।
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे
व्यत्यस्ताःशकुना नृपेक्षणविधौ यात्रोदिताः शोभनाः १०४

(अन्वयः) गोधाजाहकसूकराहिशशकानां कीर्तनं शोभनं स्यात् । च पुनः गोधादीनां शब्दोरुतो विलोकनं दर्शनं च न शोभनं । अतः अत्र गमनसमये कपिऋक्षाणां व्यत्ययः यथा वानराणां भल्लूकानां कीर्तनं निषिद्धम् । तेषामेव शब्दितं दर्शनं वा न निषिद्धं किन्तु शोभनमिति । नद्युत्तारभयप्रवेशसमरे नष्टार्थसंवीक्षणे एतत्सम्बन्धिनि गमने क्रियमाणे सति प्रागुक्ताः शुभाशुभाः शकुनाः व्यत्यस्ताः ज्ञेयाः । नृपेक्षणविधौ दर्शनार्थगमने यात्रोदिताः यात्रायामुदिता विप्राश्वेभेत्यादयः शुभशकुनाः शोभनाः ज्ञेयाः ॥१०४॥

अर्थः-गोह, जाहा, सूकर, सर्प, खरगोश इनका शब्द शुभ है । निज वा पर मुख से इनका नाम लेना शुभ है परन्तु इनका शब्द और दर्शन शुभ नहीं है रीछ वानर का इनसे विपरीत फल है । नदी का तैरना, भय कार्य, गृह प्रवेश, नष्ट वस्तु का देखना इनमें विपरीत शकुन शुभ हैं, राजा के दर्शन में यात्रा में कहे शकुन शुभ हैं ॥ १०४ ॥

कोकिलादि शकुन-

वामांगे कोकिला पल्ली पोतकी सूकरी रला ।
पिंगला छुच्छुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥१०५॥

(अन्वयः) कोकिलापल्लयौ प्रसिद्धौ पोतकी दुर्गेति पितृचरणाः, सूकरी जात्यचटिका, रला पक्षिविशेषः । पिंगला भैरवी, छुच्छुका छुच्छुन्दरी, शिवा शृगाली, पुरुषसंज्ञिताः कपोतादयः । एते गच्छतां राजादीनां वामांगे शरीरवाम भागे शस्ताः स्युः ॥ १०५ ॥

अर्थः—कोयल, छिरकल पोतकी, सूकरी (रल पिंगला) छुछुन्दरि, सियारिन और पुरुष संज्ञक (कपोत खञ्जन तीतर इत्यादि) पक्षी यदि राजा को यात्रा समय में वाम भागमें हों तो शुभ है ॥ १०५ ॥

छिक्करः पिक्ककोः भासः श्रीकण्ठो वानरो रुरुः ।
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानाः स्युर्दक्षिणाः शुभाः ॥१०६॥

(अन्वयः) छिक्करो मृगजातिः, पिक्कः पक्षिविशेषः, भासःपक्षी, श्रीकण्ठः पक्षिविशेषः, वानरः, रुरुमृगविशेषः, स्त्रीसंज्ञकाः, काकः, ऋक्षो भल्लूकः, एते यात्रायां गन्तुर्भूपादेः दक्षिणभागगताः शुभाः शुभफलदाःस्युः ॥ १०६ ॥

अर्थः—छिक्कर, पिक्कक, (पपीहा) भास, श्रीकण्ठ, वानर, रुरुमृग, (काला मृगा) कउवा, ऋक्ष, (रीछ) कुत्ता, और यात्री संज्ञक पक्षी यदि यात्रा समयमें दक्षिण भाग में हों तो शुभ होता है ॥ १०६ ॥

अन्य कई पक्षियोंके प्रदक्षिणगमनमें—

प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठा यात्रायां मृगपक्षिणः ।
ओजा मृगा व्रजंतोऽतिधन्या वामे खरस्वनः॥ १०७ ॥

(अन्वयः) मृगपक्षिणः यात्रायां प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठाः शुभफलदाः स्युः परंतु मृगा ओजा विषमसंख्या स्त्रिपंचसप्तादयश्चेद् व्रजन्तो दृष्टा स्युस्तदा अतिधन्याः । स्ववामभागे खरस्वनो गर्दभशब्दोतिधन्यः ॥ १०७ ॥

अर्थः-दहिने तरफ आये हुये मृगा और पक्षी, यात्रामें शुभ हैं । विषम संख्य कमृग चलते हुए शुभ हैं, यात्रा समय में बायें तरफ गदहेका शब्द शुभ है ॥१०७॥

आवश्यकतामें दुष्ट शकुनका परिहार-

आद्येऽपशकुने स्थित्वा प्राणानेकादश व्रजेत् ।
द्वितीये षोडश प्राणांस्तृतीये न क्वचिद्व्रजेत् ॥ १०८ ॥

(अन्वयः) अत्र गमन समये यदा अपशकुने 'वन्ध्या चर्म' इत्यादिके विरुद्धे शकुने आद्ये प्रथमे संजाते सति एकादश संख्यकान् प्राणान् स्थित्वा, तत्रापि द्वितीये दुष्टशकुने षोड़शसंख्यकान् प्राणान् स्थित्वा शुभशकुने व्रजेत । तत्रापि पुनस्तृतीये दुष्टशकुने संवृत्ते क्वचिद् न व्रजेत् किन्तु परावृत्य गृहं गच्छेत् ॥ १०८ ॥

अर्थः--जरूरी कार्यमें अपशकुन हो जावै तो ग्यारह श्वास ठहर कर चलै । दूसरे अपशकुनमें सोलह श्वास ठहर जावै और तीसरे अपशकुनमें कदापि न यात्रा करै, यदि यात्रा करे तो अति अशुभ है ॥ १०८ ॥

यात्रासे फिर गृहप्रवेशमें मुहूर्त—
इष्ट नक्षत्रसे आय विस्तार का प्रमाण-

यात्रानिवृत्तौ शुभदं प्रवेशनं

मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः पुनर्गमः ।
द्वीशेऽनले दारुणभे तथोग्रभे
स्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनं क्रमात् ॥ १०६ ॥

(अन्वय.) मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैः नक्षत्रैः राज्ञां यात्रानिवृत्तौ प्रवेशनं शुभदं स्यात् । पुनरपिराज्ञो गमो यात्रा स्यात् । तस्मादेतानि मध्यमानि । द्वीशेऽनले दारुणभे मूलज्येष्ठाद्रिश्लेषासु नक्षत्रेषु तथा उग्रनक्षत्रे प्रवेशे क्रमात् स्त्रीगेह पुत्रात्मविनाशनंस्यादित्यर्थः ॥ १०६ ॥

अर्थः-यात्रासे लौटकर मृदु ध्रुव संज्ञा वाले नक्षत्रोंमें प्रवेश शुभ होता है, यदि क्षिप्र और चर संज्ञक नक्षत्रोंमें प्रवेश करे तो फिर शीघ्र ही यात्रा करनी पड़ती है, अतः ये नक्षत्र प्रवेशमें मध्यम है । यदि विशाखा कृत्तिका दारुण उग्र संज्ञक नक्षत्रोंमें घरमें प्रवेश करे तो स्त्रीय घर पुत्र आत्मा का क्रमसे नाश होवै।।१९॥

विवाहप्रकरणोक्त दोषोंका पुनः स्मरण—

(अन्वयः) अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसम्मुखसितज्ञदिक्कपाः भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डकोयुवतीरजःअपि अशुचिता जननाशौचं मरणाशौचं च उत्सवादिकं विवाहादिकम् । एते दोषा विवाहप्रकरणोकाश्च दोषा यात्रायां कर्त्तव्यायां नेष्टाः ॥ ११० ॥

अर्थः—अयन नक्षत्र मास तिथि काल वार इनसे उत्पन्न दोष दिक्शूल शुक्र बुध दिशाके स्वामी का सन्मुख होना, शुक्र वक्री अस्त क्षीण पराजित बालवृद्ध दोष परिघदंड रजस्वला स्त्री का जन्म मरणका अशौच उत्सव आनन्द दीपोत्सव आदि शब्दसे विवाह यज्ञोपवीत ऐसे समयमें, राजा यात्रा कदापि न करै ॥ ११० ॥

मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्चसौरिरविभौमवासराः ।
अपि वामपृष्ठगविधुस्तथाडलोवसुपंचकाभिजिदथापिदक्षिणे१११

(अन्वयः) मृतपक्षरिक्तरवितर्कसंख्यकाः तिथयः सौरिरविभौमवासराः वापि वामपृष्ठगविधुश्चन्द्रः तथा अड्लो योगः अथापि वसुपंचकाभिजित् । एते पंचांगदोषाः ॥ १११ ॥

अर्थः—मृतपक्ष चौथ नवमी चतुर्दशी द्वादशी छठ अष्टमी पूर्णिमा अमावस शुक्लपक्ष की प्रतिपदा शनैश्चर एतवार मंगलवार पीछे चन्द्रमा आडलमुहूर्त

दक्षिण दिशाकी यात्रामें पंचक (अर्ध धनिष्ठा से लेकर रेवतीपर्यन्त) अभिजित् मुहूर्त यह सब अशुभ हैं ॥ १११ ॥

अब लग्नके दोषोंका विवरण—

लग्नं जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्च षष्ठं तदीशा
वा लग्ने कुंभमीनर्क्षनवलवतनू चापि पृष्ठोदयं च ।
पृष्ठाशामृक्षसंस्थं दशमशनिरथो सप्तमे चापि काव्यः
केंद्रे वक्राश्च वक्री ग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्च नेष्टाः ॥११२॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ यात्राप्रकरणम् ॥ ११ ॥

(अन्वयः) जन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहं अष्टमगृहं अहितर्क्षात् शत्रुराशेः शत्रुलग्नाद्वा षष्ठं स्थानं लग्ने यात्रालग्ने स्थिते । तदीशा वा लग्ने, कुंभमीनर्क्षनवलवतनू चापि पृष्ठोदयं च लग्ने । पृष्ठाशामृक्ष संस्थं, अथ दशमशनिः, काव्यः शुक्र श्चापिसप्तमे, केन्द्रे वक्राः, वक्रिग्रहदिवसा वाराः । विवाहोक्तदोषाश्च । एते दोषा यात्रायां नेष्टाः अवश्यं वर्ज्याः ॥ ११२ ॥

अर्थः—निज जन्म राशि से आठवीं राशि व जन्म लग्न से आठवीं राशि, अथवा शत्रु की जन्म राशिसे या जन्म लग्न से छठवीं राशि अथवा इन राशियों के स्वामी कुंभ मीन का नवमांश या कुंभ मीन लग्न या पृष्ठोदय लग्न यात्रा की लग्न में हों और पीछे स्थित नक्षत्र होवें या यात्रा लग्नसे शनैश्चर दशवें स्थान में होवें और शुक्र सातवें स्थान में हो वक्रीग्रह १।४।७।१० स्थान में हों और वक्रीग्रहोंका वार होवै यह सम्पूर्ण दोष, विवाह कर्ममें कहे हुए दोष ये सब यात्रा मुहूर्त में अशुभ हैं, ऐसे दोषों में कभी भी यात्रा न करै ॥ ११२ ॥

मुहूर्तचिन्तामणौ भाषाटीकायां यात्राप्रकरणं
समाप्तम् ॥ ११ ॥

वास्तुप्रकरणम् ॥ १२ ॥

घरविषय अपना शुभाशुभ विचार--

यद्भं द्व्यंकसुतेशदिङ्मितमसौ ग्रामः शुभो नामभा-
त्स्वं वर्गं द्विगुणं विधाय परवर्गाढ्यं गजैः शेषितम् ।
काकिण्यस्त्वनयोश्च तद्विवरतो यस्याधिकाः सोऽर्थदो-
ऽर्थं द्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां हितं पूर्वतः ॥ १ ॥

(अन्वयः) नामभात्पुरुषनामराशेः सकाशात् यद्भं यस्य ग्रामस्य भं राशिः स चेत् द्व्यङ्कसुतेशदिङ्मितं द्वितीयो नवम पंचम एकादश संख्यो दशमश्चेत्स्यात् तदा असौ ग्रामः स्वस्य शुभः शुभफलदाता स्यात्, अन्यथा चेत्तर्हि शुभो न भवति। स्वं स्वस्य वर्गं द्विगुणं विधाय कृत्वा परवर्गाढ्यं अन्यस्य ग्रामस्य वर्गयुक्तं गजैरष्टभिः शेषितं अवशिष्टं ताः काकिण्यो ज्ञेयाः पुन्सः। एवं ग्रामस्यासिः स्ववर्गसंख्यां द्विगुणां कृत्वा परस्य पुन्सः वर्गसंख्यया युक्तां च कृत्वा गजभक्ताः अवशिष्टाः काकिण्यो ग्रामस्य भवंति। एवं अनयोः पुरूषग्रामयोः काकिण्यः स्युः। तत्र तद्विवरतः यस्याधिकाः स अर्थदः स्यात्। अथ पूर्वतः द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनां द्वारं हितमिति ॥ १ ॥

अर्थः—जिस ग्राम में मनुष्य वसने की इच्छा करै उस ग्रामकी राशि, प्रसिद्ध नाम राशि से दूसरे, ९ नवमें पांचवें ५ ग्यारहवें ११ दशवें १० हो उस ग्राममें वास करना शुभ है। मनुष्यके नामके वर्गको दुगुना करके उसमें ग्रामका वर्ग मिलादे, आठका भाग देनेसे जो बचे उसे अलग रख देवे फिर ग्रामके वर्गको दुगुना करके मनुष्यके नामके वर्गमें मिला देवे और आठका भाग देनेसे जो बचे उसको भी अलग रख देवे फिर दोनोंमेंसे जिसके अंक अधिक होवे वही धनका देनेवाला होता है। कर्क वृश्चिक, मीन इनकी ब्राह्मण संज्ञा है इनको पूर्व दिशाका दरवाजा करना शुभ है। वृष, कन्या, मीन मकर इनकी वैश्य संज्ञा है इनको दक्षिण दिशाका द्वार करना श्रेष्ठ है। मिथुन, तुला, कुम्भराशि शूद्र हैं इनको दरवाजा पश्चिमका शुभ होता है। मेष सिंह, धन इनकी क्षत्रिय

संज्ञा वालोंको उत्तर दिशाका द्वार अति श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

राशिपरत्वसे ग्राममें रहनेमे निषिद्ध स्थान—

गोसिंहनक्रमिथुनं निवसेन्न मध्ये
ग्रामस्य पूर्वककुभोऽलिझषांगनाश्च ।
कर्को धनुस्तुलभमेषघटाश्च तद्व-
द्वर्गाः स्वपंचमपरा बलिनः स्युरैन्द्र्याः ॥ २ ॥

(अन्वयः) ग्रामस्य मध्ये गोसिंहनक्रमिथुनं न निवसेत् अथ ग्रामस्य पूर्वककुभः पूर्वदिशातोऽष्टदिक्षु अलिझषांगनाः कर्को धनुस्तुलभमेषघटाश्च एतत् राशि न निवसेत् । अथ तद्वत् वर्गाः अष्टौ ऐन्द्र्याः पूर्वदिशां आरभ्य अष्टदिक्षु बलिनः स्युः । कीदृशा वर्गाः स्वपंचपराः । यथा यस्य वर्गः पूर्वस्यां बली तेन पश्चिमायां द्वारं निवासो वा न विधेयः । एवं कवर्गादीनामाग्नेयादि सप्तदिक्षु बलित्वं सप्रयोजनं ज्ञेयम् ॥ २ ॥

अर्थः—वृष सिंह मकरमिथुन राशिवाले मनुष्य ग्राम मध्य में न बसें। वृश्चिक राशिवाला पूर्व, मीन राशि अग्निकोणमें कन्या दक्षिण दिशा में, कर्क नैर्ऋत्य दिशा में धन पश्चिममें, तुला वायव्य दिशामें, मेष उत्तर दिशामें, कुंभ ईशान कोण, में इस प्रकार इस दिशामें न वास करे। वर्गानुसार फल अवर्ग पूर्वमें, कवर्ग अग्नि कोणमें चवर्ग दक्षिणमें, टवर्ग नैर्ऋत्यदिशामे, तवर्ग पश्चिम दिशामें पवर्ग वायव्य कोणमें, यवर्ग उत्तर दिशामें, शवर्ग ईशान कोणमें बली है और अपने से पांचवां वर्ग कोणमें, यवर्ग उत्तर दिशामें, शवर्ग ईशान कोणमें बली है अपने से पाँचवाँ वर्ग वैरी है ॥ २ ॥

एकोनितेष्टर्क्षहता द्वितिथ्यो
रूपानितेष्टायहतेंदुनागैः ।
युक्ता घनैश्चापि युता विभक्ता
भूपाश्विभिः शेषमितो हि पिंडः ॥ ३ ॥

(अन्वयः)एकोनित इष्टर्क्षं कल्पितं यद्गणर्यं तेन हता गुणिता द्वितिथ्यः १५२ कार्याः । ततो रूपेणोनितोय इष्टायो ध्वजादिकः तेन हता इन्दुना गाः एकाशीति

स्तथा गुणाः कार्याः । ततोधनैः सप्तदशभिरपि युता, युतास्ततो भूपाश्विभिः षोडशाधिकवंशत्या विभक्ता स्तथो भक्ते सति यच्छेषं अतो हि तन्मितः पिण्डः क्षेत्रफलं स्यात् ॥ अथ सपिंड स्वेष्टाय नक्षत्र भवः स्वस्य स्वगृहकर्तुरिष्टं यन्न क्षत्रं इष्ट आयश्च ताभ्यां भवतीति तादृशः स्यात् । पिंडः दैर्घ्यहृत् विस्तृतिः । विस्तारः स्यात् । अथ पिंडो विस्तृतिहृत् कल्पितविस्तरभक्तो दीर्घता स्यात्॥३॥

अर्थः-विवाहोक्तमेलापक विधिसे शुभद इष्ट नक्षत्रकी संख्यामें एक घटादे फिर एक सौ बावनसे गुणा करै ऐसे जो इष्टाय प्राप्त हुआ हो उसमेंसे एक कम करै फिर इक्कासीसे गुणा करै फिर गुणा किए दोनों फलोंको जोड़कर सतरह मिलायके दो सौ सोलहका भाग दे जो कुछ बचै उसकी पिंडसंज्ञा है ॥३॥

ध्वजादि आय और द्वार का नियम—

स्वेष्टायनक्षत्रभवोऽथ दैर्घ्यहृत्स्या
द्विस्तृतिर्विस्तृतिहृच्च दीर्घता ।
आयो ध्वजो धूमहरिश्वगोखरे
भध्वांक्षकाः पिंड इहाष्टशेषिते ॥ ४ ॥

तथा फल—

ध्वजादिकाः सर्वदिशि ध्वजे मुखं कार्यं हरौ पूर्वयमोत्तरे तथा ।
प्राच्यां वृषे प्राग्यमयोर्गजेऽथवा पश्चादुदक्पूर्वयमे द्विजादितः ।५।

(अन्वयः) इह पिण्डे क्षेत्रफले अष्टशेषिते अष्टभक्ते सति यदवशिष्टा ये तत्परिमिता आया ध्वजादिकाः स्युः । यथा-ध्वजोधूम हरिश्च गोखरे भध्वाङ्क्ष काः स्युः । पुनः 'सर्वदिशि दिक्चतुष्टयेपि मुखं गृहद्वारं कार्यम् । तथा हरौ सिंहाये पूर्वयमोत्तरे पूर्वदक्षिणोत्तरदिक्षुद्वाराणि स्युः' । वृषाख्ये आये प्राच्यां दिश्येव मुखं कार्यम् । गजे गजाख्ये आये प्राग्यमयोः पूर्वदक्षिणदिशोर्गृहं कार्यं । अथवा द्विजादितः ब्राह्मणादिवर्णविभागेन पश्चादुदक् पूर्वयमे गृहद्वारं स्यादिति ॥ ४ ॥ ५ ॥

अर्थः-इस पिंडमें लम्बाईका भाग दे तो चौड़ाई निकल आती है और चौड़ाई का भाग देवें तो लम्बाई निकल आती है । पूर्वोक्त पिण्डमें आठका भाग देने से

एक बचे तो ध्वज आय होता है और दो २ बचे तो धूम्र आय होता है तीन ३ बचे तो सिंह चार ४ बचे तो श्वान आय; पांच ५ बचे तो वृष आय छ ६ बचे तो हस्ती आय आठ ८ अर्थात् शून्य बचे तो ध्वांक्ष आय होता है ॥ ४ ॥

अर्थः-यदि ध्वज आय होय तो गृहका द्वार चारो तरफ भी किया जाता है। सिंह आय होय तो पूर्व दक्षिण उत्तर दिशाको द्वार करना वृष आय होय तो केवल पूर्व दिशामें दरवाजा करना, हस्ती आय में पूर्व दक्षिणदिशा को द्वारा करना ब्राह्मण के गृहका द्वार पश्चिम, क्षत्रिय के गृह का द्वार उत्तर, वैश्यके स्थानका द्वार पूर्वको और शूद्रके स्थानका दरवाजा दक्षिणको करना ॥ ५ ॥

आरंभ में विशेष करके काल निषेध—

गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोऽर्केन्दुजीज्यशुक्रे विबलेऽस्तनीचे ।
कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तुनोर्भे पुरस्थिते पृष्ठगते खनिः स्यात् ॥ ६ ॥

(अन्वयः) अत्र गृहारम्भे चेद् गृहस्वामिनो जन्मराशिवशात् अर्केन्दुजीज्य शुक्रे विबले निर्बले अस्ते अस्तगे नीचे नीचराशिगते सति क्रमाद् गृहेशतत्स्त्री सुखवित्तनाशो भवति । विधुवास्तुनोर्भेपुरः स्थिते संमखे सति कर्तुर्गृहेनिर्मा तुस्तस्मिन्गृहे स्थितिः निवासो न स्यात् । पृष्ठगते वा विधुवास्तु नोर्भे सति खनिः खननं स्यात् ॥ ६ ॥

अर्थः—सूर्य बलहीन व अस्तंगत या नीचका होवै तो गृह के स्वामी का नाश हो जावै यदि चन्द्रमा निर्बल अस्त नीच राशिपर स्थित हो तो घरके मालिक की स्त्री का नाश हो जावै और बृहस्पति निर्बल हो अस्त नीच राशि पर हो तो गृहस्वामीके सुख का नाश होवै यदि शुक्र निर्बल नीच राशि वा अस्त हो तो धनका नाश हो जावै । चन्द्रमा का नक्षत्र और वास्तुका नक्षत्र सन्मुख होवै और नीच होवै तो गृहस्वामी कदापि वास न करै जो पीठ पीछे होय तो धनकी चोरी हो जावै गृहस्वामी निर्धन सदैव रहे ॥ ६ ॥

व्ययकथन पूर्वक अंशक का ज्ञान—

भं नागतष्टं व्यय ईरितोऽसौ ध्रुवादिनामाक्षरयुक् सपिंडः ।
तष्टो गुणैरिंद्रकृतांतभूवाद्यंशा भवेयुर्नशुभोंतकोऽत्र ॥ ७ ॥

(अन्वयः) प्रागुक्तदिशाकल्पितं यद्गृहभं तत् नागैरष्टभिः तष्टं भकावशिष्टं स व्यय ईरितः । असौ व्ययः ध्रुवादिनामाक्षरयुक् ततः सपिण्डः प्रागानीत

पिंड युक्तः गुणैस्त्रिभिः तष्टः विभक्ते सति इन्द्रकृतान्तभूपा हि अंशा अन्तकः भवेयुः । अत्र अन्तको यमः अंशकः न शुभः स्यादिति ॥ ७ ॥

अर्थः—पूर्व कहे हुये जो दिशाके नक्षत्र हैं उन नक्षत्रों में आठ का भाग देने से जो बचे वह व्यय संज्ञक है और उस व्यय में ध्रुव आदि के नाम के अक्षर मिला दे उसको पिंड में जोड़कर तीनका भाग देवे एक बचे तो इन्द्र, दो बचे तो यम तीन बचे तो राजा ये अंश होते हैं सो यम का अंश शुभदायक नहीं है और इन्द्र राजा ये दो अंश शुभप्रद हैं ॥ ७ ॥

शाला ध्रुवादि आनयन का प्रकार—

दिक्षु पूर्वादितः शाला ध्रुव भूद्वौ कृता गजाः ।
शालाध्रुवांकसंयोगः सैको वेश्मध्रुवादिकम् ॥ ८ ॥

(अन्वय.) पूर्वादितो दिक्षु प्राच्यादिषु दिक्षु भूः द्वौ कृता गजाः इमे शाला ध्रुवाः स्युः । अत्रशालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकः एक युक्तः सतु ध्रुवादिकं वेश्म गृहं स्यादिति ॥ ८ ॥

अर्थः—पूर्व दिशा से आरम्भ करके शाला ध्रुवाङ्क जाने । पूर्व दिशा का शाला ध्रुवांक एक होता है । दक्षिण दिशा के दो २ शाला ध्रुवांक होते हैं । पश्चिम दिशाके चार ४ शाला ध्रुवांक होते हैं । उत्तर दिशा के आठ ८ शाला ध्रुवांक होते हैं जिस २ दिशा में मकान का दरवाजा बनवावे उन उन दिशाओं के शाला ध्रुवांकों का योग कर फिर एक अंश और जोड़ देनेसे जैसी गिनती के समान गृहका नाम जानना ॥ ८ ॥

ध्रुवादिकोंको नामाक्षर संख्या—

तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे नामाक्षरं त्रयम् ।
भूद्व्यब्धीष्वंगदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ नगेऽब्धयः ॥ ९ ॥

(अन्वयः) तिथ्यार्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रे पंचदशी, द्वादशी, अष्टमी, षोड़शी, नवमी, एकादशी, चतुर्दशी, वासरसंख्यापरिमिते स्यात्तदा नामाक्षरं त्रयं गृह-नामाक्षरत्रयात्मकं स्यात् । पुनरेवं भूद्व्यब्ध्यष्वङ्गदिग्वह्निविश्वेषु द्वौ गृहनामाक्षरं द्व्यात्मकं स्यात् । नगे सप्तमी संख्या स्यात्तदा अब्धयश्चतुरक्षरं गृहनाम ॥ ९ ॥

अर्थः—ऊपर कहे हुए एक युक्त अङ्कोंका योग पन्द्रह १५ बारह १२ आठ ८ सोलह १६ हो तो नव ९ ग्यारह ११ चौदह १४ तीन अक्षरका नाम जानै औ

एक १ दो २ चार ४ पाँच ५ छः ६ दश १० तीन ३ तेरह १३ हो तो दो अक्षरका नाम जाने, सात हो तो चार अक्षरका नाम जाने ॥ ९ ॥

ध्रुवधान्ये जयनंदौ खरकांतमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रम् ।
रिपुदं वित्तदनाशे चाक्रंदं विपुलविजयाख्यं स्यात् ॥ १० ॥

(अन्वयः) ध्रुवधान्ये जयनन्दौ खरकान्तमनोरमं सुमुखदुर्मुखोग्रं च रिपुदं वित्तदं नाशं चाक्रन्दंविपुलविजयाख्यं षोडशगृहं स्यादेव ॥ १० ॥

अर्थः—उपरोक्त शेष संख्या एकादिक हो तो ध्रुव, धान्य, जय नंद, खर, कांत, मनोरथ, सुमुख, दुर्मुख, उग्र, रिपुद, धनद, नाश, आक्रन्द, विपुल, विजय, यहक्रम से गृहकी संज्ञा होती है ॥ १० ॥

कितनेके मतसे आयादि नव की संख्या—

पिंडे नवां ९ कां ९ ग ६ गजा ८ ग्नि ३ ९ नाग-
नागा ८ ब्धि ४ नागै ८ र्गुणिते क्रमेण ।
विभाजिते नाग ८ नगां ७ क ९ सूर्य १२ नाग ६
र्क्ष २७ तिथ्य १५ र्क्ष २७ खभानुभि १२० श्च ॥ ११ ॥
आयो वारोंऽशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः ।
आयुश्चाथ गृहेशर्क्षगृहमैक्यं मृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

(अन्वयः) पिंडे क्षेत्रफले नवधा स्थापिते क्रमेण नवाङ्काङ्गगजाग्निनाग नागाब्धिनागैः गुणिते क्रमेण नाम नगाङ्कसूर्यनगर्क्षतिथ्यृक्षखभानुभिः विभाजिते विभक्ते सति क्रमेण आयोवारोंऽशको द्रव्यमृणमृक्षं तिथिर्युतिः आयुः स्यात् । अथ गृहेशर्क्षगृहमैक्यं तदा मृतिप्रदं स्यात् ॥ ११ ॥ १२ ॥

अर्थ—प्रथम जो शेषका नाम पिंड है उसको ९ । ९ । ६ । ८ । ३ । ८ । ८ । ४ । ८ इन अंकोंसे अलग २ गुणन करै फिर गुणफल में पृथक् क्रम से ८ । ७ । ९ । १२ । ८ । २७ । १५ । २७ । १२० का भाग देने से क्रमसे आय, वार, अंश द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग आयुकी संख्या होती है । गृहपति का नक्षत्र और गृह अर्थात् गृहका नक्षत्र एक ही हो तो मरण होवै ॥ १२ ॥

गेहाद्यारंभेऽर्कभाद्वत्सशीर्षे रामै ३ र्दाहो वेद ४ भैरग्रपादे ।

शून्यं वेदैः४पृष्ठपादे स्थिरत्वं रामैः३पृष्ठे श्रीर्युगैः४र्दक्षकुक्षौ ।१३।
लाभोरामैः३पुच्छगैःस्वामिनाशोवेदैर्नैःस्व्यं वामकुक्षौ मुखस्थैः।
रामैःपीडा संततं वार्कधिष्ण्यादश्वै७रुद्रै र्दिग्भि१०रुक्तंह्यसत्सत्१४

(अन्वयः) गेहाद्यारम्भे अर्कभात् रामैर्वत्सशीर्षे स्थितैश्चेत्तदा दाहः फलं स्यात् । एवं वेदभैश्चतुर्भिः नक्षत्रैः अग्रपादे स्थितैः शून्यं फलं स्यात् । ततः वेदैः पृष्ठपादे स्थिरत्वं स्यात् । रामैः पृष्ठे स्थितैः श्रीःस्यात् । युगैर्दक्षकुक्षौस्थितै र्लाभः । रामैः पुच्छगैश्चेत्तदा स्वामिनाशः । वेदैर्वामकुक्षौ चेत्तदा नैःस्व्यंदारिद्र्यम् । रामै र्मुखस्थैश्चेत्तदा गृहकर्तुः पीडा संततं स्यात् । अथवा वत्सचक्रस्य अर्कधिष्ण्यात् अश्वै रुद्रैर्दिग्भिः चन्द्रनक्षत्रैः असत्सत् हि उक्तमिति ॥ १३ ॥ १४ ॥

अर्थः—जब मनुष्य नवीन मकान आदि बनवाना चाहे तो जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उस नक्षत्रसे दिनके नक्षत्र तक गिनै फिर वृषवास्तु चक्रमें स्थापित करे । तीन नक्षत्र वृषके शिरपर स्थापित करै वे घर आदिमें अग्नि लगाने वाले हैं । फिर चार ४ नक्षत्र वृषके अगले पैरोंमें स्थापित करै वे मकानको स्थिर करनेवाले हैं फिर तीन ३ नक्षत्र वृषके पीठपर स्थापित करै ,वे लक्ष्मी देते हैं फिर चार ४ वृषकी दक्षिण कुक्षि में स्थित करै वे लाभ देते हैं ॥ १३ ॥ फिर तीन ३ नक्षत्र वृषके पुच्छमें स्थापित करै ये गृह स्वामीका नाश करते हैं फिर ४ नक्षत्र वृषकी वामकोखमें स्थापित करै वे दरिद्रता करते है फिर तीन नक्षत्र वृषके मुखमें स्थापित करै वे निरंतर पीड़ा ही करते हैं । जिस नक्षत्रके सूर्य होवैं उससे ७ नक्षत्र अशुभ फलप्रद हैं फिर ग्यारह ११ नक्षत्र शुभफल देते हैं फिर १० दस नक्षत्र अशुभ फलप्रद है ॥ १४ ॥

पूर्वादि दिशामें द्वार और गृहनिर्माणमें नक्षत्र—

कुंभेऽर्के फाल्गुने प्रागपरमुखगृहं श्रावणे सिंहकर्क्योः
पौषे नक्रे च याम्योत्तरमुखसदनं गोजगेऽर्के च राधे ।
मार्गे जूकालिगे सत् ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूतीगेहं त्वदित्यां हरिभविधिभयोस्तत्र शस्तः प्रवेशः ॥१५॥

(अन्वयः) कुम्भे कुम्भस्थितेऽर्के फाल्गुने फाल्गुनमासे प्रागपरमुखं गृहं सत् शुभफलदं स्यादिति। एवं श्रावणे सिंहकर्क्योः सिंहकर्क संक्रान्त्योः प्रागपरमुखं च

गृहं स्यात्। पौष नक्रे मकरसंक्रान्तौ च प्रागपरमुखं गेहं स्यात्। अथ गोऽजगे अर्के राधे वैशाखमासे, तथा मार्गे जूकालिगे सूर्ये सति याम्योत्तरे मुखं सदनं स्यात्। ध्रुवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः तु पुनः अदित्यां हरिभविधिभयोः सूतीगेहं सूतीगृहनिर्माणं सत्स्यात्। तत्र तस्मिन्नक्षत्रे प्रवेशः शस्तः स्यात् ॥१५॥

अर्थः—कुम्भके सूर्यमें फाल्गुनके मासमें और श्रावण मासमें सिंह कर्ककी संक्रांति में और पूस में मकर की संक्रांति में जो गृह बनावै तो पश्चिम या पूर्व दिशा में गृहद्वार रक्खे इसी तरह वृष के और मेष के सूर्य में वैशाखमें और वृश्चिक के सूर्य में मार्गशीर्ष में जो गृह बनवावै उसका दक्षिण या उत्तर दिशा में द्वार रक्खे तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा रोहिणी मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा शतभिषा स्वाती धनिष्ठा हस्त पुष्य इन नक्षत्रों में गृह बनाने का प्रारम्भ करना चाहिये। सूतिका गृह (लड़का उत्पन्न का स्थान) पुनर्वसु नक्षत्र में बनवावै और श्रवण व रोहिणी नक्षत्र में इस सूतिका गृहमें प्रवेश करना शुभ है ॥ १५ ॥

सौर चान्द्रमासों की दूसरे प्रकार से एकवाक्यता—

> कैश्चिन्मेषरवौ मधौ वृषभगे ज्येष्ठे शुचौ कर्कटे
> भाद्रे सिंहगते घटेऽश्वयुजि चोर्जेऽलौ मृगे पौषके।
> माघे नक्रघटे शुभं निगदितं गेहं तथोर्जे न स-
> त्कन्यायां च तथा धनुष्यपि न सत्कृष्णादिमासाद्भवेत्॥१६॥

(अन्वयः) मेषरवौ मधौ चैत्रमासि गेहं शुभं निगदितं एवं वृषभगे ज्येष्ठे, कर्कटे शुचौ, सिंहगते भाद्रे, घटेऽश्वयुजि आश्विनमासे, अलौ वृश्चिकगेऽर्के ऊर्जे कार्तिके, मृगे पौषके, नक्रघटे माघे, एवंविधमासे गेहं गृहप्रारम्भं शुभं स्यादिति कैश्चिन्निगदितम्। तथा कन्यायां अर्केसति ऊर्जे कार्तिके न सत्स्यात्। तथा धनुष्यपि कृष्णमासाद् सत् न भवेत् ॥ १६ ॥

अर्थः-कितने एक पंडितों का यह मत है कि मेषका सूर्य चैत्र में और ज्येष्ठ में वृषका, कर्कके सूर्य आषाढ में सिंह के सूर्य भाद्रपदमें तुलाके सूर्य आश्विन (कुआंर) में वृश्चिक के सूर्य कार्तिक में, मकरका सूर्य पौष में मकर या कुम्भका सूर्य माघमें हो तो गृहारंभ करना अतिशुभ है और कार्त्तिक में कन्या का सूर्य माघमें धनका सूर्य हो तो नया मकान बनाना शुभ नहीं है यह कृष्णादिमास से जानना।१६॥

तिथि परत्व से द्वारका निषेध—

पूर्णेन्दुतः प्राग्वदनं नवम्यादिषूत्तरास्यं त्वथ पश्चिमास्यम् ।
दर्शादितः शुक्लदले नवम्यादौ दक्षिणास्यं न शुभं वदंति।१७।

(अन्वयः) पूर्णेन्दुतः कृष्णाष्टमी पर्यंतं प्राग्वदनं गृहं शुभं न वदन्ति। नवम्यादिषूत्तरास्यं कृष्णनवमी तश्चतुर्दशीपर्यन्तं गृहमुत्तास्य न शुभम्। अथ दर्शादितः शुक्लदले शुक्लाष्टमी पर्यन्तं पश्चिमास्यं गृहं न शुभं वदन्ति। नवम्यादौ शुक्लनवमी तश्चतुर्दशीपर्यन्त दक्षिणास्यं गृहं न शुभं वदन्ति ॥ १७ ॥

अर्थः—पौर्णमासी से कृष्णपक्ष की अष्टमी तक पूर्व दिशा का द्वार, कृष्णपक्ष की नवमी से चौदस पर्यन्त उत्तर दिशा में द्वार और अमावास्या से शुक्लपक्षकी अष्टमी तक पश्चिम दिशा का द्वार, और शुक्ल पक्ष की नवमी से चौदस पर्यन्त दक्षिणदिशा में द्वार करना अशुभ है ॥ १७ ॥

पंचांगशुद्धि और लग्नशुद्धि—

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोने चे विपंचके।
व्यष्टांतयस्थैः शुभैर्गेहारंभस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥

(अन्वयः) भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोने च विपंचके व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैः शुभग्रहैः खलैः पापैस्त्र्यायारिगैः स्थितैः श्चेत्तदा गेहारम्भः कार्यः ॥ १८ ॥

अर्थः–मंगलवार रविवार चौथ नवमी चतुर्दशी अमावस प्रतिपदा अष्टमी चर लग्न ये न हों रोग अग्नि नृप चोर मृत्यु ये पांचो बाण न हों लग्न से आठवें और लग्न से बारहवें शुभग्रह न हों और तीसरे छठ ग्यारवें इन स्थानों में क्रूरग्रह हों तो गृहारंभ अतिशुभ है ॥ १८ ॥

देवालय आदि में विदिशा में राहुमुख–

देवालये गेहविधौ जलाशये राहोर्मुखं शंभुदिशो विलोमतः ।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते मुखात पृष्ठविदिक्शुभा भवेत् १९

(अन्वयः) देवालये गेहविधौ जलाशये मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेशम्भुदिशो विलोमतः राहोर्मुखं स्यात्। अत्र देवालयादिविषयके खाते भूमिशोधने कर्तव्ये सति मुखात् राहुमुखान्तस्था दिशा सकाशात् पृष्ठ दिक्शुभा भवेत् ॥ १९॥

अर्थः–नवीन देवता के मंदिर बनवाने में राहु मुख ईशान से मीन मेष वृष के

सूर्य में ईशान कोण में राहु मुख होता है। मिथुन कर्क सिंह राशि के सूर्य में वायव्य कोण में राहु मुख होता है। कन्या तुला वृश्चिक के सूर्य में नैर्ऋत्य कोण में राहुमुख होता है। धन मकर कुम्भ राशि के सूर्य में अग्नि कोण में राहु मुख होता है। नवीन मकान के आरम्भ में सिंह कन्या तुला राशि के सूर्य में ईशान-कोण में राहु मुख होता है वृश्चिक धन मकर राशि के सूर्य में वायव्यकोणमें राहु मुख होता है। कुम्भ मीन मेष राशि के सूर्य में नैर्ऋत्य कोणमें राहु मुख होता है। वृष मिथुन कर्क राशिके सूर्य में अग्निकोण विषे राहु का मुख होता है। कुआं तालाब आदिके आरंभमें मकर कुम्भ मीन राशि के सूर्य में ईशानकोण में राहु मुख होता है मेष वृष मिथुन राशिके सूर्य में वायव्य कोण में राहु मुख। कर्क सिंह कन्या राशिके सूर्य में नैर्ऋत्य कोण में राहु मुख तुला वृश्चिक धन राशिके सूर्य में अग्निकोणमें राहुमुख होता है। देवालय, मकान खात, जलाशयारम्भ में राहु मुख से पृथ्वी दिशामें खात करना शुभ है ॥ १९ ॥

कुआं खोदने में दिशा से फल—

कूपे वास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाश
स्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः।
सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिश्च
संपत् पीडा शत्रुतः स्याच्च सौख्यम् ॥ २० ॥

(अन्वयः) वास्तो र्मध्यदेशे कूपे अर्थनाशः स्यात्। अथैशान्यादौ जलकूपे कृते सति क्रमेण पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः सूनोर्नाशः स्त्रीविनाशो मृतिः संपत् शत्रुतः पीडा सौख्यं च स्यादिति ॥ २० ॥

अर्थः—गृहके मध्य में कुआं बनवाया जावे तो गृहस्वामी का नाश होवे, ईशान कोण में पुष्टि, पूर्व में ऐश्वर्य वृद्धिहोय, अग्निकोणमें पुत्रनाश, दक्षिण में स्त्रीनाश, नैर्ऋत्य में घरके स्वामी का मरण, पश्चिममें धन प्राप्ति वायव्य में शत्रुसे पीड़ा, उत्तर में सुख हो इस प्रकार शुभाशुभ जानना ॥ २० ॥

दिशापरत्व से उपकरण गृह—

स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजेश्चधान्य-
भांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतः स्युः ॥

तन्मध्यतस्तु मथनाज्यपुरीषविद्या-
भ्यासाख्यरोदन रतौषधसर्वधाम ॥ २१ ॥

(अन्वयः) पूर्वतः स्नानस्य पाकशयनास्त्रभुजः धान्यभाण्डारदैवत गृहाणि च स्युः तु पुनः तन्मध्यतः मथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौष धसर्वधाम गृहाणि स्युरिति ॥ २१ ॥

अर्थः-पूर्वदिशा में स्नानघर अग्निकोण में रसोई घर, दक्षिण दिशामें शयनघर नैऋत्य दिशामें शस्त्रघर, पश्चिम, में भोजन स्थान, वायव्य ने अन्न संग्रहघर, उत्तर दिशा में खजाना स्थान, ईशान कोणमें देवता गृह., पूर्व और अग्निकोणके मध्यमें दूधदही, मथनेका स्थान चाहिये। अग्नि कोण और दक्षिण के मध्यमें घृतसं-ग्रह घर, दक्षिण, और नैऋत्य के मध्यमें विष्ठाकूप (पाखाना) स्थान, नैऋत्य और पश्चिमके मध्यमें विद्याभ्यास का स्थान और पश्चिम वायव्य के मध्यमें रोदनघर वायव्य उत्तरके मध्यमें भोजनगृह बनाना उत्तर और ईशान कोणके मध्यमें औषधि घर बनावै ईशान पूर्वके मध्यमें सर्ववस्तु संग्रह गृह बनवावै ॥ २१ ॥

जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु लग्नारिजामित्रसुखत्रिगेषु ।
स्थितिः शतं स्याच्छरदां सितार्कारेज्ये तनुत्र्यंगसुते शते द्वे॥२२॥

(अन्वयः) जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषु क्रमेण लग्नारिजामित्रसुखात्रिगेषु स्थिति श्चेत्तदा शतं शरदां वर्षशतं स्यात् सितार्कारेज्ये तनुत्र्यङ्गसुते सति शतं द्वे शतद्वयमायुः स्यात् ॥ २२ ॥

अर्थः—लग्न में बृहस्पति, छठे सूर्य सातवें बुध, चौथे तीसरे शनिश्चर हो तो, गृह की स्थिति १०० (एकसौ वर्ष) रहती है। लग्न में शुक्र, तीसरे सूर्य, छठे मंगल पांचवें बृहस्पति हो तो घर की स्थिति (दो सौ) २०० वर्ष पर्यन्त रहती है ॥ २२ ॥

बहुकाल तक घर रहने का योग—

लग्नांबरायेषु भृगुज्ञभानुभिः केन्द्रे गुरौ वर्षशतायुरालयः ।
बंधौगुरुज्योम्निशशीकुजार्कजौलाभेतदाशीतिसमायुरालयः २३

(अन्वयः)-भृगुज्ञभानुभिः लग्नांबरायेषु केन्द्रे गुरौ लग्नव्यतिरिक्ते केन्द्रे गुरुः स्यात् तदैवंविधेयोगे आलयोगृहं वर्षशतायुःवर्षशतमायुः स्यात् बन्धौ गुरुः

व्योम्नि शशी, दशमे चन्द्रः कुजार्कजौ लाभे तदा आलयः गृहमशीतिसमा वर्षा एयायुः स्यादिति ॥ २३ ॥

अर्थः-लग्न में शुक्र दशवें बुध, ग्यारहवें सूर्य, केन्द्र में बृहस्पति ऐसे लग्न में प्रारम्भ किया गृह एकसौ १०० वर्ष का होता है। चौथे बृहस्पति, दशवें चन्द्रमा, ग्यारहवें मंगल शनैश्चर ऐसे लग्न में गृह का बनाना आरम्भ होय तो ८० वर्ष तक गृह की स्थिति रहती है ॥ २३ ॥

स्वोच्चे शुक्रे लग्नगे वा गुरौ वेश्मगतेऽथवा ।
शनौ स्वोच्चे लाभगे वा लक्ष्म्या युक्तं चिरं गृहम् ॥२४॥

(अन्वयः-) स्वोच्चे स्वोच्चस्थे शुक्रे लग्नगते वा गृहं चिरं लक्ष्म्य युक्तं स्यात्। अथवा स्वोच्चस्थे, गुरौ वेश्मगते चतुर्थस्थानगते वा सति तादृशमे वेगृहम्। अथवा स्वयच्चे शनौ लाभगे वा गृहं लक्ष्म्या युक्तं स्यादिति ॥ २४ ॥

अर्थः-मीन राशी का शुक्र लग्न में कर्क राशि का बृहस्पति चौथे स्थान में तुला राशी का शनिश्चर ग्यारहवें हो ऐसे में आरम्भ किया गृह लक्ष्मी से युक्त सदैव रहता है ॥ २४ ॥

दूसरेके तबे में घर जानेके योग--

द्यूनांबरे यदैकोऽपि परांशस्थो ग्रहो गृहम् ।
अब्दांतः परहस्तस्थं कुर्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥ २५ ॥

(अन्वयः) एकोऽपि ग्रहः परांशस्थः शत्रुनवांशस्थितः सन् यद्यऽधुनाम्बरे स्यात्तदा गृहं अब्दान्तर्वर्षमध्ये एव परं हस्तस्थं कुर्यात् वर्णप श्चेदबलः निर्बल इव तदा ॥ २५ ॥

अर्थः-शत्रुके नवमांशः में प्राप्त होकर जो एक भी बलवान् ग्रह-सातवें या दस स्थान में होवै और चारो वर्णों में जिसका मकान हो उसी वर्ण का स्वामी निर्बल अर्थात् बलरहित होवै तो वह मकान एकही वर्षके भीतर दूसरे मनुष्य के हाथ में चला जाय ॥ २५ ॥

पुष्यध्रुवेंदुहरिसर्पजलैः सजीवै--
स्तद्वासरेण च कृतं सुतराज्यदं स्यात् ।

द्वीशाश्वितत्त्ववसुपाशिशिवैः सशुक्रै-
र्वारे सितस्य च गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥ २६ ॥

(अन्वयः) पुष्यध्रुवेन्दुहरिसर्पजलैः नक्षत्रैः सजीवै गुरुयुक्तैः तद्वासरेण बृहस्पतिवारेण च कृतं कुर्युः आरब्धं गृहं सुतराज्यदं स्यात् । द्वीशाश्वितत्त्ववसुपाशिशिवैर्नक्षत्रैः सशुक्रैः शुक्रसहितैः सितस्यवारे च एतादृशे योगे कृतं गृहं धनधान्यदं स्यात् ॥ २६ ॥

अर्थः-पुष्यतीनों उत्तरा, रोहिणी मृगशिरा, आश्लेषा, पुर्वाषाढ़, ये बृहस्पति सहित हों और बृहस्पति वार होवै ऐसे योगोंमें प्रारम्भ किया गृह, धन पुत्र और राज्य करता है । विशाखा अश्विनी चित्रा धनिष्ठा शतभिषा आर्द्रा नक्षत्र शुक्र युक्त हों और शुक्रवार होवै ऐसे योगमें प्रारम्भ किया घर धन सोना अन्न आदिसे सदैव भरा रहता है ॥ २६ ॥

दूसरे दो योग--

सारैः करेज्यांत्यमघांबुमूलैः कौजेऽन्हि वेश्माग्निसुतार्तिदं स्यात् ।
सज्ञैः कदास्त्र्यर्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैव वारे सुखपुत्रदं स्यात् ॥२७॥

(अन्वयः) करेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैः नक्षत्रैः सारैर्मंगलयुक्तैः कौजेऽह्नि भौमवारे च कृत वेश्मगृहमग्निसुतार्तिदं स्यात् । कदास्त्र्यर्यमतक्षहस्तैः नक्षत्रैः सज्ञैर्बुधयुक्तैर्ज्ञस्यैव वारे च कृतं गेहं सुखपुत्रदं स्यात् ॥ २७ ॥

अर्थः--हस्त पुष्य रेवती मघा पूर्वाषाढा, मूल ये नक्षत्र हों और इन्हीं नक्षत्र पर लग्न होवै और मङ्गलवार हो ऐसे योग में प्रारंभ किया घर अग्नी औ पुत्र पीड़ा को देता है रोहिणी अश्विनी उत्तरा फाल्गुनी चित्रा हस्त नक्षत्रों पर बुध हो और बुध वार होवै तो ऐसे योग में गृहारंभ करना सुख और पुत्र को देता है ॥ २७ ॥

अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानलान्तकैः ।
समंदैर्मंदवारे स्याद्रक्षोभूतयुतं गृहम् ॥ २८ ॥

(अन्वय) अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः नक्षत्रैः समन्दैः शनैश्चरयुक्तं मन्दस्ये च वारे च कृतं गृहं रक्षोभूतयुतं स्यात् ॥ २८ ॥

अर्थ-पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद ज्येष्ठा अनुराधी स्वाती भरणी नक्षत्रों पर शनिश्चर हो और शनिवार होवै, ऐसे योग में गृह के बनाने का प्रारम्भ करै तो घर राक्षस भूत पिशाचों ही का घर हो जाता है ॥ २८ ॥

कितनेओं के मत से चारचक्र—

सूर्यर्क्षाद्युगभः शिरस्यथ फलं लक्ष्मीस्ततःकोणभै-
र्नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ।
देहल्यां गुणभैर्मृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यं चक्रमिदंविलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥२९॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ वास्तुप्रकरणम् ॥ ११ ॥

(अन्वयः) अथ सूर्यर्क्षात् युगभै श्चतुर्भि र्नक्षत्रैः शिरसिस्थितैः लक्ष्मींप्राप्ति रूपं फलं स्यात् । ततः नागैः कोणभै रुद्वसनम् । ततः गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् । ततः गुणभैस्त्रीभिर्नक्षत्रैर्देहल्या मध्यस्थितैः गृहपते र्मृतिः मरणं स्यात् । वेदभै श्चतुर्भिर्नक्षत्रै र्मध्यस्थितैः सौख्यं स्यात् । इद द्वारचक्रं विलोक्य सुधिया शुभ शुभ फलदात् द्वार विधेयं कर्तव्यमिति ॥ २९ ॥

अर्थ—जिस नक्षत्र पर सूर्य होवै उससे चार नक्षत्र शिर पर स्थित करै तिनमें लक्ष्मी मिलती है फिर आठ नक्षत्र कोण में स्थित करै उन नक्षत्रों में कोई भी मनुष्य वास नहीं करता । आठ नक्षत्र द्वार शाखाओं पर स्थित करै । इन में गृहस्वामी को सुख मिलता है पीछे तीन नक्षत्र देहली में स्थित करै उसमें द्वार बनाने से स्वामी की मृत्यु होती है पीछे चार नक्षत्र मध्य में स्थित करै इसमैं घर के स्वामी को सुख मिलता है । इस प्रकार यह द्वार चक्र है । इसको पंडित जन भली भांति देख कर द्वार स्थित करें ॥ २९ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ भाषाटीकायां वास्तुप्रकरणं ॥ १२ ॥

—:*(*)*:—

गृहप्रवेशप्रकरणम् ॥



गृहप्रवेश में लग्नशुद्धि—

सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौनृपतेर्नवे गृहे ।
स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे॥१॥

[अन्वयः]—सौम्यायने ज्येष्ठतपोन्त्यमाधवे यात्रा निवृत्तौ अथवा नवे गृहे द्वाःस्थ मृदुध्रुवोडुभिर्नक्षत्रैः जन्मर्क्षलग्नोदये तथा स्थिरे लग्ने नृपतेर्वेशन स्यादिति ॥ १ ॥

अर्थः—यात्रा से निवृत्त हो कर या नये मकान में राजा उत्तरायण सूर्य में ज्येष्ठ माघ, फाल्गुन, वैशाख ये महीने हों और जिस दिशा को मकान का दरवाजा हो उस दिशा के नक्षत्रों में से जो कृत्तिकादि सात २ नक्षत्र कहे गये हैं उनमें से मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा उत्तरा फाल्गुनी उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी ये नक्षत्र हों और निज जन्म राशि से या जन्म लग्न से प्रवेश करने का लग्न उपचय राशि होकर अर्थात् । ३ । ६ । ११ ।१० ये लग्न हों और स्थिर लग्न हो तो प्रवेश करै ॥ ॥

जीर्णगृह प्रवेशमें विशेष—

जीर्णेगृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽपिमार्गोर्जयोःश्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।
वेशोऽम्बुपेज्यानिलवासवेषु नावश्यमस्तादिविचारणाऽत्र ॥ २ ॥

[अन्वयः] जीर्णे गृहेऽग्न्यादिभयान्नवेऽपि मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि मासे अम्बुपे ज्यानिल वासवेषु नक्षत्रेषु विशः प्रवेशः सत् शुभफलदः स्यात् अवश्यमात्र अस्तादि विचारणान विचारो नास्ति ॥ २ ॥

अर्थः—मार्गशीर्ष कार्तिक श्रावण महीनों के विषे अन्य किसी के बनाये हुए पुराने मकान में या अग्नि आदि भयसे नवीन भी मकान में शतभिषा स्वाती पुष्य धनिष्ठा इन नक्षत्रों में प्रवेश करना शुभ है । यहां पर गुरु शुक्र के अस्तादि दोषों का विचार न करै ॥ २ ॥

वास्तु नक्षत्र लग्नशुद्धि और तिथिवारशुद्धि--

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलभे वास्त्वर्चनं भूतबलिं च कारयेत् ।
त्रिकोणकेंद्रायधनत्रिगैः शुभैर्लग्ने त्रिषष्ठायगतैश्च पापकैः॥३॥

[अन्वयः] मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु वास्तोर्वास्तुपुरुषस्यार्चनं भूतबलिं च कारयेत् ३

अर्थः-मृगशिरा रेवती चित्रा अनुराधा तीनों उत्तरा रोहिणी हस्त अश्विनी पुष्य अभिजित् स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा मूल इन नक्षत्रों में नवें पांचवें प्रथम चौथे सातवें दसवें ग्यारहवें दूसरे तीसरे स्थानों में शुभग्रह हों और तीसरे छठे ग्यारहवें स्थानों में पापग्रह हों ऐसे लग्न में वास्तु पूजा और भूतवली करवावे ॥ ३ ॥

तिथि, वार, लग्नशुद्धि कथन--

शुद्धांबुरंध्र विजनुर्भमृत्यौ व्यर्काररिक्ताचरदर्शचैत्रे ।
अग्रेंऽबुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वा विशेद्वेश्म भकूटशुद्धम् ॥४॥

[अन्वयः] अत्र गृहप्रवेशसमये त्रिकोण केन्द्राय धनत्रिगैः शुभैः । अत्र चन्द्रस्य लग्ने लग्नराहित्ये ध्येयम् । त्रिषष्ठायगतैः पापकैः पापग्रहे अम्बुरन्ध्र शुद्धे, विजनुर्भमृत्यौ, व्यर्काररिक्ताचरदर्शे चैत्रे अग्रे अम्बुपूर्णं कलशं द्विजांश्च कृत्वाभकूट शुद्धं वेश्म गृहमाविशेत् ॥ ३ ॥ ४ ॥

अर्थः--चौथा और आठवां स्थान शुद्ध होवे, एतवार मंगलवार न होय रिक्ता तिथी और अमावस्या न होय चर संज्ञक लग्न न हो और चैत्र महीना को छोड़कर भकूट शुद्ध होने पर जल पूरित घड़ा और पंडितों को आगे करके मकान में प्रवेश करै ॥ ४ ॥

वामगतार्कज्ञान पूर्वादिमुख गृहप्रवेश--

वामो रविर्मृत्युसुतार्थलाभतोऽर्के पंचभे प्राग्वदनादिमंदिरे ।
पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे शुभोनंदादिके याम्यजलोत्तराननेष्

[अन्वयः] मृत्युसुतार्थलाभतः पंचमे अर्के क्रमेण प्राग्वदनादिमन्दिरे गृह प्रवेशकर्तुर्वामो रविर्ज्ञेयः । पूर्णातिथौ प्राग्वदने गृहे गृह प्रवेशः शुभः नन्दादिके याम्यजलोत्तराननें गृहे प्रवेशः शुभदः स्यादिति ॥ ५ ॥

अर्थः-प्रवेश लग्न से आठवें पांचवें दूसरे ग्यारहवें स्थानों से पांच मे राशि में सूर्य हो तो पूर्वादि मुख वाले स्थानों में क्रम से वाम रवि होता है । पंचमी

पौर्णमासी तिथियों में पूर्व के मुख वाले मकानमें प्रवेश करना शुभ है। प्रतिपदा छट एकादशी में दक्षिण मुख वाले मकान में, तीज अष्टमी तेरस में उत्तरमुख वाले मकान में प्रवेश करना अति शुभ है ॥ ५ ॥

गृहप्रवेश में कलशवास्तुचक्र--

वक्त्रे भूरविभात्प्रवेशसमये कुंभेऽग्निदाहः कृताः
प्राच्यामुद्वसनं कृता यमगता लाभः कृताः पश्चिमे ।
श्रीवेदाः कलिरुत्तरे युगमिता गर्भे विनाशो गुदे
रामाः स्थैर्यमतः स्थिरत्वमनलाः कंठे भवेत्सर्वदा ॥ ६ ॥

[अन्वयः] समये कुम्भे कलशचक्रे रविभात्सूर्यनक्षत्रात् वक्त्रे मुखे भूरेकं तत्फलं गृहस्याग्निदाहः। ततः कृताः प्राच्यामुद्वसनं, ततः कृता यमगता लाभः ततः कृता पश्चिमे श्रीप्राप्ति ततो वेदा उत्तरे कलिः, ततो रामाः गुदे स्थैर्यम् ततोऽनला कण्ठे सर्वदा स्थिरत्वं भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-गृहप्रवेश समय में कलश के मुखमें सूर्य नक्षत्र स्थित करे यदि इसी नक्षत्र में वेश करे तो घर में अग्नि लगे फिर चार ४ नक्षत्र पूर्व दिशा में स्थापित करे इनमें प्रवेश हो तो मकान सूना रहे। फिर चार नक्षत्र दक्षिण में स्थापित करे उनमें द्रव्य मिले। फिर चार ४ नक्षत्र पश्चिम में स्थित करै उनमें लक्ष्मी प्राप्त होय। फिर चार नक्षत्र उत्तर में स्थापित करै उनमें प्रवेश हो तो मकान में लड़ाई लगी रहै। फिर चार ४ नक्षत्र कलश के मध्य में स्थापित करे उनमें प्रवेश करै तो स्वामी का नाश होवै और तीन ३ नक्षत्र कलश के तलमे स्थापित करै उनमें प्रवेश हो तो गृहस्वामी सदैव स्थित रहे। फिर तीन ३ नक्षत्र कलश के कंठ में स्थापित करै उन में प्रवेश हो तो घरके स्वामी की सदैव स्थिति रहै ॥ ६ ॥

गृहप्रवेशके पीछे कर्तव्य--

एवं सुलग्ने स्वगृहं प्रविश्य वितानपुष्पश्रुतिघोषयुक्तम् ।
शिल्पज्ञदैवज्ञविधिज्ञपौरान् राजार्चयेद्भूमिहिरण्यवस्त्रैः ॥७॥

इति मुहूर्त्तचिन्तामणौ गृहप्रवेशप्रकरणम् समाप्तम् ।

[अन्वयः] एवं सुलग्ने राजा वितानपुष्प श्रुतिघोषयुक्तं स्वगृहं प्रविश्य शिल्प शदैवज्ञविधिज्ञपौरान् भूमिहिरण्यवस्त्रैः अर्चयेत् पूज्येत् ॥ ७ ॥

अर्थः-ऐसे सुन्दर लग्न में सुन्दर २ वस्त्रोंके चंदवा मंडप बनवावै और चमेली इत्यादि पुष्पोंसे सुशोभित करके वेदध्वनि से युक्त अपने मकान में प्रवेश करे। मकान बनाने वाले को ज्योतिषी आचार्य और श्रेष्ठपुरवासियों को राजा विधिवत् पृथ्वी, सुवर्ण, वस्त्र, सवारी इत्यादि से पूजन करे और नृत्य गान आदि मांगलिक शब्द श्रवण करे ॥ ७ ॥

ग्रंथकारप्रशस्तिः ।



आसीद्धर्मपुरे षडंगनिगमाध्येतृद्विजैर्मंडिते ।
ज्योतिर्वित्तिलकः फणींद्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः ।
तत्तज्जातकसंहितागणितकृन्मान्यो महाभूभुजां
तर्कालंकृतिवेदवाक्यविलसद्बुद्धिः स चिंतामणिः॥१॥

[अन्वयः] प्रसिद्धः चिन्तामणिः मम पुरे आसीत् कीदृशे पुरे षडंगनिगमाध्ये मद्विजैर्मण्डिते ज्योतिर्वित्तिलकः फणींद्ररचिते भाष्ये कृतातिश्रमः तत्तज्जातक संहितागणित कृत् महाभूभुजां मान्यः तर्कालंकृतिवेदवाक्य विलसद् बुद्धिः सरचिन्तामणि आसीत् ॥ १ ॥

अर्थः-शिक्षा आदि छ अंगों सहित वेद के पढ़ने वाले पंडितों से सुशोभित ज्योतिषियों में श्रेष्ठ शेष नाग के बनाए हुए महाभाष्य में अत्यन्त अभ्यास वाले अनेक जातक शास्त्र, संहिता शास्त्र, गणित शास्त्र, इनका करने वाले बड़े २ राजा लोगों के मान्य और न्याय अलंकार मीमांसा वेदान्तादि शास्त्रों में कुशल उत्तम बुद्धि वाले पंडित चिन्तामणि नामक धर्मपुर में हुए ॥ १ ॥

ज्योतिर्विद्गणवंदितांघ्रिकमलस्तत्सूनुरासीत्कृती
नाम्नाऽनंत इति प्रथामधिगतो भूमंडलाहरकरः ।

योरम्यां जनिपद्धतिं समकरोद्दुष्टाशयध्वंसिनीं
टीकां चोत्तमकाधेनुगणितेऽकार्षीत्सतां प्रीतये ॥ २ ॥

[अन्वयः] तत्सूनुः तस्य चिन्तामणिदैवज्ञस्य सूनुः पुत्रोऽनन्त इति नाम्ना प्रथां ख्यातिं अधिगतः प्राप्त आसीत् कीदृशानन्तः ज्योतिर्विद्गणवन्दिताङ्घ्रिकमलः पुनः कीदृशः भूमण्डलाहस्करः। पुनः कीदृशः कृती कुशलः योऽनन्तः जनिपद्धतिरम्यां समकरोः सम्यक चकार। कीदृशीं जनिपद्धतिं दुष्टाशयध्वंसिनीं। किं च तं उत्तमकामधेनुगणिते टीकां सतां प्रीतये अकार्षीत् ॥ २ ॥

अर्थ-उन्ही चिन्तामणि के पुत्र ज्योतिष वेत्ताओं समूह करके प्रणमित चरण कमल वाले, भूमण्डल में सूर्यरूप, अनेक ग्रन्थों की रचना में कुशल अनन्त नाम से प्रसिद्ध हुए। जिन अनन्त ने दुष्टाशयों के नाश करने वाली अति मनोहर पद्धति निर्मित की उन्ही अनंत ने कामधेनु नामक गणित पथ पर अति मनोहर टीका निर्माण की ॥ २ ॥

ग्रंथकार प्रशंसा—

तदात्मज उदारधीर्विबुधनीलकंठानुजो
गणेशपदपंकजं हृदि निधाय रामाभिधः।
गिरीशनगरे वरे भुजभुजेषुचंद्रै (१५२२) र्मिते
शके विनिरमादिमं खलु मुहूर्तचिंतामणिम् ॥ ३ ॥

[अन्वयः] तदात्मजः तस्यानन्तज्योतिर्विदे आत्मजः पुत्रो रामाभिधो रामसंज्ञकः गिरीशनगरे वरे मुहूर्त्तचिन्तामणिनामकं ज्यौतिषग्रंथमिमं निरमात् अकार्षीत् कीदृशो रामाभिधः, उदारधी विबुध नीलकंठानुजो गणेशपद पंकजं हृदि निधाय भुजभुजेषुचन्द्रैर्मिते शके मुहूर्तचिन्तामणिं व्यधात् ॥ ३ ॥

अर्थः-अनन्त नामक ज्योतिर्वित् का पुत्र उदार बुद्धिवाला पं० नीलकंठ का भाई राम कुलपूज्य श्रीगणपति को हृदय में स्थापन कर अत्युत्तम काशी धाम में १५२२ शालिवाहन शाके में इस मुहूर्त्त चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का अति परिश्रम से निर्माण किया ॥ ३ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ भाषा-टीका समाप्ता।